ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 248 म अंक 15 अप्रैल 2018 (वर्ष 11 मास 124 अंक 248)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान
विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान
१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११
२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)
२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)
२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२
२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)
२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)
२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)
विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)
1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012
2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)
2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)
२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह
२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।
2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)
2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)
विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)
२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।
२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।
२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।
२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।
विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)
२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)
२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)
२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)
२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२
अभिनय- मुख्य अभिनय ,
सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा
श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,
हास्य-अभिनय
सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह
श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर
नृत्य
सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव
श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत
चित्रकला
श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल
संगीत (हारमोनियम)
श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर
संगीत (ढोलक)
श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत
संगीत (रसनचौकी)
श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम
शिल्पी-वस्तुकला
श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज
मूर्ति-मृत्तिका कला
श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित
काष्ठ-कला
श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना
किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति
श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा
विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान
-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३
मुख्य अभिनय-
(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईषा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)
हास्य अभिनय-
(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)
शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) **श्री हरि नारायण मण्डल** सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मृर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र**- श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी
सुपुत्र श्री ,
पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,
पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।
पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
तान्पुरा सह भाव संगीत
(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघडडीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
तरसा/ तासा-
श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-
श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा
श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंका/ ढोल वादक
श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)
श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
नडेरा/ डिगरी-
श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६१ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह


मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html ''भालसरिक गाछ''- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा ''विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'' धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ''भालसरिक गाछ''जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटर रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु

मुड़ियाएल घर

जगदीश प्रसाद मण्डल



मुड़ियाएल घर

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै
घरे-घर समाज कहि◌-कहि
अध-मरल गाम पड़ल छै
इतिहास मिथिला कहि-सुनि
पुर जनक धाम बनल छै
वक्र आठ गीत गबिते
ज्योतिरमान जगल छै
बनि◌-कनियाँ-पुतरा-पुतरी
मूक नाच नचैत रहै छै
राति◌-दिन एकबट बरहबट बनि
नाचि नाच नचैत रहै छै
घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छइ।



ISBN : 978-81-936422-9-0

दाम : ₹ 251/-

दोसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

MURIYAL GHAR
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

बगदल गाम

काल्हि साँझमे बंगलोरसँ आएले रही, गाड़ीक थकान रहने भरि मन अराम केलौं। बेरूका चाह पीब लेलौं, टहलै-बुलैक समए सेहो भाइए गेल अछि। ओना किछु काजक भार तँ ऊपरमे ऐछे, तँए नीक हएत जे पहिने सरलाहीए जाइ, काजो भऽ जाएत आ तीन कोस टहैलो लेब।

सरलाही जाइक कारण रामचन्द्रक परिवारमे रूपैआ आ चिट्ठी पहुँचाएब अछि। रामचन्द्रो बंगलोरेमे रहै छैथ।

..पिताजी मरिए गेल छैथ, मुदा माए तँ जीवित छैथे तँए कहि कऽ जाएब नीक हएत। कहि कऽ जाएब आ आदेशसँ जाएब दुनूक दू परिस्थिति अछि। जैठाम पूर्वसँ अबैत कोनो काज अछि, ओइठाम आदेश नइ जना देब माने कहि देब अछि।

ओना पत्नियोँ लगेमे रहैथ, औझुका मनुख रहितो एते तँ विचारए पड़त जे जखन दुनू परानी बंगलोरमे रहै छी, माए गाममे रहै छैथ तँए ऐठाम जेते शुभ माएकेँ जनौलासँ हएत ओते पत्नीकेँ जनौने नइ हएत...।

माएकेँ कहलयैन-

“माए, सरलाहीमे काज अछि, टहैलो-बुलि लेब आ काजो भऽ

जाएत।"

एक तँ पचहत्तैर-अस्सी बर्खक बीच उमेरक माए, कानसँ सुनबो कम भऽ गेल छैन आ आँखिसँ देखबो, ओना अँगनाक काजक लुरू-खुरूमे भरि दिन नचिते रहै छैथ। ..मने-मन सरलाहीकेँ अखियासैत माए बजली-

"बौआ, सरलाही गाम तँ बगदल अछि!"

एक तँ कानसँ उच्च सुननिहारि तैपर आँखियोसँ कम देखते छैथ, तखन जँ अलगटेंट धिया-पुता जकाँ माएसँ बकटेंट करब नीक नइ बुझि जगहक नाओं बदैल टहलै-बुलैक आदेश लऽ ली... ।

बजलौं-

"माए, अही सभमे सँ धुमने-फिरने अबै छी।"

गपमे केतौ खोंच-खाँच माएकेँ नहियेँ बुझि पड़लैन। बजली-

"बौआ! 'परदेशी' आ 'पछबा' सबेर-सकाल अपन गर पकैड़ लइए, तँए बेसी अबेर नइ करिहह।"

माइयक बात सुनि मन खुशी भेल। मुदा लगले एकटा बात मनमे उखैड़ गेल। उखैड़ ई गेल जे 'अबेर' की कहलैन? बंगलोरमे रहै छी तँ दस-एगारह बजे राति धरि डेरा अबै छी, तैठाम माए जे 'अबेर' कहलैन, से की कहलैन? फेर मनमे भेल जे सबेर-सकाल 'परदेशी' आ 'पछबा हवा' गर पकैड़ लइए? ..कोनो बात कोनो गरपर चढ़बे ने कएल। मनमे ईहो होइत रहए जे माइयक बात घुमि कऽ एला पछाइतो बुझि लेब, तइले अखन जेते समए लगाएब ओते घुमि कऽ अबैमे देरी हएत। तहूमे ने माए केतौ पड़ाएल जाइ छैथ आ ने अपने, तखन निचेनसँ किए ने बुझब। माइयो तँ माइये भेली ने जे केहनो अधला-सँ-अधला काज किए ने करी, माटि वा पाथरक मूर्ति माइक सोझामे रखि, दुनू हाथ जोड़ि कहबैन जे माए हम बड़ नमहर पापी छी,

अपराधी छी, सएह कहै छी। बुझले तँ बात अछि जे केहनो कुपुत बेटा किए ने होइ मुदा माए थोड़े कुपित हेती, ओ तँ दुनू हाथ उठा कऽ आसिरवचन कहबे करती। भलेँ

ओइ आसिरवचनकेँ हम किए ने अपना मने उपयोग करी।

अखन तक अँगनसँ नइ निकलल छेलौं, मुदा माए अपन विचार दैत अपना काज दिस बढ़ि गेली। जेना एक्के बेर गाछक फड़े बनि कहि देने होथि। ओना माइयक बात सुनैत रही दुनू परानियोँ आ दुनू धियो-पुतो, मुदा ओकरा दुनूकेँ माने धिया-पुताकेँ कोन मतलब छै जे बापक माइक बात सुनत, अपन माए लगमे छैहे। ..पत्नी दिस नजैर देलौं तँ बुझि पड़ल जे आँखिमे अस्सी मन पानि जमा भऽ गेल छैन, जे सौनक वदलाएल मेघ जकाँ टपटपाइ छैन। भाय! टप-टपो केना ने करतैन, बंगलोरक बजारमे एगारह-बारह बजे रातिमे दुनू बेकती टहैल-बुलि डेरा अबै छी, आ ऐठाम-गाममे- तँ ने ओहन चलैक सड़क अछि, आ ने घरे-घर सटल बजार अछि, आ ने दिनोसँ बेसी चमकदार बिजलीक इजोत, तैठाम दुनू परानी जे दू दिस हएब, से चाहे जेतबे कालक लेल होइ, ओ नीक नहि, किएक तँ जखन क्षणमे तँ छनाक भऽ जाइ छै तखन ई तँ भेल दिनुका कलौक उपरान्तसँ लऽ कऽ बेरहटक कोन बात जे रौतुका भोजन विश्राम धरिक। तहूमे तीन सालपर एलौं हेन, गाम-घरक केहेन रूप-रंग बनल, केहेन चालि-ढालि आ केहेन चालि-ढालिक रस्ता-पेरा इत्यादि बनल, सभ अनभुआरे-अनभुआर अछि। मुदा ईहो तँ उचित नइ भेल जे सभ दिन दुनू परानी संगे टहलै-बुलै छेलौं आ आइ असगर भऽ गेलौं। ओना मनमे ईहो उठैत रहए जे अँगनासँ निकलैसँ पहिने पत्नीक मेघौन मनकेँ वौस ली मुदा ईहो होइत रहए जे विरह-वेदनाक वौसबक समए निसचित नइ अछि, जँ बेसी समए लगि जाएत आ माए केम्हरोसँ औती आ देखती तँ टोकिए देती ने जे की भेलह, किए ने गेलह। तखन की कहबैन जे

'कनी घरवालीकेँ वौसै छी। ..मन छटपटाए लगल जे की करी। मुदा लगले एकटा जुकती फुरल। फुरल ई जे जहिना रंग-रंगक विरह-वेदना होइ छै तहिना ने ओकरा-ले रंग-रंगक खरो-खाँहिंस होइ छै, तखन तँ भेल जे जइ रंगक खर होइ कि खाँहिंस तेकर पूर्ति होइ। काजक पूर्ति ने भारी अछि, किएक तँ ओकर विकल्प नइ छै, मुदा मनकेँ तँ से नइ अछि। जँ से रहितै तँ बाल-बोधक कानबक नोर सुखलो ने रहै छै आ तइसँ पहिने जँ किछु भेट जाइ छै तँ हँसौ लगैए। सएह सोचि कहलयैन-

"हाइ रे वा! अहाँ अखन तक तैयारो ने भेलौं हेन?"

पत्नी बजली-

"अहाँ कहनौं ते एको-बेर नइ छेलौं?"

ओना ओ अदहे जीए बजली। अदहा जीए बजैक कारण भेलैन नब जगहपर आएब। बंगलोर अपन कर्मभूमि छी, जँ बच्चाकेँ बारह बजे रातिमे कोनो उपद्रव-बात हेतइ तँ ओकर माइये-बाप ने ओझा-गुनी आकि कि डॉक्टर ऐठाम जाएत। मुदा ई तँ तइसँ हटल अछि, तहूमे बंगलोरमे अपने दुनू परानीक जुति-भाँतिमे जीबै छी, ऐठाम माइयक गारजनीमे आबि गेल छी। ओना पत्नीक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे जे रोग पहिने दबने छेलैन ओ दबि गेलैन आ दोसर रोग मनमे उठि एलैन।

..अनुकूल परिस्थिति देख बजलौं-

"दोसर साँझ धरि घुमि कऽ एबे करब।"

जखन डिबिया, लालटेन घर-अँगनामे टहलैए, वएह भेल दोसर साँझ। भाय, डिबिया कि लालटेन बिजली-बौल नइ ने छी, जे एकठामसँ दोसरठाम नइ टहलत। डिबिया तँ ओ डिबिया छी जे हाथमे बैस टहलैए। जरौला पछाइत सिरा आगूसँ उठैत घरसँ निकैल आँगन

पहुँच चारू दिशा देखैत अपन जगहपर आबि बैसैत अछि। ..अँगनासँ निकैलते मन भुतिया लगल। भुतिया ई लगल जे जखन माइयक मन मणि देखै छी तखन इजोत जकाँ बुझि पड़ैए आ नजैर जखन पत्नीपर अबैए कि आँखिक आगू अन्हार जकाँ भऽ जाइए।

केतबो मनकेँ बुझा-बुझा मनाबी तैयो किम्हरो-ने-किम्हरो चुपे-चाप ससैर जाए। फेर जखन काज दिस नजैर उठए तँ बुझि पड़ए जे अनेरे मनक मोइनमे डुबै छी। भाय, सरलाही गाम जा रामचन्द्रक परिवारमे चिट्ठी आ रूपैआ देब अछि तखन अनेरे मनक जंजालमे ओझरा रस्ता रोकि ठाढ़ छी। डेग उठबैक उत्साह मनमे भेल। आगू डेग उठिते पत्नीक संगीक रूप जेना आगूसँ आबि मनकेँ घेर लेलक। घेर ई लेलक जे जँ पत्नीकेँ बंगलोर जकाँ संगे लऽ चलब तँ लोकक नजैर लगत की नइ? नजैरियो तँ अपन-अपन होइ छइ। एहनो नजैरक तँ लोक छैथे जे गुरु तुल्य छैथ, माने जिनकासँ स्कूलमे पढ़ने छी, ओ जँ आगूमे पड़ि जेता तँ हुनका प्रणाम पाती कऽ पेबैन की नहि। बाट चलैत बटोही चाहे ओ पुरुख होथि आकि नारी, अपन-अपन लिंगानुकूल टोकनिहार- टोकनिहारि होइते छैथ, मुदा जखन पति-पत्नी दुनू संगे रस्ता धेने चलैत होथि तखन तँ समस्या उठि ठाढ़ होइते अछि। अखनो गाम घरमे पुरुख अपना काजे आ महिला अपना काजे फुट-फुट निकैलते छैथ। ओना, हाट-बजारक काज जे गामसँ हटलो अछि आ सटलो अछि, तैठामक रूप अलग होइ छइ। शहर-बजारमे दूर-दूरक लोक रहने अनेको रंगक चालि-ढालि, बात-विचार चलिते अछि, संग-संग ईहो तँ ऐछे परिवारसँ निरमित समाजक जे रूप-रंग होइ छै, से नइ छइ। मुदा समाजो निरमानक तँ यएह-टा रस्ता नइ अछि। हँ! ईहो अछि, ईहो ऐछे नहि अखनो गाम-समाजक यएह रूप-रंग अछि।

..अनेरे दलानक कोण लग मन वौआए लगल। मनकेँ समटैत

सरलाहीक रस्ताकेँ हिया कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे तीन कोस अबै-जाइमे डेढ़ घन्टा लगत, अदहा घन्टामे काज निपटाएब दू घन्टा भेल। अखन चारिए बजैए छह बजे तक घुमि कऽ चलि आएब।

गामक सीमानपर पहुँचते अपन गामसँ जेबा कालक सीमान मन पड़ि गेल जे गामसँ किए गेलौं? जखन पिताक देल पाँच बीघा जमीनमे सभ किछु छल। माने अन-पानि उपजैबला खेतसँ लऽ कऽ गाछी-कलम आ पाँच कट्ठाक पानिक एकटा डबरा सेहो तखन? ..सीमापर ठाढ़ भेल, ने आगू डेगे उठए आ ने मने मानए। मन ठमकल। ठमैकते उठल अही गामक ने हमहूँ बी.ए. पास पढ़ल-लिखल छी। हमरा सन-सन आरो बहुत गोरे छैथ, कियो डॉक्टर छैथ तँ कियो इंजीनियर, मुदा जइ गाममे जन्म भेल, की ओइ गाममे हमर खगता नइ छै आकि हमरे रहि कऽ जीबैक खगता नइ अछि? मुदा..!

आगू दिस डेगे ने उठए। मुदा लगले मनमे भेल जे जहिना बकरी चरौनिहार धिया-पुता बकरीकेँ चरैले खेतमे छोड़ि रस्तापर बैस गरदा-माटिक अँगना-घर बना गबैए जे 'खेलै छेलिऐ धुपै छेलिऐ रोपै छेलिऐ धान, मने-मन विचारै छेलिऐ जेबै जगरनाथ..।' तहिना किए ने डेगे-डेग रस्तो काटब आ मने-मन विचारबो करब जे बी.ए.पास केला पछाइत गामसँ किए चलि गेलौं! एतबो ने अपने बुझै छी जे जखन बी.ए. तकक बोध परिवारमे आबि गेल तखन ओइ परिवारक ऐगला सन्तानक लेल स्नातकक रस्ता भेट गेल। ओना, अनेको प्रश्न बीचमे अछि, मुदा ओ अखन नहि। गामसँ बेकतीकेँ हटने बेकतीक गुण सेहो हटि जाइए जेकरा बेच उपार्जन करैए। मनमे उठल- जगरनथिया गीत नचिते रहए, आगू विदा भेलौं।

जहिना डेग सरलाही गाम दिस बढ़ल तहिना मन पाछू उनैट अपना गाम दिस बढ़ल। बी.ए.क जखन विद्यार्थी रही, अर्थशास्त्रक

विद्यार्थी रही, अपन जे पैतृक सम्पैत अछि ओकर जखन अर्थशास्त्रीय तुलापर आँकी तँ बुझि पड़ए जे एकटा नीक परिवार बना ठाढ़ भऽ सकै छी। बिसवाससँ मन भरल रहए। ने नोकरी मनमे उठल आ ने परदेश सोझमे आएल। मुदा पछाइत?

..मन हहरए लगल। हहरैत सभ हरियरी झड़ि-झड़ि धरतीपर खसैत-खसैत खसि पड़ल। किए खसल? अखनो मन हारि मानैले तैयार कहाँ अछि जँ दस कट्ठा खेत अछि तँ पाँच गोरेक परिवारक भरण-पोषन किए ने हेराएल रहत। मुदा जँ अपनो ओइमे हेराएल रहब तखन ने। भरि दिन चौक-चौराहापर ताश भाँजब आ खेतमे हरियरी तकबै, से केना औत। ओहू वृत्तिमे घाटा थोड़े अछि, ताशेपर ने जुआ सेहो चलै छइ। अखनो मन कहि रहल अछि जे चाहे डॉक्टर होथि कि शिक्षक आकि आन-आन, सबहक खगता गाममे अछिए। मुदा धोखा भऽ गेल अछि जे सभ रेडीमेड तकै छिऐ। मुदा हमरा सेने एतबे नइ भेल, जखन हाँसू-खुरपी-कोदारि नेने खेत पहुँची तँ जहिना कनही गाइक बथान फुट कऽ बनबैए तहिना कनहा-कनही सभ तेते ने किचारलक जे लाजे गामसँ पड़ा गेलौं। कहू जे ई होइ जे छीतना सन लोक, जे मटिया तेल औंठा निशान लगा कऽ उठबैए, से मुहेँपर कहलक-

"घुरन भैया, अहाँ तँ पढ़ल-लिखल छी, अहूँ जखन घासे छिलबै तखन हमरा सन मुरुख आ अहाँ सन पढ़ल-लिखलमे की अन्तर भेल?"

छीतनाक बात सुनि मन छिड़िया कऽ जेना भ्रमित हुअ लगल। भ्रमित ई जे गाममे सभ छैथ, डॉक्टर-प्रोफेसर-शिक्षक इत्यादि, मुदा सभ जखन अपन पूर्वजक सम्पैतकेँ छोड़ि, गामकेँ छोड़ि बाहर चलि जाइ छैथ तखन जँ हम सोची जे गाममे नीक जकाँ परबरिस चलि

सकैए, ई केते दूर तक सम्भव अछि?

छीतनाक बात सुनि बकार बन्न भऽ गेल रहए। की जवाब दैतिऐ, जे जवाब छै से ओ बुझि नहि पबैत आ किछु कहि मनकेँ बहला दैतिऐ से अपन मन कबुल नहि करए। आइ धरि तँ अहिना सभकेँ सभ बहलबैत-फुसलबैत आबि रहल अछि। तहिना करब नीक होएत। मुदा तेतबे नहि भेल, रंग-रंगक गन्हकी कीड़ी हवामे सेहो उड़ए लगल। कियो, 'पढ़ै फारसी बेचै तेल' कहि ताना मारए, तँ कियो भुसकौल विद्यार्थी कहि हँसुआ-खुरपीसँ आगूक विचारे ने बुझलक। कियो बगदल मन कहि बताह बुझए, तँ कियो किछु, कियो किछु...। मुदा प्रश्न एकेटा अछि जे मातृभूमि आकि देशक धरती, जे सोना उगलैक गुण अपना पेटमे रखने अछि, तेकर दिशा-दशा की अछि, ई तँ विचारए पड़त। मुदा अपन हारल आ घरनीक मारल बजबो करब नीक नहियेँ अछि। एकेटा बुझू जे गामसँ हारि परदेश गेलौं।

सरलाही आ हमरा गामक बीच माधोपुर पड़ैए। अपन गामक सीमान टपि माधोपुर प्रवेश करिते रही कि की धिया-पुता आ की चेतन, जे रस्ता कातमे ठाढ़े रहैत वा कोनो काजे करैत रहैत, सबहक मुहसँ यएह निकलैत-

"केतए जाएब?"

ओना मनमे ईहो शंका होइत रहए जे अनेरे किए सभ पुछैए! जरूर किछ बात हेतइ। दस हजार रूपैआ संगमे अछि, जखने कहबै सरलाही जाइ छी, तँ पुछबे करत जे किए जाइ छी? झूठ केना बाजब! गाम-गामक छीछा तँ अखनो एहेन ऐछे जे असगर-दुसगरकेँ पाइ-कौड़ी लोक छीन लइए। ओना, रूपमे कनी बदलाव आएल अछि, बदलाव ई जे गाड़ी-सवारी बढ़ने कोनो बाल-बोधकेँ रस्तापर खेलाइएले वा ठाढ़े होइले कहत, आ जखने ओ तेज सवारी देख डरे

कानए लगत तँ अनेरे ओइ गाड़ीबला केँ रोकि जेबीक सभ पाइ जुरमाना तरे छीन लेत। खएर जे हौउ...।

मनमे उठल, प्रश्न तँ उनटौलो जा सकैए, जइसँ अपन तरी-घटी छीपा प्रश्नकर्तेक तरी-घटी किए ने बुझि लेब।

..कनियेँ आगू बढ़लौं कि एकटा अधबेशू महिला अपन अँगनाक मुहथैरपर ठाढ़ रहैथ, देखते पुछली-

"बाउ, केतए जाएब?"

रूकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलौं। मने-मन हियबए लगलौं जे की उनटा कऽ पुछिऐन। गर अँटल, बजलौं-

"अहूँकेँ कोनो काज अछि?"

हमर बात सुनिते ओ महिला बजली-

"नइ, अपना तँ काज नइ अछि, अहींक काजे बजलौं।"

हुनकर बात सुनि जिज्ञासा बढ़ल, बजलौं-

"से की?"

बजली-

"रस्ता धेने उत्तर-मुहेँ जा रहल छी, ऐ टोलक पछाइत सरलाही गामक सीमा छइ जे अखन बगदल अछि।"

बगदल की अछि! कोनो अरथे ने लगए। गामो बगदैए से पहिले दिन सुनलौं। ओना, बगदै-बगदैक अनेको कारण अछि। जइमे एहनो कारण अछि जे केतौ बेकती बगैद गाम बगदा दइए तँ केतौ गामे बेकतीकेँ बगदा दइ छइ। मुदा मनमे भेल अखन रस्ता चढ़ल छी, काजे जा रहल छी, घुमि कऽ आएबो अछि, अनेरे जे रस्ता-पेरामे अबेर कऽ लेब तखन या तँ काजे बिथुत हएत वा घुमि कऽ अबैमे अबेर हएत।

..बजलौं-

“दादी, की बगदल अछि?”

जहिना शास्त्र-पुराणक कथामे व्यासजी निमग्न भऽ प्रवचन करै छैथ तहिना दादी बजली-

“आइ पनरह दिनसँ सरलाहीमे माताक[1] आगमन भेल अछि, पहिने छोटकी भेल, पछाइत मैझली होइत अखन बड़की भरि गाममे पसरल छैथ, तँए कहलौं जे आगू नइ बढ़ू।”

दादीक बात सुनि थकमका गेलौं। थकमका ई गेलौं जे ई तँ चेचक बेमारी छी, जेकर इलाज एते उन्नैत कऽ गेल अछि जे जखने खसरासँ बेमारी शुरू होएत, तखनो रोकल जा सकैए।

ओना दादीक विचारक असर आनपर जे हौउ मुदा अपनापर ओते नइ पड़ल जे घुमि जइतौं। बंगलोरक अस्पतालमे देखल-सुनल इलाजो आ रोगो तँ ऐछे तँए केकरो-मुहेँ सुनलासँ अपनापर अबिसवास करी, सेहो नीक नइ बुझि पड़ल।

..बजलौं-

“दादी, बंगलोरमे रहै छी, एकटा संगीक चिट्ठी पहुँचाएब अछि।”

ओना हमर बात सुनि दादी ठमैक गेली मुदा सोलहन्नी पाछू नइ हटि बजली-

“बाउ, चारू-कातक देवघारा सभमे जे ओझहा सभ भाउ खेलाइ छैथ ओ सभ कहै छथिन जे सरलाही गामक लोक धरम-करम नइ करैए तँए गामकेँ भुजि कऽ खेबइ।”

ओना, दादीक बात सुनि हँसियो लगए मुदा अपनासँ उमेरदारक

[1] चेचक

ओही बातपर ने खुलि कऽ हँसी जे हँसबै-जोकर होइ। मुदा दादी तँ गम्भीर मुद्रामे कहि रहली अछि, तखन हँसब नीक केना हएत...। अपनाकेँ सम्हारैत बजलौं-

“चिट्ठी पहुँचाएब जरूरी अछि, तँए गाम तक तँ पहुँचबे अछि। ओना, जँ कियो रस्तामे भेटता तँ हुनको चिट्ठी थमा देबैन।”

कहि आगू बढ़लौं। सरलाही गामक सीमा टपि गेलौं मुदा ने गामक कियो आन गाम दिस जा रहल छला आ ने आन गामक गाम दिस। ईहो नइ बुझि पेलौं जे गामक सीमान केतए छइ। बढ़ैत गेलौं, बढ़ैत गेलौं। एक टोलक पछाइत दोसर टोलमे प्रवेश केलौं। संजोग नीक रहल, रस्तेपर रामचन्द्रक माए भेट गेली। हुनके पुछलयैन-

“रामचन्द्र ऐठाम जाएब।”

रामचन्द्रक माए बजली-

“केहेन काज अछि, हमहीं माए छिऐ।”

चिट्ठी आ रूपैआक चर्च करैत बजलौं-

“दरबज्जापर चलू, दस हजार रूपैयो अछि आ चिट्ठियो अछि।”

रामचन्द्रक माए बजली-

“एतै दऽ दिअ। गाममे माता पसरल छैथ, तँए चाहो-पानक आग्रहो नहियेँ करब।”

की बजितौं, रूपैयो आ चिट्ठियो दऽ देलिऐन आ दुनू हाथे प्रणाम करैत विदा भेलौं।

◌

शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016

बत्तीसोअना

शिवरातिक दिन। एकटा यात्री शीशीमे गाइक घी नेने कुशेश्वर स्थान जाइ छला। जइ गाइक घी छेलैन ओही गाइक कबुला केने छला जे ‘जँ सुहरदेसँ गाए बिआएत तँ घी चढ़ाएब।’ ओना गाए बीएला पछाइत पचीस ग्राम घी, शुरूहेमे बना शीशीमे रखि नेने छला, मुदा तेकरा तीन सालसँ ऊपर भऽ गेल। ताबे गाए दोसरो बीआन बिआएल।

ओना यात्री पढ़ल-लिखल सेहो छैथे। गामसँ कुशेश्वर धामक रस्तामे कमला आ कोसी दुनू धार पड़ै छैन। जइमे पुल नइ छै, नाहेपर लोक पार होइए। कोसी धार बेसी पेटगर अछि। ओना पेटगर कमलो अछि, मुदा कोसीसँ कम अछि। धारक पानिक वेग दुनूक एकरंगाहे अछि, माने वागमती जकाँ असथिर गतिए नहि चलैए ओइसँ बेसी तेज गतिए चलैए। ओना सभ धार गंगे दिसक रस्ता पकड़ने अछि, जे एक-दोसरसँ सटैत-सटैत पहुँचबो करिते अछि।

नाहपर दुइए गोरे छला, एकटा ओ पढ़ल-लिखल यात्री आ दोसर नाह खेबैत मलाह। उत्तरे-दच्छिने धार तँए पुबरिया भित्ता आ पछबरिया भित्ताक बीच नाह चलैत। पुरबरिया घाटपर ओ यात्री चढ़ला। ओना धार तँ धारे छी मुदा सन्मुख धारा पछबरिया भित्ता पकैड़ नेने अछि, तँए आधासँ बेसी पुबरिया भागक धारक पानिक वेग

सन्मुखसँ कनी कम गतिए चलिते अछि। नाहपर बैसते यात्रीक मनमे खुशी भऽ गेलैन। हेबो केना ने करितैन। निच्चाँ पानि आ ऊपर पुर्बाक हल्फी तैपरसँ अधडरेड़ मास फागुनक सुहावन रंग चढ़ले छइ। ओना सरस्वती पूजाक हिसाबे पचीस दिनक वसन्त सेहो भऽ गेल मुदा चैत-बैशाखक हिसाबे अखन वसन्तक जन्मो ने भेल छल। जे हौ.., धारक बीच नाह परक जे भिनसुरका मौसम अछि ओ तँ वसन्तोसँ वहार अछिए। जखन वसन्तक वसन्ती-हवासँ गाछो-बिरीछ कलशए लगैत, फुलाए लगैत तखन तँ मनुख-मनुखे छी किने। ऐगला मांगिपर पल्था मारि बैसल यात्री मलाहकेँ कहलखिन-

“भैया, तूँ फिजियोलोजी जनै छह?”

कानसँ तँ मलाह सुनलक मुदा उच्चारण मनमे उचरबे ने केलइ, जे कहितै फिजियोलोजीक विषय की छी? तँए वेचारा मलाह सुहरदे-मुहेँ बाजल-

“नइ।”

‘नइ’ सुनिते यात्रीक मन चढ़ल। चढ़बो केना ने करैत यएह ने छी जीत। जे जनैत अछि ओकर जीत भेल आ जे नइ जनैत अछि ओकर हारि भेल।

..चढ़ल मने यात्री बजला-

“तखन तँ तोहर पचीस प्रतिशत, माने चारिअना बुझहक कि चौथाइ, जिनगी पानिमे चलि गेलह!”

पचीस प्रतिशत तँ मलाह नइ बुझलक मुदा पानिमे चलि गेलइ, से तँ बुझबे केलक। मनमे एलै, जखन बारह बर्खक रही, बाप मरि गेल, तहियेसँ अही धारक पानिमे गुजरो करै छी आ दिवसो गमबै छी, तखन की भेल। मुदा प्रश्नक जवाब तँ देबेक अछि। बाजल-

“हँ से सएह।”

मलाहक जवाबमे यात्रीकेँ रस भेटलैन। रसाइत मने बजला-

“अच्छा, फिजियोलोजी नइ बुझल छह तँ कोनो बात नहि, साइकोलोजी जनै छह?”

मलाह बाजल-

“नइ।”

कोनो कि कोर्ट-कहचरी छिऐ जे बहसा-बहसी हएत, ऐठाम तँ एकटा पढ़ल-लिखल यात्री आ दोसर नाहक खेबैया- मलाह अछि...।

अपन निर्णए सुनबैत यात्री बजला-

“पचास प्रतिशत जिनगी भैया तोहर ओहिना चलि गेलह।”

मलाह बाजल किछु ने मुदा मुस्की मारलक।

यात्री फेर बजला-

“अच्छा भाय, जँ साइकोलोजी आकि फिजियोलोजी नइ जनै छह तँ कोनो बात नहि, बायोलोजी पढ़ल छह?”

मलाह मुहसँ किछु ने बाजल, खाली मुड़ी डोला देलक जे नइ। मुड़ी डोलबैक कारण भेलै जे कातसँ नाह सन्मुख धारामे पहुँचैपर भऽ गेल तँए नाहकेँ सिरा चढ़बैक रहइ।

यात्री बजला-

“पचहत्तैर प्रतिशत जिनगी तोहर बेकार भऽ गेलह!”

यात्रीक बात मलाह किए सुनत ओ तँ अपन आँखि-कान सिरा चढ़ैत नाहपर लगौने रहए। यात्रीकेँ चेतबैत मलाह बाजल-

“भाय, तैयार भऽ जाउ। हेलए अबैए?”

यात्री बजला-

“नइ।”

यात्रीक उत्तर सुनि मलाह आगू किछु नइ पुछि अखन धरि जे लग्गासँ खेबैत आएल छल ओकरा रखि मांगिक मथनीमे जे करूआरि बान्हि रखने छल, ओ दुनू हाथे दुनू करूआरिकेँ सिरा चढ़ैक सह दैत रहए। ओना नाह अखन बीचो-बीच, माने सन्मुखक तेज धारा आ मरियाक मन्द धाराक सिरा चढ़ि रहल छल।

हिया-हिया मलाह अपन आरा देख रहल छल जे कोन ठामसँ कटौलापर नाह घाट पकड़त। मुदा घाटो पकड़ब की असान अछि। ओ तँ खाली नाहे सम्हारला-टासँ नइ होइ छइ। मौसमक रूखि सेहो देखए पड़ै छइ। ओना जँ हवा शान्त रहल, धारक धाराक गति मद्धिम रहल, तखन नाह पार करैमे जे अनुकूलता रहै छै ओ हवाक गति तेज रहने वा धारेक गति तेज रहने नाहकेँ पार करब तँ उकड़ू भाइए जाइ छइ।

..हलाँकि ओहो उकड़ू कि कोनो एके रंग होइए, अनेको रंगक उकड़ू अछि। जँ केतौ हवा तेजे रहल आ धाराक गति धीमी रहल तँ ओ एक तरहक भेल, तहिना जँ केतौ धाराक धार तेजे अछि आ हवा अनुकूल अछि तँ ओइमे अनुकूलता बेसी आबि जाइ छइ, आ नहि जँ सोलहन्नी दुनू अनुकूल रहल तँ आरो बेसी अनुकूलता आबि जाइ छइ। तहिना जँ विधाताक बाम जकाँ दुनू प्रतिकूल रहल तखन कट-कट-विकट स्थिति बनि जाइ छै, जैठाम पार हएब कठिन होइ छै मुदा असम्भव नहि, सम्भवो छइ।

जहिना धारक सन्मुख धारा उग्र तहिना हवो उग्र रूपमे लपटए लगल। मलाह बुझि गेल जे आब नाह डुमबे करत। यात्रीकेँ मलाह चेतबैत बाजल-

“भाय साहैब, नाह डुबि जाएत। हम कुदै छी।”

जहिना छनमे छनाक कोनो घटना कए दइए तहिना यात्रीक

मनमे भेलैन।

..भयातुर होइत यात्री बजला-

“भाय हमरो जान बँचाबह। हमरा हेलए नइ अबैए।”

ओना, नाह अखन डोले-पत्ता कऽ रहल अछि, एको घोंट पानि नइ पीलक अछि। अपना जनैत मलाहक मन अखनो नइ थरथराएल छेलै मुदा ईहो तँ बुझले छै जे अनाड़ी यात्री जेते धारक धाराक करनी आ हवाक करनीसँ नइ डुमैए तइसँ बेसी अपना करनीसँ डुमैए। माने अनाड़ी यात्री तेते नाहकेँ डोलाएत जे एकभग्गू काइए देत।

..मुदा एहनो तँ यात्री छैथे जे नाहक मर्म, हवाक मर्म आ धाराक मर्मकेँ जनै छैथ...।

मलाह बाजल-

“भाय साहैब, जिनगीक धार उकड़ू-सुकड़ू दुनू चलैए। हम तँ बारहेअना डुमब, मुदा अहाँ बत्तीसोअना डुमब किए तँ अहाँकेँ पढ़ैओमे बहुत खर्च भेल अछि।”

◌

शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016

कचहरिया रोग

तीस सालक उपरान्त कचहरी गेल छेलौं। सेहो कोनो काजे नहि, घुमैले। कहब जे लोक घुमैले शहर-बजार-देश-कोस जाइए आ अहाँ कचहरीए गेलौं। कचहरीक माने जिला कार्यालय, जैठाम जिला न्यायालयसँ लऽ कऽ जिला कार्यालय तक अछि। ओना, अपन कोनो काज नइ रहए मुदा भातीज हालेमे मोटर साइकिल किनलक ओकरे ड्राइवरियो लाइसेंस आ गाड़ियोक लाइसेंस बनेबाक छेलै, वएह पुरान कचहरिया बुझि कहलक-

“काका, कनी चलू कोर्टसँ टहैल अबै छी।”

भाय! ऐठाम भ्रम नइ हुअए। कोर्ट टहलबक माने होइ छै बुड़िबककेँ फुसियाएब। सत बात ई छेलै जे कौलेजक शिक्षा ग्रहण केला पछाइत साल भरि पहिने श्रीकान्त नोकरी शुरू केलक। हमरे बात मानि बिआहमे गाड़ी नइ मंगलक। कहने रहिऐ-

“बौआ, केकरो देलासँ लोक केते दिन जीत, जीबैले अप्पन आशा रखी।”

एक तँ कौलेजसँ आनर्स डिग्री पौने श्रीकान्त अछि तैपर पहाड़ी धारक घाटक हरियर कंचन पानि जकाँ मनो रहबे करइ, मानि लेलक बात। चुपे-चाप मानियोँ लेलक आ मनोमे रोपि लेलक जे ‘जे अपना कमाइये नइ हएत ओ केकर दिनक किदैन चटने हएत।’ अपन

कमाइक (माने दरमाहाक एक अंश, माने काजक निर्धारित लक्ष्यक अनुकूल) शुरूहे माससँ रखैत गेल जे साल लगलापर पुरि गेलइ। ओही कमाइक मोटर साइकिल किनने छल।

जहिना नव कमाइक फल, तहिना जिनगीक नव ड्राइवर श्रीकान्त, तेकरा केना कहितिऐ जे 'बौआ, तोरा संगे नइ जाएब।' ओना, मनमे अपन तीस बर्ख पूर्वक स्मृति सेहो नाचि रहल छल। तँए कचहरी टहलबो नीक बुझि पड़ल। स्मृति छल गामक आन्दोलनी गौरीकान्त बहरवैया केना भऽ गेल।

एके गाम नहि मिथिलांचलक अनेको गाममे आ खाली मिथिलांचलेक गाम नहि, राज्यो आ देशोमे 1947 ईस्वीक स्वतंत्रता आन्दोलनक पहिनेसँ गाम-गामक धरतीक प्रश्न उठि गेल छल। माने जमीनक विवाद शुरू भेल। जे विवाद धरतियोपर उतरल। उतैरते सभ गाममे विवाद शुरू भेल, हमरो गाममे जमीनक शुरू भेल।

एक तँ नव स्वतंत्र देशक खुमार जन-जनमे नाचिए रहल छल। नाचि रहल छल ओ विचार जे जाबे अपन गामक उद्धार अपने नइ करब ताबे सामूहिक रूपमे देशक विकास नइ हएत। खेतपर जीनिहार जन-गण, कियो खेतबला, कियो बिनु खेतबला छैथे, जिनकर जीविकाक साधन मात्र खेतिये छैन। जमीनक हकक सम्बन्धमे अनेको कानून बनल, जइसँ जमीनक विवाद शुरू भेल। ओना, बकास्त जमीनक विवादो आ निपटानो स्वतंत्रेक समयमे माने 1947 ईस्वीसँ पूर्वे भऽ गेल छल, जइसँ केतेको गोरेकेँ जमीन हाथ लगलैन।

अनुकूल माहौल रहने तीस-पैंतीसटा नवयुवक संगठित भैलौं। संगठितक संग संकल्पित भेलौं जे बाहरक जे जमीनबला गाममे छैथ, हुनका अपनो गाममे जमीन छैन्हे। तँए अपन-अपन गामक उत्थान करू। ओना सोझगर विचार रहितो तीन साए बीघा जमीनक विवाद

गाममे फँसि गेल। हँसेरा-हँसेरी हुअ लगल। मुदा जहिना नवयुवक संकल्पित भऽ जगला, तहिना जगले रहि गेला। खेतक दखल-दिहानी जनबल करबैए, मुदा जमीनक तँ मूल सबूत कागत माने दस्तावेज खतियान मानल जाइए, तँए कोर्ट-कचहरीक झमेल ठाढ़ भऽ गेल। तीस बर्ख तक वियतनामे जकाँ गामोमे हँसेरा-हँसेरी होइते रहि गेल।

मुदा जे भेल से भेल, अन्तो-अन्त बहरवैयाक जमीन गौंआँक हाथमे आबिए गेल। ओना बेठेकान चलने गामोमे जँ एक दिस चकचकी देखै छी तँ दोसर दिस भकभकी सेहो अछिए। खएर.., जे अछि से अछि।

साढ़े नअ बजे कचहरी पहुँचल रही। मेला जकाँ कचहरीमे लोक। ओना कचहरियो नमहर अछि न्यायालयसँ लऽ कऽ एस.पी. कार्यालय आ समाहर्ता कार्यालयक संग आनो-आन केतेको कार्यालय अछिए।

गौरीकान्त मुंशीगीरी करैए। गौरीकान्त बच्चेसँ संगी रहि चुकल अछि। ओना दुनू गोरे संगे पढ़ै छेलौं मुदा ओ मैट्रिकमे फेल भऽ गेल जे दोहरा कऽ ने परीक्षा देलक आ ने पास केलक आ ने आगू पढ़लक।

मजिस्ट्रेटक ऑफिस कोठरीमे अछि, जइमे केसक सुनवाइ होइए आ ओसारपर गौरीकान्तक बैसार अछि। एकटा छोटे-छीन बक्सा रखने अछि, जइसँ दुनू काज लइए। टेबुल जकाँ ओइपर लिखबो करैए आ कागत-पतर सेहो रखैए।

हमरा पहुँचैसँ पहिनहि गौरीकान्त पहुँच गेल छल। बारह-चौदह गोरे काज करबैले सेहो बैसल छला। मोथीक चरिहत्थी बिछानपर बैसल गौरीकान्त, हमरा देखते बाजल-

"भाय साहैब, अहूँकें कचहरी बिसरल नइ जाइए!"

काज करौनिहार मोकिर सभ हमरे दिस ताकए लगला।

ओसारक बगलेमे श्रीकान्त गाड़ी लगौलक। ओना मने-मन गौरीकान्तपर तामस उठल रहैए। तामस ई उठल रहैए जे जखन गाममे सभ मिलि जमीनक आन्दोलन केलौं, गौंआँक हाथमे बहरवैयाक जमीन आएल, तखन तँ गामक आमदनीक एकटा स्रोत भेटल किने। जहिना तीसो नवयुवक गामक उत्थानक लेल प्रतिज्ञा केलौं तहिना ने ओकरा निमाहबो अछि। जेना- खेते अछि, ओकरा ताम-कोर नइ करबै, ओकरा उपजेबै नइ तखन ओकर महत्ते की भेल। जहिना उपजाउ भूमि धनक बखारी छी तहिना बिनु उपजेने तँ माटिए छी किने? मुदा तामसकें मनेमे पचबैत बजलौं-

"अँए हौ गौरी सरकारक कचहरी छी, सबहक सझिया छी, तखन बिसरब नीक हएत?"

कहैत ओसारपर चढ़लौं। जीवनी पनखौक जकाँ पनबट्टीमे पान गौरीकान्त रखने रहए। ओसारपर पहुँचते अपना बगलेमे एक आदमीकेँ कनी घुसका जगह बनबैत बाँहि पकैड़ बैसौलक। बैसते पनबट्टी आगूमे दऽ देलक। ओकरो बुझले छइ। पान मुँहमे लइते बजलौं-

"गौरी, एकटा काजे आएल छह?"

ओना गौरीकान्त श्रीकान्तकेँ सेहो चिन्हते अछि। हमरापर सँ नजैर हटा गौरीकान्त श्रीकान्तकेँ पुछलक-

"बौआ, केहेन काज अछि?"

गाड़ी देखबैत श्रीकान्त बाजल-

"एकरे लाइसैंसे कराएब अछि आ अपनो ड्राइवरी लाइसेंस बनाएब अछि।"

गौरीकान्त–

"एक दिनमे काज नइ हएत। आठ-दस दिनक पछाइत दुनू काज हएत। ऐगला शनिकेँ जे गाम आएब ते तोहर दुनू कागत नेने एबह।"

सुढ़ियाइत काज देख गौरीकान्तकेँ पुछलिऐ-

"अखन गाड़ी-सवारीक बड़ कड़ाइ भऽ गेल छै तइ बीचमे ने तँ कोनो गड़बड़ हएत?"

गौरीकान्त बाजल-

"पहिल जे काज अछि आवेदन देब, ओ तँ आइए कऽ लेब। काजत एडमिट आइए भऽ जाएत। जखने काजत एडमिट भऽ गेल तखनेसँ अहाँकेँ अधिकार भेट गेल। तँए कोनो तरहक बाधा बीचमे उपस्थित नइ हएत।"

श्रीकान्त-

"केना की करए पड़तै?"

गौरीकान्त बाजल-

"किछु ने करए पड़तै। निचेनसँ बैसह, टिफीनक समैमे तोहर काज हएत। अखन कनी कोर्ट सभमे हाजरी लगबैक अछि तँए पहिने ओ सम्हारि लइ छी।"

कहि गौरीकान्त मोकिर सबहक संग उठि कऽ विदा होइत बाजल-

"बौआ श्रीकान्त, तूँ अनाड़ी छह, भाय साहैबकेँ एतै रहए दियौन, अराम करता आ तूँ हमरा संगे चलह। "

असगरे रहि गेलौं। ओछाइन देख मन हुअए जे ओंघरा जाइ, मुदा लोकक तेते आबा-जाही रहै जे धाँगिए दइत तँए देवालमे ओङैठ गेलौं। कोर्ट सभ शुरू भेल। कोनोमे जमानत तँ कोनोमे गवाही गुजरए

लगल।

बगलेक कार्टमे (माने प्रथम श्रेणीक मजिस्ट्रेट ऑफिसमे) गुन-गुनी शुरू भेल। गुन-गुनी बढ़िते गेल। धीरे-धीरे हल्ला हुअ लगल-

"जे आदमी ट्रेनपर सँ कुदि पुलिसक हाथसँ पड़ा गेल छल, ओ तीन मासक पछाइत फेर पकड़ा गेल, ओकरे पेशी छिऐ।"

कोनो अरथे ने लगल। ट्रेनसँ कुदि कऽ पड़ा गेल। देखते छी जे पौकेटमारो पॉकैट मारि ट्रेनसँ कुदि जाइए। मने-मन गुनधुन करिते रही कि गौरी कान्त सेहो पहुँचल। पुछलिऐ-

"गौरी, एना चहल-पहल किए भऽ रहल छइ?"

तैबीच ईहो देखिऐ जे आरो लोक सभ आबि रहल अछि। जइ ओसारपर बैसल रही, ओही कोर्टमे पेशी रहइ।

लोकक आवाही भीड़ देख गौरीकान्त बाजल-

"भाय साहैब, ऐठाम बैसब कठिन भऽ गेल। देखै छिऐ सभ एम्हरे अबैए।"

हमहूँ उठि गेलौं, गौरीकान्तो ओछाइन समेट देवाल लगा ठाढ़ कऽ देलक आ बक्साकेँ देवालसँ सटा कऽ रखि अपनो ठाढ़ भऽ गेल।

पुछलिऐ-

"केहेन ओ आदमी अछि जे ओकरा देखैक एते जिज्ञासा लोककेँ छइ?"

गौरीकान्तकेँ जेना रटले पाठ रहै तहिना सुनबैत बाजल-

"भाय साहैब, बम्बैया हीरो छी।"

एक तँ ओहिना मनमे ओझरी लगल छल जे ट्रेनसँ केना कुदलै, तैपर सँ बम्बैया हीरो कहि गौरीकान्त आरो ओझरा देलक।

पुछलिऐ-

"की बम्बैया हीरो, गौरी?"

गौरीकान्त बाजल-

"एक्सप्रेस ट्रेनक छतपर बैसा जयनगरसँ दूटा सिपाही पकैड़ कऽ नेने अबैत रहै, जखन खजौली सिके आएल कि छतेपर सँ कुदि कऽ पड़ा गेल।"

गौरीक बात सुनि मनमे ठहकल, एक तँ रेलबे बगलमे ओहिना रोड़ी-पाथर छिड़ियाएल रहैए तैपर चलैत ट्रेनमे एते ऊपरसँ कुदि कऽ पड़ा गेल, ई तँ बलिहारी भेबे केलइ।

ओना, ऑफिसोक सभ स्टाफकेँ जिज्ञासा रहैन जे पहिल दिन एहेन पेशी हएत। अपनो जिज्ञासा भेल जे ओकर कनी चेहराक लम्बाइ-चौड़ाइ देखिऐ। मुदा मेला जकाँ लोक। एक दिस सिपाही सभ रस्ता बनबैत दोसर दिस लोक भरि जाइत।

चारिटा सिपाही आगू-पाछू भेल बीचमे ओइ ओदमीकेँ नेने कोर्टक गेटपर पहुँचल। एक तँ लोक अढ़ केने, तैपर चारू सिपाहीक बीच तेना झँपाएल रहै जे देखबे ने केरिऐ। मुदा गर लगल, ओसारक खिड़की देने कठघरामे देखलिऐ। चेहरा देख क्षुब्ध भऽ गेलौं जे एते साहस नान्हिटा छौड़ामे केना आबि गेल। मजिष्ट्रेट साहैब सेहो एक नजैर ओकरा चेहरापर देथिन तँ दोसर नजैर अपन आगूमे राखल कागतपर। ई ताँइए ने कऽ पाबि रहल छला जे जे अपन जानक बाजी अपराधी जिनगीमे लगा रहल अछि ओ जँ अपन जिनगीक कर्म-धर्ममे लगबैत तँ ओ केहेन कर्मनिष्ट बनि सकै छल। मुदा..!

अपन विचारकेँ मने-मन घोंटैत मजिस्ट्रेट साहैब आँखिक इशारासँ बाहर जेबाक आदेश देलखिन।

चारू सिपाही गेटपर आबि हथकड़ीक संग डाँड़मे रस्सा लगा जेल दिस विदा भेल। टिपीन भेल। आग्रह करैत गौरीकान्त बाजल-

"भाय साहैब, कोर्ट-कचहरी छिऐ ऐठाम कि चाहो-पान करैक छुट्टी होइए। अपने पनबट्टी रखने छी तँए पानक तुक मेटबै छी। चलू कनी घुमियौं-फिर लेब आ चाहो-पान कऽ लेब।"

सएह केलौं। चाह-पान करैत परिवहन कार्यालय पहुँचलौं। हुण्डे सभ गप भऽ गेल। आठ दिनमे दुनू काज भऽ जाएत।

परिवहन कार्यालयसँ निकैल श्रीकान्तकेँ कहलिऐ-

"बौआ, पाइ-कौड़ीक लेन-देन छी, अहीले दुनियाँमे एते दुसमनी छै, तँए तीनू गोरेक बीच सभ किछु झाड़ि-ओसा कऽ फरिछा लएह। सभ अपने छी तँए पछाइत कोनो बिहंगरा ने हुअ।"

बिच्चेमे गौरीकान्त लोकि लेलक। बाजल-

"ऐ सबहक शंका मनमे अनेरे करै छी।"

तीनू गोरे आबि गौरीकान्तक बैसकीपर बैसलौं। तीनियेँ गोरे रही। कोर्टोक काज जेना ठंढा गेल रहए। एक तँ पहिनेसँ ठंढाएल अछि जे एगारहटा कोर्टमे आठटा खालिए अछि। गौरीकान्त बाजल-

"भाय साहैब, आइ रहि जाउ। अपन घरो-दुआर देख लेब आ भरि मन गपो-सप्प करब।"

ओना गौरीकान्त तीस बर्ख धरि संगे-संग गामक लड़ाइमे रहल। संगेटा नइ रहल कोर्ट-कचहरीक काज करैत-करैत एते सीखियो लेलक जे मुंशीगीरीसँ अपन गुजर नीक जकाँ कैयो रहल अछि। मुदा लगले मन तुरैछ गेल, तुरैछ ई गेल जे जहिना स्वतंत्र देश भेने देशक बेवस्था देशवासीक हाथ आएल तहिना ने गामोक बेवस्था गौंआँक हाथ आएल। ओ बेवस्था केना समाजक बीच संचालित हुअए, ई तँ समाजे ने करता। नव स्वतंत्र देश जे हजारो बर्खक विदेशी शासकसँ मुक्त भेल, ओ केना आगू-मुहेँ चलत, ई तँ समाजेक लोक ने जीवन-मरणक बीच करता। तहूमे ओहन लोक जिनकर मन समाजक संग

चलए चाहैए। सोभाविको अछि जे समाजक उन्नैत भेने, सबहक उन्नैत होइते अछि। मुदा आइ तँ अपने जिनगीक ओइ पड़ावपर पहुँच गेल छी जेतए केते गोरे मरियो गेला आ केते गामो छोड़ि कऽ चलि गेला।

ओना तीन बजैत-बजैत काज भऽ गेल छल मुदा दुपहरियेक रौद जकाँ रौद देख किछु काल रूकिए जाएब नीक बुझलौं। नीको केना ने बुझितौं, भेल तँ एक घन्टाक रस्ता गामक अछि तइले अनेरे तीन बजेक रौदमे पाकब नीक नहि।

◌

शब्द संख्या : 1650, तिथि : 12 सितम्बर 2016

दिन घटि गेल

जगरनाथपुरी-जयनगर एक्सप्रेससँ चारि बजेमे सकरी उतरलौं। चालीस-पचास गोरेक कफला छल। ओना हमर गाम छोटे सन अछि जे रामपुर पंचायतमे पड़ैए। डेढ़-दू साए परिवारक गाम अछि जइमे सात-आठ जाति वास करै छी। सातो-आठो जातिक लोक जगरनाथ गेल छेलौं। सकरीमे गाड़ीसँ उतैरते मनमे उठल जे अखन धरि तँ यएह चलैन रहल अछि जे जगरनाथसँ घुमि एला पछाइत समाजमे भोजो आ सत्यनारायण भगवानक पूजो करए पड़ै छइ। जाधैर से नइ केने रहल ताधैर अछूत मानल जाइए। पूजो आ भोजो केला पछाइत पूर्बवत रूपमे अबैए।

चालिसो-पचासो गोरे सकरीक बड़ी लाइनक एक नम्बर प्लेटफार्मपर उतैर गाम दिसक गाड़ीक भाँज लगबए लगलौं। सकरी-निरमलीक बीच छोटी लाइनक गाड़ी अछि। स्टेशनक पूछ-ताछ ऑफिससँ भाँज लगल जे तीन नम्बर प्लेटफार्ममे निरमलीक गाड़ी लागल अछि।

एक नम्बर प्लेटफार्मसँ पुल टपि तीन नम्बर प्लेटफार्ममे सभ पहुँचलौं। गाड़ी खुजैमे आधा घन्टा देरी रहइ। सौंसे गाड़ी खालीए छल। प्लेटफार्मपर पहुँच पाछूसँ आगू धरि गाड़ीकेँ देखए लगलौं। मात्र तीन गोरे गाड़ीमे बैसल छला। तीनू गोरे तीन कोठरीमे छला। ऐगला

कोठरी लग गेलौं कि नजैर रामखेलौन भायपर पड़ल। ओहो असगरे बैसल बाहरे दिस तकैत रहैथ। हुनको नजैर पड़लैन।

नजैर पड़िते रामखेलौन भाय बजला-

“आबह, आबह, अही कोठरीमे आबह। सौंसे खालीए छइ। भने दुनू भाँइ हब-गब करैत रस्ता काटि लेब।”

अपन झोरा खिड़की देने बढ़बैत कहलयैन-

“ताबे झोरा सीटपर रखि दियौ। एकबेर टहैल कऽ देख लइ छी जे कियो निच्चाँमे ने तँ रहला।”

रामखेलौन भाय झोरा सीटपर रखि देलैन आ अपने पाछू-मुहेँ टहैल-टहैल देखए लगलौं। खाली गाड़ी, सभ कियो चढ़ि गेला छला।

सौंसे गाड़ी टहैल कऽ देख लेला पछाइत मनमे सवुर भेल जे जहिना सभ हरे-हरे कऽ जगरनाथ विदा भेलौं तहिना सभ आपस सेहो आबि गेलौं। मुदा एते तँ भाइए गेल जे जगरनाथ जाइसँ पहिने आ एला पछाइतमे नजरियो आ विचारोमे किछु ने किछु उन्नैत तँ भेबे केलैन अछि। अपन गाड़ी, माने अपन गाम पहुँचै आ गामसँ बाहर जाइक गाड़ीमे बैसते मनमे विचार तँ बसिये गेलैन जे हँसी-खुशीसँ जहिना यात्रापर निकलल छेलौं तहिना हँसी-खुशीसँ गाम पहुँचियो गेलौं। तँए किनको मनमे ई नइ होइत रहैन जे पनरह दिनक थकानसँ देहमे कोनो दर्द-पीड़ा अछि। जेना सभ किछु मेटा गेल होइन।

पहिल सीटी गाड़ी दऽ देलक। ओना, प्लेटफार्म खलियाएले रहै मुदा पान-पराग, शिखर, लबनचुस, चीनियाँ बदामबला सभ एक-दोसर डिब्बामे चढ़ए-उतरए लगल। हमहूँ आगू-मुहेँ ससैर ऐगला कोठली लग पहुँचलौं। रामखेलौन भाय कहलैन-

“आब ऊपरे चलि आबह।”

अपना मनमे होइत रहए जे कियो निच्चाँमे ने तँ छुटल छैथ। मुदा से नहि, सभ चढ़ि चुकल छला।

दोसर सीटी दैते डिब्बामे चढ़ि रामखेलौन भाय लग जा बैसलौं। ओना, किछु गोरे ओहूमे चढ़ि गेल छला, मुदा ओ सभ दोसर भागक ब्रेंचपर छला। बैसते रामखेलौन भायकेँ कहलयैन-

“भाय, एकबेर पान खा लइतौं।”

रामखेलौन भाय बजला-

“आब, पान-तानक झमेल छोड़ह। तमाकुल संगेमे अछि।”

कहि रामखेलौन भाय जेबीसँ चुनौटी निकालि हाथमे थमा देलैन। हाथमे तमाकुलक चुनौटी अबिते मन जेना फुला गेल। बजलौं-

“भाय, सकरीकट छी आकि..?”

रामखेलौन भाय बजला-

“नइ, समस्तीपुरबला बड़की छी।”

तमाकुल चुनबए लगलौं। दुनू भाँइ तमाकुल खा पहिल थूक फेक गप-सप्प शुरू केलौं।

कहलयैन-

“भाय, गाम-घरक हाल-चाल की अछि?”

ओना ‘हाल-चाल’ सुनि रामखेलौन भाय कनी ठमकला। मुदा जेना तैराशिक गणित होइए, माने एकटा गुणा, एकटा भाग केने उत्तर आबि जाइए तहिना हिसाब बैसबैत रामखेलौन भाय बजला-

“बड़बढ़ियाँ।”

ओना, रामखेलौन भाय समाजक एकटा प्रवुद्ध बेकती छैथ, तँए हुनक सोचै-विचारैक अपन नजैर छैन। गामक बीच अनेको समाज अछि। किसानक अपन समाज अछि जे माटि-पानिसँ लऽ कऽ अन-

पानि उपजबै तकक अछि। तहिना ठको-फुसियाहक अछि। तहिना पढ़ल-लिखलक सेहो अछि। अनेको तरहक समाज, समाजक बीच अछि। सबहक अपन-अपन हानि-लाभक जिनगी छइ। ..जैठाम अनेको रंगक जिनगी रहत तैठाम एक रंगक समाचारो केना हएत।

ओना रामखेलौन भाय ‘बड़बढ़ियाँ’ बजला, मुदा अपने हुनकर ‘बड़बढ़ियाँ’ नइ बुझि पेलौं। दोहरबैत बजलौं-

“हमरो गाम दिस गेल छेलौं?”

रामखेलौन भाय बजला-

“परसुए ‘मोहनपुर’ गेल छेलौं आ काल्हि फेर अबै छी।”

परसुका नाओं सुनि मनमे भेल जे अपनो गामक हाल-चालक भाँज लगि जाएत। मन असथिर भेल। गाड़ीमे बैसले छी, घन्टा भरि दुनू भाँइ संगे रहब। कहलयैन-

“हँ, हँ, सबेर-सकाल आएब। बहुत दिनक गपो-सप्प पछुआएल अछि।”

ओना हाल-चाल पुछैक कारण अभ्यन्तरमे ई छल जे चालीस-पचास परिवारक लोक एक संगे जगरनाथ गेल छेलौं। गाममे अखन तकक जे बेवहार अछि जे बिना जगरनथिया भोज आ सत्यनारायण भगवानक पूजा केने, अपनो परिवारक लोक अछूत बुझि खेबा-पीबासँ परहेज करैए। मुदा जैठाम गामक पाँच-दस परसेन्ट–माने दू-चारिअना–लोक जाइ छला तैठाम ने एहेन सबाल उठै छल। मुदा से तँ नइ भेल अछि। सभ टोलक सभ जातिक लोक छैथ, जएह गामक समाज भेला सएह सभ ने छैथ, तखन छूत-अछुतक प्रश्न केतए अछि..? मने-मन विचारिते रही कि रामखेलौन भाय बिच्चेमे पुछलैन-

“केहेन यात्रा रहलह, रामसुनर?”

जहिना रामखेलौन भाय पुछला तहिना लगले सूरे हमहूँ उत्तर देलिऐन-

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि तँ देलिऐन मुदा लगले मनमे उठल जे ई की जवाब देलिऐन? ई तँ किछु ने भेल! मुदा जेना हमर बात रामखेलौन भाय बुझि गेला तहिना बातकेँ खोधैत बजला-

"तीन राज्य–बिहार, बंगाल आ उड़ीसा भ्रमण केलह अछि, आ सोझे कहै छह 'बड़बढ़ियाँ'?"

अपन विचारकेँ दबैत बजलौं-

"भाय, काल्हि तँ एबे करब। अखन थकलो छी आ बहुत बात अगुआइयो-पछुआइयो गेल अछि, जे निचेन भेलापर सेरिया जाएत। तखन सविस्तर सभ समाचार कहब।"

रामखेलौन भाय मानि गेला। विचार बदलैत बजला-

"पहिने जकाँ आब लोक जगरनाथ कहाँ जाइए।"

रामखेलौन भाइक जिज्ञासामे आरो सह दैत बजलौं-

"से की भाय?"

"पहिने देखै छेलिऐ जे गाम-गामक लोक जगरनाथ जाइ छला। जे सुभ्यस्तगर छला ओ गाड़ीसँ जाइ छला आ जे गरीब-गुरबा छला ओ जत्था बना, जगरनथिया बेंत नेने, गीत गबैत पएरे जाइ छला। जिनका अबै-जाइमे छह मास लगि जाइ छेलैन।"

ओना अपनो देखनहि छी मुदा रामखेलौन भाइक मनमे की बात छैन, से तँ वएह बुझै छैथ। ओ बिना खोद-वेद केने केना बुझब..।

रामखेलौन भाय, पिसियौत भाय छैथ। छह मासक जेठ सेहो छैथ। ओना दुनू भाँइक गामक दूरी तीनियेँ कोस अछि। खाली मिड्ल

स्कूल तक दुनू भैयारीक पढ़ाइ एक स्कूलमे नइ भेल, मुदा हाइ-स्कूलसँ कौलेजक बी.ए.ऑनर्स तक, दुनू भाँइ संगे पढ़लौं। मिड्ल स्कूल तक फुट-फुट रहैक कारण छल, जे हुनको गामक बगलेमे-एक किलोमीटरपर–मिड्ल स्कूल छैन, जइमे बच्चासँ लऽ कऽ मिड्ल तक पढ़ाइ होइ छै, आ अपनो सएह अछि। मुदा हाइ-स्कूल दुनू गामक बीचमे अछि, तँए दुनू भाँइ अठमेसँ संग भेलौं। ओना, पढ़ैयो-लिखैमे आ बजैयो-भुकैमे रामखेलौन भाय, सभ दिन बीस रहला। मुदा आन विद्यार्थी जकाँ रामखेलौन भाय, परीक्षा पास करै दुआरे–नीक रिजल्टक खातिर–कोनो विषय केकरोसँ चोरा-छिपा कऽ नइ रखै छला। एतेक छोट भाइक होइक नाते दुलार-पियार छेलैन्हे। कोनो-ने-कोनो विषयक चर्च करैत पुछिते छला आ अधखिज्जू समझकेँ पुरैबते छला। मिसियो भरि कहियो रामखेलौन भाइक मनमे नइ उठलैन जे रामसुनरक रिजल्ट हमरासँ नीक नइ हौउ। मुदा हम तँ अपने पढ़ै-लिखैमे कनी धिमर रही तँए हुनकर बराबरी कएल नइ हुअए। ओना जइ डिवीजनसँ रामखेलौन भाइ पास करै छला तहिना हमहूँ छेलौं। मुदा पचीस-पचास नम्बर कम तँ अबिते छल। कहलयैन-

"भाय, आब तँ ने ओ देवी रहली आ ने ओ कराह। आब तँ बुझि पड़ैए जे हमरे गामक लोकमे उखमज उठल आ हरे-हरे कऽ चालीस-पचास गोरे संगे जगरनाथ गेलौं।"

विचारकेँ मानैत रामखेलौन भाय बजला-

"हँ से तँ भाइए गेल अछि।"

विचारक सह पबैत बजलौं-

"भाय, बुझि पड़ैए जेना जगरनाथ लोक बिसैर गेल।"

'बिसरब' सुनि रामखेलौन भाइक मनमे जेना कोनो नव विचारक पन्ना उनटलैन तहिना बजला-

"समाजक परिवेश बदैल गेल। देशक चारि महास्थानमे जगरनाथोक स्थान अछि। तैसंग गाड़ी-सवारीक सुविधा सेहो बेसी भेल अछि, लोकक आर्थिक स्थिति सेहो नीक भेल अछि, तथापि लोकक आबा-जाही कमि रहल अछि।"

रामखेलौन भाय आगू की बाजए चाहै छला से तँ बजबे ने केला। तैबीच आन कोनो बात बाजब उचित नहि बुझि पुछलयैन-

"से किए एना भेल, भाय?"

प्रश्नक गम्भीरताकेँ रामखेलौन भाय अँकलैन। तँए गम्भीर होइत मने-मन विचार करए लगला। हम मुँह-पर-मुँह आ आँखि-पर-आँखि देने रहलौं जे रामखेलौन भाय आगू की बजै छैथ।

अपन आँखि उठा रामखेलौन भाय आँखिपर देलैन। हमरा आँखिमे ओ की देखलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा हमरा बुझि पड़ल जे सौनक उमड़ैत-घुमड़ैत मेघ जकाँ बरिसैले आँखि टप-टप करै छैन। पहाड़ी नदीक पानि जहिना पहाड़पर सँ–माने ऊपरसँ–धड़धड़ाइत निच्चाँ उतरैए, मुदा समतल मैदानमे अबिते असथिर हुअ लगैए तहिना रामखेलौन भाय असथिर होइत बजला-

"बौआ, ओना तोहूँ कोनो बाल-बोध नहियेँ छह जे किछु कहि मनकेँ मना लेबह, तँए अपनो गौर करहक।"

रामखेलौन भाय की कहए चाहै छैथ आ की कहि देलैन, से बुझबे ने केलौं। मुदा जहिना माता-पिताक सिनेही सन्तान, भाए-भैयारीक सिनेही भाए एक दोसरसँ कोनो बात छिपा कऽ नहि राखए चाहै छैथ तहिना ने कहियो रामखेलौन भाय अपन विचार रखलैन आ ने हमहीं कोनो बात छिपा कऽ रखै छी। ओना, परिवारमे आचारक विचारसँ किछु छिपा कऽ राखल जाइए मुदा ओ चाहे तँ परिस्थितिवश रहल वा तेतेक साधारण रहल जेकर कोनो असैर परिवारपर नहि पड़ैत

अछि। बजलौं-

"भाय, ओना अपनो कनी-मनी विचार करै छी, मुदा कोनो सत्य वस्तुए आकि सत्य बातेकेँ कनी-मनी खोदलासँ आकि कनी-कनी बुझला-विचारलासँ नहियेँ भाँजपर चढ़ैए तइले पोना पकैड़ जड़ि तक खोदए पड़ै छइ। बजलौं-

"भैया, जेना बुझि पड़ैए जे समैये बदैल रहल अछि।"

'समए बदैल रहल अछि' सुनि रामखेलौन भाय मने-मन विहुँसला। मुदा खुलि कऽ हँसला नहि। खुलि कऽ हँसबो उचित नहि बुझलैन। बाल-बोधक विचारपर हँसब जहिना केतौ नीक अछि, तहिना केतौ अधलो अछि। यएह सोचि रामखेलौन भाय हँसला नहि, मुदा विहुँसैत बजला-

"बौआ, आन बातकेँ अखन मनसँ हटा लएह। बैजनाथ-जगरनाथ दुइए धामक विचार करह।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"भैया, बरसपैत बाबा बेसी काल बजै छला जे भादवक पूर्णिमा दिन बैजनाथ बाबा बिदेश्वर धाम अबै छला, शिवराति दिन कुशेश्वर धाम अबै छला आ परात भने दच्छिन-मुहेँक रस्ता पकैड़ गंगा टपैत झारखण्ड पहुँच जाइ छला।"

हमर बात सुनि रामखेलौन भाय ठहाका तँ नहि मारलैन मुदा मनक खुशी मुहसँ जरूर निकललैन। बजला-

"बौआ, जहिना बैजनाथ बाबा झारखण्डक पहाड़पर वास करै छैथ, तहिना जगरनाथ बाबा सेहो समुद्रमे बसै छैथ।"

रामखेलौन भाइक बात नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, मुदा पहाड़ आ समुद्रमे दुनूक वास छैन, ई तँ सुनबे केलौं। बजलौं-

"से की भाय?"

मुस्कियाइत रामखेलौन भाय पुछलैन-

"जखन जगरनाथ गेल छेलह, तखन कोर्णाकक सूर्य-मन्दिर आ कबीर दासक खन्तीक दर्शन केलह की नहि?"

ओना, कोर्णाकक सूर्य मन्दिर आ समुद्रक किनछैरमे गाड़ल 'कबीर दासक खन्ती' सुनल जरूर छल मुदा तेहेन कफलाक संगमे छेलौं जे बिसैर गेलौं, तँए दर्शन नहि भेल।

कहलयैन-

"नइ!"

विचार बदलैत रामखेलौन भाय बजला-

"बौआ, लोकक विचारमे बहुत बदलाव आबि गेल अछि। विचारमे बदलाव भेने बहुत किछुमे बदलाव आबि जाइए।"

बजलौं-

"से की भाय?"

गम्भीर होइत रामखेलौन भाय बजला-

"पहिलुका विचारमे ई छल जे कोनो धाम लोक एक बेर जाइ छला, गोटे-गोटे ठाम दोहराइयो कऽ जाइ छला आ तेहराइयो कऽ जाइ छला–जेकरा तीरपेखैन कहै छला। मुदा तीन बेरक पछाइत नइ जाइ छला।"

गपक सहमे बजा गेल-

"से किए ने जाइ छला?"

"जहिना अपन देश तीर्थ स्थान, तीर्थ घाटसँ भरल अछि–माने नदी-सरोवरसँ–तहिना अपन राज्यक तँ नामे छी 'बिहार'। बिहार माने भ्रमण करैबला स्थान। अनेको देवस्थान, अनेको धर्मस्थान, अनेको

सरोवरक घाट आ अनेको नदीक तीरसँ भरल अछि। तैठाम एकहको बेर पहुँचब कठिन अछि।"

पुछलयैन-

"की कठिन अछि?"

रामखेलौन भाय बजला-

"लोकक जिनगीए केतेटा होइए। तहूमे तेते रास काज आगूमे पड़ल रहैए जे ओकरे सम्हारब कठिन छइ। तैठाम लोक घुमिये-फीरिये केते सकैए।"

मुहसँ खसि पड़ल-

"देखै छी, केतेको गोरे एहेन संकल्पे केने छैथ जे साले-साल कामौरक भार उठा बैजनाथ जाइ छैथ।"

रामखेलौन भाय बजला-

"हँ से तँ जाइते छैथ।"

रामखेलौन भायकेँ सूहकारिते बजलौं-

"तखन तँ यएह ने भेल जे बैजनाथ बाबाक दिन बढ़ि गेलैन आ जगरनाथक दिन घटि गेलैन।"

तैबीच गाड़ी लोहना स्टेशनक पछबरिया सिंगल लग आबि गेल। रामखेलौन भायकेँ एतै उतरब छैन। धड़फड़ा कऽ उठए लगला। ..रामखेलौन भायकेँ धड़फड़ाइत देख अपनो मन 'अपन गाम' पहुँच गेल। तैबीच रामखेलौन भाय बजला-

"बौआ, काल्हि सबेरे-सकाल आबि जाएब।"

कहलयैन-

"भाय, एकटा समाचार तँ बुझबे ने केलौं!"

"की?"

"सुभधी दादीक की समाचार छैन?"

सुभधी दादी रामखेलौन भाइक पिताक दीदी छथिन। हुनके ऐठाम बेसी अबरजात छैन। ओना, रामखेलौनो भाइक परिवारक हिसाबसँ आ गामोक समाजिक हिसाबसँ सुभधी दादी दादीए हेती। नब्बे बर्ख पार कऽ चुकल छैथ। मुदा अखनो बोलीमे जे टाँस छैन ओ ओहिना छैन जहिना समरथाइमे छेलैन। गामसँ निकलना पनरह दिन भऽ चुकल छल तँए हीक हुनकेपर छल...।

रामखेलौन भाय बजला-

"हुनके देखै दुआरे ने कौल्हुका प्रोग्राम बनौने छी। दस दिनसँ ओछाइन पकैड़ नेने छैथ।"

गाड़ी स्टेशनमे लगि गेल। रामखेलौन भाय गाड़ीसँ उतैर गेला।

दस दिनसँ सुभधी दादी ओछाइन धेने छैथ, तहूमे रामखेलौन भाय परसुए तकक समाचार कहलैन। काल्हि की आ आइ की भेल हेतैन, की नहि। मुदा अपनो औगतेने तँ नहियेँ हएत। मन गुनधुन करिते छल कि अपन स्टेशन पहुँच गेलौं।

गाड़ीसँ उतैरते मनमे भेल जे पहिने अपना ऐठाम नहि जा दादीए-सँ भेँट करबैन। ओना, गौँआँ सभ जे छला ओ सभ अपन-अपन काज, दोकान-दौरीक काजमे लगि गेला। अपनो देह हल्लुक भाइए गेल छल। हल्लुक ई जे आब तँ सभ गामक सीमामे पहुँच गेल छैथ। जाबे गामक सीमानसँ बाहर छला ताबैए तक ने एक-दोसरपर एक-दोसरक किछु भार छल। ओना, लोकक भार लोक थोड़े उठा सकैए, बेसी-सँ-बेसी संग-साथ दऽ सहयोग करि सकैए।

गाड़ीसँ उतैर गाम दिस विदा भेलौं। रस्तामे मन खट-खुट करए जे जाबे गाम नइ पएर देने छेलौं तैबीच जँ दादीक परान छुटि गेल

रहितैन तँ कोनो दोख नइ लगैत। किए तँ गाममे नइ छेलौं। मुदा गामक सीमानमे पएर देला पछाइत तँ पहिने हुनकर दर्शन कए लेब उचित। ओना, जगरनाथ जाइसँ पहिने जखन दादीसँ भेँट केलिऐन तखन तँ ओ एको बेर ई नइ कहलैन जे कोनो तरहक गड़बड़ी देहे कि मनेमे अछि। मुदा देहक कोन ठेकान अछि जे कखन केकरा की हएत। ओना, गामसँ कनी पाछूए रही कि रूपलाल भाय भेटला। भेटते अगुआ कऽ वएह बजला-

"यात्रा नीक रहलह किने, रामसुनर?"

कहलयैन-

"बढ़ियाँ रहल। सुभधी दादीक की समाचार छैन?"

रूपलाल भाय बजला-

"नीक छैन। तखन तँ नबे-एकानबे बर्खक उमेर भाइए गेल छैन, पाकल आम जकाँ कखन छैथ, आ कखन नइ छैथ, तेकर कोनो ठेकान थोड़े अछि।"

रूपलाल भाइक बात सुनि मनमे एते तँ बिसवास भाइए गेल जे दादी जीवित छैथ। से नइ तँ पहिने अपना ऐठाम पहुँच झोरा-झन्टी रखि भरि मन नहाएब, पछाइत बुझल जेतइ। ..घरपर अबिते हाथो-पएर ने धोने रही कि कुशले-समाचार होइत-होइत आँखि लगि गेल। थकान रहबे करए। ..परात भने, नित्य-कर्मसँ निवृत्ति भेला पछाइत चाह-पान खा दादीसँ भेँट करए विदा भेलौं।

..पुबरिया घरक ओसारपर दादी बैसल छेली। पहुँचते पएर छुबि गोड़ लागि पुछलयैन-

"दादी, मन नीक अछि किने?"

ओना अपन प्रश्न दादीक स्वास्थ्यसँ जोड़ल छल मुदा दादीकेँ की

अर्थ लगलैन की नहि, बजली-

"बौआ, दिन घटि गेल।"

'दिन घटि गेल!' किछु अरथे ने लगल। चौबीस घन्टाक दिन-राति सभ दिनसँ होइत आएल अछि आ आगुओ सभ दिन होइत रहत। तखन दादी की कहली? एक तँ ओहुना गाममे सभसँ बेसी उमेरक छैथ। जैठाम सत्तैर-अस्सी बर्ख पहुँचैत-पहुँचैत लोक मरि जाइए। तैठाम दादी नब्बे पार कऽ चुकल छैथ, तैयो कहै छैथ जे 'दिन घटि गेल!' ..मने-मन गुनधुन करी मुदा कोनो भाँजपर विचार चढ़बे ने करए। अपन मन अपने धिकारलक। धिकारलक ई जे जखन दादी सोझेमे छैथ तखन हुनकेसँ किए ने पुछि ली। कोनो कि अपनसँ कम उमेरक छैथ जे लाजो-संकोच हएत। बजलौं-

"दादी, अलंकारमे बाजि अनेरे वौआबै छी।"

दादी बुझि गेली। बजली-

"बौआ, दिन घटब भेल समैक दुरुपयोग करब। माने श्रमहीन समए गमाएब, से तँ उमेर पाबि भाइए गेलौं किने?"

ओना, अपना जनैत दादी अपन विचार कहि देलैन मुदा मनमे होइते रहए जे दिन घटब भेल गरीब हएब।

◌

शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016

मुड़ियाएल घर

जागेश्वर काका दुनू परानी दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस बेरुका चाह पीबै छला। फागुनक समए, परसु शिवराति छी। जाड़क सरपोख नहाएल समए वसन्ती रौद पेब सोलहन्नी तँ नहि मुदा आधासँ बेसी जाड़क जकड़न तियागि चुकल छल। एक तँ अढ़ाइ-तीन बजेक बेरुका समए, तैपर मन्द-मन्द पुर्बाक लहकी सेहो लहलहाइत। ओना चाहक रंग-रूप आ सुआदो आन दिनसँ नीक अछि। नीकक कारण अछि एक तँ बकेन महींसिक दूध तैपर जागेश्वर कक्काक भातीज जे दार्जिलिंगमे रहि चाहे कम्पनीमे नोकरी करै छैन, ओ आधा किलोक चाहक पॉकेट देने रहैन, वएह टटका चाहपत्ती।

ओना, बनौनिहारि पुतोहुक लूरिमे कोनो बढ़ोत्तरी नइ भेल छेलैन। मुदा काजोक तँ शुभ संजोग होइते अछि। भरिसक सएह सुधनीकेँ भेलैन, जइसँ चाहक सेखियो आ रंगो-सुआद नीक बनलैन।

जिराएल मन जागेश्वर कक्काक, तँए पहिने चारि-पाँच घोंट चाह एक-लखवाइत पीलैन। चारि-पाँच घोंट चाह पीला पछाइत जागेश्वर कक्काक मन फुरफुरेलैन। फुरफुराइते बजला-

"चाह तँ निम्मन बनल अछि मुदा एहेन सभ दिन हुअए तखन ने।"

जागेश्वर कक्काक बात सुनि रमणीकाकीक मन रमकलैन नहि,

असथिरे भेलैन। असथिर होइते पुतोहुक लूरिपर मन पहुँच नचलैन। नचिते उठलैन- जँ परिवारक भनसिया नीक भोजन, नीक भोजनक अर्थ नीक वस्तुए-टा नहि सुआदो, बनबैथ तँ भोजन केनिहारक मनो आ पेटो परिपूर्ण हेबे करत। जखने मनो आ पेटो परिपूर्ण हएत तखने ने बातो आ विचारोमे परिपूर्णता एबे करत, जइसँ खाइ-पीबैक झगड़ा परिवारसँ मेटेबे करत।

मुँहक चाहकेँ कण्ठसँ निच्चाँ उताइर रमणीकाकी बजली-

"गामक बहुत गोरे काल्हि जतरापर जेता।"

ओना जागेश्वर काकाकेँ सेहो केते गोरे तीन-चारि दिनसँ कहलकैन अछि जे शिवराति दिन वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करए चलू। तीन-चारि घन्टाक रस्ता टेम्पूसँ अछि। शिवरातिसँ एक दिन पहिने दुपहरक पछाइत विदा हएब आ चारि-पाँच बजे तक पहुँच जाएब। ओत्तै रातिमे विश्रामो करब आ साँझमे शिव उपासक फलहारो करब। मुदा जागेश्वर काका सबहक बात सुनैत गेला, किनको किछु कहलखिन नहि।

नइ कहैक कारण रहैन जे मने-मन उदयपुरक सभकेँ चिन्हते रहैथ, माने गौंआँ सभकेँ। जे केकरो जड़ि-छीपक ठेकान नइ अछि। बाजत किछ आ करत किछ। करनी-धरणी एहने रखने अछि आ दर्शन करत वाणीश्वरी भगवतीक।

मुदा विचारसँ उतैर जागेश्वर कक्काक मनमे एलैन जे जखन गामक लोक सभ जाइए रहला अछि आ अपनो केते दिनसँ विचारैत आबि रहल छी जे वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन दुनू परानी मिलि करब, मुदा ने कहियो गर लागल आ ने जा भेल।

..ओना रमणीकाकी वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक चर्च नइ केने छेलखिन, मुदा जतरासँ वएह मतलब रहैन। तैपर, जवाबमे जागेश्वर

काका कहलखिन-

"जखन गामक भेड़िया-धसान लोक दर्शन करए जेबे करता तँ अपनो दुनू परानी अही लाटमे चलि कऽ दर्शन कऽ लिअ।"

पतिक विचारसँ सहमत होइत रमणीकाकी मुड़ी डोलबैत बजली-

"भेल तँ शिवरातिसँ एक दिन पहिने जाएब आ शिवरातिक परात भने चलिए आएब। मोटा-मोटी दू दिन भेल।"

पत्नीक विचारमे सहमत जतबैत जागेश्वर काका बजला-

"हँ से तँ सएह भेल। काल्हि बारह बजेक पछाइत निकलब आ तेसर दिन बारह बजेसँ पहिने घुमि कऽ आबिए जाएब।"

पतिक विचारमे अपन विचार सटबैत रमणीकाकी बजली-

"जखन दुनू परानी घरसँ निकैल बाहर जाएब तखन बेटो-पुतोहुकेँ जना देब नीक हएत। ओना अपनो दुनू परानी बहुत दिनसँ, बहुत दिनसँ कि सभ दिने वाणीश्वरी भगवतीक आराधना-उपासना करिते आबि रहल छी तँए भगवतीए धाममे उपासक फलहारो करब तँ जिनगीक परीछे देब हएत किने।"

पत्नीक विचार सुनि जागेश्वर कक्काक मन फुला गेलैन। फुलाइते बजला-

"जखन उदयपुरक लोक जाइक मन बना लेलैन तखन संग-साथमे अपनो दुनू परानीक जाएब उचिते हएत। मुदा ओ सभ अपन-अपन सवारीक बेवस्था करता, अपना दुनू गोरे अलग बेवस्था करब।"

ओना जागेश्वर काका पत्नीक अभ्यन्तरक बात अपनो बुझै छला। अपना बुझैक कारण बेवहारिक छेलैन। बेवहारिक ई जे कहैले तँ सभ (गौंआँ) वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करए जेता मुदा घरसँ बाहर

धरिक जे बोली-वाणीक रूप बना नेने छैथ, से की अपने वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करता, ओ तँ अप्पन दर्शन भगवतीकेँ देथिन। मुदा जे हौउ, एके गाममे सभ रहै छी, मुदा...।

अपन विचारकेँ तहियबैत अबोध जकाँ जागेश्वर काका बजला-

"जेना-जे विचार हएत से करब।"

शुरूमे उदयपुर छोटे गाम छल। मुदा मिथिलांचलक घर-घराड़ीकेँ कमला-कोसीक बाढ़ि कम उपटान उपटौलक सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। केतेको निम्मन गामक मनुक्खक घराड़ी चौर भऽ माछ-कौछुक घराड़ी बनि गेल अछि जेकरो तँ नकारल नहियेँ जा सकैए। मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे बत्तीसोअना गाम अहिना भऽ गेल अछि। खएर जेतए जे भेल से भेल, मुदा उदयपुरक उदयमे सभ दिन बाढ़ि अछिए। ने यमुना तीरक उपद्रव आ ने कोसी-कमला घाटक घटवारिसँ भेँट, जइसँ गाममे कहियो कोनो विघटन किए हएत। तँए दिन-दिन बढ़िते गेल। आने-आन गामसँ उजरल-उपटल लोको आ उदयपुरक महत् बुझनिहारो तँ आबि-आबि उदयपुरमे बसले छैथ। तैसंग नव-नव एबो करिते छैथ। गाममे वास-भूमिक कमियोँ छइहे नहि जे घराड़ीक अभावक दुआरे कियो बसि नइ सकै छैथ, आकि अपनामे रग्गड़े-झग्गड़ करता। तँए कि गाममे निचरस खेत नइ अछि, कोनो धार-धूर नइ अछि, ओ गामे ने वास-भूमि भेल। तँए केतबो परिवार आन गामसँ आबि बसता तैयो उदयपुरमे वासक कमी नहियेँ हएत।

..अनुकूल मौसम बनने जहिना बरखा होइए, अनुकूल मौसम बनने जहिना वसन्त अबैए, अनुकूल मौसम बनने जहिना ठनका खसैए तहिना वास-भूमिक अनुकूलते ने घरवासकेँ गामवास सेहो बनबैए। जखने घरवास गामवास बनए लगैए तखनेसँ ने विचारवासी

विवेकवासी बनि वास करए लगैए। से तँ गाममे अछिए।

जहिना श्रीपंचमीमे वीणा पुस्तक-धारिणी सरस्वतीक आ हाथ सजलक संग लक्ष्मीक पूजा[2] एके दिन एके समए– प्रभात वेलाक शुभ मुहूर्त्तमे लोक करै छैथ तहिना ने जिनगियोक प्रभात वेला अछि।

वाणीश्वरी भगवती धामक धरमशालामे दुनू परानी जागेश्वर काका एकटा कोठली सबा रूपैआ दैछना दऽ कऽ लेलैन। तीन मंजिला मकानक नमहर धरमशाला ऐछे, जइमे छोट-पैघ अनेको कोठली भीतर अछि। उदयपुरक तँ मात्र पनरहे-बीसटा यात्री छैथ जे आनो-आनो गामक अनेको यात्री रहितो धरमशालाक किछु कोठली खालीए अछि।

ओना, धरमशालाक भाड़ा होटल आकि भाड़ाबला आन मकान जकाँ बेसी नहियेँ अछि। तेकर कारण अछि ई धरमशाला वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक छिऐन। जे स्थानक चन्दा-चढ़ौआसँ बनल अछि। भाड़ा नामक किछु ने छै मुदा ओकर रख-रखावक जे बेवस्थामे खर्च होइ छै, बस ओही रूपक भाड़ा बनल अछि।

सूर्यास्त भऽ गेल। स्थानक अप्पन बिजली बेवस्था, माने जेनरेटरक बेवस्था तँए स्थान भरिमे माने वाणीश्वरी भगवती-मन्दिरक संग आरो केते छोट-पैघ मन्दिरो तँ अछिए। तैसंग पण्डा-पुजेगरीक रहैक वासक संग नमहर धरमशालो अछि आ बीचक जे आँगन अछि, जइमे रंग-रंगक दोकान-दौरी अछि, तैबीच भरि राति एके रंगक इजोतक बेवस्था तँ चाहबे करी, जे अछिए। पावर-हाउसक बिजली जकाँ नहि, जे कखन रहत आ कखन नइ रहत।

..होइतो तँ ऐछे जे दिनमे जखन बिजली इजोतक जरूरत नइ रहै छै तखन बिजलियो रहैए आ रातिमे जखन अन्हार होइ छै तखन

[2] कृषि कार्य हेतु हर ठाढ़ कएल जाइए

रहबे ने करैए। तइसँ सैयो कच्छे वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक तँ अछिए। दिनमे जखन इजोतक खगता नइ रहै छै तखन जेनरेटर बन्न रहल आ जखन जेते काल खगता भेल, तेते काल चलल। यएह ने जिनगीक ओ उपलब्धिक पड़ाव छिऐ जेतए लोककेँ अपन जिनगीक काज अपना हाथमे आबि जाइए, जइसँ अपन मनोनुकूल कार्यक्रमक बीच जिनगीक चक्की चलैत रहैए।

सूर्यास्त होइते भगवतीक सिंह दुआरिक घड़ी-घण्ट बाजल। घड़ी-घण्ट बजिते सभ उपासी–शिवक उपास केनिहार आकि केनिहारि–क मनमे उपासनाक फलहारक आशा जगलैन। जहिना तुलसी बाबा कहने छैथ जे, जेहने जेकर मनक भाव रहत तेहने रामक दर्शनसँ भेँट हएत। 'रामो रामो' कहनिहारक कमी अछि, केतौ ठक-ठाकुर-चोर मिला जपैए तँ केतौ रस्ता-पेरामे रामक जप लुटाइए! लूटि लिअ जेकरा जे लूटैक अछि। भगवती स्थानक घण्टीक अवाज सुनि रमणीकाकीक मन चपचपाइत थलथला कऽ जलजला गेलैन। जलजलाइते पति दिस तकैत रमणीकाकी बजली-

"गामेसँ फलहारक सभ फल अनने छी। पहिने दुनू परानी नहा कऽ नव वस्त्र पहिर लिअ, पछाइत डाली साजि भगवतीक मन्दिरमे फल चढ़ा दुनू गोरे शिवरातिक उपासनाक फलहार कऽ लेब।"

होइते अहिना छै जे भूखल आगू किछु खेबाक वौस आ पियासल आगू पानि आबि गेलापर जहिना मनमे सब्रक बीजक अंकुर जगैए तहिना जागेश्वर काकाकेँ सेहो भेलैन। कोठलीक खिड़की खोलि जागेश्वर काका गौआँ यात्रीक कोठली दिस तकला तँ देखलैन जे किनको अपन घरक फलहारक फल नइ छैन, तँए सभ झोरा लऽ लऽ दोकान दिस जा रहल छैथ...।

अवसरक लाभ उठबैक परियास करैत, समयक उपयोग करैत

जागेश्वर काका बजला-

"नहेला पछाइत ने भगवतीक डाली सजब। अखन सभ यात्री फलहारक फल कीनैले दोकान-दौरी टहैल रहल छैथ, स्नानक घाट खाली अछि...।"

दुनू परानी जागेश्वर काका नहेला पछाइत नव वस्त्र धारण केलैन। पुरना वस्त्र घाटपर खीच-फखारि कऽ पानि गाड़ि कोठरीमे पसाइर लेलैन।

थर्मशमे गाइक दूध, पाकल केरा, दारीम, आ खीरा मोटरीसँ निकालि रमणीकाकी काकाकेँ कहलखिन-

"सभ अपने चास-वासक छी।"

एक तँ यात्राक पछाइत स्नानक सुख, तैपर सँ वाणीश्वरी भगवतीक सरोवरक घाट टपल जागेश्वर काका रहबे करैथ, मन गुदगुदा गेलैन। गुदगुदाइते बजला-

"भगवतियोकेँ अपन-चास-वासक फल देख मने-मन खुशी हेबे करतैन।"

ओना जागेश्वर काका संगी-साथी जकाँ वाणीश्वरी भगवतीकेँ बुझि बजला मुदा से रमणीकाकीकेँ नीक नइ लगलैन। ओना, अनसोहाँतो नहियेँ लगलैन, मुदा एक धान एक चाउर होइतो किछु एहनो तँ ऐछे जे सुगन्धित अछि, एकर माने ईहो नइ जे सभ सुगन्धिते अछि। मुदा ईहो केना कहल जाएत जे चाउरक जे अपन सुगन्ध अछि ओ कोनो चाउरमे नइ अछि। ओ तँ उपरारिमे उपजल सतरिया धानक चाउर हुअए कि तुलसी फुलक आकि चौरीमे उपजल बेलौर-दसरिया आकि पाखैरे-पिच्चैर किए ने हुअए मुदा चाउरक जे अपन गुण-धर्म-सुगन्ध छै ओ तँ छइहे।

ओना मने-मन जहिना जागेश्वर काका चाउर-गुड़ चिबबै छला

तहिना रमणियों काकी चिबैबते छेली, मुदा बजली नहि, अपन फलहारक ओरियानमे अपनाकेँ लगौने सभ फलकेँ ओरिया-ओरिया सैंत-सैंत डाली सजबैत रहली।

..डाली सजिते जागेश्वर काका टोन मारलैन-

“जे सभ फल वाणीश्वरी माएकेँ चढ़ेबैन से तँ मंत्र जकाँ कहि देबैन किने?”

ओना जागेश्वर कक्काक मनमे होइत रहैन जे भरिसक पत्नीकेँ ईहो बात नीक नइ लगतैन, मुदा से विपरीत भेल, रमणीकाकीकेँ नीक लगलैन। दुनू खीरापर हाथ रखि बजली-

“ई भेल लत्तीक फल। जेकरा डाँड़मे, अपन फल जकाँ तागतो ने छै जे अपने भरे ठाढ़ो हएत मुदा फल तँ एहेन ऐछे जे गाछक सैयो फलसँ नम्हरो आ सुअदगरो अछिए।”

बिच्चेमे टोन दैत जागेश्वर काका बजला-

“मुदा खीरा मीठ कहाँ होइए?”

रमणीकाकीकेँ सुतरलैन। बजली-

“मीठ केकरा कहै छै से अखैन नइ कहब। जाबे आन यात्री नहेता-सोनेता तइसँ पहिने अगुआ कऽ भगवतीक दर्शन करब बेसी नीक हएत।”

हत्थो भरि गौरिया केराकेँ दहिना हाथसँ उठा रमणीकाकी निंगहारि-निंगहारि देखए लगली जे पाल परक कलकतिया-आम जकाँ ठाम-ठीम खोंइचा दगि गेल अछि।

..बिच्चेमे जागेश्वर काका टोनियबैत बजला-

“केरा सड़ल जकाँ बुझि पड़ैए!”

झपटैत रमणीकाकी बजली-

“सड़ल नइ अछि, परसाएल अछि। असल तँ यएह भेल जे परसाद बनि परसाइबला सेहो छी। तोहूमे आम-लतामक गाछ जकाँ कि कोनो हड्डी-पसलीबला गाछक फल छी। जल-जल, थल-थल, पल-पल गाछक पेटसँ निकलल फल छी।”

ओना रमणीकाकीक बात सुनि जागेश्वर काका भकचका गेला। भक-चकीमे पड़ल मनकेँ जाबे सोझरबैथ-सोझरबैथ तइ बिच्चेमे दारीमकेँ देखबैत रमणीकाकी बजली-

“केते सुन्दर पृथ्वी अकारक गोल फल झाड़-झाड़ीमे नुकाएल रहैए।”

रमणीकाकीक मुहसँ निकैलते जागेश्वर काका बजला-

“कोनो कि झाड़ीक-झाड़मे फलेटा नुकाएल रहैए, फलक तरोमे फलहार नुकौने रहैए। तेहेन भारी चोर अछि जे खीरा आकि लताम जकाँ गुद्दा-बीआ आकि रस-खोंइचा एकबट्ट केने रहैए, सजनी जकाँ कोठरी बना-बना अपनाकेँ सजने रहैए।”

ओना रमणीकाकीक मनमे उपकैत रहैन जे कहिऐन- मुँहक दाँत जहिना रजो छी आ चोरो छी, तहिना ने दारिमो अछि, मुदा बकबासमे समैकेँ हाथसँ छोड़ब नीक नहि, तँए रमणीकाकी चुपे रहि थर्मश निकालि दूधक रंग देखए लगली। बकेन गाइक दूध...।

डाली साजि रमणीकाकी जागेश्वर काकाकेँ कहलखिन-

“चलू, भगवती-माइक दर्शन काइए ली। फलहारोक बेर उनैह जाएत।”

रमणीकाकीक बात सुनि जागेश्वर काका बजला-

“हम तँ नहेला पछाइतेसँ दर्शन करैले तैयार छी मुदा बीचमे अहीं ने लटघाँइ लगौने छी।”

पतिक बात रमणीकाकी सोल्होअना नइ सुनि पेली। आँखि उठा तकली तँ सोझे पतिक मुँह पटपटाइत देखली, जेना मने-मन कियो मंत्र-जप करै छैथ, तहिना। वाणीश्वरी भगवती जेना आगू आबि ठाढ़ भऽ अपन रूप दर्शन करबए लगल होनि तहिना रमणीकाकी अनसून भऽ गेली। अनसून होइते मन नाचए लगलैन। नचिते आँखिक सोझमे भगवतीक तीन रूप चमकए लगलैन। मनुखमे देव जोग वएह ने भेल जे विचारकेँ विवेकक कसौटीक मुखाड़ी बान्हि बाइन बना भूमिक रणभूमिमे जीवन यात्रा करैत चलए।

वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन आ फलहार केला पछाइत दुनू परानी जागेश्वर काका धरमशालाक ओइ कोठरीमे आबि बैसला, जे सवा रूपैआ दैछना दऽ दू दिन रहैले नेने छला। भरल मन दुनू परानीक रहबे करैन। रौतुका खेबोक खगता नहियेँ बुझि पड़ैन।

जागेश्वर काका पत्नीकेँ कहलखिन-

“एक बेर गौंओं-घरूओकेँ देख अबए चलू।”

एक तँ ओहुना रमणीकाकी पति भक्त, तैपर वाणीश्वरी भगवतीक स्थान, बिनु ‘हँ’ ‘हूँ’ बजने उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेली। दुनू परानी जखन कोठरीसँ निकैल आनो-आनो यात्री आ अपन गौँआँ-यात्रीकेँ देखलैन तँ मने-मन हँसी लागए लगलैन। मुदा ने कियो हँसबे केला आ ने किछु बजबे केलैन। चुपचाप देख-सुनि कऽ अपन कोठरी आपस आबि गेला।

जहिना अनुकूल मौसम पौने प्रकृतिमे सेहो अनुकूलता आबि जाइ छै, तहिना दुनू परानी जागेश्वर काकाक बीच सेहो ऐलैन।

..पत्नी दिस देखैत जागेश्वर काका बजला-

“अनेरे दुनियाँक नीक-अधला देखै पाछू अपन जिनगी आ कर्तव्य छोड़ि मुँह तकैत रही, हमरा बुझने से नीक नहि।”

जहिना केकरो-केकरो ठोरेपर बरी पकैए, माने कोनो बातक विचार लगले कऽ देब, तहिना रमणीकाकीकेँ सेहो भेलैन। बजली-

“एकरा के काटत।”

पत्नीक समरथनमे जागेश्वर कक्काक मन हरिया गेलैन। हरिया ई गेलैन जे विधातो नारी-पुरुखक भेद रचि दुनूकेँ दू दिशामे मोड़ि देलैन। तैठाम जँ पति-पत्नी ओइ भेदकेँ सहीट बनबैत जिनगीक संगी बनि जीवन-यात्रा करै छैथ तँ ओ निसचिते ने नीक भेल। जागेश्वर काका बजला-

“बेकती रूपमे नर आ नारी भेल, दुनूक सम्बन्धे ने घर-परिवारक निर्माण करत। जे सभ नरक जिनगीक दायित्त्व बनिते अछि।”

बिच्चेमे रमणीकाकी बजली-

“पुरुख-नारीक सम्बन्ध ओइ परिवार-ले अनिवार्य भेल जे अतीत-सँ-भविस धरिक परिवार भेल, मुदा परिवार तँ असगरोक होइ छै आ निसचिन्तसँ लोक जीवन-यात्रा करैए।”

पत्नीक विचार सुनि जागेश्वर काका बजला-

“हँ, से तँ भेल मुदा ओ चलन्त परिवार भेल। चलन्त परिवार ई जे जेत्तै रहब तेत्तै परिवार भेल, कोनो गाम-समाज आकि देश-कोस नइ भेल। मुदा जे भेल से भेल, अपना तँ से नहि अछि। तँए जे अछि तहीले ने विचारबो करब आ करबो करब।”

जागेश्वर कक्काक विचार रमणीकाकीकेँ जँचलैन। जँचिते बजली-

“अखन जइ धाममे छी ओ तँ तखने धर्मस्थल हएत जखन ओइ मर्मकेँ मर्मस्थलमे बसा कर्मस्थलमे समरपित करब।”

रमणीकाकीक विचार नीक जकाँ जागेश्वर काका नइ बुझला।

एकर माने ई नहि जे जागेश्वर काकाकेँ बुझैक अवगैत नइ छेलैन। विचार व्यक्त कएल जाइए पात्रक माध्यमसँ। जँ एक रंग पात्र रहल तँ एक-धारामे चलैए आ जँ पात्रमे भेद रहल, अन्तर रहल तँ केतौ-केतौ बाधा-रूकाबट होइते अछि। सएह जागेश्वर काकाकेँ भेलैन।

मुदा कनियेँ-कालक पछाइत जेना मनक ओझरी सोझरा गेलैन तहिना मन विहुँसलैन।

विहुँसैत जागेश्वर काका बजला-

“जहिना नर-नारीक बीच परिवार बनल अछि तहिना ने एक नर दोसर नरक धारा भेल।”

ओना रमणीकाकी अखन तक नरक माने ‘पुरुख’ बुझै छेली आ नारीक माने ‘महिला’। मुदा जागेश्वर काका नरक अद्वैत रूपमे चर्च केने छला, द्वैत रूपमे नहि। माने ओकर खण्डित रूपमे नहि। तँए रमणीकाकीकेँ कनी बुझैमे भेद भेबे केलैन।

निर्मल-निरजल रमणीकाकीक हृदय, बजली-

“नीक नहाँति नइ बुझि पेलौं।”

हँसैत जागेश्वर काका कहलखिन-

“द्वैत-अद्वैतक बीच परिवार चलैए। कखन ‘द्वैत’ ‘अद्वैत’ हएत आ ‘अद्वैत’ ‘द्वैत’, यएह ने..?”

पतिक विचार सुनि रमणीकाकी रमैत जिनगीमे रमि गेली।

◌

शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016

गामक सुरता

दस बर्ख-ऊपरेसँ मात्रिक नइ गेल छेलौं, तँए मन उबिया लगल जे मात्रिक जाइ। नेपालक लहान मात्रिक छी। सात-आठ घन्टाक रस्ता अछि। दू दिनक विचारसँ मात्रिक एलौं, जेकरा आइ पाँचम दिन छी। ओना तेसरे दिनसँ गामक सुरता खिंचए लगल। जेना-जेना समय बढ़ैत गेल तेना-तेना गामक सुरतो बढ़ैत गेल।

ओछाइनेपर रही, नीन टुटि गेल रहए। मनमे उठल, आइ गाम जेबे करब। किसानी जिनगी छी, किसानी जिनगी तँ ओहन जिनगी होइए जे ने कहियो काजक बोझ तर दबाएब आ ने कहियो बिनु काजक छुट्टा घुमैत रहब। सदावहार जिनगी। नोकरियाक जिनगी जकाँ तँ किसानी जिनगी नहियेँ अछि।

जहियासँ चेष्टगर भेलौं तहिएसँ सालमे एक बेर, बिनु काजोक मात्रिक जाइते छेलौं जे काज-उदेम भेलापर दुइयो-तीनियोँ बेर जाइ छेलौं। मुदा ऐ बेर जे दस बर्ख-ऊपरेसँ नइ गेल छेलौं, तेकर कारण भेल जे जहिया कहियो अनदिना जाइक मन होइ छल तहियो आ काजो-उदेममे कोनो-ने-कोनो आन्दोलन नेपालमे होइते रहल जइसँ आवागमन अवरूद्ध भेने नइ जा पबै छेलौं।

समाजिक एक बेवहार, एक भाषा–माने बोली-वाणी एक–रहितो दुनू दू देश तँ छीहे। ओना कथा-कुटुमैती आइये नहि, सभ

दिनसँ दुनूक बीच होइते आबि रहल अछि। तहूमे सीमा-कातक गाम सभमे, सीमे-कातक गामेमे नहि, बिहार, बंगाल आ उत्तर प्रदेशक सीमा-कातक जिलाक अतिरिक्त आनो-आन जिला सभमे कथा-कुटुमैती होइते आबि रहल अछि। अरड़िया-पूर्णियासँ लऽ कऽ चम्पारण जिला तकमे हजारो कुटुमैती नेपालक अछिए।

ओना, अखुनका मधुबनी जिला आ पुरना दरभंगा जिलाक उतरवरिया हिस्साक कुटुमैती बेसी अछि। तहूमे मधुबनी जिलाक केतेको परिवार–गरीबीक चलैत–अपन गाम-घर छोड़ि, अपन खेत-पथार बेच नेपालेमे खेत-पथार कीनि बसि गेल अछि। खास कऽ धनुखा जिलामे।

देशक सघन अवादीबला जिलामे मधुबनी जिला अछिए। ओना, शहर-बजारबला आनो जिला सघन अछि मुदा से नहि, ग्रामीण क्षेत्रमे मधुबनी जिला सघन अछि। सघन अवादी रहने वास-सँ-चास धरिक जमीनक अभाव अछिए। तहूमे किसानी जिनगीक लेल तँ आरो बेसी खेत-पथारक खगता होइते अछि। से दुनू दृष्टिए..।

पहिल- किसानी जिनगी कृषि अधारित अछि जइसँ खेतक खगता होइए आ दोसर, किसानी जिनगीमे बासोक बेसी खगता होइते अछि। हेबो केना ने करत, जैठाम नोकरिहारा एकटा कोठरीमे एक परिवार रहि सकैए तैठाम किसानी जिनगीमे लोकक संग माल-जाल, अन-पानि, जारैन-काठी रखैले सेहो घरक खगता होइते अछि। तेकर अभाव भेने लोक गाम छोड़ि–गाम कि देशे छोड़ि–नेपालमे बसबे कएल अछि। नेपालमे जनसंख्याक ओ सघनतो ने अछि जे मधुबनी जिलाक अछि।

..खेतक अनुपातमे जहिना मधुबनी जिलामे जनसंख्या बेसी अछि तहिना जनसंख्याक अनुपातमे नेपालमे खेत बेसी अछि। जे

अनुकूलता रहने जीवन-यापन असान अछि। ओना, जीवन-यापन सेहो क्रमबद्ध अछि, जे जेना-जेना बढ़ैत जाएत, तेना-तेना जिनगियो बढ़ैत जाएत। मुदा से नहि, ऐठाम मात्र भरि पेट अन्न, पाँच हाथ देहपर वस्त्र आ रहैक जोगार भरिक अछि।

जहिना गामक सुरता गाम दिस खिंचैत रहए तहिना मात्रिकक मात्रिक दिस। ओछाइनपर पड़ल किछु निर्णये ने कऽ पबैत रही जे की करी...।

गामक सुरताक कारण छल, अपन दैनन्दिनक जिनगी। जे मात्रिक गेने बहुत किछु छुटि गेल। आ मात्रिकक सुरताक कारण छल नेपालक बदलैत समाजिक बेवस्था।

किरिण फुटि गेल छल, मुदा ओछाइन छोड़ैक मने ने होइत रहए। होइतो अहिना छै जे जँ दैहिक अरामक अवस्थामे पड़ल रहब आ जँ कोनो विचार मनमे उठि गेल आ ओइ विचारक गुत्थीमे ओझरा गेलौं तखन अस्सी मनक मोटा मनकेँ दबबे करैए, जइसँ ओछाइनसँ उठैक कोन बात जे एक करसँ दोसर कर घुमबो भरिया जाइए, तहिना भेल रहए। मन दबाएल रहए, मुदा मनक बेथा ने अपने मेटाइबला आ ने दोसर सुननिहारे, जे मेटाइयो सकैए आ कमियोँ सकैए। संजोग नीक रहल। अबेर तक ओछाइपर पड़ल देख ममियौत भौजी चुल्हिपर चाह-चढ़ा आबि बजली-

“सौंसे गामक लोकक कोन बात जे कौओ-मेना आ कुकुरो-बिलाइ उठि-उठि अपन काजमे लगि गेल आ अहाँ सुतले छी!”

कहि भौजी ससैर कऽ चाह बनबए चलि गेली। ओना, लोकोक चर्चा, कौओ-मेनाक चर्चा आ कुकुरो-बिलाइक चर्चा भौजी केने छेली। मनमे तामसो उठए आ भिनसुरका पहर देख मनकेँ दबबो करी जे भोरे-भोर जँ किछु गरमा कऽ बाजब तँ भिनसुरके रौदसँ पारखी

दिन परेख लइ छैथ, जँ तहिना भऽ जाए! तँए तामसकेँ दबबो करैत रही। मुदा लगले मनमे भेल जे जँ कहीं अपने ओछाइने धेने रहब आ तैबीच जँ भौजी चाह नेने आबि जेती तखन तँ अपने करनीसँ ने चाहकेँ पानि बना पीब। ओना, चाहो तँ चाह छी, जहिना पानिकेँ ओंटि चाह बनैए तहिना तँ बिनु ओंटनौं चाह पानियेँ बनैए। तँए मनकेँ मनबैत ओछाइनसँ उठि दतमैन करए विदा भेलौं। भाय जखन चाह पीब, तइले जँ मुहों नइ धोने रहब तखन पीब केना। तँए खगता बुझि उठलौं आ हाँइ-हाँइ कऽ ई सोचि मुँह धोलौं जे जाबे भौजी चाह बनेती तइसँ पहिनहि जल-थमहन केने चुल्हिए लग पहुँच अगुआ कऽ कहबैन जे जँ अहाँ सन-सन चाह बनौनिहारि भेली तँ पीनिहारकेँ मखानक पातसँ मुँह धुअ पड़तैन। ..मुदा से भेल नहि जाबे अपने ओछाइन लग आबी-आबी ताबे भौजियो चाह नेने पहुँच गेली। ठाढ़े-ठाढ़ हाथमे चाह पकड़ा देलैन। हाथमे चाह पकड़बैत भौजी भनसा धर दिस जहाँ मुड़ली कि पाछुसँ कहलयैन-

"भौजी, अपनो चाह एतै नेने आउ, पीबो करब आ किछु गपो करब।"

ओना, पाछू उनैट भौजी हमर नजैर पढ़ि लेली जे मनक मंशा की अछि। होइतो अहिना छै ने जे मंशाधारीए लोक ने मुनसा बनैए आ बिनु मंशाबला, बिनु मोसिबला दवात जकाँ सुखाएल पड़ल रहैए।

जहिना कहलयैन तहिना भौजी रस्ते-रस्ते–माने चुल्हिये लगसँ–चाह पीबैत लगमे एली। पान-सात घोंट चाह पीब नेने छेली तँए मन सर्रास भऽ गेल छेलैन।

ओना भौजी मैट्रिक पास लौकही हाइ-स्कूलसँ केने छैथ आ गामेक बगलक स्कूलमे शिक्षिको छैथ, तँए परिवारो आ समाजो एते तँ अधिकार दैये देने छैन जे देहपर कपड़ा रखती, माथपर राखब

अनिवार्य नहि। तहिना बजै-भुकैक क्रममे सेहो किछु विशेष छूट भेटिए गेल छैन। तहुमे बीस-बाइस बर्खसँ दोसर सन्तान नइ भेलैन–माने धिया-पुताक छुति नहियेँ लगल छैन। ओना, पैंतीस-चालीस बर्खक उम्र छैन। तँए जहिना दिनक प्रभात बेला तहिना विचारक प्रभात बेलाक मौसम बनले रहए। अदहा चाहो सठि गेल छल। बजलौं-

"चाहेटा पिआएब आकि मुहौं-ठोर रंगब।"

पीबते भौजी आँगन दिस बढ़ैत बजली-

"एतै पानक डलिया नेने अबै छी, पानो लगाएब आ गपो-सप्प करब। ओना, आइ रबि छी, स्कूलमे छुटिये अछि, मुदा कपड़ो-लत्ता साफ केनाइ आ निचेनीक भोजनो ने नीक-निकुत हेबा चाही।"

पानक डाली नेने भौजी पहुँचली। आगूमे बैस पानक दागी सभ छाँटए लगली। ओना पानेक गामक अपनो छी, तँए पानक जनम-सँ-करम धरिक रस्ता देखल अछि, मुदा सभ जगहक अपन-अपन महत् छइ। ऐठाम किछु बाजब उचित नहि। बजलौं-

"भौजी, आइ पाँचम दिन छी, बुझिते छिऐ जे किसान छी। सभ दिन खेतक आड़िपर आ दुनू साँझ गाए दुहए पड़ैए। तैठाम समैक अँटावेस दू दिनले कऽ नेने छेलौं, मुदा आइ पाँचम दिन छी। गामक सुरता, माने काजक गति खींच रहल अछि।"

आगूएसँ लपैक कऽ भौजी वृन्दावनक गोपी जकाँ–जे कदमक गाछक डारि पकैड़ बजैत...।

बजली-

"से कि कोनो हमरा नइ बुझल अछि जे अहाँ चारि कट्ठामे माछो पोसने छी। चोर जकाँ, खेतक आड़ि आ गाए दूहब कहि देलौं आ ई कहबे ने केलौं जे माछक ओगरवाहि दिनेटा-मे नइ रातियो-के करए

पड़ै छइ। नइ तँ पानिक धन पानियेँमे चलि जाइए।"

भौजीक बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं। मुदा अपन उचिती-विनतीक तँ अधिकार ब्लौकक बी.डी.ओ.सँ लऽ कऽ राष्ट्रक राष्ट्रपति धरि तँ ऐछे...।

बजलौं-

"भौजी अहाँकेँ की कहब। गाछ-बिरीछसँ धिया-पुता धरिक सुरता खींच रहल अछि।"

जहिना ठोर बिजका-बिजका बजलौं तहिना भौजी मानि लेली। बजली-

"हमरा दिससँ कोनो एतराज नहि। अखनो जा सकै छी। मुदा आइ अपनो आबि रहल छैथ..।"

भैयाक नाओं सुनिते मन चौंक गेल। जहलसँ पनरह दिनपर निकैल आबि रहला अछि, तैठाम बिना भेँट केने जाएब नीक हएत। एक तँ दस बर्खसँ भेँट नइ भेला अछि। जइमे सोल्हन्नी गलती अपने अछि, जे भैया जेना अपन समाजक काजमे बाँझल रहला तेना हमरे आबि कऽ ने भेँट करैक चाहै छल। मुदा गाड़ी-सवारीक बहाना बना भेँट नहि कए सकलयैन। गाड़ी-सवारी बन्न अछि, ओ तँ नेपालेक सीमा धरि। लौकहासँ पएरो गामे-गाम जँ अबितो, सेहो तँ सम्भव छले। मुदा आब तँ यएह ने कहल जाएत जे जे समए पाछू चलि गेल, ओकर पश्चातापे कएल जा सकैए, पुन: ओकरा ओइ रूपमे उपयोग तँ नहियेँ कएल जा सकैए।

विचारक पाराग्राफ बदैलते गाम दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे अपने नइ रहने सभटा घटे-घाटा भेल जा रहल अछि। ओना पान खुआ भौजी अपन काजमे लगि गेली। दरबज्जाक चौकीपर बैस मने-मन दुनियाँ दिस ताकए लगलौं। अखन सघन खेतीक समैयो नहियेँ

अछि, तँए खेतीक काजमे सघनता सेहो नहियेँ अछि, तँए बेसी नोकसान नहियेँ भेल। मुदा चारि कट्ठा माछक भरोस तँ तोड़ै पड़त। माछक चोर ओहन होइए जे माघो मासमे एकटा कोपीन पहिर जलवाहि कऽ लइए। जहलोसँ नमहर सजा सहैक तँ ओकरा अभियासे छै, तैपर विशाल दुनियाँ तँ सोझामे छइहे। ओकरा की नइ बुझल हेतै जे गाम छोड़ि मात्रिकमे छी। परिवारक काज रहितो परिवारक सभ थोड़े अपन बुझैए। मुदा भैया दिस नजैर पड़िते अपन काज दिससँ नजैर बहटल। बहैटते उठल दस बर्खसँ ऊपरेसँ भैया भेँट नहि भेल छैथ, केना समय बितलैन, एतबो जँ नहि बुझि पएब तखन ममियौत-पिसीयौतक बीच सम्बन्धे की रहल।

मुदा भैयापर नजैर अबिते मनमे उत्साह जगल, उत्साह ई जगल जे जँ अपने काजकेँ, परिवारि काजटा-केँ बेसी बुझब तखन दोसराइतक काज केना करब? जाबे-दोसराइत-तेसराइतक सीमा नहि टुटत ताबे अपन सीमा केना टुटत। मन ओझरा गेल। मुदा रच्छ रहल जे भौजी आबि बजली-

"पता लगल अछि जे बारह-दू बजे अपने पहुँच जेता।"

आगू-पाछू बिनु तकनहि कहलयैन-

"तखन भानस कऽ कऽ रखियौन।"

भानसक नाओं सुनि भौजी मुस्कियाइत चलि गेली। मनमे भेल जे किए ने हमहूँ जलखै खा कऽ आगू बढ़ि भैयाक रस्ता देखिऐन। भेल तँ अढ़ाइ कोस जाएब। अढ़ाइ कोसपर जेल अछि, जइसँ भैया निकलता। मुदा लगले भेल जे एक तँ नेपालक कोसो नमहर अछि, दोसर उड़न्ती बातक बिसवासो करब नीक नहि। जँ ऐठामसँ जाइ आ भैयाकेँ साँझमे छोड़ैन तखन तँ भूखले भरि दिन रहि जाएब। मुदा लगले मनमे भेल जे जहलसँ कखनो भैया निकलैथ, मुदा औता तँ गामे

किने। गाम औता तखन भरि मन गपो करब आ जिनगीक अनुभवक किछु बातो बुझब। जिनगियोक तँ अपन धार बहै छइ। जेते जिनगी तेते धार, मुदा कोन धारक पानि कोन गतिए चलैत अछि ओकरा गतिया कऽ गतानब बाल-बोधक खेल थोड़े छी..!

मन आगू-पाछू होइते रहए कि पुन: भौजी आबि बजली-

“आठे बजे जहलसँ छोड़ि देतैन।”

‘आठ बजे’ सुनिते मने-मन गर लगबए लगलौं जे तखन बेरू-पहर गाम जा सकै छी। भने दुनू काज भऽ जाएत। दोहरी काज देख मन कलशल।

साढ़े दस बजे भैया गामक सीमानपर पहुँच गेला। भौजीक संग हमहूँ अरिआतए आगू बढ़लौं। गामक पाँच गोरे जहलमे छला। माने पाँचो गोरे जहलसँ निकलल छला। चौबट्टी लग जाबे दुनू गोरे पहुँचलौं ताबे चारू गौआँ अपन-अपन बाट पकैड़ अपना-अपना घर दिस फुटि गेल छला।

गोड़ लगिते भैया उपराग दैत बजला-

“केमहर दिन उगल बौआ जे तोरासँ भेँट भेल!”

भैयाक बात एते भारी बुझि पड़ल जे चुपे रहब नीक बुझलौं। चुपे-चाप भैयाक पाछू-पाछू घरपर एलौं।

घरपर अबिते भौजी भैयाकेँ कहलखिन-

“भानसमे देरी हएत, तँए जलखै कऽ लिअ।”

‘जलखै’ सुनि भैया मुस्की दैत बजला-

“भिनसुरका गुड़-बदाम खा नेने छी, तँए जलखैयक खगता नहियेँ अछि, जाबे अहाँ भानस करब ताबे हमहूँ नहाएब-सोनाएब किने। पहिने कनी चाह पीआ दिअ।”

दुनू भाँइ चाह पीबते रही कि एक्के-दुइए गामक लोक भेँट करए आबए लगलैन। भैयाक मनमे खुशी रहबे करैन। खुशीक कारण छेलैन जे तीन सालसँ जे समस्या समाधानक आन्दोलन उग्र रूपमे चलैत आबि रहल छल, जइमे ई पाँचम खेपक जेल-यात्रा छेलैन, ओइ समस्याक समाधान वैचारिक रूपमे भऽ गेल छेलैन।

जहल केहनो किए ने हुअए, मुदा फल पबिते जिनगी फलित भाइए जाइत अछि, सएह भैयाकेँ भेल रहैन। ओना, हमहूँ आगूएमे बैसल रही, मुदा गामे-समाजक तेते बात छिड़िया गेल जे दू घन्टाक पछाइत दुनू भाँइ नहेबो केलौं। खाइत-पीबैत चारि बजि गेल। अपन सभ कुशल-छेम पछुआएले रहि गेल। भिनसुरका विचार, बेरमे गाम जाएब, मनमे बसिया गेल। मनमे पड़ल अखनो धरि ओहिना रहल।

लोकक आबाजाही जे शुरू भेल, ओ बढ़िते गेल जे कमैक नाउँए ने लेलक। बीचक जे समए बीतल–माने जहियासँ भैया नइ भेँट भेल छला–ओकर मुँह मिलानी, माने भेँटक अन्तिम दिनक बातक नाँगैर आ औझुका भेँटक मुँहक मिलानी करब जरूरिये अछि किने, से जँ नइ हएत तँ बरसाती खच्चा जकाँ थाल-खीच बनले रहत किने। भलेँ ओ समय मरियाएले किए ने रहल हुअए। भाय, जहिना मुर्दघट्टा तहिना ने जीघट्टो होइए। मुदा मरल रहल कि जीअल, घाट तँ घाटे छी। घटवारि लोककेँ दिऐ पड़ै छइ। जिनगियोक धारक घाट तँ तहिना अछि किने। जखन जन्म भेल, तखन खेलै-धुपै, पढ़ै-लिखैक समए सेहो एबे कएल, भलेँ जे भेल हुअए। तहिना कमाइ-खटाइ, बिआह-दुरागमनमे पर-परिवार अबिते अछि, पछाइत ने हार-जीतक फैसला मरै-कालमे होइए। से तँ सभकेँ होइते अछि।

मनमे जेते विचार उठैत जाए तेते मन विसाइन-विसाइन होइत जाइत रहए। गामक लोकक बीच भैया हेराएल, कखनो अपन जीतपर

ठहाका मरैथ तँ कखनो ऐगला समस्याक रूप-रेखा बनबैथ जे जन-जन तक एकर गुण केते कालमे पहुँच पबैए। तहूमे सत्तो तँ सत्ता छी। चाहे राज-सत्ता हुअए कि समाज-सत्ता, ओ तँ इच्छानुसार चलैए। सदिकाल सभ काज सोझेमे नइ रहैए। मनुखेक जिनगी छी, तेते लाढ़ि-पुरैनक संग जन्म भेल छै, जे ओकरा पोछैत-पोछैत, धोइत-धाइत चिक्कन करैत लोकक जिनगीए गुदस भऽ जाइ छइ।

जखन बुझि पड़ल जे अपन कुशल-छेम करैत समैये खटिया जाएत आ गाम जा नइ हएत, तखन गामक आशा तोड़ि मनकेँ निचेन केलौं जे साँझू पहर भैयासँ भरि मन गप करब। मुदा लगले भेल जे गौआँ-घरूआ, अपन-अपन घर साँझू पहर धरता, मुदा भौजी तँ बाँकीए छैथ। जखन भौजी अपन गप अगुएती तँ पनरह दिनक घरक मिरचाइ-हरदी गनैत-गनैत साँझुको समए चलिए जाएत आ भिनसुरको समए खाएत। जिनगियोक भोर तँ अहिना ने दू-मुहाँ अछि। जहिना साँझ तहिना भोर। मुदा से सुतरल।

दुनू भाँइ टहलैले निककलौं। गप-सप्प करैक मौसम भेटल। पुछलयैन-

“भैया, की रंग-हवा अछि?”

ले-बलैया! भैयाक मनमे जेना वएह विचार नचैत रहैन जे अपना मनमे नचैक सुर-सार करैत रहए। बजला-

“बौआ, अपनो दुनू भाँइ दू-देशक सीमामे बन्हल छी।”

बिच्चेमे मुड़ी डोलबैत, स्वीकारैत बजलौं-

“से तँ छीहे।”

जखने बजलौं ‘हँ छीहे’ कि जेना बाढ़िक पानिकेँ दोसर बाढ़िक पट-पेट भेट गेल होइ तहिना भरिसक भैयोकेँ भेलैन।

दुइए भाँइ रही, तँए भैया तरैंग कऽ नहि बाजैथ मुदा नजैरक रूखिसँ बुझि पड़ैत रहए जे मन तरंगल जरूर छैन। भैया बजला-

“बौआ, कोनो समाजकेँ कहियौ आकि बेकतीकेँ, अपन संस्कार-संस्कृति होइ छइ।”

कहलयैन-

“हँ, से तँ होइते छइ।”

“बौआ, जहिना हम सभ साहित्य-संस्कृतिमे घेराएल छी, तहिना तोहूँ सभ छह, तँए...।”

भैयाक बातक भाँज तँ ठीकसँ मनमे नै चढ़ल, मुदा जेना अपन साहित्य आ अपन समाजक सुरता खिंचए लगल...।

बजलौं-

“भैया, अखन अहूँ जहलक थाकल-ठेहियाएल छी आ हमहूँ धड़फड़ीमे छी, दस दिनक पछाइत अबै छी, तखन भरि पेट विचार करब।”

◌

शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016

खतियाएल घर

बेरुका चाह पीब जीतू काका टहलैक सुर-सार करिते रहैथ कि छोटका बेटा आबि कहलकैन-

“बाबू, अपना अछैते दुनू भाँइक ठौर लगा दैतिऐ तँ हमरा दुनू भैयारीमे आगू कहियो बद-विवाद नइ होइत?”

ओना जीतू कक्काक मुँहक पान फुला गेल छेलैन जइसँ अपन मन अपना मन्दिरमे पूजा करए चाहैत रहैन, तँए ‘हँ-हूँ’ बिना किछु बजने टहलैले विदा भऽ गेला।

टहलबो तँ जिनगीक जीबैक अनिवार्य शैली छीहे। जाबे मन नइ टहलत ताबे कोनो वस्तुक नीक-बेजाए परेख केना सकैए। कोनो प्रश्नक उत्तर दइसँ पहिने मनकेँ टहलब उचिते छी। हँ, एहनो प्रश्न जरूर अछि जइले मनकेँ टहलब जरूरी नहि, ओ गीरह-गाँठ जकाँ बन्हाएले रहैए। माने ई जे जँ अहाँकेँ कियो पुछए जे ‘कए भाए-बहिन छी..?’

ई विचारैक कोन बात, बुझले अछि...।

सत्तैर बर्खक जीतू काका दस साल पहिने हाइ-स्कूलक हेड-मास्टरक पदपर सँ सेवा-निवृत्ति भेला। तकदीरगर लोक छला जे सेवा-निवृत्ति होइसँ पाँच बर्ख पूर्व नवका वेतनो आ पेंशनोक सुविधा भेट गेलैन। दुनू बेटो, हाइए-स्कूलक शिक्षक छैन। जे गद्दी–माने

नवका वेतन–जीतू काका अन्तिम अवस्थामे पौलैन तइ गद्दीपर दुनू बेटाक जन्मे भेलैन।

जीतू कक्काक जन्म पाँच बीघा जमीनबला किसान परिवारमे भेल छेलैन। पितोक लगन आ अपनो मगन जीतू काका बी.ए. पास कऽ हाइ-स्कूलक शिक्षकक गद्दीपर, बैसला। मुदा अखुनका चक-चकी नइ रहने जे कमेला ओ पिताकेँ हिसाब दिअ लगलखिन। समरस परिवार बनल रहलैन। सबहक अपन-अपन जिनगी अछि तँए सभकेँ जीवनोपन करइ पड़त। ओना, ने कहियो जीतू काका हाथसँ दरमाहाक रूपैआ गनि कऽ पिताकेँ देलखिन आ ने पिता कहियो जिज्ञासा केलकैन। भाय! परिवार छी, सबहक छी, हजारो क्रियाक बीच परिवार चलैए। ओही क्रियामे अक्रिया भेने कखनो ठमकबो करैए, कखनो तेजो गतिए चलैए आ कखनो उनैटियो जाइए। मुदा से नहि, जीतू काकाकेँ सन्तानक नाओंपर मात्र दूटा बेटा। मनमे एते बात, पिता बनला पछाइत जरूर घर कऽ नेने रहैन जे जखन साधारण पढ़ल-लिखल किसानक बेटा हाइ-स्कूलक शिक्षक पैदा करैक शक्ति सृजन केलक, तँ शिक्षककेँ केहेन बेटा पैदा करक चाही?

..अपन जिनगी जीतू काका पितेक जिनगीमे सटौने, मुदा बेटाकेँ पढ़ै-लिखैमे कोनो पितृ बाधा नइ होइ, विचारकेँ मनमे सटौने अपन जिनगी पार कऽ लेलैन।

सेवा-निवृत्ति होइसँ पहिनहि जीतू कक्काक जेठका बेटा सात साल पूर्व आ छोटका चारि साल पूर्व हाइए-स्कूलमे शिक्षकक नोकरी शुरू कऽ नेने छेलैन।

जेठ बेटाक नाओं रमानन आ छोट बेटाक नाओं कृष्णानन छिऐन। ओना, दुनू भाँइ एक हाइ-स्कूलमे नहि छैथ मुदा साइकिलसँ गामेसँ स्कूल अबै-जाइ छैथ। तीनू बापूत–माने जीतूओ काका,

रमाननो आ कृष्णाननो छुट्टी–दिन छोड़ि बाँकी दिन सभ अपन-अपन धुइनक धुनकीसँ जिनगीक रूइया धुनै पाछू बेहाल रहै छैथ। भाय, बेहालो केना ने रहता, जहिना छोट-छोट बच्चाक संग जच्चा–बच्चाक सेवा सम भावे जरूरी अछि, तही लाटमे ने मतो-पिता छैथ, कुटुमो परिवार छैथ आ सरो-समाज अछि। सबहक संग जलियाएल चुनमुनियाँ जकाँ समाजक जालमे पड़ले छी। जहिना माया-जाल, तहिना जमीन-जाल। खएर जे छी, छी तँ अही गाम-समाजमे, रहितो एलौं, आगूओ रहैक अछि। भलैं ओकरा अयोधिया बना रही वा लंका, मुदा रहब तँ अही गाम-समाजमे। ओना, अयोधियामे दुतकारैवाली धोबिन सेहो ऐछे आ लंकोमे विभीषणो छैथे। मुदा, भाय एकटा बात कहि दइ छी, जइ विभीषणक चर्च केलौं अछि, ओ त्रेता युगक भेल, अखन द्वापर टपि अपना सभ कलयुगमे आबि गेल छी। तँए राम-लक्ष्मणक शक्ति कमलैन कि बढ़लैन से तँ नइ बुझै छी, मुदा रावणक शक्ति जरूर बढ़ल, एकरा हम मानै छी। कहब केना? त्रेता युगक लंकाक विभीषणकेँ अपन परिवार आ दियाद-वाद सहयोगी रहैन, ओना त्रेता युग तक–माने राम तक–साठिए कलाक जन्म सेहो भेल छल जे द्वापर जुगमे–माने कृष्णावतारक पछाइत–चौंसैठपर पहुँच गेल। अपना सभ ते सहजे तहूसँ टपि कलयुगमे छी। तँए वैचारिक क्षेत्र हौउ कि कार्यक्षेत्र, विभीषणक विभीषिका बढ़िए गेल अछि। माने ई जे परिवारक भीतर पुत्र-पत्नी तकमे वैचारिक आ कार्यक्षेत्रक दूरी बढ़ल जाइए। जइ बेवहारसँ अखन धरिक परिवार चलि रहल अछि, ओहू अधार आ आइक परिवेशमे जे परिवारिक विचारो आ बेवहारोक अधारपर जे परिवार वा समाज उठि कऽ ठाढ़ भऽ चलत, ओ दुनूक बीच जाबे समावेशी नइ औत ताबे तँ खट-खुट हेबे करत। समावेशीक माने समावेश, सबहक अँटावेश।

पैंतीस-छत्तीस बर्खक रमाननकेँ पाँच सन्तान आ कृष्णाननकेँ

चारि सन्तान भऽ चुकल छेलैन। बच्चासँ दस-बारहो बर्खक चेष्टगर बच्चाक जिनगीक भरण-पोषण परिवारक एक स्तरमे चलैत आबि रहल छैन। सत्तैर बर्खक जिनगीमे जीतू काका अखन धरि कहियो परिवारमे कोनो बेवहार-ले रक्का-टोकी नइ देखने छला। एकाएक जीतू कक्काक मन अपन बीतल अतीत–माने पिता-सोझक समए आ अपन वर्त्तमान–आइ ओइठाम पहुँच गेल छैन, जे जइ चौबट्टीपर सँ रस्ताक फुटानौं होइए आ सटानौं होइते अछि। चौबट्टीपर चारिटा बाट रहैए तँए चारि लाइनिक सड़क सेहो अछिए।

आने दिन जकाँ आइयो जीतू काका गामक दछिनवरिया बाध–जे गामक चौबगलीक बाधसँ नम्हरो अछि आ उपजाउ सेहो अछि–तइमे भ्रमण करै छैथ। उपजाउ रहने बाधमे सभ दिन हरियरी बनले रहैए। जखने बाध हरियाएत तखने ने गामो हरियाएत आ गामक हवो हरियाएल रहत। से तँ दछिनवरिया बाधमे प्रकृति प्रदत्त अछिए।

..बाधक चारू भाग भ्रमण केला पछाइत रस्ता-कातक नीमक गाछ लग आबि बाधक जेते कीड़ी-फतिंगी देहपर चढ़ल रहै छैन, ओ नीमक गाछ लग अबिते सभ अपना-अपनीकेँ खेत दिस पड़ा जाइए। तैबीच नीमक गाछक निच्चाँक हवाक साँस दस बेर लाइए नेने रहै छैथ, तँए मन हृदयसँ पवित्र भाइए जाइ छैन। तैसंग समटल परिवार आ समटल परिवारक जिनगी, तँए परिवार-ले बेसी सोचबोक जरूरत तँ नहियेँ रहे छैन। बस एतबे ने सोचता जे औझुका दिन केहेन बीतल। काजक नापसँ चौबीसो घन्टा नापि लेब। काल्हि-ले काल्हि छइ। मुदा छोट-बेटा– कृष्णानन–क प्रश्न जीतू कक्काक मनकेँ मथए लगलैन। अपना जनैत कृष्णानन कोनो अधला नइ कहलक, मुदा नीके केना कहलक? ई तँ घटिया पुरुखक लक्षण भेल! बढ़िया पुरुख तँ ओ ने भेल जे जीरो बैलेन्सपर दौड़ैत चलए। जहिना रस्ता चलल बटोही रस्तामे केतौ बिलैम अपन रस्ताक हिसाब लगबैत तहिना जीतू काका आजुक

उठल प्रश्नपर विचार करैक मन बनबए लगला।

जहिना भोरुका सपना भरि-रातिक सपनासँ बेसी जगताजोर होइए तहिना सौंझुका सपना सेहो रातिक लेल जगताजोर होइते अछि। जीतूओ काकाकेँ सएह भेलैन। भेलैन ई जे कृष्णानन जे पुछलक ओ केते समीचीन अछि। जाधैर परिवारमे समीचीन विचार पनैप नइ चलत ताधैर परिवारमे विषमताक बीआ पनपबे करत। ओना, अखन धरि अबैत परिवारक बीच सेहो समीचीनता आबि रहल अछि, मुदा आजुक परिवेशमे जे नव-नव प्रश्न उठि रहल अछि ओइले तँ आइये ने समीचीनता परिवारमे बनबए पड़त। ओ तँ आजुक जे परिवार अछि ओइमे जे सदस्य छैथ हुनके बीच ने समीचीन बनबैक प्रयोजन अछि। कृष्णाननक प्रश्नक हिसाबसँ दूटा बेटा रमाननोकेँ आ कृष्णाननोकेँ, ओइमे समीचीनता अछिए। दुनू भाँइ हाइ-स्कूलमे नोकरी करिते छैथ, आधासँ बेसी माने खाइ-पीबैक, सम्हारिये दइ छिऐ, अपन कमाइ अपना हाथेमे छैन, अपना-अपना इच्छानुसार अपन-अपन बेटाकेँ पढ़ा लिअ। रहल बेटीक बात...।

रमाननकेँ तीन बेटी, कृष्णाननकेँ दू बेटी। एक बेटीक बिआह तीस लाखक। तीस लाखक बिआह हाइयो-स्कूलक शिक्षक आ कौलेजोक शिक्षक काइये रहला अछि। भैयारीक हिसाबसँ बँटवारा भेने रमानन तीस लाख तर पड़िये जाएत। भाए-बापकेँ की करक चाही? लगले मनमे उठि गेलैन जे एक पीढ़ीक दू परानी छी, जे पोखैरक घाटक सीढ़ी कहियौ आकि सरोवरक घाटक, आकि राजस्थानक पुष्कर घाटक सीढ़ी कहियौ, अपन परिवारक तँ अपने दुनू परानी वंशक घाटक एकटा सीढ़ी भेलिऐ। जखने एक सीढ़ीक घाट हएत तखने ओ एक रंग चाकर-चौरस बनबए पड़त। तँए परिवारमे बहुत लोक छैथ, मुदा अखन अपने दुनू परानीमे विचारक घाट बनबैक अछि।

घरसँ निकलबा काल माने टहलैले निकलैकाल जीतू कक्काक मनमे जे बोझ उठल छेलैन, घुमती बेर ओ जेना उतैर गेल छेलैन। तँए मन फुला गेल छेलैन।

..सोझे दरबज्जापर सँ निकैल कलपर गेला। हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर पहुँचबे केला कि सुलोचना काकी चाह नेने पहुँच गेली। पत्नीक हाथक चाह देखते जीतू कक्काक अपन विचारक चाह जगि गेलैन। भाय, कोनो विचारीसँ जे कोनो विचार लेब तइले तँ विचारीकेँ अनुकूल बनाएब, तखने ने नीक विचार भेट सकैए। ..हाथसँ चाहक गिलास पकड़ैत जीतू काका बजला-

"चाहक रंग बड़ ढबगर अछि, अपने हाथक बनौल छी की?"

सुलोचना काकी रमणी छैथे। पुतोहुमे अपन रूप देख बजली-

"अपन हाथक नइ रहत तँ की अनका हाथक रहत।"

विचारक दौड़मे सुलोचना काकीक विचार जेतए रहल होनि मुदा काजक वाह-वाही अपन सिर मढ़ि मुस्की तँ देबे केलखिन। मुस्की देख जीतू काका समाधानक वाण छोड़ैत बजला-

"दुनू गोरेमे एकटा एकान्ती विचार करैक अछि। काजसँ निचेन भेलौं कि कौल्हक बरद जकाँ अढ़ाइ मोड़ बाँकीए अछि?"

एकान्ती विचार-दे सुनि सुलोचना काकी, लोहियामे चढ़ल दूध जकाँ तेना उधिया लगली जे ऐगला बात बुझबे ने केलैन। जेना जे काज जेतइ लटकल छल से काज तेतइ बन्न। बजली-

"गाइयक घरक घूरटा पछुआएल अछि। सब काज भऽ गेल अछि।"

टोकारा दैत जीतू काका बजला-

"चाह पीलौं?"

चाहक नाओं सुनि सुलोचना काकी बजली-

"अहीं दुआरे हाथ-पएर तँ धोइ लेलौं मुदा मुँहमे पानि कहाँ लेलौं।"

सुलोचना काकीक बात सुनि जीतू काका बजला-

"गप-सप्प की केतौ पड़ाएल जाइ छै, निचेनसँ करब। पहिने घूर केने आऊ। ताबे हमहूँ चाह पीब पान लगाएब।"

जहिना कोनो फलक अन्दाज मनमे एने रंग-रंगक कल्पना सपना बनि मनमे उठए लगैत, जइसँ चालि आ सोभावमे कनी-मनी विशेष गुण आबिये जाइत, तहिना सुलोचनो काकीमे दरबज्जासँ निकलला पछाइत आबिये गेल छेलैन। जे देख दुनू पुतोहुओ आँकि नेने छेली जे बुड़हा-बुड़ही किछु खानगी काज करता। मुदा भानसक बेर रहने दुनू पुतोहुक मनक विचार बेसीकाल टिकलैन नहि। टीकबो केना करितैन। जहिना हमरा सबहक परिवार छी माने दुनू भैयारीक, तहिना ने हुनको छिऐन। तहूमे एक सीढ़ीक दूरी अछि। अकास-पताल कहियौ कि पोखैरक पानिक महार कहियौ, दिशा भेद भेने रंग-रूप आ गुणक संग एकक दूरी आ दोसराक नगीची तँ आबिए जाइए। माने ई जे मानि लिअ सात घाटक पोखैरमे तेसर वा चारिम सीढ़ीपर छी, ऐठामसँ महार दिस, जेतए माटि अछि, चढ़ब तँ माटि नगीच हएत, मुदा जँ दोसर दिस बढ़त तँ पानियेँ ने नगीच हएत।

जीतू काका जहिना बच्चामे मुँहगर पढ़ैक चनचलता गुण पेब रहला, तहिना हाइ-स्कूलक नोकरीमे सेहो बनले रहला। वेदान्तक श्लोक सभ तेना बारीकीसँ पकैड़-पकैड़ गुणि-गुणि जिनगी सिरैज नेने छला, जे हाइयो-स्कूलमे मुँहगरी जीविते रहलैन। ओना, आन शिक्षक जकाँ ने हेडमास्टरक मुहेँ कहियो सुनलैन जे 'अहाँ समैक महत् नइ बुझै छिऐ आ ने कहियो एको दिनक दरमाहा जुरमाना तरे कटौने

छला। तेकर कारणो छेलैन जे जिनगीक पहिल काज विद्यालयक सेवाकेँ बुझैत छला। जे जीविका देने छेलैन, जइसँ अपन जीवनो जीबैत आबि रहल छला। ..पान लगा मुँहमे लऽ जीतू काका सुलोचना काकीक रस्ता देखए लगला।

सुलोचना काकी, जे सभ दिन मालक घरमे घूर करै छेली, जीतू कक्काक 'एकान्ती' शब्द सुनि तेना दलमला गेल छेली जे घूर लगबैयोमे धड़फड़ा गेली। धड़फड़ा ई गेली जे घूरक निचला तहमे पजरैबला आलन देल जाइए, बीचमे ठहराउ बनबैले दाब देल जाइए आ ऊपरमे चारूकात पजारैले पसाही लगबैबला समचा देल जाइए, से उनटा-पुनटा सुलोचना काकीकेँ भऽ गेलैन। मुदा जिद्दयाहि तँ सुलोचना काकी छैथे, गोइठाबला तेहेन आगिक अँगोरा चुल्हिसँ निकालि घूरक बीचमे तेना कऽ रखि देलखिन जे जल्दीवाजीमे भलेँ नइ पजरइ, मुदा रहियो-सहि कऽ पजरबे करत, जे मिझाएत नहि। लटपटाइतो काज सम्हरले छेलैन। मुदा कलपर जे हाथ-पएर धोली तइमे भारी चूक भेलैन।

चूक ई भेलैन जे हाथ-पएर आ मुँह-कान धोइ-पोछि लेली मुदा सौंझुका जल पीबिये ने सकली। माने सुलोचना काकी 'एकान्ती' गप करैले तेते उताहूल भऽ गेली जे मने थीर नइ रहलैन। जहिना मनमे गरमी चढ़ैत रहैन तहिना पानि नइ पीने, पेटक गरमी सेहो जीविते रहैन। दुइये घोंट जहाँ चाह मुँहमे देलखिन कि मने चनैक गेलैन। हाथमे चाहक गिलास नेनहि जीतूकाका लग पहुँचली।

हाथमे चाहक गिलास देख जीतू काका टोक देलखिन-

"मुइलोपर जे धरमराजक दूत औत, तँ ओकरो कहबै जे कनी थम्हू, अखन हाथ काजमे लगल अछि।"

जीतू कक्काक बात सुनि सुलोचना काकीक मन आरो पाकल

आम जकाँ फुइल गेलैन। फुलबो केना ने करितैन, एक दिन छुट्टी भेटलासँ तँ लोक सालक-साल काजक छुट्टी पेब लइए आ हमरा तँ दसो दिनक मोहल्लत तँ धर्मराजक दूत देबे करत किने। तैबीच केते जुग देख लेब तेकर ठेकान अछि।

..चाहक अन्तिम घोंट पीबैत सुलोचना काकी जिज्ञासा करैत जीतू काकासँ पुछलखिन-

“तखन जे किदैन कहए लगल छेलौं?”

सुलोचना काकीक जिज्ञसा देख जीतू कक्काक मन बिहुँस गेलैन। बिहुँसबो केना ने करितैन। भाय, जिज्ञासुक ने ई दुनियाँ छी। जेतए जेते जिज्ञासा तेतए तेते दर्शन, जेतए दर्शन तेतए दृष्टि आ दृष्टिक सुचालि-कुचालि...।

अपन विचारकेँ तहियबैत जीतू काका बजला-

“तखन जे कहने छेलौं जे एकान्ती करब?”

सुलोचना काकीक मन फेर धड़फड़ा गेलैन। धड़फड़ा ई गेलैन जे जहिना तखन एकान्तीए लग विचार अँटकल रहैन तहिना बीचमे फेर अँटैक गेला! बिच्चेमे सुलोचना काकी पाकल मालदह जकाँ टभैक गेली-

“सएह तँ हमहूँ विचारै छेलौं।”

जीतू काका-

“देखते छी जे गाममे अपनासँ बेसी उमेरगर लोकक धवाहि लगिते केते अपने उमेर आ अपनासँ कमो उमेरक जाइए रहल अछि, तखन की अपने दुनू परानी खुट्टा गाड़ि कऽ रहब।”

जीतू कक्काक विचारक धारमे सुलोचना काकी भँसिया गेली। बजली-

“से तँ नहियेँ रहब।”

तैपर जीतू काका कहलखिन-

“अपना अछैते दुनू बेटाकेँ सम्पैतक खल लगा दैतिऐ।”

अपन माथक मोटरी झँकैत सुलोचना काकी बजली-

“अहाँ किछु छी तँ पुरुख-पात्र छी। अहीं ने पुरुखाह घर बनाएब बुझब। हम तँ अहाँक संगी छी, जे कहब से करब।”

जीतू कक्काक मन मानि गेलैन जे पत्नी पतिव्रतक लेल केतौ बाधा नहि छैथ। मुदा अपना संगे तँ समाजक अनेको जाल लगले अछि। किछु सुजालो अछि मुदा कुजाल नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। परिवारमे जेठाँस हिस्सा जन-गणक जिनगीक हिसाबसँ नहि, भाए-भैयारीक बीचक प्रश्न, इत्यादि-इत्यादि अनेक प्रश्न अछि।

◌

शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016

बात-कथा सुनौलक

आसीन मास, सोहनगर मौसम। आन सालसँ भिन्न मासक रूप-रंग। रूप-रंग भिन्न होइक कारण ई जे एबेर आन साल जकाँ ने सौने-भादोसँ लाधल अबैत बरखा लधाएले रहल आ ने धुरिया सौन पकैड़ धुरा उड़बैत भादोक संग पुरैत धुरियाएल रहल। ऐ दुनूसँ भिन्न ऐबेरक आसीनक चुहचुही अछि। चुहचुहीक कारण ई अछि जे सौन-भादो रौदियाएल रहल जइसँ बरखा ऋतुक कोनो लक्षण मासमे ऐबे ने कएल। ओना, शंकरपुर-गामक जे धनहर खेत अछि ओ जेना-तेना अवाद जरूर भेल मुदा किसानक लाख मेहनतोक बावजूद आन सालसँ फसिल दब अछि।

संयोग नीक बनल। मौसममे सुधार भेल। सुधारक कारण भेल जे दुर्गापूजाक शुरू होइसँ एक दिन पहिने झमकौआ बरखा भेल। जइसँ जरलो खेत सभ जे छल जइमे पैघ-पैघ दरारि फाटि गेल छल, तहू सभमे बीत भरि पानि लगि गेल। जहिना कोनो रोगीक देहसँ दुख निकलला पछाइत देह फौदाए लगैत तहिना धानक फसिलकेँ भेल। ओना किछु किसानक फसिल जिनका पटबैक गर नइ लगलैन ओइ खेत सबहक धान आधा-छिधा जरि कऽ सुखियो गेल आ आधा-छिधा बँचबो कएल अछि, ओहो धान सभ अधबेसुओमे बिआन करैत एकसँ दू-तीन-चारि-पाँच जरूर भेल मुदा जइ धानक पटबी समए-समए पर

होइत गेल, ओकर तँ सेखीए बदैल गेल। जेना बुझिए ने पड़ैत जे रौदीक मारल धान छी। ओना, ओहू खेतक धानकेँ बीत भरि पानि जड़िमे लागल रहने जेना समुचित वृद्धि होइत तेना तँ नहियेँ, मुदा तैयो ओहन रंग-रूप तँ बनियेँ गेल अछि जे धानक सुभर उपज हेबे करत। ओना जखन असिनी-कतिकी धान[3] नइ होइ छल, भदइक रूपमे गद्दैरो आ आँउसो-गम्हरीक खेतीक संग असिनी-कतिकी धानो होइ छल, तहियो हथिया नक्षत्रमे लाठीक हूर गड़बसँ किसानकेँ संतोख होइते छेलैन जे अगहनी धान हेबे करत, मुदा ऐबेर तँ खेतमे सहजे पानि लागल अछि। तखन तँ यएह ने हएत जे बिलमसँ अनुकूल समए पकड़ने थोड़े बिलमसँ हएत। मुदा हएत, ई बिसवास तँ किसानक मनमे जनमियेँ गेल छैन।

तीन दिन पहिने दुर्गापूजा समाप्त भऽ गेल, मुदा पीठपर कोजगरा पछुआएल अछि, परसू हएत। आन गामसँ आएल कुटुम-परिवार आ परदेशसँ आएल परदेशिया, किछु-किछु चलियो गेला आ किछु-किछु बाँकियो तँ ऐ दुआरे छैथे जे कोजगरा पुरिये कऽ जेता। ओना आन सालसँ भिन्न ऐ बेरक दुर्गापूजामे शंकरपुर-गामक रौहानी रहल। रोहानीक कारण भेल जे जइ अनुपातमे गामक किसानक मुँह मरियाएल छेलैन, रौदी भेने तइ हिसाबे गामक धीओ-जमाए आ गामक नवयुवकोकेँ कोलकाता, आसाम, बंगलोर, मुम्बै, दिल्ली इत्यादि शहरमे नोकरीक परसादे नीक आमदनी तँ भाइए गेल छैन। जेकर फल भेल जे दुर्गापूजासँ पहिने केते खबैर पूजा कमिटीकेँ पहुँच गेल छेलैन जे हमरा दिससँ मुरती[4]क खर्च रहत तँए आन सालसँ बीस हेबा चाही। तहिना नाचो-तमाशाक भेल। तँए दुर्गापूजाक नीक आयोजन तँ भेबे कएल।

[3] समयक हिसाबे गरमा धान

[4] दुर्गाक प्रतिमा

दोसर साँझ, लालकाकी अँगनाक उतरवरिया ओसारपर बैस कानए लगली। दिन भरिक काज सम्पन्न केला पछाइत, कलपर हाथ-पएर, मुँह-कान धोइ, पानि पीब लोटामे पानि नेने लालकाका दलानपर अबैत रहैथ कि लालकाकीक कानबो सुनलैन आ उतरवरिया ओसारपर बैसलो देखलैन। मुदा टोक-टाक नइ देलखिन। टोक-टाक नइ दइक कारण रहैन जे दुपहरियामे बँगला उपन्यास–हुमायूँ अहमदक–'नंदित नरके'क रामलोचन बाबूक मैथिली अनुवाद पढ़ने छला, जइमे मंटूकेँ फाँसीक आदेश भेल। ई विचार लाल कक्काक मनकेँ घेरने रहैन जेकर निराकरण करैक विचार मनमे घुमैत रहैन। ओना, सौंझुका चाह पीला पछाइत नीक जकाँ विचारता, जे नइ पीने छला। ओ तँ दरबज्जापर पहुँचला पछाइत हेतैन। तइ बिच्चेमे लालकाकीक कानब सुनलैन। मुदा ई बात तँ लालकाकाकेँ बुझले छैन जे जखन कोनो स्त्रीगण कनै छैथ तखन कानबक बीच घौना सेहो करिते छैथ।

लालकाकी सेहो कनबो करै छेली आ घौनो करै छेली। घौनाकेँ अकाइन लालकाका चुपे रहब नीक बुझलैन।

लाल कक्काक जेठकी पुतोहु चाह बना नेने छेली जे लालोकाकी देखने छेली। कानब बन्न कऽ चाहक गिलास नेने लालकाकी लालकाका लग पहुँचली। कानब तँ बन्न कऽ नेने छेली मुदा आँखिमे नोर ढबकल रहबे करैन।

पतिक हाथमे चाहक गिलास पकड़ा लालकाकी आगूमे ई सोचि ठाढ़ भेली जे दू-चारि घोंट चाह जखन पीब लेता तखन बाजब। मुदा से भेल नहि, एक घोंट चाह पीब लालकाका बजला-

"भोर आकि साँझक कानबक महत् बुझै छिऐ, जे अनेरे कानै छेलौं?"

लालकाकीक मनमे जे विचार घुरियाइ छेलैन, से बात नहि उठि दोसरे बात लालकाका उठा देलकैन। तँए लालकाकी तारतम करए लगली। भेल ई छल जे दुर्गापूजा बीतलाक तेसर दिन परिवारक संग माझिल बेटा गामसँ अपन कर्मस्थल, जे गामसँ चालीस किलोमीटर हटल अछि, टेम्पूसँ जाइ छलैन। रस्तामे टेम्पूक ड्राइवर धकचुका गेल जइसँ गाड़ी पलटी मारि देलक। दिनेशक सभ परिवारक संग ड्राइवरो गाड़ीसँ खसि पड़ल। ओना, छह गोरे गाड़ीमे सवार छला, जइमे चारि गोरेकेँ किछु ने भेलैन, साधारण चोट-चाट लगलैन। मुदा दू गोरेकेँ विशेष चोट लगने जख्मी भेला। ड्राइवरकेँ लहेरियासराय अस्पताल पठौल गेल आ दिनेशक जेठकी बेटीक पएर टुटि गेल, जेकर इलाज निरमलीए-मे हुअ लगल।

मोबाइल-जुग भेने एते तँ सुविधा भाइए गेल अछि जे पाँच-दस मिनटमे केतौ-सँ-केतौ समाचार पहुँच जाइए। घटनाक पाँचे मिनटक पछाइत लालकाकाकेँ सेहो जानकारी पोताक-मुहेँ भेटलैन। समाचार सुनिते पोताकेँ पुछलखिन-

"केना की घटना भेल?"

पोता कहलकैन-

"मझिला काका कहला जे घटना तँ भेबे कएल मुदा क्षति बेसी नइ भेल। तँए कोनो बेसी चिन्ता करैक नइ अछि।"

समाचार सुनि लालकाका बजला-

"अपना नजरिये देख लेब, बेसी नीक हएत, तँए तूँ जा कऽ देख आबह।"

पोता कहलकैन-

"काका मनाही कऽ देलैन जे अबै-तबैक काज नइ अछि।"

पोताक बात सुनि लालकाका बजला-

"बड़बढ़ियाँ।"

मुदा मनमे नाचि उठलैन जे एक समझदारक समझदारी भेल। जँ अपन परिवारक भार अपने केने निपैट ली तँ ओ बेसी नीक भेबे कएल। परिवार छिऐ, जखने कोनो क्षतिकेँ नमहर करि कऽ बाजब तँ ओ लोकक मुहेँ तेते नमहर भऽ जाएत जे अनेरो असथिर मनकेँ लहरा देत। मुदा जखन कोनो क्षति भऽ गेल तँ ओकर पुरती केना हएत, तइ दिस अपनाकेँ लगाएब अछि। ओना, लोकोक मुँह मुँहे छी। झूठो बातकेँ ताड़क गाछसँ नमहर सत् बना देत आ ताड़ो गाछसँ नमहर सत्-केँ फूसि बना देत। खएर जे बनबए...। पोताक मुँहक बात सुनि लालकाका अपने-मुहेँ दिनेशसँ हाल-चाल बुझैक विचार करैत बजला-

"मोबाइल लगाबह, कनी अपनेसँ समाचार बुझि लेब।"

पोता कहलकैन-

"ड्राइवरकेँ बेसी चोट लगल छै, ओकरे उठा कऽ अस्पताल लऽ गेला।"

अपनो मन लाल कक्काक मानि गेल जे एते तँ जानकारी भाइए गेल अछि जे कम क्षति भेल। अखन जँ मोबाइलसँ समाचार बुझौ चाहब तँ या तँ दिनेश मोबाइल उठेबे ने करत या जँ कोनो हलतलबी काजमे लागल हएत, माने दिनेशो तँ प्रैक्टिश करिते अछि, तैबीच बाधा ठाढ़ करब नीक नहि। दोहरा कऽ गप-सप्प लालकाकाकेँ नहि भेलैन। बेसी जरूरियो बुझब मनमे नहियेँ रहैन। तइ बीचमे दिनेशेक पत्नी दियादिनीकेँ फोन कऽ घटनाकेँ तीन-चारि गुणा बेसी करि कऽ कहि देलखिन। कोनो दुखकेँ छोट करैत मेटौल जा सकैए। जँ बढ़ा देबै तँ ओ बढ़बे करत। ओना, सुपात्र आ कुपात्रक भेद लालकाकाकेँ बुझल रहबे करैन, तँए मनमे कोनो उतबल नहियेँ उठलैन। मुदा

परिवारोमे लैंगिक धारा तँ चलिते अछि। पुरुख पात्र वृक्ष सदृश डारिक महत् बुझैए जे गाछक सभ शीलमे फड़ नइ फड़ैए, मुदा किछु फल तँ ओहन ऐछे जे शीलोमे फड़िते अछि। तँए पुरुख पात्र पुरुख पात्र, दिस झूकल रहै छैथ। मुदा नारी पात्र नइ छी सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। नारीक सिनेह पात्रसँ अधिक होइते अछि। लालकाकीकेँ आँखिक देखल पहिलुका एकटा घटना नैहरक देखल छेलैन जे एकटा बारह-तेरह बर्खक लड़कीकेँ बामा टाँग टुटि गेल। गरीबीक चलैत ओ डॉक्टरी इलाज नइ करा सकल। झाड़-फूक, जड़ी-बुटीक इलाज करौलक। जान तँ बँचि गेलै मुदा नाँगर भऽ गेल। जइसँ बिआह नइ भेलइ। बिआहक लड़की चुनैक ई पद्धति अछि जे किछु जातिक बीच लड़की देख बिआहक चलैन अछि तँ दोसर दिस किछु जाति एहनो तँ छैथे, जइमे लड़की देखैक चलैन नइ अछि। जइ जातिमे लड़की देखैक चलैन छै तइ जातिक ओ लड़की छल, तँए बिआह नइ भेलइ। ओना, ऐठाम परिवारक समस्याक प्रति चर्च अछि तँए बिआहक की पद्धति नीक आ की अधला, तैपर विचार करैक नहि अछि। ..लालकाकीकेँ ओ लड़की माने नैहरक लड़की, तेना मनकेँ ममोरि कऽ मोड़ि देने छेलैन जे मनकेँ बेकाबू कए देने रहैन। बोम फाड़ि लालकाकी लाल कक्काक आगूमे कानए लगली।

कानब सुनि जँ धधड़ाकेँ तत्काल शान्त नइ कएल जाएत तखन की कएल जाए। तहूमे अक्लबेर अछि। माने साँझ आ भोरककेँ अक्लबेर कहल जाइए। जहिना भोरुका सपना साकार करैले बारह घन्टाक सूर्ज उगल दिन रहैए तहिना ने सौंझुका सपना-ले भरि राति ऐछे, भलेँ ओ अन्हरियामे अन्हार आ इजोरियामे इजोते किए ने होइ। अखन भानस-भातक बेर अछि, जखने सौंझुका नढ़ियाक एकटा अवाज निकलैए तँ कात-करोटक नढ़िया सेहो अवाज निकालबे करैए। ई तँ कानब छी, पसाही जकाँ लगले हवामे उधिया जाएत। तँए

ओइ हिसाबसँ ने कानबकेँ रोकल जा सकैए...।

लालकाका पोताकेँ कहलैन-

“मझिला काकाकेँ फोन लगाबह।”

पोता फोन लगबए लगलैन। एमहर गदह करैत लालकाकीकेँ देख लालकाका कड़ैक कऽ बजला-

“भागत ऐठामसँ की नहि!”

मोबाइलसँ सम्पर्क बनैमे किछु बिलम भेलैन। तैबीच लालकाकी लाल कक्काक लगसँ हटि आँगन दिस कनैत भगली, जेना घरसँ लालकाका निकालि देने होनि, तहिना मनमे नाचए लगलैन। दरबज्जापर सँ निकलैत कनैत लालकाकी बजली-

“कोन असोच जतरासँ ओ सभ आएल..!”

आगूक बात लालकाकीक पेटमे जे रहल होनि मुदा मुहसँ एतबे दरबज्जाक सीमानपर निकललैन। आँगन पहुँचते लालकाकी दुनू पुतोहुपर अपन दुखक झाड़ झाड़ैत दमैस कऽ बजली-

“यएह सभ बात-कथा सुनौलक!”

लालकाकीक मुहसँ निकलल ‘असोच’ शब्द लाल कक्काक मनकेँ हौंर देलकैन। मनमे उठलैन- की दिनेशक सोचमे कमी रहल जे गाम आएल? की समाजक बीच कएल कीर्ति-कीर्तिमानकेँ बिसैर जाए? परिवारकेँ बिसैर जाए? अपन कएल दुर्गापूजाकेँ लोक अपने बिसैर जाए? शुरूक बीस बर्ख जेकर अपन परिवार समाजिक कीर्ति बुझि करैत आएल। बाप-दादाक कएल कीर्तिकेँ अपने ओ जखन छोड़ि देत तखन ओइ कीर्तिक की महत् रहत? ओहने ने हएत जे रचनाकारक रचना अपने परिवारमे हेरा जाए..! जँ अपने हेरा देब तखन अनका केते जरूरत छै, से तँ अपने ने बुझब। ..यएह सोचि ने दिनेश

सपरिवार साले-साल दुर्गापूजामे गाम अबैए, तइमे ‘असोच’ भेल की ‘सोच’ ई के बुझत? मुदा विचारैत-विचारैत लाल कक्काक मन असथिर भेलैन। तैबीच लालकाकी अँगनमे झौहैर मचा देलैन।

आँगनक झौहैरक अवाज दरबज्जो दिस बढ़ए लगल। अपन विचारकेँ रोकि लालकाका चौकीपर सँ उठि कऽ आँगनक मुँहथैरपर जा त्रिभुजक अकारमे किनछिया कऽ ठाढ़ भऽ कनसोह लिअ लगला। त्रिभुजक एहेन अकार बनौलैन जे लालकाकीक नजैर तखन पड़तैन जखन ओ पाछू उनैट तकती। मुदा पुतोहुक नजैर त्रिभुजक ऐगला रेखापर पड़ैत रहैन। मनक जे विचार पनैप गेल छेलैन जे भलमानुस परिवार सेवक बनि, नीक-बेजाए काजकेँ देखैत दिन-राति जे (माने पत्नी) एकबट्ट केने रहै छैथ, माने जहिना काजक दिन छी तहिना ने काजक रातियो छी। मुदा से तँ करब असानो नहियेँ अछि। तइले तँ अपन बाड़ी-फुलबाड़ी बुझए पड़ै छइ। पढ़ल-लिखल, पुतोहु सासुक कृर्ति-वृर्त्तिक चित्रकेँ कोन रूपे देख रहल छैथ, ओ तँ विचारए पड़त। परिवारक बीच जिनका जेते काजक भार अछि ओ सीमित दायरामे अछि, जँ से नइ रहैत तँ बेकारी नइ रहैत। तइमे अहाँ अपन काज सासुक माथ थोपि देब तखन अहाँ अपनो-जोकर काजसँ जँ देह चोराएब, तँ परिवारमे चोरि हएत की नहि। ओहिना नइ ने कबीर बाबा नाचि-नाचि-गाबि-गाबि खौजरीपर कहै छेलखिन- ‘तोरा संगेमे चोर..!’

परिवारक प्रतिष्ठा बुझि पुतोहुक कानमे जे खबैर मोबाइलसँ दोसर दियादिनी पठौने छेलखिन ओ स्पष्ट करैत दुनू दियादिनी अपनाकेँ पाक-साप केलैन।

लालकाका मने-मन सोचलैन जे जैठाम सबहक बीच, माने दुनू पुतोहुक आ सासुक बीच कहा-कही हेतैन, तइमे की कएल जाए? मनमे अबिते लालकाका गमैया पनचैती करैत लालकाकीकेँ कहलैन-

“भरि राति झगड़े करैत रहब आकि चाह पीएलौं, पानो खुआएब?”

लाल कक्काक बात सुनि लालकाकी अपन पनचैती भेले बुझलैन। आँगनक ओसारसँ दरबज्जा दिस बढ़ली। ओसारपर सँ लालकाकीकेँ सहैटते लालकाका आगू बढ़ि अपन जगहपर आबि बैसला। तही बीच दिनेशसँ सम्पर्क भेलैन। माने मोबाइल लगल। पोताकेँ पंच मानि लालकाका कहलखिन-

“मझिला काकाकेँ कहक जे ऐठाम दादी-बाबा सहित सभ-कियो छी। केना की घटना भेल?”

समझदारीक समझदार[5] जकाँ दिनेश बाजल-

“ड्राइवर धकचुका गेल, जइसँ गाड़ी पलटल। अपन परिवारमे एक गोरेकेँ पएरमे कनी चोट लगल छइ। सभ डेरेमे छी। ड्राइवरकेँ लहेरियासराय जाए पड़लै।”

दिनेशक समटल विचार सुनि लालकाका लालकाकीकेँ हूथकारी दैत कहलखिन-

“अहीले अहाँ एते आफन तोड़ै छी!”

जेना जेठमे तबल धरतीमे जँ बाढ़ि वा बर्खाक-पानि पड़ने धरती सुगन्धित भऽ उठैए तहिना लालकाकीकेँ भेलैन। लाल कक्काक मन लगले उनैट मंटूक फाँसीपर पहुँच गेलैन। फाँसी केतए हेबा चाही, बुझिये ने पेब रहला अछि।

◌

शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016

[5] कोनो घटनाकेँ अपनासँ बाहर दोसरक सहायता तखने ली, जखन ओ अपनासँ असाध हुअए।

अनका बेर ओंघी

बड़का भोरेसँ, बड़का भोर भेल तीन बजे जे रातिक तीन बजेक सीमान सेहो छी, मनोहर बाबा अड़ना साँढ़ जकाँ ढेकड़ए लगला। ढेकड़ैक कारण भेलैन मनक छिनाएल काज...।

ओना ओछाइनसँ उठि हाथ घोइ कऽ मनोहर बाबा चाह बनबैत रहैथ, तँए अड़ना साँढ़ जकाँ चौगामा अवाज तँ मुहसँ नइ निकलैन मुदा अपन परिवारो आ लगक पड़ोसियो सभ सुनैत रहैन। ओना, समाजक किछु लोक एहेन छथिए जे मनोहर बाबाकेँ कर्मक साँढ़ सेहो कहै छैन। कर्मक साँढ़ ओ भेला जे अपन मनोनकूल जिनगीक रूटिंगमे चलै छैथ।

मनोहर बाबाक घरसँ सटले पच्छिम अपन घर अछि। तहूमे पुर्बाक सिहकी सेहो चलिते अछि, तँए मनोहर बाबाक बाजब कान तक पहुँचैत रहए। मुदा शब्द साफ नइ बुझि पबैत रही। मनमे उड़ी-बीड़ी जकाँ हुअ लगल। अखन मनोहर बाबाक रूटिंगक हिसाबसँ, प्रभात-वेल रहने मनन-चिन्तनक छैन, तखन किए बाजि रहला अछि?

ओछाइनपर सँ उठि, पएर दबैत चुपे-चाप मनोहर बाबाक कोठरीक मुँह लग पहुँचलौं आ कतवाहिमे ठाढ़ भऽ केबाड़क फाटमे कान सटेलौं।

..जेना कियो बेर-विपैत पड़लापर घौना कऽ-कऽ घुघिंया-घुघिंया

कनैत तहिना बुझि पड़ल। आरो केबाड़क फाटमे कान सटेलौं तँ आरो स्पष्ट अवाज आबए लगल-

“अनका बेर ओंघी!”

मनोहर बाबाक रूटिंग भंग जिनगी देख केबाड़ ढकढकेलौं। मनोहर बाबा बजला-

“जगले छी, केबाड़ खुजले अछि, आबह।”

मनमे भेल जे पहिने बाबाकेँ मन मधुआएब जरूरी अछि। किए नीन तोड़ि कड़कल छैथ...। केबाड़ खोलि भीतर पहुँचते बजलौं-

“बाबा, अहाँक पुरान हड्डी भेल, पुर्वाक सिहकी सिरसिरबैत हएत, मुदा हमर तँ असल आनन्दक समए छी किने। माने अठबजिया उठनिहार छी।”

पहुँचैसँ पहिने, केबाड़ सटा मनोहर बाबा चाहक चुल्हि पजाइर चाह बनबैत रहैथ। अपना तँ बुझले अछि जे मनोहर बाबा दू बजे रातिमे ओछाइनपर सँ उठि मुँह-कान-हाथ-पएर धोइ भरि छाँक पानि पीब, चाह बना मन भरि पीब मनक संग जिनगीक मनमौजमे लगि जाइ छैथ, तँए कोनो नव गप नइ बुझि पड़ल। मुदा पोखैर हौउ आकि इनार, पानि रहितो धारक पानि जकाँ थोड़े धरधराइत चलैए, ओ तँ असथिर रहैए। हँ, जखन ओइमे माने पोखैर-इनारमे कोनो भरिगर वस्तु फेकल जाइ छै तखन लहैर उठैए आ ताधैर लहरैत रहैए जाधैर असथिर नइ भऽ जाइए। तहूमे जेना मनक टोकारा देलिऐन तेना ‘हँ-हूँ’ किछु ने बजला, ईहो तँ कोनो कारणक घर भाइए सकैए। आब जँ फेर दोहरा कऽ किछु बाजी आ जँ मनक प्रतिकूल पड़तैन तखन तँ आरो गड़बड़ हएत, तँए लगमे आबिए गेल छी, मनमे जे हेतैन से बजबे करता। जानियेँ कऽ बाबाक घुन-घुनी सुनि एलौं, जँ पुन-पुनी सुनने बिना चलि जाइ, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत, तँए बाबाक पँजरामे बैस

चुल्हिक आगि तापए लगलौं। तहूमे जाड़क आगमन, ओ तँ भोरहरबेसँ ने अपन पएर पसारत, तँए आगिक तृष्णो ऐछे...।

पोखैरक लहैर जकाँ मनोहर बाबाक मनक लहैर सेहो कम हुअ लगलैन, जइसँ अपने मने बाबा जे सुनैत होथु, मुदा मुँह नहि फुटने अपने किछु ने सुनि पबैत रही, जे गुनितौं। तँए कोनो सुनि-गुनि रहबे ने करए। ओना बाबाक मनक लहैर अपन विचारसँ कमैत रहैन आकि हमरा सोझा पड़ने कमलैन, से बुझिए ने पेबैत रही। किए तँ एहनो भऽ सकैए जे बेरपर, घाट परक छबड़ा जकाँ जे पानिमे पैसिते पड़ा जाए, फेर हुअए जे जँ एकटा छबड़ा पड़ा जाए आ दोसर कतला चलि आबए, तखनो तँ मनक लहैर कमिते अछि। मनोहर बाबाक मनमे जे होइत होनि मुदा अपना मनमे कोनो रस्ते ने सूझए। मुदा कोनो कि आइए बाबा-लग बैसल छी, जे कियो देखबो करत तँ मनमे कोनो शंका थोड़े हेतइ। सभ दिन तँ नहि, मुदा बेसीकाल एकठाम बैस दुनू गोरे देश-दुनियाँक चर्च करिते छी।

तैबीच बाबा चाह छानए लगला। दू कपमे देख मन मानि गेल जे अपना संग हमरो हिस्सेदार बना चाह छानि रहला अछि। मुँह-कानमे पानियोँ ने नेने रही, बजलौं-

“बाबा, कलपर सँ कनी मुँह-कान धोने अबै छी।”

मुस्की दैत बाबा बजला-

“तोहर ओछाइन छोड़ैक बेर छह आठ बजे दिन, अखन अढ़ाइ बजैए, तोरा-ले अखन तरतरौआ राति अछि, तखन अनेरे किए ठंढामे कलपर जेबह। पानि पीबैक मन छह तँ, लोटामे अछिए पीब लएह।”

बाबाक बात सुनि मनमे कोनो कुवाथ नइ भेल, कुवाथो किए होइत, कोनो कि हमहींटा एहेन छी जे बिना मुँह-कानमे पानि नेनहि चाह पीब आकि हमरा सन-सन आरो छैथ। हँ ई बात जरूर जे मुँह-

कान पवित्र भेला पछाइत चाहो पीब पवित्र होइतो अछि आ लगबो करिते अछि। मुदा एकठाम रहने, खेने-पीने, एकरंगाह काज केने सम्बन्धमे प्रगाढ़ता अबिते अछि। की बाबा नइ बुझै छैथ, जे हम तेहाला भेलौं। परिवारमे जँ किछु परिवारक सदस्यक संग भेल होनि, ई तँ वएह ने बजता। तेहाला होइक नाते जहाँ धरि सम्भव हएत तहाँ समरूप बनबैक परियास करब। तैठाम जँ चलाकी करता जे परिवारक बात छी, आन परिवार कियो किए बुझत। तहूले हमर कोन दालि गलि जाएत, भाय जँ अपन परिवारकेँ इज्जतदार बुझै छी तँ इज्जतदार जकाँ बना निमाहौ पड़त किने। मुदा ओ असान थोड़े अछि। समाजक धारमे परिवार वहैए, आइक परिवेशमे समाजक बीच एते प्रदूषित वायुमण्डल भऽ गेल अछि जे धुँआसँ भरि गेल अछि, तैबीच नीक-अधलाकेँ बेरा लेब, बाल-बोधक खेल थोड़े छी..?

मने-मन मनोहर बाबा जे सोचैत-विचारैत होथि मुदा हम अखनो तक अग-दिगेमे छी, जे की केने नीक हएत आ की भेने अधला हएत। परिवारक बीच जँ कोनो तेहेन बात हेतैन तँ ओ अपना परिवारमे समीचित बना लोथु मुदा हम तँ तेहाला समाज भेलौं, ओना दियादियो अछि, मुदा से अछि सराधे-बिआह धरि।

चाह पीब पान खाइते जेना मनोहर बाबाक मन पनफूल गेलैन। बजला-

“आइ सामाक राति छी।”

चाह-पान परक मन फुहर रहबे करए, बजा गेल-

“एह बाबा, बारह बजे धरिक राति खेलेमे कटि गेल!”

हमर बात जेना बाबाकेँ नीक लगलैन तहिना भूखल बटोही जकाँ बजला-

“से की?”

बाबाक बात सुनि मन चौंकल। अनेरे सामा-चकेबाक खेलमे ओझराए चाहै छी। अखन की चारवाक औता बाबाक समैक मूल्य छैन तैठाम जँ काजक समए बाधित भेल होनि ई तँ विचारणीय विषय अछिए। मनक विचारकेँ मनेमे धकलैत बजलौं-

“बाबा, अखन भोरुका राति छी, तहूमे बारह बजे राति तक खेलेमे बीतल, मुदा अहाँ..?”

एकाएक मनोहर बाबाक मन असथिर हुअ लगलैन। नीक जकाँ मन असथिर भरिसक भेलो ने रहैन। बजला- “जिनगीक सभसँ अमूल्य धन अमूल्य मनक अमूल्य समैक उपयोग छी।”

बाबाक बात नीक जकाँ बुझबे ने करैत रही तँए मन घुरिया लगल। बाबाकेँ धोखा भेलैन। धोखा ई भेलैन जे नीनक आगमन बुझि पड़लैन, तँए टारैत बजला-

“सुतबो जे छी, ओहो आनन्दक घर छीहे, जेहेन हल्लुक नीन तेहेन भरिगर सपना आ जेहेन गढ़गर नीन तेहेन स्वर्गक सुख तँ होइते अछि।”

ओना मन पहिलुका विचार अमूल्य तन-मन आ धन दिस ओझरा गेल रहए, तँए बाबा जे नीकक खियालसँ बजला से नीक नइ लागल। नीक नइ लगैक कारण भेल जे विचारक ओइ धारमे मन घुमए लगल जे जेकरा जइ धारकेँ मोनि बनबैक लूरि हेतइ ओ ओते ने जीअलगर धार भेल। सोझे कोसी-कमला आकि गंगा-बागमती कहि देने तँ नइ हएत। चारूमे ईहो ने देखए पड़त जे बागमतीक धार असथिरसँ बहैए, तैसंग मोइनो बनबैक लूरि नै छइ। तैठाम तँ कोसीकेँ मोनि बनबैक लूरि छइहे, तँए वएह ने कमलोक संग मिलि मोनिफोरिया धार कहौत।

..हँ-हूँ किछु ऐ दुआरे नइ बजलौं जे अखुनका समए जे बाबाक

छैन, ओ अपन नहियेँ अछि। मुदा बाबा जँ सोझरा कऽ कहितैथ जे जीवनक लेल सुतब अनिवार्य अछि, आ ई समय नीनियाँ देवीक पूजाक छी, जे पूजाक वस्तु भेल ओ आनन्दक केना हएत। आनन्द तँ पूजाक पछातिक अवस्था छी। मुदा मन मानि गेल छल जे जेते समए बाबाक विचार बुझैले बना चलल छेलौं तेते समए बीतत, उठि कऽ विदा भऽ जाएब। भाय कियो अपना रूटिंगे चलैए।

गुम-सुम देख बाबा बुझि गेला जे भरिसक महेन्द्र अकछा रहल अछि। तैसंग ईहो चेतलैन जे हमर कानब सुनि ने महेन्द्र आबि नोर पोछए चाहलक। बजला-

“भरदुतिया दिन, परिवारमे विचार भेल जे भोरमे दू बजे जे बाबा अपनेसँ चाह बनबै छैथ, से किए ने भनसिये, जे बारह-एक बजे राति तक जगले रहै छैथ, भलेँ जे पसिनगर काजमे बितैत होइन। जखन गैस चुल्हि भेल तखन दस मिनटक काज चाह बनाएब भेल, थर्मश छैन्हे, जइमे सात-आठ घन्टा चाह चाहक अवस्थामे रहैए। बना कऽ ओसारक खिड़कीपर रखि देती।”

बाबाक विचारक धारमे अपनो भँसिया गेलौं। बजा गेल-

“ई तँ उत्तमो-मे-उत्तम भेल। सबहक जिनगी सेहो सुड़ियाएल चलत आ परिवारमे केतौ रग्गा-दोगी, माने चलैकाल जे एँड़ी-दौड़ी लगै छइ, सेहो नइ लगत।”

अपना जनैत नीक बात बजलौं मुदा से बाबाकेँ अधला लगलैन। अधला लगैक कारण भेलैन जे कलकत्ता युनिवर्सिटीसँ बी.ए. पास पुतोहु छैन। मनमे ऐ बातक कुवाथ मनोहर बाबाकेँ छैन जे मिथिला युनिवर्सिटीक छात्रा रहितैथ तँ मनो मानि लैत जे कीनुआ डिग्रीधारी छैथ तँए कोनो लूरि-बुधि तेते नइ हेतैन, मुदा से तँ नहि, ओ कलकत्ता युनिवर्सिटीसँ बी.ए. पास केने छैथ। तहूमे गृहविज्ञानसँ। जे

चाह बनाएब गछि कऽ बिसैर गेली। मनोहर बाबा बजला-

“जँ पढ़ल-लिखल लोक अपन जिनगीकेँ अनुशासित बना नइ चलत, तँ परिवारक कोन बात जे की अपना मनोमे ढाही लगिते ने रहत।”

मनोहर बाबाक बात सुनि अपनो मन तँ मनोहर भेबे कएल जे मनोहर विचारो फुटि कऽ बहरा गेल-

“जिनगीक क्रियामे केकरो बाधा उपस्थित करब, सचमुच..!”

मुदा अपनाकेँ रोकि लेलौं। रोकि ई लेलौं जे पढ़ल-लिखल परिवारमे जखन समुचित विचार नइ चलत तखन, बहुरंगी परिवार–बहुरंगी भेल जे कोनो परिवारमे सोल्होअना पढ़ल-बिनु-पढ़ल अछि, कोनोमे बारहअना, कोनो भेल आठअना आ कोनो परिवारमे चारिअना- पढ़ल-बिनु-पढ़ल अछि–केना चलत..? मुदा मनक सभ विचारकेँ समेट बजलौं-

“बाबा, केकरो बाधा उपस्थित केने कियो बाधित हएत? ओ तँ एकटा जिनगीक अमूल्य क्रिया छिऐ, तइले..?”

हमर विचार जेना मनोहर बाबाकेँ छुलकैन। मुदा रगड़ी कोनो आइयेक मनोहर बाबा छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, सहए भेबो कएल। बजला-

“अखुनका समए बेसी दुइर करैक नइ अछि। मुदा अपने सोझामे कनी भाएकेँ (माने पुतोहुक भाएकेँ) मोबाइलसँ कहि दहुन जे एना-एना दिन-दुनियाँ अछि।”

अखुनका समैसँ आगुक समए बढ़ैत देख सुतैले चलि एलौं। ओना आन दिन ऐ समैमे, माने तीन बजे भोरुका राति, नीनक कड़कड़ाएल अवस्थामे रहै छेलौं। मुदा आइ की भऽ गेल जे नीनक केतौ पते ने अछि। ऐ कड़सँ ओइ कड़ करै छी मुदा नीन आबिए ने

रहल अछि। पाछू उनैट तकलौं तँ बुझि पड़ल जे बाबाक घुनघुनाएब नीन तोड़लक, तैपर अकलबेरक चाह पीलौं। अकलबेर भेल जे समए नियमित नइ अछि। मुदा दोसर दिस ईहो तँ ऐछे जे रूटिंग जिनगीमे बाबाक लेल से अकलबेर छीहे।

आइ पुर्णिमा छी, कातिकक अन्तिम तिथि आ इजोरिया पखक पनरहम दिन। आइसँ तेरह दिन पहिने, भरदुतियामे पुतोहुक भाए–राघव आएल छल, वएह हमरा चाह बनबैत देखलक तँ वेचाराकेँ दया लगलै। घरक भनसिया बहिन, तँए ई तँ अपने हाथ-मुट्ठीक काज भेल। बीच-बचाव करैत समझौता भेल जे आइसँ बाबा अपना हाथमे चुल्हि-केटलीक कारीख नइ लगौता।

हाथमे कारीख लागब सुनि अपनो मनमे माया जगि गेल, दुनू गोरेक बीचक दया मयामे बदैल गेल जइसँ अपनो मन हल्लुक भेल जे भने चुल्हि लगक काज अन्त भेल। ओना मनमे लगले ईहो उठि गेल जे भाय सरलो-सुखलो माछ लऽ कऽ जे काठमाण्डू जाएत सएह ने पशुपति नाथक दर्शनो करत। काठमाण्डूक बागमती नदीक बीच बसल पशुपति नाथ, ओना अपनो सोमनाथ मुदा ओइठाम सुखटीक वणिज नइ होइत। भाय चाह बनबैक बहन्ने माघमे दू बजे रातिक आगिक सुख घन्टा-दू-घन्टा हुअए तँ माघोक राति किए ने हौउ, पसीनो तँ चुबाइये सकैए।

आइसँ तीस बर्ख पूर्व राघव मैट्रिक पास केला पछाइत गाम छोड़ि कलकत्ता गेल। गाम छोड़ैक कारण भेलै परिवारक वाध्यता। वाध्यता ई जे कोसी धारक कटानमे आधा गाम कटि गेलै, जइसँ परिवारक आमदनी टुटलै। मनमे ई रोपि राघव कलकत्ता गेल जे जइ शहरमे बिनु पढ़लो-लिखल लोकक अँटावेश अछि तैठाम तँ हम पढ़ल छी, मैट्रिक पास छी। हमर दुनियाँ तँ बिनु पढ़ल-लिखलसँ नमहर

अछि तखन अँटावेश किए ने हएत। ..पढ़ल रहने राघवकेँ सुपारीक एकटा थौक गोदाममे नोकरी भेलइ। थौक कारोबार तँए दिन भरिमे एक-दूटा वेपारीसँ बेसी नइ पहुँचै मुदा ओकरे काज ओते जे मटियासँ मेट धरि भरि दिन खटैत रहइ। राघवकेँ गामक उजरल-उपटल जिनगी मनमे नचलै। समैक उपयोग केलक। नीक कमाइक संग काजक समैक बचत भेलइ।

पाँच बर्खक पछाइत ओ नोकरी छोड़ि राघव दोसर शुरू केलक। बी.कॉम. सेहो केलक, संगे थौक वेपारक कारोबार बुझल रहबे करइ, साले भरिक पछाइत एकाउन्टेन्टमे बदैल गेल।

गाममे माए-बापकेँ छोड़ि, गामेमे खर्च दिअ लगलैन, आ सभ भाए-बहिनकेँ कलकत्ते लऽ गेला। भाइक फर्ज निमाहैत बहिन–सुशीला–केँ बी.ए. पास करा, बाबाक परिवारमे बिआह केलैन। ओना, पितो अपन काज, जे नइ करै-जोकर स्थितिमे बदैल रहल छला, माने परिवारक आमदनीक टुट आ समाजिक सम्बन्धमे बढ़ोत्तरी एने तँ एहेन परिस्थिति बनिते छइ। तँए पितो राघवकेँ परिवारक उद्धारकर्त्ता बुझै छथिन आ सुशीला सेहो मानियेँ रहल छैन, जे पिता दाखिल भाए छैथ।

नोकरीक अन्तिम पड़ावपर राघव पहुँच गेल। ओना, प्राइवेट नोकरी, तँए सेवा निवृत्तिक कोनो ठेकान नहियेँ, मुदा पैंतीस सालक जिनगीक तीत-मीठक अनुभव करैत भरदुतियामे बहिनक ऐठाम आएल छल।

ओना अपनो ओछाइनपर कछमछाइते रही, तँए गप-सप्प करैक मन होइते रहए। मुदा एते रातिमे केतए जा कऽ गप करब। तहिना मनोहर बाबाकेँ सेहो भेलैन। मुदा हुनका तँ बुझल रहबे करैन जे महेन्द्र जगले अछि। धड़फड़ाएल आबि ओसारपर चढ़ैत बजला-

“महेन्द्र?”

बाबाक बोल अकानि बजलौं-

“की भेल अछि, बाबा?”

उठि कऽ केबाड़ खोलि इजोत केलौं। दुनू गोरे एकेठाम बैस गप-सप्प करए लगलौं।

बाबाक मन जेना कड़ैक गेल होनि, तहिना बजला-

“महेन्द्र, अखने राघवकेँ फोन करि कऽ कहि दहुन जे जइ मुहेँ भरदुतिया दिन बजलौं से आइ सामा दिन माने पुरनिमा दिन की भेल, से काल्हिये आबि कऽ देख जाउ।”

बाबाक कड़कल मन देख मनमे भेल जे जँ कोनो नरमाएल बात कहबैन तँ कहीं हमरेपर अपन तामस ने झाड़ए लगैथ, तखन तँ नाहक मारि जोलहा खाए। बजलौं-

“अखन तीन बजे रातिमे ओ[6] थोड़े जागल हेता जे फोनपर गप हएत।”

हमर बात सुनि बाबा कनीकाल ठमकला। मुदा लगले बजला-

“बौआ, तूँ अखैन तीत-मीठ नइ बुझै छहक अपन काज सदिकाल अगुएने चली।”

आशा हारि बजलौं-

“तखन की करब नीक हएत?”

“एस.एम.एस. कऽ दहक।”

सएह केलौं।

मुदा मनमे उठि गेल जे परिवारमे एहेन-एहेन समस्या उठैत किए

[6] राघव

अछि? बजलौं-

“बाबा, जिनगीक तीन अवस्था अछि। बीतल, आजुक आ काल्हुक। काल्हुक लेल हम अपन जिनगीकेँ अपन भविस देख जँ नहि ढालब तखन एहेन-एहेन समस्या परिवारमे उठबे करत।”

दोसर दिन राघव, सुशीलाकेँ पुछलैन-

“बहिन, बाबा बिगड़ल किए छथुन?”

सुशीला-

“भैया, सामाक दिन छेलै, समाजमे अपन कला प्रदर्शनक अवसर छल, अहीं जे शीशी नेने आएल छेलौं तइमे सँ एक गिलास खेबेकाल पीब लेलौं। ताबे गाममे सामा गीत शुरू भेल, हाँइ-हाँइ कऽ हाथ धोइ, सामाक डाली साजि आँगनसँ निकैल गेलौं, तँए चाह बनबैक सुरते ने रहल।”

◌

शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016

देव उठान

कातिक मासक इजोरिया पखक एगारहम दिन माने एकादशी-के देवउठान पाबैनक दिन।

आइ जिनगीक पचपनमा बर्खक उतार-मासमे पहुँच गेल छी। उतार मास ई जे जहिना कातिक पाँचे दिन बाँकी अछि, तेरहम मास छी, तहिना अंगरेजीक नवम्बर मास छी, मात्र दिसम्बरटा पछुआएल अछि। अपन बर्खक[7] कोनो मोजरे ने अछि, किएक तँ सालक हिसाब भेने दिन-महिना कटि जाइए। पढ़ल-लिखल लोक अपन जन्मकुण्डलीए-सँ आ स्कूल-कौलेजक तारीखोसँ अपन उमेर गनि लइ छैथ, मुदा बिनु पढ़ल-लिखलमे तँ से नइ अछि।

ऐ पचपन बर्खक जिनगीमे बाबन बर्ख ओहन रहल जे मन मानि गेल छल जे जे दिन धार[8] बहैए, बहैए। आब कखनो मरना भऽ जाएत। तेकर अनेको कारण अछि, मुदा ऐठाम दुइए-टा। पहिल ई भेल जे दस-बीस हजार बीघाबला जमीन्दार परिवार नहि, ने साए-पचास बीघाबला जेठरैयत परिवार, आ ने पाँच-दस बीघाबला सीमान्त किसान। बीघासँ निच्चे जमीन अछि, जइमे जीबैत आबि रहल छी।

[7] उमेरक
[8] जिनगीक धार

खेतीक उपजो घटने आ धिया-पुताक बढ़बारि, जिनगीकेँ थौआ करए लगल। जिनगीक बाबन बर्खमे परिवारक ओहन धारमे बहैत जीवनकेँ मरने बुझि, घिसियौर कटैत आबि रहल छेलौं। मुदा जीबैत रहि गेलौं। सालक केतेको पाबैन परिवारसँ पड़ा गेल। ओना, कोनो-कोनो दोहरा-दोहरा एबो कएल, मुदा बेसी निपत्ते भऽ गेल। ई बात हम अपने परिवारटा-क नइ कहै छी, आनोक कहै छी। जखन ढेरबा रही तखन सिंहेश्वर स्थान गेल रही। ओइठामक मेलाक जे रोहानी देखने रही, से एकाबनम बर्खमे दोहरा कऽ जखन गेलौं तखन कहाँ देखलिऐ। मरनासन्न बुझि पड़ल। ढेरबामे जखन गेल रही तखन हजारो जोड़ दुधारू गाए, सैयो घोड़ा-हाथीक आ सरर-तेजपातक जे मेला देखलौं से अखनो मन पड़ैए तँ बुझि पड़ैए जे सिहेश्वर बाबा बड़ जगताजोर छला। मुदा चारि साल पहिने माने एकावनम बर्खक अवस्थामे जे गेल छेलौं तखन बुझि पड़ल जे स्थान मरनासन्न भऽ गेल अछि! तहिना अपन जिनगीमे सेहो बुझि पड़ैए जे कोन मनुखक रूप लऽ कऽ ऐ दुनियाँमे जन्म लेलौं, जे चालिस बर्ख टपैत-टपैत घपचालीस भेल जा रहल छी! मुदा निराश नइ छी। भाय, जाबे साँस अछि ताबे तँ जीबैक आस ऐछे किने। अखन तँ दस कोस साइकिलो चला लइ छी।

चन्देश्वर बाबा ऐठाम हरड़ी बच्चेमे गेल छेलौं, करीब आठ-नअ बर्खक तहिया रही। शिवरातिक मेला रहइ, गामक करीब तीस-चालीस गोरे गेल रही, मेलामे तेते रेड़ा रहइ जे जेरसँ छुटि गेलौं, हेरा गेलौं। ओना देखिऐ जे सभटा लोके छिऐ तखन बीचमे हम केना हेरा जाएब, तँए आन धिया-पुता जकाँ कानी नहि। मुदा फलो तेकर नीक नइ भेल, जेरसँ जे छुटलौं से असगरे रहि गेलौं।

किरिण लहसैत मेलाक लोक घर-मुहाँ भेल आ हम असगरे छुटि गेलौं। तीन दिनक पछाइत गाम पहुँचलौं। तहू हरड़ी स्थानमे पैछला पाँचम साल, माने पचासम बर्खक अवस्थामे गेल छेलौं। तैबीच परसा

स्थानक जन्म सेहो भऽ भेल। सूर्ज मन्दिर, छीहे। मुदा चन्देश्वर स्थानक ओ रोहानी नहि जे जीवंतताक होइ छइ। तँए मनमे कखनो-कखनो अपन बुझल विचारपर बिसवास होइते अछि।

बुझल विचार ई अछि जे राजासँ रंक आ देवसँ दानव धरिक जिनगी सुख-दुखक बीच चलिते अछि, तहीमे ने अपनो छी। अखन दुखक समए अछि काल्हि सुखक एबे करत। एहेन विचारक की अपनेटा बुझनिहार छी आकि सभ छैथ, जँ से नइ छैथ तँ एहेन विचार बजै किए छैथ। सुखक आशामे दुखकेँ टारैत एलौं। टारैत-टारैत बाबन बर्ख बीत गेल। मुदा मन तखन मुरैछ गेल जखन मनक बीच उठल जे जखन जिनगीक कोनो निसचित बिसवास नहि अछि जे कखनो खुश कऽ चलि जाएत, जेकर सुखक आशा धेने जीबैत एलौं से केना भेटत, केना पएब? मन आगू बढ़ल माने अपनासँ आगू बढ़ि जखन आन परिवारसँ समाज धरि आ अपन इलाकासँ देश दिस नजैर उठेलौं तँ बुझि पड़ल जे जे बुझै छी ओ मने-मन गुड़-चाउर फँकै छी। जँ से नइ छी तँ गरीब किए आरो गरीब भेल जा रहल अछि आ धनीक किए आरो धनिक भेल जा रहल अछि? गरीब कहिया धनीक बनत आ धनिक कहिया गरीब बनत। सबहक मुहेँ सुनिते छी, आने किए अपनो बजै छी जे 'गाड़ीक पहिया जकाँ जिनगी चलैए, जे कखनो ऊपर होइए आ कखनो नीचा होइए। माने कखनो सुखक अवस्थामे तँ कखनो दुखक अवस्थामे जिनगी चलैत रहैए।' जँ से नइ चलैए तँ लोक किए बजै छैथ, आकि अपने किए बजै छी जे 'एक दिन नावपर गाड़ी आ एक दिन गाड़ीपर नाव?'

समए बदलल। बाबन बर्ख पूर होइत रहए कि सरकारक घोषणा भेल जे तीन लाख शिक्षकक बहाली हएत। जइमे उमेरक कोनो हिसाब नइ रहत। तही बीच एजेन्ट सभ गाम-गाममे जगल।

आठ बजे भिनसुरका उखराहाक समए, दुनू परानीमे चाह-ले भोरे-भोर रक्का-टोकी भेल। रक्का-टोकीक कारण भेल जे नमहर परिवार अछि, पाभैर चीनी आ पनरह ग्राम चाहपत्ती भोरक खर्च अछि, से नइ रहइ। अपना तामस उठल रहए जे भनसियाक काज ने भेल चाह बनाएब, ऐ मे सोल्होअना भनसिया दोखी भेली। मुदा पत्नीक तामस रहैन जे पुरुख आनि कऽ घरमे देता तखन ने हम करब।

..कहा-कहीमे दुनू गोरे अपन-अपन तामस धोबिया घाटक वस्त्र जकाँ पटकैपर रही। तेहाला कियो ओतए नहि, जे बीच बँचाउ करैत। अपने दुनू गोरे पटके-पटकीमे लागल रही, तँए अपन-अपन बात बुझैक विचारे ने मनमे जगए। जँ से जगैत तखन ने बुझितिऐ जे खाइ-पीबैले ओइ वस्तुक ओरियानो करए पड़ै छै जे अभावमे नहि भऽ सकल, तँए दुनू परानीमे कहा-कही होइए। तही बीच राजे भाय पहुँचला। कनी फरिक्के अबैत देखलयैन तँ अपनो बाजब कम केलौं आ पत्नियोंकेँ आँखि दाबि चुप करैत आँगन विदा केलौं।

..ओना, राजे भाय उमेरमे दस बर्ख कम छैथ मुदा हमहींटा नहि, हमरा सन-सन उमेरक आरो गोरे भाइये कहै छैन। ओना भाइक पाछू ईहो एकटा कारण अछि जे ओ रूपैआक लेन-देनबला कारोबार करै छैथ। लोक पुरुखाह बुझिते छैन, किए तँ कहिते छथिन जे राजे भाय रूपैआ दुआरे केकरो माए-बापक सराध बाधित नइ हुअ देता...।

लगेमे बैस राजे भाय बजला-

"तीन लाख शिक्षकक बहाली हएत। तोरो बहाली करा देबह।"

जहिना भातमे कोनो आँकर पड़ि गेने देह सिहैर उठैए तहिना राजे भाइक बात सुनि भेल। कहू जे नाम-गाम छोड़ि ने किछ लिखए अबैए आ ने किताब पढ़ल होइए, तखन कोन जादू-मन्तरसँ राजे भाय शिक्षक बनेता, से जिज्ञासा मनमे भेल।

राजे भाइक सूर-मे-सूर मिलबैत बजलौं-

"भाय, तखन तँ अहाँ वैतरणी पार कऽ देब।"

सह पबैत राजे भाय बजला-

"कौल्हुका अखबारमे समाचार निकलल हेन। सरकारेक भाषण छी, तहूमे अखन अखबारेमे आएल अछि। सहरजमीनपर अबैत-अबैत छह-मास-साल भरि लगबे करत।"

टोकारा दैत बजलौं-

"से ते लगबे करत। देखै छिऐ जे तीस-तीस बर्ख पूर्वमे जे काजमे हाथ लगल, माने काजक जे उद्घाटन भेल, सेहो सभ ओहिना अछि, ई तँ सहजे अखन कागजेमे अछि।"

हमरा विचारमे राजे भायकेँ की भेटलैन से ते ओ जानैथ मुदा हमरा बुझि पड़ल जे मनमे हरियरीक लहकी, पानिक समाढ़ जकाँ मनमे जरूर भेलैन। बजला-

"हजारे रूपैआक पूजीमे हजारक कमाइक रस्ता छी। जखन समाजमे सभ एकठाम छी, तखन तोरोसँ बेर-बेगरता निमहत आ हमरोसँ निमहबे करतह।"

ताड़क गाछ जकाँ राजे भाइक गप-सप्पमे केतौ डारि-तारि नजैरपर पड़बे ने कएल। बजलौं-

"भाय अहाँकेँ लोहा गाममे के ने मानत। हमरा नइ बुझि पड़ैए जे अहाँसँ बेसी उपकारी गाममे कियो छैथ।"

हमर बात सुनि राजे भाइक मनक चपचपी बढ़लैन। बजला-

"सैयोसँ ऊपर परिवारक उपकार केने छिऐ।"

बजलौं-

"भाय, अहाँ ते तेहेन सगुनियाँ विचार देलौं जे जिनगीक उद्धार

भऽ जाएत!"

अपन सुढ़ियाएल मोकिर (असामी) बुझि राजे भाय सुतरल वेपारक वेपारी जकाँ मुस्की दैत बजला-

"हमरा मनमे कि कोनो कलछपन अछि जे केकरो अधला करबै। जहाँ तक भऽ सकत तहाँ तक उपकार करबै। जँ उपकार नइ कएल हएत ते अपकारो नहियेँ करबै। मुदा अखन अगुताइमे छी, तँए बेसी गप-सप्प नइ करब। काजक गप करह।"

बजलौं-

"हमरा कि किछ बुझल अछि जे काजक गप करब। अहीं ने कहब?"

राजे भाय बजला-

"मास दिनक पछाइत परीक्षा छी, अखन धुर-झाड़ रजिष्ट्रेशन आ परीक्षा फीस जमा होइए। तीन दिन आरो हएत। अखन एतबे बुझह। चारिम दिन युनिवर्सिटी जाएब। ओमहरसँ घुमि कऽ आएब तखन ऐगला बात करबह।"

बजलौं-

"अखन की सभ करऽ पड़त?"

राजे भाय-

"तोरा किछ ने करए पड़तह, खाली एक हजार रूपैया दऽ दएह। सभ काज निपैट लेब।"

राजे भाइक बात सुनि मन तर-ऊपर हुअ लगल। दस मिनट पहिने चाह-चीनी-ले जे पत्नीक संग रक्का-टोकी भेल, हजार रूपैआ केतए-सँ औत। मुदा लगले मनक कुहि छँटल। छँटिते बजलौं-

"भाय, कनी घरोवालीकेँ पुछि लइ छिऐ।"

पत्नीक नाओं सुनिते राजे भाय बजला-

“मेल-फीमेल दुनूक बहाली हएत। तहूमे महिलाक तँ आरो बेसी गारंटी अछि।”

राजे भाइक बात सुनि मन दोसर दिस औना गेल। औना ई गेल जे जैठाम आइ धरि महिलाक दुर्दशाक कोनो कर्म बाँकी नइ रहल तैठाम महिलेक जिनगीक सुधारक बेसी गारंटी भऽ गेल! मनमे पचबे ने कएल। बजलौं-

“से की यौ भाय?”

बिसवासक संग राजे भाय बजला-

“एक तँ जाइतिक आरक्षण, तैपर सँ महिलाक आरक्षण सेहो भेल। तहूसँ पैघ बात ई अछि जे पुरुखमे तँ नाँउ-गाँउ लिखनिहार ऐछो मुदा महिला तँ पनरहअनासँ बेसी सफाचटे अछि। तेते शिक्षिकाक बहाली हएत जे ओते महिला पुरबो ने करतै।”

अपनासँ नीक भवितव्य पत्नीक बुझि पड़ल। चाह चीनीबला रक्का-टोकी मनसँ बहटारि पत्नी लग पहुँच फुसफुसा कऽ बजलौं-

“अहाँक भाग जगि गेल, अहाँ कि कोनो आन छी। कखनो हमरा भागे अहाँ जीब आ कखनो अहाँ भागे हम जीब। जखन दुनू गोरेक जूर-बनहन भेल अछि, तखन तँ ओकरा निमाहबो ने अपने सभकेँ करए पड़त।”

अपन सभ बात बिसैर पत्नी कन्हा झँकैत बजली-

“दुनू परानीमे अहाँ ने पुरुख भेलौं। अहाँक पाछूए-पाछू ने हम चलब। अहाँकेँ जे नीक लगत सएह ने हमरो नीक भेल। अहीं जिनगिये ने हमरो मांग सिनूर।”

आँगनसँ आबि राजे भायकेँ कहलयैन-

“भाय, सभ दिन अहाँसँ रूपैया-पैसाक काज होइत रहल अछि, सूदिये सही, मुदा बेरपर ते अहीं ने ठाढ़ो होइ छी। अखन हाथमे एकोटा पाइ नइ अछि, ताबे अहाँ काज सम्हारैत चलू सूदि लगा कऽ सभटा देब।”

‘पाइ पूत पहाड़ तोड़ए’ सएह भेल। पँच-पँच हजारमे दुनू परानीकेँ सर्टिफिकेट हाथमे आबि गेल।

गाम-गामक विद्यालयमे शिक्षकक बहाली हएत। पचीस हजार रूपैया पत्नीक बहालीमे आरो खर्च भेल। राजे भाय जी-जानसँ मेहनत केलैन। पत्नीक बहाली गामेक स्कूलमे आ अपन बहाली गामसँ कोस भरि हटल सासुरेमे भेल। मुदा अपनामे ढौआ-कौड़ी नइ लगल। तेकर कारण भेल जे झमटगर परिवारमे बिआह भेल अछि। जेमहर ससुरक दियादी झूकै छैथ तेम्हरेसँ मुखिया-सरपंच बनै छैथ। तँए अपन भोँट-बैंक बनबै दुआरे बहालीमे सभ सहे लगौलैन जे विरोध नइ केलैन।

तीन साल शिक्षक बनना भेल अछि। दुनू परानी शिक्षक छी, एके रंग दरमहो पबिते छी। मुदा नाम-काममे दुनू गोरे दू रंग भऽ गेलौं। माने ई जे सासुरमे अपन बहाली भेने कियो ‘पाहुन’ तँ कियो ‘पीसा’ कहिते रहि गेल अछि, आ पत्नी गामक स्कूलक ‘मैडम’ बनि गेल छैथ, तँए अपन कमाइ अपने मने खर्च करै छैथ, आ घरक अभिभावक भेने सोल्होअना परिवार अपने चलबै छी।

बीचमे अपन ड्यूटीक चर्च सेहो काइए लइ छी। गाम-गामक स्कूलमे दिनक भोजनक बेवस्था सेहो भाइए गेल अछि। तहूले तँ एकटा शिक्षक चाही। जइ दिन जुआइन करैले गेल रही तइ दिन अपन सारो आ पंचायतक मुखिया सेहो रहैथ। गामक लोककेँ सेहो बुझले छैन जे बिआहक समैमे पढ़ल-बिनु-पढ़ल वरक रूपमे बिआहो एक साल पछुआ गेल छल। स्कूलक खिचड़ी विभागमे नोकरी शुरू केलौं,

आब तँ कहियोकाल नवका मकान सभ जे बनि रहल अछि, तेकर सीमटीक बोरा आ ईटा गनैक ड्यूटी सेहो करए लगलौं अछि।

काल्हि देव उठान पाबैन छी। देवता उठबाक पावन अवसर। स्कूलमे कौल्हुका छुट्टियोक सूचना भऽ गेल। बाल-बच्चा सभ खाइले पतियानी लगा, अपन-अपन छिपली, बाटी अपना-अपना आगूमे रखि भण्डार दिस देख रहल अछि। भोजनो नीक बनले छइ। तेकर कारणो अछि जे काल्हि पाबैन छी तँए आइयेसँ जँ मन खुशी रहतै तँ काल्हि पाबैनियोँमे नीक पौत। तैबीच परसनिहारि भोजन विन्यास परसए लगली, तँए बाल-बोधक आँखि भण्डार दिससँ उनैट बारीक दिस चलि आएल। ओसारक कुरसीपर बैसल आँखि बाल-बोध दिस देने छी, मुदा मन कौल्हुका पाबैनपर तड़ैप गेल। मुदा समैक परिवेशमे जे पाबैनक रूप बनि गेल अछि ओ ने एकोअना परम्परानुकूल अछि आने समयानुकूल परम्परानुक परिवर्द्धित सनातनी पद्धतिक विकासित रूप अछि।

खएर जे अछि, पाबैन-तिहार तँ सहजे पत्नियेँक मुँहगरीमे चलि रहल अछि, तखन जे बीचमे अगुआ कऽ किछ बाजब ओ अपन मुहेँ दुइर करब हएत। अनेरे जनिजातिसँ मुँह नोचाएब नीक नहि। जँ किछु पुछती तँ जे सुपथ बुझि पड़त, से विचार देबैन। जँ से नइ पुछती तँ सेहो बड़बढ़ियाँ। घर-अँगना जखन हुनका सुमझाइये देने छिऐन तखन घर-अँगनाक साँठो-उसार तँ हुनके ने करए पड़तैन। अपने बर बेसी करब तँ एतबे ने करब जे पुरुखक दलान बना पुरुख जकाँ पुरुखपनाक काजमे लगल रहब। पोखैरक पानि जकाँ थीर होइत-होइत मन थीर भेल।

थीर होइते बिसवास जगल जे जखन पत्नियोँ कमाइते छैथ, तखन अँगनाक काजक भारो तँ हुनके ने भेलैन। मन मानि गेल जे ऐ

पाबैनसँ अपन फारकती भऽ गेल।

हल्लुकाइत मनमे अपन जिनगी उठि आएल। उठि ई आएल जे अपन जे नोकरी शुरू करैसँ पूर्वक जिनगी छल, ओना अखनो ओही जिनगीकेँ ई सोचि अपनौने छी जे जहिना हवा-बिहाड़िमे नोकरी खसल तहिना उड़ियो ने जाए तेकर कोन ठेकान अछि।

काल्हि पाबैन छी, कातिक मासक इजोरिया-एकादशी, पाँच दिन पहिने छठिक सूर्जक डुबैत-उगैत दुनू रूपक अर्घ देल गेल, पाँच दिन आगू पूर्णिमा-के सामा सेहो छी, बीचक पाबैन देव उठौन छी। जेना भक्क खुजल, आगूमे बाल-बोधक पतियानी देख मनमे उठल-यएह बाल-बोधक उठानक पाबैन ने देव उठान छी।

तैबीच बाल-बोधक बीच हल्ला होइते धियान ओमहर चलि गेल। बाल-बोध एका-एकी उठए लगल।

टहलैत-बुलैत, बाड़ी-झाड़ी देखैत आने दिन जकाँ किरिण डुमला पछाइत घरपर एलौं। जहिना घात लगा शिकारी महारपर बैस देखैत रहैए तहिना पत्नियोँ दरबज्जेक कुरसीपर बैस, प्रतीक्षा करैत रहैथ।

..हमरा पहुँचते बजली-

“जाबे अहाँ कपड़ा बदैल हाथ-पएर धोब ताबे हमहूँ चाह नेने अबै छी।”

पतिक आगत-भागत करैत पत्नीक रूप देख मन दू-दाँतक बछोर बरदक उठल कलश जकाँ कलैश उठल। बजलौं-

“आबक लोकमे की कोनो आचार-विचार छै, ई तँ अहीं सन-सन जे छैथ, तिनके सभकेँ लोक-लहाज छैन।”

चाकर-चौरगर देह रहितो पत्नीकेँ जेना पानि चढ़ि गेलैन, तहिना

छहछटीसँ बुझि पड़ल। ड्यूटीक पक्का लोक जकाँ पत्नीक पाकल रूप बुझि पड़ए लगल।

ओछाइनपर बैसते पत्नी चाह-पान नेने पहुँच गेली। चाह पीबैत बजली-

“काल्हि पाबैन छी, आन अँगना सभमे देखलौं हेन जे रंग-रंगक चीज-वौस सभ लोक अनलक हेन।”

पत्नीक रूपसँ बुझि पड़ल जे अखन हाथ-मुट्ठी गर्म छैन। टोक भरैत बजलौं-

“कियो धरम अपना-ले करैए आकि अनका-ले?”

पत्नीक मन सहमलैन। बजली-

“दू-मासक दरमाहा भेटल अछि, तइमे काज चलि सकैए आकि नहि?”

तम्मामे चाउरक मुड़ी जहिना छोपल जाइए तहिना छोपैत बजलौं-

“किछु छी तँ मिथिलाक सनातनी पद्धति छी किने, नइ पान तँ पानक डण्टियोसँ पाबैन-पूजा होइते अछि...।”

मने-मन गर अँटबए लगलौं जे चालीस हजारक एस्टिमेट बनबैक अछि। एस्टिमेट मनमे देव उठानक डालीपर नजैर गेल। विश्वकर्माक आदिम रूपक अस्त्र-शस्त्र जे कोदारि, खुरपी, हँसुआ, टेंगारी इत्यादिक संग चलैले खराम बैसैले पीढ़ी आ भोजन-ले फल-फलहरीक संग तीमनो-तरकारीक डालीक हाथ उठैए।

पाबैनक भोर, अड़िपन-उसरपन हएत। दुनू परानी बैस अपन-अपन हिस्सा पाबए लगलौं। फल-फलहरी आ तीमन-तरकारीक डाली सझिया भेल, दुनू गोरे खाएब। खरामो आ आनो-आनो ओजार हिस्सा

पड़ल। मुदा पीढ़ी रहि गेल सझिया।

○

शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016

नमहर घरक चोइर

गामक विचारक वृक्षमे जेना फुलक नव कोढ़िक सिरखार होइए तहिना अनुमान भेल।

भेल ई जे पढ़ुआ भाय दरभंगा कौलेजमे प्रोफेसर छैथ। मनमे जे विचार, जेहेन विचार रहल हौन वा गामसँ हटल समाजक बीचक जे जिनगी हौन, मुदा गामक लेखे जेहने अमेरिकाक प्रवासी तेहने गामसँ हटल देशोक शहर-बजारमे रहनिहार प्रवासी...। मुदा नोकरीक पचीसम बर्ख पुरला पछाइत मनमे जेना पालाक मारल कोनो फूल वसन्तक हवा पबिते फुरफुरा कऽ जगैए तहिना पढ़ुओ भायकेँ जगलैन। ओना, नोकरीक पचीसम बर्खमे परिवारक बोझ जे माथपर छेलैन सेहो उतैर गेल रहैन। माने ई जे दूटा बेटा आ एकटा बेटी छैन। बेटीक बिआह प्रोफेसर बरसँ केलैन आ दुनू बेटा पछुआएल छैन। दुनू प्रशासनिक पदाधिकारीक जिनगीसँ जीवन शुरू केलैन।

माथक अपन उतरैत भारसँ जेना पढ़ुआ भाइक मन हल्लुक भेलैन। पढ़ुआ भाइक मोटा तँ नमहर अछि मुदा ऐठाम खाली बिआहक चर्च करब। समाजक बीच जे बिआह पद्धतिक रूप-रेखा बनि गेल अछि ओ नैतिक विचारपर सोझ प्रहार कऽ रहल अछि, माने ई जे लेन-देनक एहेन रूप बनि गेल अछि जे केतौ बेटा अपन इमान उठबए चाहैत तँ पिताक आज्ञाक उल्लंघनक अपराधी बनैत, तँ केतौ

पिता अपन इमान बँचबए चाहैत तँ बेटाक नजैरमे अफराधी बनैत। माने ई जे पढ़ुआ भाइक पिता जखन दहेजक नाओंपर एको पाइ नइ छुलैन तखन बेटे अपने किए नीच अनीति-रीति परिवारमे आबए देब, मुदा जेकर बिआह हेतइ, जँ ओ अपन काज बुझि अपने करैले तैयार भऽ जाए, तखन अनेरे ओइमे देह रगड़ब हएत। ओना, एके परिवारक भाए-बहिनक बीच बिआह एते दूरी बना देलक अछि, जे चीन-पहचीन समाप्त भेल जा रहल अछि। खएर जेतए जे हौउ, पढ़ुआ भाइक अपन सोच-विचार छैन, जेकरा हथिया अपन जिनगीक पैंतालीस बर्ख गुजारि लेलैन अछि।

पढ़ुआ भाइक परिवारक प्रति–माने अपनासँ ऊपरसँ लऽ कऽ निच्चाँक खाढ़ी धरि–अपन स्पष्ट विचार छैन जेकरा अपन सीमा बुझि, परिवार-जनक सीमाक संग सम्बन्ध बना परिवारक गाड़ीक जे पहिया होइ, ऐगला होइ कि पैछला होइ, समैक गतिसँ चलैत रही। अखन धरिक जिनगी पढ़ुआ भाइक ई रहलैन जे आजुक परिवेशमे केहेन मनुखक जरूरत अछि, जइसँ दुनियाँक चालिमे बराबरीक रूप होइ। एहनो एकभगाह माता पिता तँ छथिए जे बाल-बच्चा-ले धनेकेँ सर्वोपरि बुझि ओही दिस चलै छैथ। एक जगहपर ओहो नीक। मुदा समयानुसार जँ बौद्धिक-आर्थिक रूप संग मिलि नइ चलत तँ बीचमे खच्चा हेबे करतै।

माता-पिताक पार लगबैत बेटा-बेटीक भार निमाहि जेना ऐ साल पढ़ुआ भाय नमहर साँस छोड़लैन। अखन तक धारणा बनल छेलैन आ किछ-किछ अखनो छैन्हे, जे समाजक खतियान बनैसँ पहिने खेत बनत आ खेतक आड़ि-मेड़ रस्ता, मुदा से तँ खेते बलुआह अछि! सिनेहक कोनो लज्जैत छइहे नहि! माने जहिना उर्वर माटिमे जे सिनेहक शक्ति अछि ओ मुदा दोखरा बाउलमे नइ अछि तँए पहिने परिवारकेँ सम्हारब दायित्व अछि। ओना बजनिहारक मुँहमे कियो

ताला थोड़े लगा सकैए, ओ तँ लोककेँ अपने लाजे-विचारे लगै छइ।

ओना तीन मास पहिने पढ़ुआ भाय, चाल-चूल देलखिन जे गाममे साहित्यिक कार्यक्रम हुअए। आने गाम जकाँ अपनो गाम ऐछे जे तीन मासपर मेला आ मनचोभी नाच नचिते अछि। तँए साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा एते तँ कहले जा सकैए जे कोनो गाम-समाज समुद्र जकाँ अछि, जइमे घोंघासँ लऽ कऽ अमृत धरिक बास अछि। तँए सबहक अँटावेश भेले पछाइत ने समाज निर्णायक दौड़मे पहुँचत जे साहित्य-सांस्कृतिक परिमार्जित रूप की हएत। तइले तँ समाजकेँ जगाएब जरूरी अछि। जगले लोकसँ ने अधिक सम्भव हएत। यएह सोचि पढ़ुआ भाय साहित्यिक नव सिरासँ सिरमौड़ करैक विचार केलैन।

दू मास पहिने गाम आबि पढ़ुआ भाय गामक स्कूलोपर जा आ जेतए जे कला-प्रेमी, जइ रंगक भेटलैन सभकेँ कहलखिन जे गाममे साहित्यिक कार्यक्रम करब, से सभ कियो एकठाम बैस विचार करब बेसी नीक हएत।

साहित्यिक कार्यक्रमक चर्चा कऽ पढ़ुआ भाय दरभंगा चलि गेला। ओना गामक बीच अनेको प्रश्न पढ़ुआ भाइक प्रति, कार्यक्रमक संग-संग सेहो उठए लगल। कौलेजक शिक्षक रहितो गाममे पढ़ुआ भायकेँ दुइए यूनिटक मटियो तेल, चाउरो-गहुम आ चीनियोँ अनके जकाँ कोटा छैन, भलेँ अपन गामक कोटा नइ उठा दरभंगेमे किए ने उठबैत होथि।

साहित्यिक संग कलाक चर्च समाजमे एक नव दृश्य ठाढ़ केलक। लोकक रिझान सेहो रंग-रंगक हुअ लगल। कियो साहित्यिक कार्यक्रमकेँ कथा-कविताक कार्यक्रम बुझैत तँ कियो मनुखक जिनगी-ले कलाक अनिवार्यताक जड़ि साहित्यकेँ बुझैत। मुदा से कम। ओना,

समाजक बीच कथा-पिहानी, गीत-संगीत, नाच-तमाशा, कहबी-लोकोक्ति, भित्रि-चित्र इत्यादि-इत्यादि भरले अछि।

नव कार्यक्रमक चर्चक संग पढ़ुआ भाइक जिनगीक कथा-बेथा सेहो गामक चौक-चौराहाक संग दुआर-दरबज्जापर हुअ लगल। मुदा ओइठाम आबि विचारमे विराम लगि जाइत, जे साहित्यिक कार्यक्रमक की रूप-रेखा हएत। यएह सोचि पढ़ुआ भाय समाजकेँ बैसार करैक विचार केलैन।

हजारो परिवारक समाज छी, हजारो वृत्तिसँ जुड़ल लोक अछि, तैठाम एकटा निर्धारित समय बना बैसार करब नीक हएत। से धड़फड़मे नइ हएत। तँए पहिने एकटा तिथि निर्धारित भऽ जाए, जइसँ लोक अपन रूझानोक परिचय देता। माने ई जे कियो अपन मननुकूल जिनगी बना चलए चाहै छैथ, तैठाम दू तरहक बान्ह लागल अछि, एक अपन काजक बान्ह आ दोसर जँ अनकर मातहती काज करै छी तँ ओ बान्ह। मुदा सभकेँ तँ बुझले छैन जे गामक-बच्चासँ बुढ़ धरि सेहो समाज भेलौं। एक जातिक समाज सेहो भेलौं, तहिना एक वृत्तिक समाज सेहो होइते अछि। दोसर दिस ईहो तँ ऐछे जे सभ मीलि समाज सेहो छीहे, पाँचो-दस गोरे मीलि सेहो छी आ दू गोरेक झगड़ामे तेहाला एक गोरे सेहो समाजे भेला। मोबाइलिक जुग छीहे। तहूमे पढ़ुआ भाइक जिज्ञासा रहबे करैन। तँए अनका जे से मुदा हमरा तँ दिनमे एकबेर खोंचाड़ियो दइ छैथ जे समाज सभसँ सम्पर्क-सम्बन्ध बनबै छह किने।

ओना हमरो जहिना एक दिस पढ़ुआ भाय खुट्टा जकाँ ठाढ़ छैथ तहिना दोसर दिस समाजोक उपकारक क्रिया तँ साहित्यिक कार्यक्रम छीहे। तँए रस्ता चलैमे काँट-कुश केतौ ने बुझि पड़ैत।

ओना लोकक विचारो आ जिज्ञसो पढ़ुआ भायकेँ समाचार दइते

छिऐन। अपने तँ अपनाकेँ वएह भर-उघा बुझै छी जे समाजक विचार पढ़ुआ भायकेँ दइ छिऐन आ पढ़ुआ भाय की करए चाहै छैथ से समाजकेँ कहै छिऐन।

ऐगला रबि दिन दू बजे दिनसँ बैसार छी। कुरसीपर बैसल पढ़ुआ भाय मने-मन विचारि रहला अछि जे अपन जिनगीक केते सम्बन्ध समाजसँ रहल आ अखन की अछि। की अपनाकेँ भटकल बुझब। दोसर मन रोकैत कहलकैन-

"भटकल तँ ओ भेल जेकर जिनगी भटैक जाइ छै, पथ-सँ-कुपथ दिस चल जाइ छइ। मुदा पथसँ सुपथ दिस जँ जाए तखन ओ की भेल?"

पढ़ुआ भाइक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे भटकल जँ नहियोँ छी तैयो तँ छिटकल कहियौ आकि हटकल कहियौ चाहे फड़कल कहियौ, से तँ भेबे कएल। मुदा किछु भेल तैयो तँ ई सत्य ऐछे जे वएह गाम छी जैठामसँ एम.ए. पास केला पछाइत प्रोफेसर भेलौं। गाम हमरो छी, नीक करबाक अधिकार हमरो अछि...। मनमे अबिते संतोष जगलैन।

पढ़ुआ भाय साहित्यक ओहन साधक छैथ जे साहित्यकारक पत्रानुकूल जिनगी बना साहित्य साधना कऽ रहल छैथ। मुदा नोकरीक जीवन रहितो परिवारकेँ सम्हार करबमे अखन धरिक समए ससरलैन। ओना, जइ हिसाबसँ पढ़ुआ भाय अपनासँ ऊपर अपन परिवार–माने बेटा-बेटीक जिनगी–केँ उठौलैन ओहो तँ ओही समाजक ने उठल, जइ समाजमे रहए चाहै छी। ..आगूक रस्तामे केतौ विघ्न-बाधा नहि देख पढ़ुआ भाय विचारि लेलैन जे आठ बजे भोरे गाम पहुँचब।

भिनसुरके बससँ दुनू परानी पढ़ुआ भाय गाम पहुँचला। ओना, सालमे दू-तीन बेर गाम अबिते छैथ, मुदा से अपना काजे, तँए गाम

एला पछातियो गाम-समाजसँ कम सरोकार छैन। सरोकार कम किए ने रहतैन, अगहनमे धान, जेठ-अखाढ़मे आम आ फागुन-चैतमे दालि-दलिहनसँ लऽ कऽ रब्बी-राइ समटए अबै छैथ। काजो तँ काज छी, ओ तँ समाजक कोन बात अपनो दैनंदिनक रूटिंग गड़बड़ा दइए।

ओना, आन दिन जे पढ़ुआ भाय गाम अबै छला ओइ रूपमे आ ऐबेरक रूपमे अकास-पतालक अन्तर बुझिमे आबि रहल अछि। मन हुअए जे कहिऐन- 'भाय चेहरामे कलमी-सरही आमक रूप झलैक रहल अछि।' मुदा कलमी कि सरही ओ रूपमे थोड़े अछि, ओ तँ अछि गुणमे। माने ई जे सरहियो–फैजली, सजमैनिया–आमक फलक साइज केते गुणा नमहर कलमी–गुलाब खास वा बमबई–सँ अछि। मालदहो बड़ नीक तँ ओकरोसँ देह-दशामे दोबर-तेबर अछिए। अपने मनमे भेल जे जेते मनमे उपकए ओते बाजब उचित नहि। जँ भौजीकेँ कहबे करिऐन तँ ओ कनी सोहंतगरो हएत मुदा भायकेँ कहब नीक नहि। तहूमे पढ़ल-लिखल विचारवान लोक छैथ, हुनकामे तँ ई शक्ति पसरिये गेल छैन जे क्षण-क्षण अपनाकेँ नीकसँ नीक बढ़बाक बाट सुझिते छैन।

पढ़ुआ भाय दियादेमे छैथ। दियादोमे ओहन दियाद जे घरो लगेमे अछि। एको माता-पिताक सन्तान दूर रहने सम्बन्धमे कमी आबि जाइ छइ, मुदा आनोक सम्बन्ध तँ एकठाम बास रहने बढ़िते अछि। अपनो घर-दुआर डेराबला घर-दुआर बनियेँ गेल छैन। माने ई जे सभ दिन नइ रहने कुत्ता-बिलाइ, मूस-छुछुनैरक संग बीढ़नी-माछी आ मकड़ाक जालक बास तँ बनियेँ जाइए। तेकरा चिक्कन केला पछाइते ने रहै जोकर होइए। तँए दुनू परानी अबिते झाड़-झूड़ करए लगला।

गामपर नइ रही, आइ दू बजे बैसार छी, जहिना विद्यार्थी परीक्षा

दिनक महत बुझैत तहिना ने समाजोक काज छी। गोविन्द ऐठाम गप-सप्पमे समए लगि गेल। ओना बुझल रहए जे पढ़ुआ भाय आठ बजे गाम पहुँच जेता। मुदा मनमे ईहो हुअए जे जखन अपन घर-दुआर सभ किछु छैन्हे तखन गामो ने हुनको छिऐन। समाजक बीच बैसार छी, समाजक काज छी, सबहक छी।

घरपर अबिते पढ़ुआ भायकेँ देखलयैन। देखते कहलयैन-

“भाय, गोड़ लगै छी। आउ पहिने चाह-ताह पीब लिअ, तखन माया-जालक फन्दामे लागब।”

ओना पढ़ुआ भाय ससैर कऽ दरबज्जापर आबि गेला, हमरा गपक की माने लगलैन से तँ वएह बुझता, मुदा एला चुपे-चाप। लगमे अबिते बजला-

“बैसारक तैयारी केहेन छह?”

कहलयैन-

“गाम तँ गामे छी। तहूमे मिथिलाक गाम जेतए साहित्यक भिन्न रूप माने कलाक रूप, तेना जिनगीसँ जुड़ि गेल अछि जे फुटा कऽ ने अपने देख पबै छी आ ने भरिसक समाजे देख पाबि रहला अछि।”

ताबे चाह आबि गेल। गम्भीरते-गम्भीरतामे पढ़ुआ भाइक विचार रहि गेलैन। मुदा हुनकर गम्भीरता देख मनमे ईहो हुअए जे जेना मनमे अटुट साहस भरि पढ़ुआ भाय गाम पहुँचल छैथ। चाह पीबिते बजला-

“बौआ, पाँचो-दस गोरे एकठाम बैसब किने?”

हमरा तँ गामक दुर्गापूजाक बैसार बुझल अछि, कहलयैन-

“भाय, एना झुझुआ कऽ किए बजै छी! कम-सँ-कम पान साए गोरे बैसता।”

गामेक समए छी, तहूमे सार्वजनिक काज। एक तँ ओहिना बेरुका उखड़ाहा, माने बेरमे बेरूका चाहोक चाह, जलखैयोक चाह, भाँगोक चाह आ सभसँ आफत ई जे भाँग पीला पछाइत बिनु दिशा-मैदान गेने, सेहो नीक नहि। खएर तीन बजे पहुँचैत-पहुँचैत पनरह-बीस गोरे पहुँच रंग-रंगक गप-सप्प कन्ना-फुसीक रूपमे शुरू भेल। तहूमे रूपैयाक किरदानी आइ-काल्हि पसरले अछि तँए गपक मशल्लो तरगर अछिए।

विधिवत बैसार शुरू भेल। अपन कार्यक्रमक रूपरेखा पढ़ुआ भाय रखैत बजला-

“अखन कार्यक्रमक छोट-छीन जानकारी अछि। तँए पहिने ई तँइ कऽ लिअ जे कार्यक्रम कोन रूपे हुअए।”

गामक चन्दाक रंग-ढंग जीयालालकेँ बुझल, बाजल-

“परिवारिक काजक नाप-जोख ने परिवारसँ होइए, मुदा समाजिक काजक नाप-जोख तँ समाजेसँ होइत हएत। तँए खर्चक चिन्ता भाय नइ करू, समाजक लाली चारूकात माने गामक चौबगली पसरै से करैक अछि।”

अन्तमे निर्णय भेल जे ऐगला पनरहम दिन, रबिकेँ दिनक दू बजेसँ कार्यक्रम शुरू हएत आ आठ-नअ बजे राति तक सम्पन्न हएत।

सात गोरेक संचालन समिति बनल, जिनका सभकेँ अपन-अपन जिम्मा देल गेलैन। आ ईहो तँइ भेल जे कार्यक्रमक मुख्य आकर्षण कविता हएत। जइमे तीन गोरे बाहरसँ औता, बाँकी गोरे गामक रहब।

कविता तँ लिखऽ नइ अबैए, मुदा तुकवन्दी तँ कएल होइते अछि। भलेँ स्त्रीकेँ पुलिंग बना दिऐ आ पुरुषकेँ स्त्रीलिंग। ओना पत्नी अपनासँ बेसी पढ़ै-लिखैमे ढंगर छैथ, विद्यार्थियो नीक रहली। तइ हिसाबे अपनाकेँ भाग्यक जोरगर बुझिते छी जे हमरा सन भुसकौल

बरकेँ ओहन तेजगर कन्या भेटल। मुदा ऐमे जेते अपन भाग्य नइ काज केलक तइसँ बेसी काज केलक दहेज। भाय जँ अपन मन-माफित जोड़ी लगि जाए तँ दहेज लोक अनेरे किए लेत। तहूमे अपने तँ भुसकौले छी, जँ तेजगर पत्नी भेट जेती तखन ने जिनगीक गाड़ी दनदनाइत चलत।

पत्नीकेँ कहलयैन-

“एक तँ पढ़लो तेहेन नइ छी, मुदा तैयो गामक पढ़ल-लिखलमे गिनती तँ होइते अछि। मुदा अहाँ ते अपन परिवारक काज सम्हारि दिन-राति उपन्यासे, कविता पढ़ै छी, तेहीमे सँ गोटे लिखि दिअ। गामक मंच छी, मुहोँ बन्न राखब नीक हएत।”

पत्नी बजली-

“अपन लिखल तँ किछु ने अछि, मुदा आन-आन कविक कविता तँ कंठस्थ अछिए।”

मनमे भेल अनकर रचनाक शब्दक चोइर नइ होइए, किए तँ ओ सार्वजनिक छी, मुदा पाँति तँ अपन भऽ जाइए। जँ अनकर पाँति लेब तखन तँ ओ भेल अनकर लिखल।

ओना कहबियो आ लोकोक्तियो सार्वजनिक अछि तँए ओकरे अधारो आ उदाहरणो बनाएब तँ उचित मानले जाइए। बजलौं-

“अखन एक पनरहिया बाँकी अछि माने कार्यक्रमक, तैबीच समाजोक नामपर किछु करब से नइ? एक पनरहियामे तँ देखै छिऐ जे अमावश्या पुरनिमा बनि जाइए आ अहाँ तँ सहजे नीक छात्रा रहलौं।”

पत्नी बजली-

“अच्छा विचारै छिऐ।”

आइ कार्यक्रम छी। भिनसरेसँ गामक चहल-पहल बढ़ि गेल

अछि। तहूमे तीन दिनसँ चलि अबैत सभ बेवस्थाक अन्तिम क्षण छी। कोन काज पूर्ण तैयार अछि आ कोन अधूरा...।

अही सभ भाँज-भूँजमे पढ़ुआ भाय भोरे जुमि गेला। जुमि कि गेला जे एकेठाम घरो अछिए।

पढ़ुआ भायकेँ देखते बजलौं-

“भाय, देखै जोग बेवस्था हएत।”

काज देख पढ़ुआ भाइक मन जिरा गेल छेलैन।

बजला-

“बौआ, अपना सभ ते सहजे उपराड़िमे छी, चारूकात हाटो-बजार पसरल अछि आ रोड-सड़क भेने गाड़ियो-सवारीक बाढ़ि अछि। मुदा जैठाम एहेन नहियोँ अछि, जेना धारक कातक गाम सभ, तहूठामक लोक जँ अपन स्थिति बुझैत करए चाहता तँ ऐसँ नीक बेवस्था कऽ सकै छैथ।”

ओना पढ़ुआ भाय अपन विचारे बजला मुदा हमरा ओते पसिन हुनकर विचार नइ लगल जेते पसिनगर विचार छेलैन। मुदा एते तँ मन मानिते अछि जैठाम मेहनती लोक रहत तैठाम किछ-सँ-किछ भऽ सकैए।

..लेकिन जँ उपराड़ियेमे आलसी-निकम्मा समाज रहत तखन की भऽ सकैए। बजलौं-

“भाय, कौआ कान नेने जाइए, ओइ भाँजमे थोड़े जाएब की अपन कान देख बिसवास करब। अखन धरिक बेवस्था कार्यक्रमक क्रियाक अनुकूले नीक अछिए।”

गमैया लोक बुझि, आकि की, पढ़ुआ भाय बजला-

“बौआ,जखन तूँ नीक बुझै छहक तँ ओ नीक हेबे करत।

बेवस्थाक अन्तिम दौड़मे छी, तँए ओहीठाम माने ब्रह्मस्थानमे टेन्ट-समेना बेवस्था कएल गेल, चलि कऽ सभ किछु देख लेब नीक हएत।”

बजलौं-

“हँ, चलू।”

संचालन समितिक क्रिया-कलाप नीक रहने जमगर कार्यक्रम शुरू भेल। प्रचार-प्रसारक ई ढंग रहल जे जेना कोनो नव जागरण भऽ गेल हुअए। जहिना समेनाक दृश्य, तहिना बैसकक दृश्य।

ओना बचकानी धिया-पुता सभ एक तोर भिनसरोमे आ खेला-पीला पछाइत समेनाक बाहर परती अजबारि अपना-अपना घुनियेँ खेलमे लागल। गामक महींसवार स्थानेक इर्द-गिर्द अपन-अपन महींस चरबए चलि आएल। घसवाहिनी सभ सेहो खुरपी-पथिया नेने ओही इर्द-गिर्दमे घास छीलए पहुँच गेली।

ओना ई विचार पहिने भऽ गेल छल जे जइ कविताक पाठ जेते समैमे हुअए कमसँ कम ओते समैमे ओकरा बुझौलो जाए। ई नइ जे एकटा शब्द मुहसँ खसल आ बाह-बाही शुरू भेल...। पत्नी कुरताक ऊपरका जेबीमे एकटा कविता रखि देने छेली। समए भेटल, मंचपर ठाढ़ भेलौं। कविता पढ़लौं। अवाज किछु मौगमिसरी ऐछे, सुननिहार थोपड़ी बजौलक।

समीक्षक उठि कऽ बजला-

“कविता शुद्ध-अशुद्ध अछि, पाँइतिक चोरि तक सम्भव अछि। भावमे चौपाइयो भऽ सकैए। मुदा ई कविता तँ ओ नमहर घरक चोइर छी, जे सभकेँ बुझल छइ। जँ छोट-छीन घरक आ दबाएल-हेराएल घरक रहैत तँ दोग-सान्हिमे निकलियो जा सकै छल, मुदा...।”

समीक्षकक समीक्षासँ दुख नइ भेल। मनमे भेल ई जे पत्नी भरिसक मजाक केलैन। हुनको सोचबमे केतौ भूल नइ भेलैन। ओहो

तँ एहेन मंचकेँ मजाके मंच ने बुझै छैथ। फेर भेल जे एहेन मजाक कोन मजाक भेल जे बेपाइन भेलौं। मुदा लगले मनमे उठल जे जे बात अपने नइ बुझि गलती केलौं, जँ तेहने बुद्धियारि पत्नियोँ होथि, तखन। कहुना-कहुना मनकेँ थीर करैत ऐगला कार्यक्रमक भार लेलौं।

◌

शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ◌ ◌ ◌



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

जगदीश प्रसाद मण्डल

स्मृति शेष





स्मृति शेष

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली



ई संस्करण 'स्मृति शेष'
अपन पौत्र 'रौशन कुमार मण्डल'क स्मृतिकेँ
जे 24 मार्च 2015-केँ परिवारमे आएल आ 30 दिसम्बर 2016-केँ
चलि गेल

ISBN : 978-81-936422-3-8

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

SMRITY SHES
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

स्मृति शेष

तीस दिसम्बर, शुक्र दिन। 2016 इस्वी। साँझक सात बजे ब्रह्मानन्द बाबा बीतैत दिनक साँझ आ ऐगला दिनक पैछला साँझमे अपन अराम-विश्राम करैबला जगहपर असगरे शोकाकुल बैसल छला। दिनुका पहिल उखड़ाहामे जे दूटा रोटी जलखैक रूपमे खेने छला, बस् ओतबे आइ दिन भरिक अहार भेटल छेलैन। नित्य एगारह बजेमे नहेनिहार आइ तीन बजेमे नहेला, जखन बच्चाक पार्थिव शरीरकेँ असमसान पहुँचौल गेल। ओना, दिनक भानस परिवारमे भऽ चुकल छेलैन, मुदा तेहेन बेर ओ घटना भेल जे ओ भानस कएल भोजन बरतनेमे पड़ल छल।

नहेला पछाइत खेबाक इच्छा ब्रह्मानन्द बाबाकेँ जरूर भेलैन मुदा भोजन रोकबा-ले तेतेक दूत-भूत मनक चारूकातसँ ऐ रूपे घेर लइ छेलैन जे मनक इच्छा मनेमे घुरिया-फिरिया जानि, मुदा मुहसँ निकालैक साहसे ने होइन। साहसो केना होइतैन, एक दिस परिवारमे सभसँ ऊपर–उमेरो आ खाढ़ियोमे– होइक नाते जँ वएह नइ सहि सकता तँ दोसर केना सहि सकत। मुदा सहबो तँ सहब छी, एक अन्न-पानिक सहब भेल, दोसर बात-विचारक संग सुख-दुखक। तहूमे परिवारक रूदन आ समाजक जिज्ञासु रूदनक धार बहिये रहल छेलैन।

चौकीपर बैसल ब्रह्मानन्द बाबा अपन बीतल, बीतैत आ अबैबला काल्हिक संध्या-बन्धन कऽ रहल छला, मुदा बान्हे कुबान्ह भऽ जाइन। कुबान्ह ई जे बीतल नअ घन्टा शोके-शोक, दुखे-दुखमे बीतल छेलैन आ अबैबला बीतैत रातिक भोजनक आशा सेहो नहियेँ छेलैन। काल्हिक एहेन कठिन समए पार कऽ सकब की नहि, से मने-मन ब्रह्मानन्द बाबा विचारि रहल छला। माने ई जे राति भरिक साहित्यिक कार्यक्रममे जवाबदेहक रूपमे पार करब छेलैन। जवाबदेही एहेन जे कहीं कार्यक्रमे ने भँसिया जाए। एहेन भार निमाहैले तँ कन्हो मजगूत चाही जे भोजनेसँ शरीरकेँ भेटत, सएह हेरा गेल अछि।

गणितीय दौड़मे दुनू दिस ब्रह्मानन्द बाबाकेँ बाधा बाधित कैये रहल छेलैन। तैपर मन कुदि-कुदि अपन स्मृति दिस दौड़-दौड़ जाइन। जेकरा ब्रह्मानन्द बाबा शरीरान्त बुझि टारि कऽ बहटारए चाहै छला, वएह छिड़िया-छिड़िया मनकेँ चारूभरसँ घेर लैत रहैन।

परिवारमे ओहन घटना भेल जइमे एकटा अचेत बाल-बोधक अन्त भेल। चूक केतए भेल ई जँ परिवारक लोक नहि गुणि लेत तँ आगूक गुणाधीश गुणातीत केना भऽ सकैए। मुदा बाबाक मनमे ईहो नचैत रहैन जे अखन ऐ बातकेँ माने ऐ घटनाकेँ विचारबसँ नीक ई हएत जे तत्काल वातावरणकेँ पहिने असथिर कएल जाए। जँ विचार-विमर्शक क्रममे कोनो मारूख विचार सोझामे आबि जाए आ चामेक मुँह छी, कहीं ओ विचार मनमे छड़ैप कऽ मुँह होइत निकैल गेल, तखन तँ ओ आरो मारूख हएत! तँए नइ विचारबे बेसी नीक...।

मुदा लगले फेर बाबाक मनमे उठि गेलैन जे अनेको जिज्ञासु जिज्ञासा करए जइ घटनाक लेल आबि रहल छैथ आ घटनाक मर्म स्थलकेँ देखिए ने पाबि रहल छैथ, तखन तँ ओ अधे-छिधे जिज्ञासा ने भेल। ..असमंजसमे पड़ल ब्रह्मानन्द बाबा निश्चये ने कऽ पाबि रहल छला जे की नीक हएत। आँखिक सोझक जे घटना अछि ओकरा जेते

नीक जकाँ अखन विचारि सकै छी, ओते बसियाएलमे थोड़े हएत। तहूमे कौल्हुका काज आरो जटिल अछि। एहनो तँ भाइये सकैए जे जहिना आइ परिवारक घटना भेल तहिना काल्हि समाजोमे भऽ सकैए, तखन तँ परिवारक विचारकेँ अगुयाएबो नीक नहियेँ हएत, तँए अखने विचारब बेसी नीक...।

तही बीच ब्रह्मानन्द बाबाकेँ समाजक सरोकारी बहिन, जिनकर घर बगलेमे छैन, पहुँचली। अगवास, बाड़ी-झाड़ी खेत-पथार सेहो दुनू गोरेक एक्केठाम छैन। दिन-राति पड़ोसीक रूपमे दुनू आइ सत्तैर बर्खसँ संगे जिनगी जीबैत आबि रहल छैथ। ओना बिन्दा चारि मास ब्रह्मानन्द बाबासँ जेठ छथिन, मुदा दुनूक बीच वएह 'रे-टे'बला सम्बन्ध तहियेसँ माने बच्चेसँ संगे आबि रहल छैन, जे अखनो पोता-पोतीसँ भरल घर रहितो, ओहने छैन।

अपना संग बिन्दा स्टीलक थारीमे दस-बारहटा रोटी आ बाटीमे तरकारी नेने, ई सोचि पहुँचली जे दिनुका भानस ब्रह्मानन्दक परिवारमे रान्हले रहि गेल, शोकाकुल परिवार रहने अखनो माने रातियोमे भानस नहियेँ हेतैन आ काल्हियो कखन हेतैन तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। सियान-चेतन सहियो सकैए मुदा परिवारमे जे दूटा बुढ़ आ तीनटा छोट-छोट बच्चा अछि ओ केना सहि सकत...।

ओना ब्रह्मानन्द बाबा अपन कोठरीक केबाड़ अड़का कऽ असगरे बैसल विचारि रहल छला। तहीकाल बिन्दा केबाड़ खोलि कोठरीमे पहुँचली।

अबिते बिन्दा परोसल थाड़ी आगू बढ़बैत बजली-

"जे दिनक दोख छल से भेल, चिन्ता छोड़ह, खा लएह।"

बिन्दाक मुहसँ खसिते ब्रह्मानन्द बाबा फफैक-फफैक कऽ कानए लगला-

"हमर बेल केतए गेल, हमर बेल की भेल..!"

ओना बिन्दो अनुमान केली जे 'बेल' पोताकेँ कहै छैथ।

बजली-

"किछ ने भेल, जहिना आएल तहिना गेल। ई दुनियाँक रीति छिऐ, सभकेँ होइत आएल अछि, आगुओ होइत चलैत रहत।"

एक बर्ख नअ मासक रोशनक प्राणान्त पानिमे कठुआ कऽ भेल। रातियेसँ चलि अबैत शीतलहरी अपन विकराल रूप पकैड़ नेने छल।

भिनसुरका पहर। श्रमशील परिवार रहने परिवारक सभ अपन-अपन काजमे लगि चुकल छला। कियो अँगना-घर काजमे तँ कियो माल-जालक पाछू। ओ बच्चा–बेल–जाड़क सभ वस्त्र पहीरने–माने जूत्ता-मौजा आ सूती कपड़ासँ लऽ कऽ ऊनी स्वीटर, कोट, टोपी सभ किछु पहीरने–हाथमे एकटा गिलास नेने चापाकलक आगू जे पानिक खाधि छै, तइमे गिलासमे पानि लिअ गेल। ओना जाड़ रहौ कि गरमी, थाल-पानिसँ ओइ बच्चाकेँ विशेष सिनेह छेलैहे। चंगला बच्चा तँए नजैरसँ ओझल होइते छल। गिलास नेने जे आँगनसँ निकलल, से दोसरो-तेसरो देखलक। मुदा सभ दिन कोनो-ने-कोनो वस्तु नेने निकैलते छल, तँए कियो किए ओहूपर विशेष नजैर दइत। पानि लिअ खाधिमे जखन गेल, भरिसक तहीकाल ओ पिछैड़ कऽ खाधिमे चलि गेल। ओना, खाधियोकेँ बहुत गहींर नहियेँ कहल जा सकैए, मुदा एक-डेढ़ हाथक बच्चाक लेल तँ गहींरगर छेलैहे। तहूमे जहिना बर्फ जकाँ समए तहिना पानि सेहो छेलैहे। परिवारजन रहितो कियो ओइ बच्चा दिस नइ तकलक। सदिकाल खुर-खुर करिते रहैत छल। तकैक कोनो शंको ने रहइ। दिन-दिनक वृत्ति छेलइ। किछुए कालमे बच्चा जाड़सँ तेना आक्रान्त भऽ गेल जे प्राणान्त भऽ गेलइ! जखन बच्चापर नजैर

गेल आ ताक-हेर शुरू भेल तखनो ब्रह्मानन्द बाबाक मन गबाही दइते रहैन जे भरिसक कियो चोरा कऽ औनाबै दुआरे रखि नेने अछि। बच्चाक माइये खाधिसँ मुइल बच्चाकेँ निकालि आँगन आबि रखैत बजली-

"हमर रोशन..!"

ओना नीको समैमे आ अधलो समैमे तँ निसचिते मतो-पिता, भाइयो-बहिन आ ददो-दादीक नजैर ओइ बच्चापर रहिते छल मुदा पाँच दिन पहिने ब्रह्मानन्द बाबाक परिवारमे एहेन दुखद घटना भेल छेलैन जे खसैत-खसैत परिवार बँचलैन। मुदा घटनाक एहेन विकराल रूप छल जे मने नहि, केतेको गोरेक शरीरोकेँ नीक जकाँ आक्रान्त अखनो केनहि छल। होइतो अहिना छै जे परिवारे आकि समाजेमे जँ कोनो मारूख घटना घटैए तँ परिवारो आ परिवारजनकेँ सेहो झकझोरि दइते अछि। जइसँ परिवारक अनेको जरूरियात काज सभपर सँ नजैर हटिये जाइ छइ। तँए कहलो जाइ छै जे 'विपत्ति असगरे नइ अबैए, एकक संग अनेको अबिते अछि।'

रोशन आ कृष्णा दुनू सहोदर भाए, ब्रह्मानन्द बाबाक तेसर बेटाक दुनू सन्तान। कृष्णा जेठ, जे साढ़े तीन बर्खक अछि आ रोशन छोट जे एक बर्ख नअ मासक छल। रोशनक मुँहमे ऊपर छह गोट दाँत आ निच्चाँ चारिटा दाँत सेहो जनैम गेल छल। दौड़ैत चलिते छल। बोली तँ साफ नइ भेल छेलै मुदा किछु शब्द साफ जरूर भाइये गेल छेलइ। कखनो 'बा' ब्रह्मानन्द बाबाकेँ कहै छेलैन, तँ कखनो सिखौलापर 'बबा' सेहो कहै छेलैन।

ब्रह्मानन्द बाबा कृष्णाकेँ सिनेहसँ 'बेल' नाओं रखने छैथ। मास दिनसँ रोशन सेहो अपनाकेँ बाबाक बेल बुझए लगल छल, तँए बाबाक मुहसँ 'बेल' निकैलते रोशन बाजि उठैत छल-

"ऐँ।"

'ऐँ' कहि दौड़ कऽ लगमे आबि हाथमे जे कोनो औजार वा खाइ-पीबैबला वौस देखै छल ओ छीन लइ छेलैन। खाली वौसेटा नइ छीनै छेलैन, संग लगि बाड़ी-झाड़ीक काज दिस सेहो विदा भऽ जाइ छेलैन।

बच्चा पेब ब्रह्मानन्द बाबाक मनमे अपन जिनगीक सार्थकता सेहो नचिते रहै छेलैन। जिनगीक सार्थकता ई जे एक समए माने एक क्षण-पल जँ एकसँ ऊपर अनेक क्रियाक संग चलए। से ब्रह्मानन्द बाबाकेँ 'बेल' पेब होइ छेलैन। कहलो जाइ छै जे उमरदारक माने बुढ़-बुढ़ानुसक प्रथम काज भेल बाल-बोधक संग रहि किछु सिखाएब। से भेटिये जाइ छेलैन।

ओना ब्रह्मानन्द बाबा खेत-पथारमे काज करैबला अपन हथियाएल औजार–हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, कुड़हैर, हथौरी, बैसला, आड़ी इत्यादि जीवनोपयोगी औजार अपना-ले तँ रखनहि छैथ, मुदा तँए बेल-ले नइ रखने छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। भोथियाएलो आ आकारोमे छोट अनेको औजार बेल-ले सेहो रखने छैथ। बेल चलि गेल मुदा ओ औजार जे बेलक छल, ओ तँ छैन्हे। ओना किछु एहनो तँ ऐछे जे बेल अपन औजार बाबाक हाथमे धड़बैत हुनकर हाथक छीन लइ छेलैन। मुदा ओहन बाल-बोधसँ जँ काज बाधित होइक सम्भावना हएत, तखनो तँ दूटा उपाय अछिए, एकटा जे ओइ हाथियारसँ भरिगर काज धड़ा थका दिऐ वा मने फुसला कऽ बहका दिऐ। ..ब्रह्मानन्द बाबा सएह करै छला। जखने पोता हाथक औजार छीनै छेलैन कि आड़िपर बैस गमछामे बान्हल पानक पोटरी खोलि डकै छला-

"के पान खाएत?"

जहिना घर-परिवारसँ हटलो गीत-नाद वा अन्य कोनो अवाज बाल-बोध जँ सुनैए तँ अपनो ओही अवाजक अनुकरण करए लगैए, तहिना बेलबो 'पान' सुनिते बाजि उठै छल-

"हम।"

बेलबाकेँ राजी होइते बाबा बजै छला-

"जे सभ पान खाएत ओ सभ एतए औत।"

'एतए औत' सुनिते बेलबा हाथक छीनल हथियार ओतै रखि दौड़ल आबि पानक वौसकेँ उनटबए-पुनटबए लगैत छल। जेना-जेना देखैत तेना-तेना करबो करैत तँए बाबा पहिने पानक पात फाड़ि एक-टुकड़ी दऽ दइ छेलखिन। जखन जरदा बेर अबै छल तखन मुन्ना लगले जर्दाक शीशी मुँहमे झाँड़ि कहै छेलखिन-

"आब चलै चलू।"

'चलै चलू' सुनिते बेलबा अपन औजार–खुरपी–पकैड़ आड़िपर खाधि खुनए लगै छल...।

ब्रह्मानन्द बाबा चौकी पर बैसल तेते जोड़सँ फफकला जे आँगन तक कानवक अवाज पहुँच गेल। ओसार पर बैसल महिला समुदाय, जे भरि दिनक कानवक विराम नेनहि छेली आ बेलबेक चर्च करै छेली। बाल-बोध बेलबा, अचेत बेलबा, ओ केना जिनगीक मर्मकेँ बुझैत ओ केना बुझैत जे आगि-पानि जीवन दइतो अछि आ लइतो अछि। ओ केना बुझैत जे जहिना बाल-बोध-ले शीतलहरीक शीताएल पानि जनमारा अछि तहिना तँ आगियो अछि किने...।

बाबाक कानवक अवाज सुनि महिला समूहसँ एक बजली-

"भरि दिन बुड़हा कनिते रहि गेला!"

दोसर बजली-

"कहुन जे पोते लागल अपनो चलि जेता! अहिना सभ दिनसँ होइत एलैए। मेला-ठेलामे जहिना बाल-बोध खेलौना कीनैए आ खेलाइत-खेलाइत रस्तेमे फोड़ि लइए, सएह बुझथुन।"

मुदा बीचमे बैसल, जे क्षने किछ पहिने मुँह बन्न केने छेली, ओ फफैक उठली-

"आब, बाबाक कागत-पेन के छिनतै..!"

बेल सिर्फ ब्रह्मानन्दे बाबाक नइ छेलैन। परिवारक सबहक छल। माइक 'रोशन', बापक 'लल्ला', दादीक 'बौआ', बड़का भाइक 'वौका' इत्यादि सबहक अपन-अपन छल। सभ छल नहि, अखनो अछि। मालक घरमे दादीक बौआ ऐं-ऐं करैत गोबर-गोंत बुढ़िया माँकेँ देखैबते अछि, बिसरत ओइ दिन जइ दिन दुनियाँकेँ बिसैर अपने विदा हेती...।

असमृतो तँ असमृति छी, ओ तँ कियो अपने जीता जिनगी धरिक ने गारंटी दऽ सकैए। हँ एहनो स्मृति तँ होइते अछि जे महाभारतक अभिमन्यु जकाँ बाल-बोधेक रूपमे ठाढ़ अछि। हमरो बेलक मृत्यु ओइ परिस्थितिमे भेल जइ परिस्थितिमे परिवार-समाजक बीच बेवस्थाक लड़ाइ फँसल छल। पोने दू बर्खक बेलबा किए माइक दुख बुझैत जे परिवारमे नारीक जिनगी अखन केते भुमकम जकाँ डोलि रहल अछि। मुदा बेलबो तँ बेलबा छी ओ तँ माएकेँ कहबे करत किने जे माए हम अचेत छेलौं जीवन-मरण नइ बुझलौं, तूँ सचेत हो जे भविसमे एहेन नइ हौउ।

विस्मित ब्रह्मानन्द बाबाकेँ देख बिन्दा बजली-

"खेलौना बनि आएल छल आ खेलौने जकाँ चलि गेल, तइले एते दुख-पीड़ा केलासँ की हेतह?"

चारि मास जेठ बहिनक बात सुनि ब्रह्मानन्द बाबा बजला-

"हमर बेलबा खेलौना नइ छल, ओ तँ दुनियाँक खेलक खेलाड़ी छल।"

तैबीच ब्रह्मानन्द बाबाक पत्नी कृष्णाकेँ हाथ पकड़ने पहुँचली। कृष्णाक मनमे अपन प्रश्न छल आ किशोरीक मनमे अपन विचार छेलैन। तैबीच बिन्दा तरकारी-रोटी सजल थारी किशोरी दिस बढ़ौली। किशोरी हाथसँ पकैड़ लेलैन। पकड़िते ब्रह्मानन्द बाबा बजला-

"पहिने बाल-बोधकेँ दियौ।"

निच्चाँमे थारी रखि किशोरी एकटा रोटी आ तरकारी कृष्णा दिस बढ़ौली। ओना देखा-देखी कृष्णो घटनाक पछाइत अन्न नइ खेने छल, माने भात-रोटी नै खेने छल। मुदा बिस्कुट आ दोकानक चटपटौआ विन्यास खा मनकेँ थीर तँ रखनहि छल। हाथमे रोटी लइसँ पहिने कृष्णा बाजल-

"बाबा, अपन रोशन बौआ झंझारपुर डाक्टर ऐठाम गेल अछि किने?"

कृष्णाक बात सुनि ब्रह्मानन्द बाबाक छाती दहैल गेलैन। केना अबोध बच्चाक प्रश्नकेँ काटता! ओहो तँ बच्चाक ओ दृश्य–पिताक हाथमे झाँपल बच्चा मोटर साइकिलसँ डाक्टर ऐठाम लऽ गेल छल–देखने रहए, तेकर पछाइत धिया-पुताक संग खेलेमे लगि गेल छल...।

ब्रह्मानन्द बाबाकेँ मनमे उठलैन- अपना संग बच्चोकेँ दुख-सन्ताप देब नीक नहि, बजला-

"हँ, रोशन बौआ झंझारपुर डाक्टर ऐठाम गेल अछि। खाधिमे बौआ डुमि गेल छेलै किने..!"

अपन प्रश्नक उत्तर पेब बड़का बेलबा माने कृष्णा हाथमे रोटी लऽ खाए लगल। कृष्णाकेँ खाइत देख किशोरी ब्रह्मानन्द बाबाकेँ कहली-

"घरक गारजन भऽ अहीं कनबै तखन और लोक चुप रहत। अहाँ मन थीर करू।"

थीर होइते ब्रह्मानन्द बाबाक मनमे उठलैन- सुग्गा उड़ि गेल। आब केकरा पाकल लताम आ बैरक झाड़ परहक पाकल तिलकोर देब..!

◌

शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017

मनकेँ फुसलबै छी

माघ मासक भोर। पनरह दिन पहिनहिसँ अबैत शीतलहरी पनरह बर्खक जबान जकाँ अपन जुआनी सोलहन्नी प्रदर्शित कऽ रहल अछि। गाछपर सँ टप-टप ओसक पलाइत पालाक रूप दुनियाँकेँ, चारू कातक वायुमण्डलकेँ दुधिया बना देने अछि। गाछ-बिरीछपर चिड़ैयो-चुनमुनीक बोलती जाड़े कठुआ कऽ कठिया गेल अछि।

ओना आजुक माघ आ आइसँ पनरह बर्ख पूर्वक माघमे, जाड़ मास रहितो जीवन शैली बदलने बेवहारमे किछु अन्तर अनबे केलक अछि। मुदा जड़कल्लामे कमी आएल अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

जीवन शैलीमे अन्तर ई आएल अछि जे पहिने समाजक अधिकांश परिवारकेँ जाड़क अनुकूल वस्त्र नइ छल जइसँ अपन रक्षा नार-पुआर आ घूरक अगियासीसँ करैत आबि रहल छल, जे आब घूरक बदला हीटर आ नार-पुआरक बदला ऊनी वस्त्रक संग सीरक-कम्मर सेहो आबि गेल अछि।

गोइठा-करसीक घूरकेँ मन्नु बाबा कड़चीक टुकड़ी आ निर्घेंससँ पजाइर रहल छला। तही बीच ओछाइनपर सँ उठि, बिनु जूत्ते-मोजा आ बिनु पेन्ट–कोट आ टोपी पहीरने बेलबा दौड़ल बाबा लग आबि बाजल-

"बाबा, जाड़ होइए।"

तैबीच वस्त्राभूषण करबा-ले बेलबाक माए पाछूए-सँ बेलबाकेँ पकैड़, कोरामे उठा आँगन दिस बढ़ली। कोरामे जाइते बेलबा कानए लगल। ओना घूर पजैर गेल छल, आगिक लहकी उठि चुकल छल, जे बेलबो देखैत रहए, जेकरा ओ जाड़ भगबैबला बुझैत अछि, ओना वस्त्राभूषणो जाड़े भगबैबला छी मुदा तैयो बेलबाक मन उड़ैक कारणक पाछू दूटा कारक भेल। पहिल कारक छल मन्नु बाबाक ऊपर जिनगीक भरोस आ दोसर कारण छल आगिक धधड़ाक लहकी।

होइतो अहिना छै जे कोनो गाछपर चढ़ला पछाइत ऊपरसँ निच्चाँ देखलापर जँ कोनो लभगर वौस देख उतड़ैले चाहैए आ उतरैकाल गाछपर चढ़ैक क्रिया बिसैर जाइए, तहिना बेलबोकेँ भेल।

आँगन पहुँचैत-पहुँचैत बेलबा चुप भऽ गेल। ओना माए बेलबाक मनकेँ की फूसि बाजि फूसिया लेलैन से तँ बेलबे जानत आकि बेलबाक माइए जनती, मुदा मालक थैरक घूर जे अँगनासँ सटले अछि, तैठामसँ मन्नु बाबा अकाइन कऽ सुनलैन तँ बुझि पड़लैन जे बेलबा कानब बन्न केलक। मुदा फेर भेलैन जे कपड़ा पहिरबै काल तँ जरूर कानत, ओ तखने नहि कानि सकैए जखन ओ कोनो नमहर लोभे नइ लोभाएल हुअए। मुदा जे हौउ मन्नुओ बाबाक घूर पजैर गेलैन आ बेलबो जाड़सँ लड़ैबला सिपाही जकाँ बनि-ठनि कऽ आँगनसँ घूर लग आबि गेल। सकतगर पेन्टो, मोजो आ कोटो बेलबाक देहकेँ अपना जुतिसँ बेकाबू कऽ देने छल, जइसँ घूर लग बैसैक गरे ने लगइ। तँए दू हाथ हटले बेलबा ठाढ़ भेल, बामा हाथमे फास्ट फुडक पोलिथिन रहै, जइमे सँ दहिना हाथे एकटा निकालि मुँहमे लैत बाजल-

"बाबा, एकटा हिसाब पुछौं?"

बेलबाक बात सुनि मन्नु बाबा छगुन्तामे पड़ि गेला जे जइ छौड़ाकेँ धरियो पहिरैक लूरि नइ छै, ओ हिसाबक बात उठबैए..! मुदा लगले मन थमि गेलैन। थमिते दोहरा कऽ मनमे उठलैन जे जँ हिसाबक बात बेलबा उठबए चाहैए तँ ओकरा हिसाबेसँ ने हिसाब लगाएब। ई तँ नइ ने जे बाल-बोधक मनकमनाकेँ मुड़ीए मचोड़ि दिऐ...। मन्नु बाबा बजला-

"बेल, तूँ हिसाब केतए-सँ अनलह से कहाँ कहलह?"

जेना टटके बुझल रहइ, तहिना बाबाक बात सुनिते बेलबा बाजल-

"माए कहलक।"

माइक नाओं सुनिते मन्नु बाबाक मन थमलैन। थमिते उठलैन-तीन पीढ़ीक प्रश्न अछि। अपनो आ बेलबो दू सिरापर भेलौं, बीचमे तँ माए छइहे।

आँखि उठा मन्नु बाबा बेलबाक आँखिपर देलैन जे कि बेलबा धिया-पुताक खेलौना बुझि झटहा माड़लक आकि नजैरमे ओते पानियोँ छै जे पकैड़ पौत? मन घुमलैन, घुमिते नचलैन, देवीस्वरूपा भगवतीक ज्योति बेलेसँ अबैत अछि, सएह ने तँ बेलबो छी..?

जी-जाति मन्नु बाबा बेलबाकेँ कहलखिन-

"बौआ, ई दुनियाँ सबहक छी, तोरो हिसाबक हिसाब अही दुनियाँमे छह, तँए जेते ताकल हुअह तेते तक ताकिये सकै छह किने।"

मन्नु बाबाक बात बेलबा सुनियेँ रहल छल कि चटपटौआ गुल्लीमे मिरचाइयोक बीआ आ मरीचक टुकड़ी एक्के संग जीहपर पड़ि गेलइ, पड़िते बेलबा कानए लगल। मुदा बाबा-ले धैन सन, असथिरसँ बजला-

"की भेलै बेलबाकेँ?"

बाबाक बातमे गीतक स्वर जकाँ बेलबाकेँ बुझि पड़लै। तइसँ कनी कानब ठमकलै। मुदा अपन दवाइ जेना बेलबा अपने बुझैत हुअए तहिना पानिक कलपर विदा भेल। संजोग नीक रहल जे बेलबाक माइयो कलेपर छेलखिन।

पानि पीब बेलबा पुन: बाबा लग पहुँच खाए लगल। तीन-चारिटा गुल्ली जखन खेलक तखन पैछला मिरचाइ-मरीचक लहर सोलहन्नी दबलै। तखन फेर बेलबा एकटा गुल्ली मुँहमे लैत बाजल-

"बाबा, हमर बात बिसैर गेलिऐ?"

पौने दू बर्खक बेलबा सन पोता लग मन्नु बाबा झूठो तँ नहियेँ बाजि सकै छला। कहलखिन-

"बौआ बेल, ई दुनियेँ छी खेल। तँए जे भेल से नीके भेल। कोनो कि तोहर एकेटा हिसाब पछुआएल छह। पहिने ई बाजह जे कोन हिसाब लेबह?"

मन्नु बाबाक बातो बेलबा सुनै छल आ खेबो करै छल। तँए मन बेसी आगू-पाछू नइ घुसकैत रहइ। तहूमे पानि पीबिये नेने छल, तँए कण्ठ सुखैक संभावना सेहो नहियेँ रहइ।

जहिना घर बन्हैक सभ समचा जुटि गेने घर उठैक आशा बनि जाइत तहिना ने विचारक अनुकूल परिस्थिति जुटने विचारोकेँ ठाढ़ होइक आशा सेहो बनियेँ जाइए...।

बेलबा बाजल-

"हमरो जिनगीक तँ हिसाब हेबा चाही किने?"

बेलबाक बात सुनि मन्नु बाबाक मन ठमकलैन। ठमैकते मनमे नव पोनगी देलकैन। नव पोनगीक माने अचेत जिनगीक प्रश्न आ

सचेत जिनगीक प्रश्नक दूरी तँ अछिए। अचेत बेलबाकेँ ने धरिया पहिरैक, माने कोनो विचार धारण करैक लूरि नइ छै मुदा ओहो ने अही दुनियाँमे जीवित जिनगी पाओत, जेकरा अखन आगि-पानि आ हवाक बोध नइ भेल अछि, ओ केना बुझत जे जएह दाता छी वएह दानवो छी...।

मुदा लगले मन्नु बाबाकेँ भेलैन जे मनकेँ तँ फुसलाएब अछि। मुदा दू मनक बीचक ने प्रश्न अछि। जँ बेलबाकेँ फुसिया कऽ मना लेब तँ अपन मन कहत जे बेलबा पोता छी किने, ओकरा जाबे नइ पबाएब ताबे अपन सूत–धार केना रस्तापर रहत..?

अग-दिगमे पड़ल मन्नु बाबा एक नजैर बेलबापर दैथ आ दोसर धरतीपर।

तैबीच पोलिथिनक गुल्ली लगिचा कऽ जखन एकटापर आबि गेल तखन बेलबा बाजल-

“बाबा, हमर तँ बाल-बोध बात छी, तखन किए ने उत्तर दइ छी। आब हम खेलैले चलि जाएब।”

खेलैसँ पहिने जे खेलाड़ीकेँ खेलैले उत्प्रेरित करैत अछि से जँ पहिने बेलबाकेँ नहि बुझा देबइ तँ ओ आगिसँ खेलए जाएत आकि पानिसँ, तेकरो तँ ठेकान नहियेँ अछि...। पोता-बाबाक बीच जे झोंझ बाट अछि ओही बाटपर ठाढ़ भऽ मन्नु बाबा बजला-

“बौआ बेल, तोरा खेलाइ-ले हम नइ रोकै छिअ। तूँ अपने अपन बात सोझरा कऽ नइ बजै छह।”

बाल-बोध बेलबा दुनियाँक की देखलक जे अपन हिस्सा लेत। माइक आँचरसँ तँ अखन निकलबे कएल अछि किने। मुदा...।

दोसर दिनक वएह भोरुका घूर, मन्नु बाबा गोइठा-करसीक संग कड़ची-निर्चैंसक घूर पजाइर रहला अछि मुदा मन कानि रहल छैन।

बेलबा दुनियाँ छोड़ि चुकल छल। मुदा बेलबाक प्रश्न तँ अखनो मन्नु बाबाक मनमे ठाढ़े छैन! केना मनकेँ फुसलौता, मुदा बिनु फुसलेनौं तँ...।

◌

शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017

पकिया चेला

पूस मासक शीतलहरीक आठ बजे भिनसुरका समए, सूर्य तँ धाही नइ देने मुदा अन्हराएल समए किछु फरिछा तँ गेले छल।

अपन जिनगीक लीला जीवन काका शुरू कऽ नेने छला। माने ई जे घुरारियो आ चाहो-चुल्हीक ओरियान करबे छेलैन, डेढ़ियापर बैस टेंगारीसँ जरना टोनियबै छला कि आँगनमे रोशनक कानब सुनलैन।

अखन तक रोशन माने जीवन कक्काक पोता, ओछाइने धेने छल। तेकर कारण भेल जे तीन बजे भोरमे जे पछिया हवा चलल तइकाल रोशनक नीन टुटि गेल। भाय, सुतलमे ने लोक कनी-मनी कोढ़िपनोसँ जाड़-ठाढ़केँ अनठा दइए मुदा जागल बच्चा केना अनठा देत।

माइक सुतैक समए, तैठाम माइक जगौल बेटा थोड़े छी, बेटा जगौल माए छैथ तँए मने-मन तामस तँ रोशन बेटापर उठबे केलैन, वएह तामस अपन ओछाइन छोड़ा उठा देलकैन। काजो सोझहेमे रहैन, जे जाबे बेटा सुतत नहि, जाड़-ठाढ़क समए छी, जागल रहि जाएत आ ओछाइपर सँ उठि अपन देखल दुनियाँ दिस विदा हएत आ जँ सबा हाथ ऊँच चौकीपर सँ खसत तँ हाड़ो-पाँजर तोड़िये लेत, तखन तँ आरो पहपैट हएत, तइसँ नीक जे फुसला-बहला छाती लगा पहिने ओकरा सुता देब तखन अपनो सुतब।

ओना, बीचमे माएकेँ माने श्यामाकेँ एकटा बात ठहकबो केलैन जे जन्मौटी बच्चा, जे सालसँ ऊपरक अछि, माने टहलै-बुलै-जोकर अछि आ दू सालक बीचक अछि माने अपनेसँ चौकीपर चढ़ै-उतरै आ कुदै-जोकर नइ भऽ गेल अछि, तैबीचक अपन ओछाइन केहेन हेबा चाही? ओना, जखनेसँ बच्चा कर उनैट घुसकए-फुसकए लगैए तखनेसँ धरतीसँ उठल ओछाइनपर सेहो माएकेँ विचार करबे करक चाहिऐन।

ओना बारह बजे रातिक पछाइत पछियाक झोंक उठल। बारह बजेसँ पहिने शीतलहरी छल, जइसँ ठंढपनक साम्राज्य तँ छेलैहे, मुदा ठाढ़ ठंढ छल जे पछिया पेब गतिशील भऽ गेल, जइसँ ओढ़नाक भीतर तीर जकाँ प्रवेश करैत ठंढ रोशनकेँ दागए लगल जइसँ नीन टुटि गेलइ। ओढ़ना सेहो ठंढपनसँ शीतल भऽ गेल। जेकरा पेटसँ उष्मा निकलै छल तेकरा पेटसँ सुष्मा निकलए लगल।

एहेन समैमे पौने दू बर्खक रोशन-ले सुखक नीन आनब माइक लेल परीक्षाक घड़ी छीहे। ओना, श्यामा चतुर माए छथिए, तँए चतुरता केलैन जे घरक खिड़की सभकेँ दोहरी ओढ़ना ओढ़ा बेटाक देहक जे गर्म कपड़ा सभ सुतैकाल निकालि कऽ सिरमामे रखने छेली, ओकरा पहिरौलैन। गर्म कपड़ा पहीरते रोशन टनटनाएल।

कपड़ा पहिरा माए बेटाकेँ छातीसँ सटा सीरक ओढ़ि ओछाइनपर पड़ि रहली। ओना, पहिने जिनका नीन आएल होनि, मुदा दुनूकेँ नीन आबि गेलैन।

श्यामा भोरमे फरिच होइते ओछाइनसँ उठि गेली मुदा रोशन सुतले रहल, आठ बजे नीन टुटलै। नीन टुटिते रोशन ओछाइनपर उठि कऽ बैस रहल। मुदा संजोग नीक रहने श्यामा तखन ओछाइन लग पहुँचल छेली। ओना उठि कऽ बैसते रोशन कानब शुरू कऽ देने छल।

कनैत रोशनकेँ श्यामा कोरामे उठा अन्हार घरसँ इजोतमे आनि नेने छेली। मुदा तैयो रोशन कनिते छल।

डेढ़ियेपर सँ जीवन काका रोशनक कानब सुनै छला। ओना ई बात मनमे छेलैन्हे जे बच्चाक भोरक कानबकेँ चुप करब, माइक काज छिऐन मुदा किछु बच्चा लगराह तँ होइते अछि जे लगले चुप नइ होइए। ओना रोशन से नहि अछि, मुदा मौसमक प्रतिकूलतो आ सुति कऽ उठबोक प्रतिकूलता तँ छेलैहे। जीवन कक्काक मनमे ईहो होनि जे अपन काज छोड़ि पहिने पोताकेँ चुप करी, किएक तँ सोझामे अपन बाल-बोधकेँ कानब नीक नहि। मुदा फेर लगले भेलैन जे ई काज हमर छी आकि पुतोहुक छिऐन? तेतबे नहि, बाल-बोधक लपौड़ीमे अपन जिनगीक क्रियाकेँ पछुआएबो तँ उचित नहियेँ कहल जा सकैए।

फेर भेलैन जे हम किछु छी तँ दू सीढ़ी हटल छी तँए हमरा-ले ओ काज–माने रोशनकेँ चुप करब–उचित हएत आकि माए-ले। ओ तँ हमरा जकाँ दू सीढ़ी हटल नहि छैथ?

आँगनमे रोशन अनघोल करैत। अकैछ कऽ माए पैरमे जूता पहिरबए लगली। टोपीसँ मोजा धरि माए भोरेमे पहिरा देने छेली।

ओना, रोशनकेँ श्यामा छाती लगा दूधो धरबए चाहली मुदा ओ नइ गछलकैन। पछाइत भिनसुरका जे किछु अहार बेटा-ले रखने छेली, एका-एकी सेहो सभ निकालि-निकालि देलखिन मुदा रोशन किछु ने गछलकैन। जइसँ श्यामाक मन तरे-तर जरए लगलैन। मुदा अपन दायित्वक बोध–बेटाकेँ बोधब–तेना सिरपर चढ़ि जानि जे बकारे बन्न भऽ जाइन। ओना, मने-मन ईहो होनि जे ई काज तँ अपने छी, तँए दोसरपर जँ किछु बजबो करब सेहो केहेन हएत।

रोशनो तँ रोशने छी, जेहने लगराह अछि तेहने जिद्दी आ तहूसँ टपल एकबोलिया अछिए।

ओना रोशन घरसँ निकैलते संगी सभकेँ ताकए लगल, माने आन-आन बेदराकेँ जे अँगनोमे अछि आ आनो-आनो अँगनाक खेलैले अबिते अछि। मुदा ओ सभ निपत्ता छल। निपत्ताक कारण छेलै जे किछु पढ़ैले चलि गेल छल आ किछु बैट-बौल खेलैले, आ किछु मालक थैरक घूर लग बैसल छल। सबहक दुनियाँ छिऐ, सभकेँ अपन-अपन जिनगियो छै आ अपन-अपन लीलो तँ छइहे।

तही बीच श्यामाकेँ एकटा जुक्ति फुरलैन। जुक्ति फुरैक कारण भेलैन बाल-बोधकेँ पाइ चिन्हब। एकटा दू टकिया सिक्का घरसँ आनि श्यामा रोशनक हाथमे थमा देलखिन।

हाथमे सिक्का अबिते रोशनक मन सीकपर चढ़ि गेल, जइसँ पैछला कानबो आ रंग-रंगक खाइ-पीबैक बौसो बिसैर गेल। जूता पहीरिये नेने छल तँए बूलै-भंगै जोकर सेहो भाइये गेल छल।

एकाएक माएकेँ अक्कछ लगाएब छोड़ि रोशन सोझे अँगनासँ निकैल डेढ़ियापर पहुँचते बाबाकेँ पगहरियासँ जारन टोनियबैत देख लगमे जा हाथक पगहरिया पकैड़ लेलकैन। ओना जीवन कक्काक नजैर रोशनक सिक्कापर नहि पहुँचल छेलैन तेकर कारण छल जे रोशन मुट्ठी मूनि पाइकेँ दबने रहए।

पगहरिया पकैड़ते रोशनकेँ जीवन काका कहलखिन-

“अहाँ-ले ते टेंगारी रखने छी, लिअ जारन काटू।”

अपना विचारे तँ जीवन काका बजले छला मुदा रोशनक हाथमे पाइ एने मन दोकानक लालू-खजानापर पहुँच गेल छल।

आगूमे राखल टेंगारीकेँ रोशन नइ गछि, हाथक पगहरिये पकैड़ लेलकैन।

किछु छी तँ लोहाक हथियार छी ने पगहरिया, तहूमे बाल-बोध पकैड़ लेलक। एक तँ ओहुना लोहाक चोटो कष्टगर होइए तैपर धरगर

सेहो अछिए, तैसंग सियानक देह तँ कनी-मनी बरदासो कऽ सकैए जे बाल-बोधक तँ नहियेँ करत। दोसर ईहो होनि जे एक तँ ओहिना केते कालसँ माए लग कानल, लगले चुप भऽ हमरा लग आएल आ हमहूँ कनाइये देबै तखन तँ भरि दिन बच्चा कनिते रहत! की करक चाही से गर जीवन काकाकेँ मनमे अँटबे ने करैन। अपन विचारकेँ विश्राम दैत हारल सिपाही जकाँ जीवन काका अपन हथियार रखि देलखिन।

धरतीपर पगहरिया देखते रोशन विहुँस गेल। विहुँसैत रोशन जीवन कक्काक हाथक आँगुर पकैड़ उठबए लगलैन।

बाबाक आँगुर पकैड़ते रोशनक हाथसँ सिक्का ससैर कऽ धरतीपर खसि पड़ल। खसिते बाबाक आँगुर छोड़ि रोशन धरतीपर सँ दू टकही उठा जीवन कक्काक हाथमे देलकैन। जीवन काका बुझि गेला जे दोकान चलैले कहैए।

ओना जीवन काका चारूकात आँखि उठा-उठा दोसर चेष्टगर बच्चाकेँ ताकए लगला जे जँ भेँट जाएत तँ ओकरा संगे रोशनकेँ दोकान पठा देब। पाइयो गनले छै आ दोकानोबला केँ बुझले छइ...।

मुदा कियो नजैरपर पड़बे ने केलैन। जइ काजे बैसल छला सेहो बन्ने भऽ गेलैन।

असमंजसमे पड़ल जीवन काकाकेँ ने आगूक काज चलैन आ ने किछु फुरबे करैन जे की केने नीक हएत।

अन्तमे जीवन कक्काक मनमे यएह एलैन जे जाबे बाल-बोध देह छोड़ि नहि खेलत ताबे अक्कछ करिते रहत। मुदा देहो केना छोड़त? ओ तँ तखने ने छोड़त जखन ओकर मन खनहन भऽ खनखनए लगतै। से तँ तखने हएत जखन ओकरा पछुअबैत किछु काजमे सहयोग करबै।

हारि-थाकि कऽ जीवन काका डेढ़ियापर छिड़ियाएल जारनो आ टेंगारियो-पगहरियाकेँ रस्तापर सँ पहिने ठौर लगाएब बुझलैन।

जीवन कक्काक मन देख रोशन सेहो बुझि गेल जे बाबा तैयार भऽ रहला अछि।

तैबीच पगहरिया हाथमे लैत जीवन काका उठि कऽ ठाढ़ होइत टेंगारी देखबैत रोशनकेँ कहलखिन-

“बौआ, पहिने एकरा सभकेँ सम्हारि कऽ राखू। चौकपर सँ एला पछाइत फेर एकरे ने काज हएत।”

पढ़ौल सुग्गा जकाँ जीवन कक्काक बात रोशन बुझि गेल। बुझिते टेंगारी उठा ओतै रखलक जेतए जीवन काका पगहरिया रखने छला। जारनकेँ सेहो बीच रस्तापर सँ घुसका जीवन काका रोशनक संग लालू-खजाना कीनैले विदा भेला।

डेढ़ियापर सँ आगू बढ़िते रोशन जीवन कक्काक आँगुर पकैड़ रस्तापर चढ़ल। रस्तापर चढ़िते रोशन बाबाक आँगुर छोड़ि आगू-आगू दौड़ गेल, एक-डेढ़ लग्गी आगू बढ़ि गेल। मुदा थाकि गेल आकि भ्याउ भेलै से तँ ओ जानए मुदा एकाएक ठाढ़ भऽ गेल।

जीवन काका डेढ़ लग्गी आगूमे रोशनकेँ ठाढ़ देखलैन। ओना, जीवन कक्काक हाथ-पएर नमहर छैन्हे, भेल तँ तीन-डेग एक लग्गी, पाँचे डेगमे रोशन लग पहुँच जेता। सएह करबो केलैन। ओना, रोशनो चौकक दोकान-ले अनाड़ी नहियेँ अछि जे हेराइ-भोथियाइक डर रहितै, देखल-सुनल रहबे करै जे जीवनो काका जनिते छैथ, मुदा रोशनक तँ समए अखन चलैबला अछि, ठाढ़ होइबला नहि, तँए लफैड़ कऽ आगू बढ़ि जीवन काका रोशन लग पहुँचला। लगमे पहुँचते बाबाक बिनु आँगुर पकड़ने रोशन आगू-आगू विदा भेल। आगू-आगू रोशनकेँ चलैत देख जीवन काका अपन डेग सेहो छोट केलैन। डेग छोट होइते मनमे उठलैन- अखन रोशन चेल्ह अछि तखन चेल्हबा बनत, पछाइत ने चेला बनि संगे चलत। अखन ओ केना बुझत जे

जनम-मरणक दुख-सुख होइ छइ। अखन तँ ओ चिड़ैक गेल्ह जकाँ अछि। जे अण्डासँ निकलल अछि, जखन ओकरामे मनुखक रूप औतै तखन ने जीवन-मृत्युक सुख-दुखसँ परिचित हएत, से तँ अखन रोशन नइ अछि। मुदा साफे किछु ने अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए, एते तँ ऐछे जे तीन बर्खक बच्चा जखन 'अ' सीख लइए तखन ओ 'अ' ओकरा मृत्युपर्यन्त मनबास केनहि रहै छइ। तहिना ने अखन रोशनो अछि। हँ! बानरक अगुआएल रूप जरूर छै, मुदा ओ तँ ओतबे जे हाथ रोपि कऽ नइ चलैए हाथ उठा कऽ चलैए।

दोकानपर पहुँचते रोशन दोकानदारक आगूमे पाइ फेक देलक मुहसँ किछु ने बाजल।

कातमे जीवन काका ठाढ़ भेल रोशनक क्रिया-कलाप देखैत रहैथ। ने किछु करबे करैथ आ ने किछु बजबे करैथ। नइ बजैक कारण छेलैन जे प्लाष्टिकक झोड़ा-झन्टीक बात नइ बुझै छैथ, तँए चुपे रहब नीक बुझलैन। ओना दोकानमे लोक पहिने वौस लइए पछाइत पाइक हिसाब जोड़ि दोकानदारकेँ दैत अछि, तँए कि ओहन गहिंकी ऐछे नै सेहो नहि जे पच्चीस-पचासक सौदामे नमरीए दोकानदारकेँ नइ पकड़ा दैत आ दोकानदार मने-मन वा कागतपर लिख कऽ हिसाब जोड़ि, बाँकी पाइ आपस करैत, जैठाम ने दोकानदारकेँ किछु बजैक खगता होइत आ ने गहिंकीए-केँ, जइसँ एते तँ नीक होइते छै जे ने दामक पाछू घिच्चा-घिच्ची होइत आ ने रक्का-टोकी, जइसँ कहा-सुनीक ऐगला बाटे बन्न रहैत। मुदा तेहेन गहिंकी तँ रोशन नइ अछि। ओ अछि जे दोकानमे टाँगल तीन-चारि रंगक झोरोकेँ चिन्हैए आ ओकर सुआदो आ मोलो बुझैए। मुदा जएह पाइ छै तेहीसँ ने सबुरो छइ। ओना रोशन दोकानमे टाँगल आन-आन वस्तुक झोराकेँ झोरा नहि झन्टी बुझैए, मुदा दोकानदार तँ ओकरा बोरा कहिते अछि। खाएर जे अछि.., दू रूपैआबला भुजियाक झोरा

हाथमे अबिते रोशन टनटना कऽ घरमुहाँ भेल। पाछू-पाछू जीवन काका सेहो चलला।

ओना हहौती बच्चा जकाँ ने रोशन दाँतसँ झोरा फाड़लक आ ने जीवने काकाकेँ खोलैले कहलकैन।

हाथमे नेने आगू-आगू रोशन घर दिस विदा भेल। हलसैत-फुलसैत पोताकेँ आगूमे देख जीवनो कक्काक मन हलसए-फुलसए लगलैन।

हलसैत मनमे जीवन काकाकेँ उठलैन- यएह बाल-बोध ने सबुधि पाबि सज्ञान बनत। जेहेन बुधि भेटतै आ अंगेजत तेहने ने सचेष्ट सज्ञानी हएत। अखन तँ ओकर बुधियो आ देहो-हाथ दलदल-थलथल अछिए। मुदा किछु अछि तैयो तँ एते ऐछे जे कोनो वस्तुओ आ विचारोकेँ–जेकरा अपन अनुकूल बुझत ओकरा–अंगेजबे करत। जखने सबुधि आ सकाजकेँ अंगेजब सीखि अंगीकार करैत, अगुअबैत चलत तेहने ने ओकर भविसो आ भवितबो नीक बनैत जाएत।

विचारकेँ ऐठाम पहुँचते जीवन कक्काक मन थकथकेलैन। थकथकाइते मनमे उठलैन- जहिना परिवारमे एक नहि अनेक बेकती छैथ तहिना ने टोलो आ गामोमे छैथे, कोनो-ने-कोनो रूपमे बच्चा सभसँ जुड़ले अछि। जखन एक नहि अनेक बेकतीक संग बच्चाक जुड़ाव रहत तखने एक नहि अनेक चीज ओकर विचारो आ ढंगोमे प्रवेश करबे करत। बच्चेमे नहि, सियानो-चेतनमे एक नहि अनेको प्रवेश द्वारा अछिए...।

मुदा लगले जेना मन फरीच भऽ गेलैन तहिना जीवन कक्काक मन बाल-बोध रोशनपर गड़ि गेलैन। रोशने ने अपनो आ अपना परिवारोक कुलपूज्य बनत।

'कुलपूज्य' मनमे उठिते जीवन कक्काक विचार चनकलैन।

कुलपूज्य की? कुलो तँ अनेक अछि, मनुखक वंशगत सीढ़ीक संग विचारगत, कार्यगत इत्यादि अनेको शाखाक उपशाखा सेहो अछि, जे मकड़जालोसँ ओझराएल जाल अछिए। मन कहलकैन- ओइ जालकेँ खोलैले आ आकि तोड़ैले तँ मकड़ी बनि चलइ पड़त। मुदा मकड़ियो बनि चलब असान अछि, बिच्चेमे मकड़जाल तेहेन अछि जे देखबे ने करबै। जँ ऊपरका आँखिसँ देखबो करबै तँ मन मनुआकेँ थोड़े बुझत आकि मानत..?

एकाएक जीवन कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैकते दुनियाँक महजालसँ हटि एकजनियाँ जाल दिस बढ़ए लगला। मुदा आगूमे पोताक हाथमे भोज्य वस्तुक झोरापर नजैर पड़ि गेलैन। रोशनक हाथक झोरा देख जीवन कक्काक अपन मन रोशनक ओइ बाल-लीलापर जा अँटैक गेलैन जेतए-सँ चेतन लीला शुरू होइए।

..टक लगौने जीवन काका रोशनक ओ जिनगी देखए लगला जे उजराएल भविस छी।

मुदा आइ रोशन कहाँ अछि। ओ तँ मात्र पौने दू बर्खक जिनगी लऽ कऽ आएल छल। बाल-बोध, जेकरा ने आगिमे जरौल गेल आ ने केतौ सारा बनत, ने नह-केश हेतइ आ ने सराध, ने छाया हेतइ आ ने बरखी! की रोशन सम्बन्ध छोड़ि देलक। ओकर जे आत्मा अपन आत्मामे विलीन भऽ गेल, ओ केना निकलत?

◌

शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017

कान फुटल कप

माघ मासक अन्तिम रबि। आइ सालक अन्तिम मक्कर सेहो छी। ओना पैछला साल जकाँ तँ नहि, मुदा तैयो चारि बजे भोरेसँ महादेव बाबाक जलढरी शुरू भाइये गेल। तइसँ पहिने माने चारि बजेसँ पहिने, पण्डा-पुजारी अपन-अपन मन्दिरकेँ धोइ-पोछि स्नान कऽ पूजा-अर्चना कए लेलैन। पूजा-अर्चना केला पछाइत आमजन-ले महादेव मन्दिरक पट खुलले छोड़ि देलखिन।

ओना, जेना पहिने माने दस साल पूर्व विदेश्वर स्थान हौउ कि चण्डेश्वर स्थान आकि जागेश्वर स्थान, सभ स्थानमे मकरो आ शिवरातियोक जेहेन मेला होइ छल तेहेन तँ आब नहियेँ होइए, मुदा नइ होइए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तीनू स्थान पुरान अछिए। हालमे जे परसा स्थानक स्थापना भेल ओ तीनू मेलाकेँ प्रभावित केलक। ओना तीनू स्थान महादेवक छी जखन कि परसा स्थान सूर्यक छी। परसामे सूर्यक मूर्ति स्थापित अछि। मन्दिरक बगलमे जे पोखैर अछि, वएह खुनाइकाल मूर्ति भेटल, जे स्थापित भेल आ पछाइत मन्दिरो बनल। नीक मन्दिर अछिए।

दरबज्जापर बैसल जीवन काका रस्ते-रस्ते परसा धामक यात्री सभकेँ गीत गबैत जाइत देखलैन। ओना परसा स्थानमे सूर्यक मूर्ति स्थापित अछि मुदा यात्री सभ भोले बाबाक नचारी गबैत जाइत।

स्त्रीगणक हिसाबे पुरुख कम, मुदा सोलहन्नी कम, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मोटा-मोटी दसअना-छअनाक अन्तर अछिए। दसअना स्त्रीगण आ छहअना पुरुख। ओना माघक अन्तिम रबि छी, तीन दिन संक्रान्तिकेँ बाँकी छै, चारिम दिनसँ फागुन चढ़ि जाएत। आधा फागुन–माने अनहरिया अमावसियामे–शिवराति हएत। आन सालक माघसँ सेहो ऐ बेरक माघक रूप बदलल अछिए। आन साल जेना शीतलहरी होइ छल आ गोटे साल बरखे भऽ जाइ छल से नहि। ने केतौ असमानमे मेघे चिलियाइए आ ने शीते-पालाक जोर अछि। पनरह दिनसँ ठेहा रौद रहने माघ मासक रूपे-रेखा बदलल अछि। किरिण फुटिते लोक देहसँ चद्दैर उतारि अपन-अपन काज-उद्यममे लगि जाइ छैथ।

चौकीपर बैसल जीवन कक्काक मनमे उठलैन जे जखन जाड़ ओरानियेँपर अछि तखन किए ने अपनो दुआर-दरबज्जाकेँ झाड़ि-बहारि चिक्कन-चुनमुन बना ली। कातिक माससँ घूर होइत आबि रहल अछि जइसँ छप्परोमे आ देवालो सभमे झोल-झाल लटकल अछि। तेकरा सभकेँ झाड़ि-झूड़ि चिक्कन करबेक अछि। भने आइ रबि दिन छीहे...।

ओना, रबि दिनकेँ पलखैत नोकरिहारा सभकेँ होइ छैन मुदा से नहि, जीवन काका बदलैत मौसमक खेती-पथारीसँ निचेन भऽ गेल छला। खास कऽ गरमा खेती-पथारीसँ निचेन भऽ गेल छला, माने गरमा खेती सभ लगा लेने छला आ जाड़क खेती सेहो अन्तिम अवस्थामे पहुँचिये गेल छैन। समए पकड़ेने ऐगला-पैछला दुनू खेती सम्हरले छैन।

ओना परिवारे छी, केते रंगक काज रहितो अछि आ केते नबो सिरासँ जनमबो करिते अछि, जेकरो सम्हारब रहिते अछि। मुदा सेहो

हेबे करत। भेल तँ दू-तीन घन्टाक काज झाड़-झूड़सँ लऽ कऽ बाहरब-सोहरब तक। तहूमे जखन परिवारमे रहि परिवारेक लेल दिन-राति अपसियाँत रहै छी, तहीमे ने दुआरो-दरबज्जाक झाड़-बहार चिक्कन-चुनमुन करब अछि।

जिनगीक अन्तिम पड़ावमे जीवन काका आबिए गेल छैथ। अन्तिम पड़ावक माने भेल साठि बर्खक उम्र टपि जाएब। ओना अपन जिनगीक चारिम दरबज्जा सेहो जीवन कक्काक छिऐन्हे। माने ई जे शुरूमे माटिक भीतपर खढ़क छाड़ छेलैन जे 1971 इस्वीमे–जइ बेर पाकिस्तानसँ बंगला देशक लड़ाइ भेल–सालो भरि बरखा-बुन्नी होइते रहल। सालो भरि ई भेल जे चढ़िते फागुनसँ जे बरखा शुरू भेल ओ बरखा-मौसम टपा देलक। ओना सालक तीन ऋृतु एकटा ऋृतु ‘बरखा’क अछि। जे अखाढ़सँ शुरू होइए आ आसिन अन्त होइत-होइत हथिया नक्षत्रमे हाथ धोइत अन्त होइए। मुदा ओइबेर चढ़िते फागुनमे जे बरखा शुरू भेल ओ तेना लधलक जे सालो भरि लधनहि रहि गेल। जीवन काका दरबज्जा छाड़ैले जे राड़ी-रटनी खढ़ रखने छला ओ जाकेमे सड़ि गेलैन। आठ कट्ठा खरहोरि जीवन काकाकेँ छेलैन, जइमे राड़ी-रटनी खढ़ होइ छेलैन। ओना पहिने डबहारी सेहो होइ छेलैन मुदा ओ उपैट गेलैन आ राड़ी-रटनी हुअ लगलैन। हलाँकि राड़ियो-रटनीमे एकटा तेहेन आफद आबि गेलैन जे नइ चाहितो जीवन काका ओकरो उपटाइये लेलैन। आफत ई जे शुरूमे तँ कम्मे-सम्म लजैनी खरहोरिमे जनमलैन मुदा जेना-जेना समए बीतैत गेल तेना-तेना ओकर विरधी होइत गेल। विरधीक कारण छल ओकर फूल-बीआ, जे साले-साल बढ़ए लगल। तैसंग लजैनीक पुरना जड़ि सेहो जीवित रहने बरखा मौसम पाबि कच्चे-बच्चे पोनैग झमटगर गाछ भाइये गेल छेलैन।

ओना, अपना जनैत जीवन काका खढ़क जाककेँ बँचबैक नीक

परियास केलैन, परियास ई जे जखन बरखा बन्न रहै आ रौद उगै तखन खढ़क जाकक बोझ सभकेँ उनटा-उनटा पसारि दइ छेलखिन, मुदा सभदिना वा तेसरा दिनक बरखा भेने नइ सम्हरलैन। खढ़ सड़ि गेलैन, घरक चारपर नहि चढ़ि सकलैन। एक तँ बिनु छाड़ल घर माने नबका छाड़ नै पड़ल छल, जइमे कौआ सभ आ हवो-बिहाड़ि तेना भूर-भार आ उजाड़ो-पुजार कऽ देने छेलैन जइसँ बरखामे खूब चुआठ भऽ गेलैन। एक तँ सालो भरि बरखाक पानि घरमे लगने, उपछा-उपछी केलो पछाइत घरक धरती थलियाएले रहलैन। चारक ठाठक कोरो-बत्ती सेहो सड़िये गेलैन। आ तैपर खरहोरि सेहो लजैनियेँक भऽ गेल छेलैन। अन्तमे खरहोरि उपटा कुम्हारसँ खपरा बनबा जीवन काका दरबज्जा छाड़लैन।

1987 ई.क बाढ़िमे जीवने कक्काक कोन बात जे गामक जेतेक भीतघर छल ओ खसि पड़ल। आब तँ सहजे नव पीढ़ीक लेल भीतघर किताबक बात भाइये गेल अछि। ओना, पहिने भीत घरक उपटान कोसी धारक इलाका आ कमला धारक इलाकामे भेल मुदा सत्तासीक बाढ़ि उपराइरो इलाकाक भीतघरकेँ उपटौलक।

जहिना ठेंस लगने बुधि बढ़ै छै तहिना जीवन काकाकेँ सेहो बढ़लैन। काँच माटिक दरबज्जाक भीत पानि पीब माटिक ढिमका बनि गेलैन आ पेट गड़े खसने पाकल माटिक खपरा दोसर ढिमका सेहो बनि गेलैन। खाएर जे भेलैन मुदा जखन मनुख छी, जीबए चाहै छी तखन घरक ओरियान करइ पड़त किने। सएह जीवनो काकाकेँ भेलैन। कँचपक्कू पजेबाक देवाल आ सीमटीबला चदराक दरबज्जा बनौलैन। एक तँ कँचपक्कू पजेबा तैपर माटिक गिलेबाक जोड़, अठासीक भुमकमे तेते फाट-फुट भेलैन जे सदिकाल खसैक संभावना बनले रहलैन। राँइ-बाँइ तँ देवाल नहि फटलैन मुदा देवालमे तीनटा ओहन फाट भऽ गेलैन जे कखनो हवा-बिहाड़िमे घर खसि सकैत

छल।

ओना ओहनो स्थिति (फाटल-फाटल देवाल) मे दोसर दरबज्जा जीवन काका नइ बना सकला। तेकर कारण छेलैन जे परिवारक आर्थिक स्थिति ओहन दबि गेल छेलैन जे घर सन जिनगीक मूलभूत खगता रहितो पुरती नइ कऽ सकला। दस बर्खक पछाइत जखन स्थिति सुधरलैन तखन चारिम खेपक दरबज्जा बनौलैन। बीतैत कातिक आ चढ़ैत अगहनसँ जे घरमे घूर–जाड़क दुआरे–करए लगला, ओहीमे जे धूआँसँ झोल-झाल लगलैन ओकरे साफ करैक विचार जीवन काका केलैन।

घरक हिसाबसँ वस्तुओ-जात भरले छैन। तहूमे सुतैक चौकी आ दुनू अलमारी तेना जगह छेक नेने छैन जे कोण-काण छोड़ि केतौ खाली जगहे ने छैन। ओहीक एक कोणमे चाह बनबैक चुल्हियो आ जारनो-काठी रखै छैथ, दोसर कोणमे जूता-चप्पल, तेसर कोणमे कपड़ा टँगैक अलगनी आ चारिम कोणमे रद्दी-फद्दी कागजो आ आनो-आनो टुटल-फुटल वस्तु-जात रखै छैथ। ओना रद्दी-फद्दी कागतक उपयोग चुल्हि पजारे काल सेहो करिते छैथ जइसँ कागत तँ कम्मो–सम्म मुदा इंक सठल पेन, फुटल कप, ठुठियाएल हँसुआ-खुरपी इत्यादि तँ रखिते छैथ।

चाह पीब जीवन काका जखन दरबज्जाक भीतर हिया कऽ देखलैन तँ ऊपरेसँ माने घरक छतेसँ झाड़-झूड़ करब नीक बुझलैन। नारियलबला झाड़ू लऽ ऊपरसँ झाड़ब शुरू केलैन। कोणमे कानो फुटल आ डण्टियो टुटल कप देखलैन तँ समोह लगि गेलैन। समोह लगिते जहिना मन कँपलैन तहिना हाथो बगा गेलैन। कप दिस बढ़ैत हाथे अँटैक गेलैन। ने आगू बढ़ि कप पकैड़ सकला आ ने हाथ पाछूए हटा सकला। मन पड़लैन पोता रोशन...।

रोशने एक दिन भिनसरू पहरमे चाह लइले कप आँगन लऽ जाए लगल तँ केबाड़क चौकैठमे पएर ठेक गेलइ। पौने दू बर्खक रोशनक हाथ-पएर असथिर नइ भेल छल, खसि पड़ल जइसँ कपक डण्टी टुटि गेल। कपक डण्टी टुटल मुदा कप ओहिना रहि गेल जहिना पहिने छल। खसैत रोशनकेँ देखते हाँइ-हाँइ कऽ जीवन काका दुनू हाथे उठबैत बजला-

"रोशन बौआकेँ की भेल?"

कानैक झोंकमे तँ रोशन किछु ने बाजल मुदा जहिना थारी-लोटामे डोलैत पानि धीरे-धीरे असथिर होइत तहिना रोशनक मन सेहो असथिर हुअ लगल। थरथराइत रोशन बाजल-

"गिर...।"

रोशनक मुहमे ओते बोल कहाँ छै जे पतियानी लगा बाजत। ओ तँ पौने दुइए बर्खक अछि। तहूमे बाल-बोध व्याकरणक बात की बुझत...। जेना दर्द भेलापर काँचो तेल आ पकलो तेलसँ दर्दक हिसाबसँ मालिश कएल जाइत तहिना जीवन काका दुनू हाथसँ रोशनक हाथ-पएर ससारैत झाड़ैत-पोछैत बजला-

"बौआक दुख मेटा गेल। कहाँ किछु भेल अछि।"

'नइ किछु भेल' सुनि रोशन मुँह बन्न करैत अपन काजकेँ आगू बढ़बैत हाथक इशारासँ कप देखबैत बाजल-

"उ-उ..!"

कप उठा हाथसँ पोछि रोशनक हाथमे पकड़बैत जीवन काका बजला-

"बौआ, चाह पीत।"

कप नेने रोशन माए लग पहुँच, जेतए चारि-पाँचटा कप चाह-ले

सजल छल, ओतइ अपनो कप रखि आँगुरक इशारासँ देखबैत माएकेँ कहलक-

"उ-उ..!"

कोणमे राखल डण्टी टुटल, कान फुटल कपकेँ हाथमे उठबैत जीवन काका निहारए लगला। मन पड़लैन- जएह डण्टी तोड़लक सएह ने कानो फोड़लक। जहिया डण्टी टुटैकाल चौकैठ लग रोशन खसल रहए, ओकर पनरहे दिनक पछाइत दोहरा कऽ खसल जइसँ आधासँ ऊपर कपक कान फुटि गेल, जइसँ चाह पीबै-जोकर कप नइ रहल। भाय, कप छिऐ किने ओकर कानो नमगर-चौड़गर होइते छइ। हाथमे कप पकड़ने जीवन काका स्मृतिक बोनमे बोनैया जकाँ वौआए लगला...।

आइ रोशनकेँ ऐ घरसँ बाहर भेला मास दिन भऽ गेल। आइ जँ चेतन-सियानक मृत्यु भेल रहैत तँ पहिल छाया भऽ गेल रहितै, मुदा ओ तँ पौने दू बर्खक रोशन डेढ़ हाथ खड़ा बाल-बोध छल, ओकर केना छाया बनतै आकि छाँह बनि आरा केना लगतै। ओकरा तँ माटियो आ माटिक जीवाणुओ दुनियासँ मेटा देने हेतइ। हमहूँ तँ मेटाइये देलिऐ..!

एकाएक जीवन कक्काक मनमे व्याकुलता जगए लगलैन। मुदा आब उपाइये की अछि। एतबे ने अछि जे अपन चाह खातिर कपक डण्टियो तोड़लक आ कान फोड़ि कपकेँ निकम्मो बनौलक..!

मुदा लगले जीवन कक्काक मन आगू घुसैक गेलैन। आगू घुसैकते मन विधुएलैन। विधुआइते मुहसँ निकललैन-

"दोख तँ केकरो-ने-केकरो लगबे करत। कियो अपना सिर दोख थोड़े लिअ चाहैए, लेबो उचित केना हएत?"

विधुआएल मुहसँ जीवन कक्काक बोल तँ निकैल गेलैन मुदा विचरण करैत विचार उठलैन- जे जन्म लेलक ओकर मृत्यु हेबे करत,

मुदा बीचमे तँ ओकर जीबैक औरदा छइहे...।

मन विहुस गेलैन। विहुसते विचारलैन- ऐ कपकेँ रोशनक स्मृति स्वरूप खोलियामे सजा कऽ रखि लेब। पौने दू बर्खक रोशन जेते दुनियाँ देखलक ओते तँ ओकरो साझी भाइये गेल अछि ने, ओ तँ परिवारेजन ने बुझता जे जाड़ फटैत जहिना वसन्तक संग सूर्यक रोशनीमे सेहो प्रखरता अबै छै तहिना बरखाक आगमसँ रौद खसए लगैत अछि आ तहिना ने जाड़क आगमनसँ बर्खो विलीन हुअ लगैत अछि। यएह ने भेल दुनियाँक मौसम, जइमे मासूम रोशनो तँ अछिए किने।

◌

शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017

वर्थ डे

चैत मरनासन होइते बैशाखक आगमन भऽ गेल। ओना, जहिना मासक जन्म भेने मास मरितो अछि आ जनैमतो अछि, तहिना ने मौसमोक मासुपन होइए।

भिनसुरका समए। प्रखर मौसम रहने सूर्यक किरिणोमे प्रखरता आबिए गेल अछि। चौक-चौराहाक दोकान-दौरी जे जाड़क मासमे सिरसिराइत अबेर कऽ खुजै छल ओ जेना-जेना गरमी धबैत गेल तेना-तेना सबेर खुजए लगल, तँए आब चारि बजे सबेरगरेसँ चौकक दोकान खुजए लगैए। ओना, दोकानो-दौरीक अपन-अपन हिसाब अछि। किछु एहेन अछि जेकर गहिंकी चारि बजे भोरेसँ पहुँचए लगै छै आ किछु एहनो अछि जे आठ बजेक पछाइत खुजैए आ किछु एहनो तँ ऐछे जे दस बजेक पछाइत खुजैए।

आने जकाँ जीवन काका सेहो चारि बजे भोरे चौकपर झूठ-साँच समाचारो सुनैले आ खेती-पथारीक गपो-सप्प करैले पहुँचबे करै छैथ। मौसमो अनुकूले रहै छैन। मौसम अनुकूल ई जे जहिना बारह मासक सालमे तीनटा मौसम रहने छहटा रीतु अछि, तहिना ने दिन-रातिक बीच सेहो दूटा मौसम अछि। तैसंग दूटा समरस सेहो अछिए। एकटा भेल राति-दिनक सीमानपर 'भोरक' आ दोसर भेल दिन-रातिक सीमानपर 'साँझक'। ओना, दुनू मौसमक अपन-अपन गुण सेहो

छइहे। जहिना पूर्बा हवा देहक ऊपरमे ठंढा लगैए आ देहक भीतर खौंतियबैए तहिना ने पछबा हवा ऊपरसँ खौंतियबैए आ भीतरसँ ठंढ बनबैए। खाएर ई तँ भेल हवाक बात, साँझ-भोरक अपन हिसाब अछि। जे दुनू दू गतिये चलैए। माने ई जे जखन हवा चलैत रहत, तखन एक रंगक भेल आ जखन हवा ठाढ़ रहत तखन दोसर रंगक भेल। मुदा से नहि, एक तँ शुरूक समए, जे अंगरेजीक बीतैत मार्च आ चढ़ैत अप्रीलक भेल, आ वसन्त रीतुक अधबेसू वसन्त भेल।

चौक-चौराहाक हवा-पानि पीब जीवन काका घरपर एला। ओना माल-जालकेँ सेबेरे घरसँ निकालि बाहरक नादिमे बान्हि खाइ-पीबैले सानी-कुट्टी लगाइए गेल रहैथ, जे खा कऽ मालो-जाल अरामसँ बैस गेल छल।

घरपर अबिते जीवन काका पहिने माल-जाल देखलैन। तीनू मालकेँ बैसल पौज करैत देख चोट्टे घुमि कऽ दरबज्जापर होइत आँगन गेला तँ देखलैन जे दछिनबरिया ओसारपर मन मारि पुतोहु बैसल छेली आ पछबरिया ओसारपर पत्नी दुनू पोती आ दूटा आन अँगनाक स्त्रीगणक संग चुपचाप बैसल छैथ आ मने-मन किछु विचारि रहल छैथ।

दुनू ओसारपर नजैर आँखि पड़िते जीवन काका तारतममे पड़ि गेला जे किए सभ एना ठकुआएल बैसल छैथ! अखन तँ भोरक समए छी, दिनक शुरूआतक समए, जे केतेको काज करैक समए छी, तखन किए सभ मन मारि बैसल छैथ? जँ भोरेमे लोकक काज हेरा जाए, माने नइ रहै तखन भरि दिन पानि डेंगोनाइ छोड़ि ओ करत की..?

आँगन-दरबज्जाक बीच मुँहथैरपर ठाढ़ भेल जीवन काका दछिनबरिया ओसारपर बैसल पुतोहुपर नजैर देलैन तँ देखलैन जे पुतोहुक आँखिसँ नोरक बून छिटैक रहल छैन। नोरक बून देख मने-

मन सोचए लगला जे किछु कारण जरूर अछि। मुदा जाबे ओ किछु बजती नहि, ताबे बुझबो केना करब..?

पत्नी दिस नजैर दैत जीवन काका बजला-

“किए सभ हड़ताल केने छी?”

पत्नी तँ ‘हँ-हूँ’ किछु ने बजलैन। मुदा मिरमिराइत पुतोहुक मुहसँ निकलल-

“रोशनक आइ वर्थ डे...।”

‘रोशनक वर्थ डे’ सुनि जीवन कक्काक मनमे जोरक धक्का लगलैन। धक्काक कारण भेलैन जे तीन मास पूर्वे रोशन दुनियाँ छोड़ि चुकल छल। माने कल लगक खाधिमे जइमे कलक पानि जमा होइत अछि, ओही खाधिमे खसि रोशन जाड़े कठुआ कऽ प्राणान्त कऽ चुकल छल। शरीरक तँ अन्त भऽ गेलै मुदा जिनगीक अन्त केना मानल जाए। किछुओ दिन तँ घरवास केनहि अछि।

ओना, जहिना आन परिवारमे एक-एक बेकतीकेँ अनेको नाओंसँ पुकारल जाइ छै तहिना जीवनो कक्काक परिवारमे छैन्हे। जीवन काकाकेँ सेहो किछु गोरे ‘जीवन काका’, तँ किछु गारे ‘मन्नु बाबा’ तँ किछु गोरे ‘ब्रह्मानन्द बाबा’ सेहो कहिते छैन तहिना रोशनोकेँ कियो ‘रोशन’ तँ कियो ‘बेल’ तँ कियो ‘बेलबा’ तँ कियो ‘छोटका बौआ’ सेहो कहिते अछि।

पहिल बर्ख पुरलापर रोशनक वर्थ डे धुमधामसँ परिवारमे मनौल गेल छल, आइ दोसर साल छी। ऐ बिच्चेमे रोशन पौने दू बर्खक आयु पुरबैत दुनियाँ छोड़ि देलक।

जहिना गाम समाजक बुढ़-पुरान जीवितकेँ मर्तलोक[1] आ मृत्युकेँ

[1] नर्क

मृत्युलोक[2] बुझबो करै छैथ आ बजबो करै छैथ तहिना जीवन काका सेहो पुतोहु दिस तकैत बजला-

“रोशन स्वर्गक सुख करैए, अपना सभ नर्कमे छी, तखन अनेरे जे घर-परिवारक काज छोड़ि सभ चिन्तित भेल बैसल छी से अनेरे ने। दिनक जे भावी छल ओ भेल। तइले अनेरे सोग-पीड़ा केने की हएत। जे धारलिऐ से केलिऐ। जानि कऽ वा अनजानमे चूक भेल हएत, से ओ माफ करत।”

ओना बजैक क्रममे जीवन काका बाजि तँ गेला मुदा अपनो मन भीतरे-भीतर कानए-कलपए लगलैन। कानए-कलपए ई लगलैन जे रोशन तँ चेतनशील छल नहि, तखन ओकर बुधि केना क्रियाशील होइतइ आ विचारैत केना जे परिवारमे अहिना कनी कम-बेसी होइते छइ। तहूमे रंग-बिरंगक लोक सेहो रहिते अछि, तँए टुटी-फुटी कनी हेबे करैए।

रंग-बिरंगक माने भेल जे एक वंशक वा एक कुल-खनदानक रहने लोकक शरीरक रंग-रूप, लम्बाइ-चौराइ किए ने एक रंग हौउ, मुदा बुधि-विचार केना एक हएत। ओ तँ भीतर-बाहर दुनूक बीचक शक्ति छी, ओ तँ उमेरोक हिसाबे आ गतिशीलतोक हिसाबे कम-बेसी हेबे करत।

जीवन कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे रोशन तँ ने आब ऐ धरतीपर आबि माइक दूध पीबत आ ने हमरे संगे हँसुआ-खुरपी नेने बाड़ी-झाड़ीमे खसैत-पड़ैत, कनैत-खिजैत जाएत, ओ तँ आब नइ रहल, ई तँ सभकेँ बुझए पड़तैन किने..?

तैसंग ईहो ने बुझती जे रोशन देहसँ हटि गेल, मुदा देही वा शरीरीसँ थोड़े हटल। ओ आत्मास्वरूप चेतन शक्ति छी, पौने दू बर्खक

[2] स्वर्ग

रोशनक ओ शक्ति तँ अपन आत्म-स्वरूपमे मिलि गेल अछि। जइसँ पौने दू बर्ख, एक्कैस मास भऽ गेल। एक्कैस मास चौरासी सप्ताह भऽ गेल आ चौरासी सप्ताह, सात गुणे बेसी दिन भऽ गेल, इत्यादि-इत्यादि भाइये गेल अछि किने, तँए स्मृति सनेस नइ देत सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

अनायास जीवन कक्काक निराएल आँखिक बून एक-दोसरमे सटि-सटि टघार बनि गालपर होइत टघरैत रहबे करैन, तही बीच पुतोहुओ आ पत्नियोंक आँखि चढ़लैन, आँखि चढ़िते विचारक संतरण हुअ लगलैन। तैबीच साउस–सुदामा–संतरण होइते सामंजस करैत पुतोहुकेँ कहलखिन-

“रोशन की तोरेटा छेलह जे हेरेलह आ तोरेटा दुख होइ छह, हमर पोता नइ हेराएल, बुड़हाक ‘बेल’ नइ हरेलैन! सबहक हेराएल! तँए आब सभ कियो अपन-अपन खेलौन[3] नेने अपन-अपन जिनगीमे नइ लगबह तँ काल्हि-दिन केना चलतह।”

पत्नीक विचार सुनि जीवन कक्काक मन पघिल-पघिल कऽ गील हुअ लगलैन। बेलबाक रंग-रंगल रंग सबहक मनमे नाचए लगलैन। अँगनाक रूप बदलल। मन-चित्त दाबि सभ अपन-अपन दिनचर्या दिस बढ़ली।

आँगनसँ दरबज्जापर अबैत-अबैत जीवन कक्काक मन घुमए लगलैन। अपन घुमैत मन देख जीवन काका सोचलैन जे या तँ ओछाइनपर पड़ि रही या नइ तँ बैसिये जाइ। किएक तँ जखन अपने मन बेसमहार भऽ जाएत तखन तँ आरो बेसी नोकसान हएत।

दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया चौकीपर बैसते जीवन कक्काक मन पुतोहुक मुहसँ निकलल शब्द- ‘वर्थ डे’ पर गेलैन। कहाँसँ

[3] रोशनक स्मृति स्वरूप

कहितैथ जे 'जन्म साल' छी, जन्म दिन तँ सम्भव नहि अछि। तारीख वा तिथिकेँ दिनक मिलान नइ होइए। वा 'साल गीरह' छी, यएह गीरह ने गोठिया कऽ गाँठ बनैए, जेकरा 'वर्षगाँठ' सेहो कहै छिऐ...।

मुदा लगले जीवन कक्काक मन पाछू घुमलैन। घुमिते देखलैन जे परिवार-परिवारक लोक टी.वी.क संग आब मोबाइलोमे वर्थ डे मनबैत, थोपड़ी बजा-बजा वर्थ डे गबैत देखैए-सुनैए। कोन माइक इच्छा नइ हेतैन जे कोखिया गुहारि हुअए। जहाँ धरि 'वर्थ डे'क प्रश्न अछि, ई शब्द छी, बेसी-सँ-बेसी पाँति भऽ सकैए, मुदा भाषा तँ भाषा छी, गंगा सदृश अछि, जइमे नीक-अधला सबहक समावेश होइते अछि। तँए पुतोहुक बात जीवन काकाकेँ अरूचिगर नहि रूचिगर लगलैन।

ओना तीनू गोरे–माने जीवन काका, जीवन कक्काक पत्नी सुदामा आ पुतोहु श्यामा–तीन दिस नजैर बढ़ौलैन, मुदा रोशनक 'वर्थ डे' किनको मनसँ सोलहन्नी नइ हटलैन। हटबो केना करितैन। जहिना जीवन कक्काक मनमे तहिना सबहक रोशन बसले छल।

भानसा-घरमे पएर दइते श्यामा चुल्हिकेँ गोड़ लगैत बजली-

"हे चुल्हि, अहीं छी आ हमहीं छी जे लालक माने रोशनक पहिल 'वर्थ डे'क दिन केना जीबैत लहलह करैत रहलौं। पहिल सालक 'वर्थ डे'मे ईबेर केत्ता कप चाह अतिथि-अभ्यागतक सेवामे लगा चुकल रही, मुदा आइ..!"

अबैत-अबैत विचारक क्षेत्रमे आबि श्यामा ठमैक गेली। ठमैकते ठकमुरा गेली। ठकमुराइते जेना जिनगीमे लगल जंग छुटि-छुटि जगलैन। जगिते मनमे उपकलैन- यएह छी जिनगी आ जिनगीक लीला। सभ जनै छी जे जे देह रूपमे जन्म लेलक ओ अन्त करबे करत। मुदा देह तँ देहेटा नइ छी, जँ सोल्होअना ओकरा माटियेक

मानि लेब सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। चलबो-फिरब आ सोचबो-विचारब दिस ने देखए पड़त।

एकाएक श्यामाक नजैर दौड़ैत रोशनकेँ दुनू हाथे पकैड़, कोरामे उठा, बीच आँगनमे ठाढ़, अपन छातीसँ लगौनेपर पड़लैन। जखन रोशन अपन पहिल साल गिरह पैरमे मौजा-जूतासँ लऽ कऽ देहमे शर्ट-पेन्ट, माथपर टोपी लगा मनौने रहए, ओइ संग परिवारो आ कुटुमो-समाज तँ भरि दिन रोशनेक विरुदावली गबैत रहला, मुदा अपन दोसर साल गिरह रोशन कहाँ देख पौलक! कहाँ हमहीं आकि ई चुल्हिये लहलहा रहल अछि..!

मन-चित्त समेट श्यामा जीवनक दुख-धन्धामे लगि गेली। मनमे उठलैन- पौने दू बर्खक बेटा दुनियाँ छोड़लक, की ओकरा मनमे हमहूँ-सभ बसल हेबइ? नइ! हमरा सभ जकाँ ओ कहाँ रहल? ने ओ किछु बुझि पबैत हएत आ ने चिन्ह पबैत हएत। ने ओकरा बुझैक आ ने चिन्हैक किछु शेष हेतइ। ओकर सोचै-विचारैक जगहे मेटा गेल, ओ बिसैर गेल हमरा सभकेँ..!

श्यामाक मन थरथराए लगलैन। पानि जकाँ थरथराइत मनकेँ थीर केली। मन थीर होइते मुहसँ बकार फुटलैन-

"कोखिक सन्तान छल। अपना उकिते जे जनलिऐ से तँ करबे केलिऐ। आब बेसी-सँ-बेसी एतबे ने हएत जे अपन दिलक डायरीमे, सन्तानक संख्यामे लिखि कऽ राखब। जँ से नइ राखब तँ प्रसव पीड़ाक वेदना, मातृत्वक जे विशिष्टता छी ओ हेरा जाएत। जइसँ नारीत्वक शक्तिमे कमी औत।"

मालक घरक थैरमे सुदामा काकी गोबर उठबैले बैसबे केली कि आँगनसँ पछुअबैत रोशनक स्मृति रूप आगूमे आबि गोबरकेँ देखबैत कहलकैन-

"ई-इ-इ..!"

सुदामा दादी बुझि गेली जे नान्हिटा बच्चा गोबर उठबए कहि रहल अछि। सुदामा काकीक मनमे ठहैक एलैन जे की गोबरकेँ घृणाक नजरिये देखा रहल अछि आकि क्रिया स्वरूप?

मुदा सुदामा काकीक सभ दिनक जे काजक अभियास छैन, ओइ अनुकूल बिना मनसँ जपनौं हाथ क्रियाशील भऽ गेलैन।

जखने हाथ काजकेँ पकैड़ कजियबैत जिनगीकेँ कबजियबए लगैत अछि तखने जिनगी कबजियाइत कीर्ति दिस बढ़बे करैए, सुदामो काकीक हाथ बढ़लैन।

आगू बढ़िते मनमे उपकलैन- ई तँ दुनियाँक लीला छी, जेते दिनक खातिर आ जेते भूमिका करैक भार लऽ कऽ रोशन आएल ओ करैत गेल। मनमे उठिते सुदामाक प्रशान्त मन उदिग्न मनकेँ शान्त करैत रोकैत कहलकैन-

"करोड़ो तरेगनसँ सजल अकासमे साइयो जन्मो लैत आ टुटि-टुटि खसबो करैत, तँए कि अकासक शोभा-सुन्दरमे कमी होइए आकि विलीन होइए, नहि! ओ तँ रहबे करैए। अपनो परिवार ऐछे, तरेगने जकाँ ने बढ़बो करैए आ घटबो करैए। मुदा जैठाम बढ़ती-घटतीक समरूप रहत तैठाम घटवारि-बढ़वारि हेबे किए करत।"

प्रशान्त चित्त होइते सुदामा काकीक मन सहमलैन। सहमलैन ई जे चेतने-अचेतनेक बीच ने दुनियाँ चलि रहल अछि। जखन अही दुनियाँमे अपनो छी तखन ओहीक देखा-देखी ने अपनो चलए पड़त। अपन जिनगीक तँ यएह ने लेखा-जोखा हएत जे जइ दिन धरतीपर पएर देलौं तइ दिनक परिवार की छल, समाज की छल आ आइ की अछि। अही बीच ने कम-बेसी अछि, जइमे लोक अपन हारि-जीत बुझैए। अनेरे मनकेँ वौअबै छी...।

मुदा तैबीच पहिल गोबरक चोत सुदामा काकी उठा नेने छेली आ दोसर चोत दिस हिया कऽ देख रहल छेली, तखने बुझि पड़लैन जे ऐसँ नमहर अछि। उठि कऽ ठाढ़ होइते मनमे उठलैन- रोशनो तँ अपने अमलदारीमे आएल। माने ई जे अपने जीता-जिनगीमे एबो कएल आ गेबो कएल। केना कोनो दादी अपन पोताकेँ बिसैर जाएत? रोशनक दादी हमहीं ने छिऐ, पोता हमरे ने छल, की मनमे जे डायरी विधाता देलैन ओइमे एतबो जगह खाली नै अछि जे अपना रोशनकेँ अपनो मनमे लिखि राखब? पौने दू बर्खक रोशन पौने दू बर्ख जहिना सबहक संग संगी बनि संगबे जकाँ रहल तहिना ने संगबे जकाँ चलबो करत। मालक घर आबि रोशन जहिना गोबर देखबै छल, नाइद-खुट्टा देखबै छल, घूर लग बैस आगियो तपै छल, संगे-संग खेबो करै छल तहिना ने मन-मन्दिरमे बास करैत ताधैर बसैत रहत जाधैर बसै छी।

गोबर समेट कऽ उठा मालक घरसँ सुदामा काकी निकलली तँ चापाकलक चबुतरापर ठाढ़ श्यामापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते आँखि उठा-उठा पुतोहु दिस देखए लगली तँ मन कहलकैन जे रोशन तँ हमर पोता भेल, असल तँ कोखिक रत्न जिनकर छेलैन हुनका मनमे की वरैस रहल छैन। लाल सागरसँ उठल वायु लाल बरखा करैत आकि काला सागरक कारी? मुदा तैकाल श्यामाक नजैर रोशनक ओ रूप देख रहल छेलैन जे दादीक आगू-आगू खेतक खाधिमे लग पहुँच देखबै छेलैन। ओना आगू-आगू रोशनकेँ बढ़ने[4] सुदामा दादीक भार[5] बढ़िते छेलैन मुदा तैयो रोशनकेँ ऐ दुआरे अगुएने चलै छेली जे बाल-बोध अछि, अखन हाथ-पएर असथिर नइ भेल छै, जँ अपने अपन भार कमबै दुआरे पोताकेँ पछुअबैत चलब, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। एक तँ जखने ओकरा पाछू करबै तखने ओ कानत, किएक तँ आगू

[4] छोट पएर रहने छोट डेगे
[5] गोबर भरल पथियाक भार रहने

केतए जाएब से ओकरा बुझले नइ छै, जँ देखलो-बुझल हेतै तँ चंग मन उचैंग गेल हेतइ। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे अपनो आँखि (नजैर) अपने आगू ने देखत, जे पाछू रहत तेकरा केना देखत। तेकरा देखैक तँ उपाय यएह ने हएत जे ओकरा आँखिक आगू अपन आँखि राखब...।

अपन बेथाकेँ श्यामा सुदामा दादीपर थोपैत बजली-

"आब ने रोशन अछि आ ने रोशनक दुनियाँ। आब के बुढ़िया दादीक हाथक आँगुर पकैड़ पाछूओ-पाछू चलत आ आगूओ-आगू देखबैत चलत..!"

पुतोहुक बात सुनि सुदामा काकी ठमैक गेली। ठमैक ई गेली जे जँ पुतोहुकेँ किछु कहबैन तँ ओ अनेरे अपन दैनंदिनक क्रिया रोकि समोहमे पड़ि जेती, तइसँ नीक जे किछु बजबे ने करब।

अही अगदिगमे सुदामा काकीक मन पड़ल छेलैन। तही काल जीवन काका दरबज्जासँ ई सोचि उठि कऽ कल दिस बढ़ला जे जहिना अपन मन बेलबाक स्मृतिमे वौड़ा रहल अछि जइसँ कोनो काजमे नजरिये ने सन्हिया रहल अछि, तहिना तँ ने पत्नियोँ आ पुतोहुओकेँ होइत छैन।

भानस घरसँ आगू बढ़िते जीवन काका देखलैन जे गोबरक पथिया माथपर नेने पत्नी, खेतमे खुनल गोबरक खाधि लग ठमकल माथपर भारी नेने ठाढ़ छैथ। तहिना पुतोहुओ कलक हेन्डिल पकड़ने सासुक उत्तरक आशा देख रहल छेली।

पत्नियोँ आ पुतोहुओकेँ देख जीवन कक्काक मन मानि गेल छेलैन जे दुनू गोरे अपन-अपन जीवन क्रियामे लगि गेल छैथ। मुदा अपन मनक स्मृति जीवन क्रिया दिस बढ़ए नहि दैन। रंग-रंगक प्रश्न मनमे बर्खाक बुलबुला जकाँ उठैन आ लगले फुटि-फुटि विलीन होइत जाइन। मुदा बर्खोक तँ किछु बुलबुला एहनो होइते अछि जे लगले

नहि फुटि पानिक टघारक संग किछु दूर धारा पकैड़ संग धरिया-धरिया बढ़ितो अछि। ओना, छी तँ पानियेँक बुलबुला जइमे स्थायित्व नहियेँ छै मुदा तैयो अपन जिनगी बँचबैत किछु दूर धरि तँ बहिते अछि।

अनायास जीवन कक्काक मन परिवारसँ सर-समाजक ओइ असिरवादपर आबि अँटैक गेलैन जे रोशनकेँ आशीष रूपमे दैत देखने-सुनने छला। ओ विचार फुटि जीवन कक्काक मुहसँ निकललैन-

"कहाँ रोशन दीर्घजीवी भऽ सकल! कहाँ ओ अपन भविसक भवितव्य देख सकल!"

ओना जीवन कक्काक मुहसँ निकैल तँ गेलैन मुदा लगले प्रशान्त मन शान्त करैत कहलकैन-

"ई तँ दुनियाँक खेले छी जे सभ अगिले आशा देख जिनगीकेँ क्रियाशील बनबैए।"

प्रशान्त मनक शान्तचित्त चेतैबते जीवन कक्काक विचारक रूप बदललैन। विचारक रूप बदैलते मन कलशलैन। कलैशते नब टुस्सा जकाँ मन टुस्कियेलैन। टुस्कियाइते जहिना गाम-घरक पानि धारा बनि धार बना गंगामे मिलि गंगासागरसँ मुँह मिलैए तहिना जीवन कक्काक विचारमे सेहो एलैन। एलैन ई जे सबहक तँ बुझले-गमल, देखले-सुनल अछि जे खाली जीवनेक पोताक संग परिवारमे नहि, आनो-आन अनेको परिवारमे अहिना होइत आबि रहल अछि। एक बाबाक नहि सैयो-हजारो बाबाक पोताक अन्त अहिना भेल अछि, आगूओ हेबे करत। तइले अनेरे मनकेँ विघ्न करैत बेधै छी। जेते समए बेधैत रहत ओते तँ जिनगियेक क्रिया ने ह्रास करत। मन ठमकलैन। ठमैकते जीवन काका बुदबुदेला-

"जेतबेटा औरुदा किए ने रोशनकेँ भेटल हौउ, मुदा छल तँ ओ बेदाग, तखन किए ओकर जिनगी एतबेटा भेल?"

मनक उठल प्रश्न जीवन कक्काक मनेमे घुरिया लगलैन। मुदा उत्तर नहि भेट उत्तेजित होइत संकल्पित भेला। नहि! बेलबा हेराएल कहाँ अछि ओ तँ आँखिक सोझहेमे अछि जे खाली बेलबे नहि, हजारो-लाखो बेला जाड़क खाधिक पानिमे खसि-खसि अन्त करबे करैए। मनमे अबिते दरबज्जापर आबि बैस रहला।

दरबज्जापर बैसल जीवन कक्काक मनमे उठलैन- रोशनकेँ पहिल 'वर्थ डे' दिन सभ कियो दीर्घजीवीक असिरवाद देलखिन, नीक भविसक शुभकामना सेहो देलखिन। मुदा रोशन अपन 'वर्थ डे' कहाँ देख पौलक..!

जीवन कक्काक मन-मियादि उनटए लगलैन, मनकेँ चारू भागसँ अशान्ति घेर लेलकैन। जीवन-मृत्यु आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। पछाइत जीवन-मृत्यु स्वयं एक प्रश्न बनि शान्त केलकैन।

◌

शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017

जानक मोल

बेरुका उखड़ाहा, करीब सबा तीन बजे रतन भाइक पुतोहुक मोबाइलमे घण्टी टनटनेलैन। पुतोहु उठौलखिन। उठैबते अवाज एलैन-

"के रतन भाय?"

पुतोहु जवाब देलखिन-

"नइ, हम हुनकर मझिली पुतोहु।"

"रतन भाय नइ छैथ? कनी हुनकासँ गप करा दिअ।"

मोबाइल नेने पुतोहुकेँ अबैत देख रतन भाइक मुहसँ निकललैन-

"जेते दुनियासँ खेलकट्टी कए छुट्टी लिअ चाहै छी तेते ई जिनगी रगड़ए चाहैए..!"

तैबीच पुतोहु मोबाइल हाथमे धड़ा देलकैन।

मोबाइल हाथमे अबिते रतन भाय बजला-

"अपने के बाजि रहल छी?"

मोबाइलमे कामनालालक उत्तर एलैन-

"अखने बिसैर गेलौं जे अवाजो नइ देख-परेख रहल छी!"

मोटा जकाँ रतन भाइक मनपर दाब पड़लैन जे एहेन उपराग

केतए-सँ आबि रहल अछि। अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

“भाय, चालिसे बर्खमे परिवारसँ अपन छुट्टी लइक विचार मनमे भेल, मुदा माइयो जीबै छेली आ दूटा छोट बच्चो छल, तँए किछु दिन जिनगीकेँ आरो रग्गड़ उठबैक छेलाएहे। मुदा आब तँ पचास टपि गेल छी, सोलहन्नी दुनियाँ छुटि गेल अछि, बिसरलौं कहाँ, दुनियाँक बोनमे या तँ अहीं केतौ हेरा गेल हएब वा हमहीं, हेरा गेल हएब। तइले मनमे कोनो रोख-राख नइ राखू। कोनो कि मनुख चरि-चकिया गाड़ी छी जे साले-साल नवीकरण करबै पड़तै। मनुख तँ मनुख छी, जखने बाट-घाटमे केतौ मुँह-मिलानी भेल आकि नवीकरण भाइये जाइए।”

रतन भाइक मुहसँ सभ बात सुनिते कामनालालक मन हलैस कऽ कलैश गेलैन जे एक गोरेक मुँह-मिलानी तँ जिनगीक उद्धार करैए आ हमरा तँ सहजे ओहन संगीक मुँह-मिलानी भऽ रहल अछि जे लंगोटिया संगी रहने पचास बर्खक पछातियो ओहिना ताना-उतार छैथ। विचारमे विचड़ैत कामनालालक मन आरो विचलित भेलैन। विचलित होइते बजला-

“रतन भाय, हम डाक्टर कामनालाल छी। अपन अन्दाज अछि जे कमसँ कम तीस बर्खक पछाइत दुनू भैयारीक गप-सप्प छी।”

ओना रतनलाल सेहो ठेकना कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे कौलेजक जिनगीक पछाइत भरिसक पहिल गप-सप्प छी। खाएर किछु छी तँ छी मुदा जखन जिज्ञासा जगलैन तँ बेजा की, अपना तँ जगले अछि। जँ सिनेही संगी जीवित जिनगीमे कहियो भेटै तँ ओ शुभ शुभेक्षु अछिए...।

जहिना पुरानो नमहर गाछ कलशने आरो बेसी सुन्दरो, सघनो आ ललिचगरो लगैत तहिना रतन भायकेँ भेलैन। बजला-

“कामना भाय, भलेँ केतबो दिनक पछाइत किए ने गप-सप्प

भऽ रहल अछि मुदा जीवनक जे जीवनपन अछि ओ तँ आबिये जाइए। अपन जिनगीक हाल-चाल की अछि से कहू।”

रतनलाल आ डाक्टर कामनालाल हाइ स्कूलक आठमामे जे संग-संग नाओं लिखौलैन ओ हाइ स्कूल बीतैत कौलेजक आइ.एस-सी. तक संगे रहला। आइ.एस-सी. केला पछाइत कामनालालक अपनो इच्छा आ पितोक इच्छा रहैन जे डाक्टरी पढ़ए, से भेबो कएल। ओना समाजक आन लोकक इच्छाक विपरीत इच्छा पिताक (लालसा लालक) रहैन। मुदा फलाफल एकरंगाहे छेलैन। माने ई जे समाजक किछु अंशक अर्थात् किछु लोकक एहेन धारणा बनि गेल अछि जे ‘डाक्टरी शिक्षा’ रूपैआ कमाइक नीक रस्ता छी। जइसँ अध्येताक महतमे घटबी एबे कएल अछि। घटबी ई आएल अछि जे कठिन मेहनत आ ज्ञान साधनाक कठिन मार्गपर चललासँ डाक्टरी ज्ञानक परापैत होइए, जे समाजक ओहन मनुखक निर्माण करैए जेकरामे ईश्वरीय शक्तिक परापैत होइ छै, तँए ईश्वरीय वृत्ति अपनेला पछातिये ने ऐश्वर्यक परापैत हएत। खाएर जे अछि, चाहे ओ कारखानाक आमद स्वरूप हौउ, आकि वेपारीक वेपारक स्वरूप, मुदा जे अछि से तँ ऐछे आ सबहक सोझहोमे अछि।

हाइये स्कूलसँ रतन भायमे किछु अपन विशिष्ट धारणा पनपलैन। पिता सोझमतिया लोक रहबे करथिन। ने कहियो पत्नीकेँ ऐ बिसवासे किछु कहलखिन जे ओ अपने परिवार-समाजक प्रति निष्ठावान छैथ, अपने निष्ठेसँ जे नीक बुझती से करैत चलती। तहिना बेटा–रतनो–केँ पढ़ै-लिखैक सम्बन्धमे कहियो किछु कहलखिन। मन मानिते रहैन जे अभिभावक रूपमे जे अपन दायित्व अछि तेतबे ने, मुदा पढ़त तँ अपना विचारे अपना जिनगी-ले। तँए केकरो जिनगीमे कियो टाँग किए अड़ौत। बेसीसँ बेसी एतबे ने जे कोनो उकडू जगह देखलापर किछु पुछत तँ जे जनै छी से कहबै। वा जँ उकडू काज दिस

बढ़ैत देखबै तँ ओकरा चेतेबै जे बौआ आगू खच्चा अछि जइमे पड़लासँ मनुखक खिचार होइए। तैठाम जे जेहेन रहत से तेहने ने खिचैड़-खिचैड़ खीरो बनत आ खिचड़ियो बनत। भलेँ दुनूमे एक्के रंग[6] वस्तु किए ने पड़ैत हौउ मुदा खीरमे एकमुँहरी रहने एकरूपता अछि जे खिच्चैड़मे नइ अछि। केतौ गुड़-खिच्चैड़ बनैए तँ केतौ गुँह-खिच्चैड़।

परिवार आ समाजकेँ अपन धरोहर बुझि रतन भाइक मनमे समाज अध्ययनक जिज्ञासा हाइये स्कूलसँ पनैप गेल छेलैन। जेकरा कुशल किसान जकाँ रतन भाय समए-समएपर ताम-कोर, कर-कमठौन करैत छकड़ैत-बनबैत सींचैत-पटबैत परिपक्क बनबैक दिशा पकड़लैन। ओना हाइये स्कूलसँ मनमे इच्छा जगि चुकल छेलैन जे एग्रीकल्चर ग्रेजुएट बनब।

परिवारक धरोहर जहिना सभ परिवारमे अछि तहिना रतन भाइक परिवारमे सेहो छैन्हे। जइमे हाइ स्कूल टपला पछाइत धीरे-धीरे मोनि बना सोन्हिया गेल छला।

सोन्हिया ई गेल छला जे जहिना परिवार वा समाजमे परिवारिक वा समाजिक बेकती पाछूसँ–परम्परासँ–अबैत जीवकोपार्जनक संग, पाबैन-तिहार, यज्ञ-जाप, कला-संस्कृति इत्यादिकेँ लोक अंगीकार काइए लैत अछि तहिना रतन भायकेँ सेहो भेलैन। दस बीघा जमीनबला परिवारमे जन्म भेल छेलैन, खेती-पथारी करैक एहेन ढंग मनमे समा गेलैन जे बी.एस-सी.मे जखन पढ़िते छला तखने मनमे जीवकोपार्जनक एहेन बिसवास जगि गेलैन जे पढ़ला पछातियो माने बी.एस-सी.क क्लास केला पछातियो परीक्षा दइक विचारे मनसँ हटि गेलैन। जइसँ बी.एस-सी. नइ कए सकला। ओना अपन मन बी.एस-सी.क योग्यताक बिसवास दइते छैन मुदा आन-आन लोक आइ.एस-

[6] गिनतीमे

सीए. बुझै छैन।

ओना परिवारमे रतन भाय तेना सन्हिया कऽ अपनाकेँ क्रियाशील बना लेलैन जे पिता–मणिकान्त–क मन मानि गेलैन जे जहिना बाप-दादाक अमलदारीए-सँ परिवार हलसैत-कलशैत आबि रहल अछि तहिना आगूओ चलैत रहत।

अपन हाल-चाल सुनि डॉ. कामनालाल बजला-

“भाय, मोबाइलसँ जेतेकाल गप-सप्प करब ओते बेसी खरचो हएत, तइसँ नीक जे एक दिन एकठाम बैस दुनू भैयारी अपन-अपन बीचला जिनगीकेँ जे कौलेजक पछाइत छुटि गेल अछि, सामंजस करैत पैछला जिनगी[7] औझुका जिनगीमे[8] जोड़ि एकबट्ट करैत पुन: एकरसमे समेट आगू बढ़ी।”

डॉ. कामनालालक विचार रतन भायकेँ सेहो नीक लगलैन। नीक लगिते हुँहकारी भरैत बजला-

“बढ़ियाँ विचार अछि। एकटा समए निर्धारित किए ने कए ली।”

रतन भाइक सहमतिक विचार सुनि डॉ. कामनालाल बजला-

“गप-सप्प करैले पहिने जगह निर्धारित करब तखन समैयक निर्धारण करब।”

डॉ. कामनालालक विचार सुनि रतन भाय सूहकारैत बजला-

“दरबज्जापर अबैत अपेछितकेँ के नहि आबए दिअ चाहत, तँए नीक हएत जे हमरे ऐठाम आउ।”

रतन भाइक विचारसँ कामनालालक मन दलमला गेलैन।

[7] विद्याथी जीवन

[8] अखुनका जिनगीमे

दलमला ई गेलैन जे जखन लंगोटिया संगी ऐठाम जाएब तखन पत्नी थोड़े मानती। ओहो तँ जेबे करती। तहूमे जखन बुझती जे बिआहमे रतन भाय लोकनियाँक रूपमे बरियाती रहैथ तखन तँ जाइले आरो छाल छोड़ा देती। ओना, कामनालालक मनमे ईहो शंका होइते रहैन जे लंगोटिया संगी होइतो रतन अपन जिनगीसँ तुष्टि छैथ जखन कि अपने नइ छी! अखनो बुझि पड़िते अछि जे भरिसक दुनियाँक जालमे तेना ओझरा गेल छी, जे छुटि कऽ छुट्टा बनब कठिन अछि।

डॉ. कामनालाल बजला-

"भाय, दुनू भैयारी केतौ एकान्तमे बैस गप-सप्प करितौं, जेतए ने परिवारक कियो आ ने समाजेक कियो रहैत।"

'एकान्त जगह' सुनि रतन भाय बजला-

"एकान्त जगह कि केतौ हेराएल अछि, भेल तँ तेसर कियो ओइठाम नइ रहए।"

'तेसर कियो नइ रहए' सुनि डॉ. कामनालालक मन धड़ैक उठलैन। धड़ैक ई उठलैन जे रतन ने बालपनक संगी छी जे बीचक समैयक सम्बन्ध कमने ओहिना अछि, मुदा अपन जिनगी तँ ओहन रोगसँ रोगाइए गेल अछि जे कोनो हितो-अपेछित ऐठाम जँ टहलैयो-बुलैक खियालसँ जाइ छी तँ पत्नियो संग भऽ जाइत छैथ। तैठाम जँ पुरान संगी ऐठाम जाएब आ हुनका मनाही करबैन जे 'नइ जाउ' से ओ थोड़े मानती। तहूमे हमरे पेब ने ओहो डाक्टरनी बनि प्रणाम-पाती पबै छैथ...।

असमंजसमे पड़ल डॉ. कामनालाल बजला-

"रतन भाय, नीक हएत जे अहीठाम माने हमरे ऐठाम आबी।"

'हमरे ऐठाम' सुनि रतन भाय स्वीकार करैत बजला-

"जेहने हम छी तेहने ने अहूँ छी। जखन दुनू गोरे एकेरंग भेलौं तखन जगहेक कोन मोल अछि। परसू बेरुपहर जरूर आएब।"

रतन भाय आ डॉ. कामनालालक गाम तीन कोस हटल अछि। जखन दुनू गोरे विद्यार्थी अवस्थामे छला तखन रस्ता-पेरा नीक नै रहितो तेते आवाजाही छेलैन जे दुनू गामक दूरी मनसँ मेटा गेल छेलैन। साइकिल पकैड़ कखनो एक-दोसर आबि जाइ छला। मुदा विद्यार्थी जीवनक पछाइत आएब-जाएब तेना बन्न भऽ गेलैन जे तीस बर्खक पछाइत भेँट भऽ रहलैन अछि। ओना, दुनू गामक बीचक जे रस्ता अछि ओ पहिने कच्ची छल जइसँ आन समैमे तँ चलैबला रहितो छल, मुदा दुनू गाममे गाए-महींस रहने बरसातमे चलै-जोकर नइ रहैत छल। मुदा से आब नइ अछि। पक्की रहऽ आकि कच्ची, सड़क चलनिहारक लेल दुनू रस्ते छी। जेहेन खगता तेहेन आबाजाही होइते अछि।

आसीन मास बीत गेल। काल्हि पूर्णिमा छल आ आइ कातिकक पहिल दिन छी। बर्खाक संभावना सेहो समाप्त भऽ गेल अछि। ओना भादवक बर्खा जे पानिक बून रूपमे झहरल, जइसँ गामेमे दहार भऽ गेल। माने बेसी बर्खा भेने बर्खोक पानि आ धारोक पानि एने इलाकेमे दहार भऽ गेल, जइसँ रतनो भाइक गामक धान आ डॉ. कामनोलालक गामक धान दहा गेल। मुदा ओ भेल भादोमे।

पछाइत जहिना बर्खा कमि गेल तहिना धारक बाढ़ियो घटि गेल, जइसँ आसीन बीतैत-बीतैत धानक चास तँ चलि गेल मुदा धास-फूसक बास बाधसँ लऽ कऽ बास धरि तेना उगि कऽ हरिया गेल जे दहाएल गाम जकाँ बुझिये ने पड़ि रहल अछि। सौंसे गामे हरियर चास जकाँ हरियरी पसैर गेल अछि, जइसँ रचनाकारक संग संगीतकारोक मन हरियरीसँ भरले छैन, भलें ओ अन्नक हरियरी हौउ आकि घासे-

फूसक..!

ठीक तीन बजे डॉ. कामनालाल रतन भाइक आगवानी लेल अपन बैसक-खानामे आबि तैयार भऽ गेला। ओना पत्नियों लगेमे रहथिन मुदा रतन भायकेँ रस्तापर अबैत देख डॉ. कामनालाल कहलकैन-

"देखू, शहरसँ गाम आएल छी, तँए गामक चालि छोड़ि अपना चालिमे केतौ चूक ने हुअए।"

पतिक बात सुनि रोहिणी मने-मन सिकुड़ली। सिकुड़ली ई जे गाममे रहि गामक चालि केना छोड़ब! मुदा रतन भायकेँ सेहो देख नेने छेली। अभ्यागत दरबज्जापर औता आ अपने दुनू बेकती फूसि-फासिक झगड़ा बेसाहने रहब सेहो केहेन हएत। अपन दोख कम करै दुआरे रोहिणी बजली-

"इशारोमे किछु कहि देब तखन ने..?"

डॉ. कामनालाल बजला-

"गमैया ढाठी अछि जे एकबेर साँझ एकबेर भोर लोक चाह पीबै छैथ, से नइ करब, लंगोटिया संगी रतन छिआ, तँए क्षणे-क्षण[9] चाह जुमबैत रहब।"

'हल्लुक भार' सुनिते रोहिणियो आ डॉ. कामनालाल सेहो उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैथ।

दुनू बेकतीकेँ ठाढ़ भेल देख रतन भाय बजला-

"संगी, पहिलुके कनियाँ छेथुन की हाल-सालक?"

डॉ. कामनालाल बजला-

"बियाही-ए छैथ किने।"

[9] माने चाह पीबैक इच्छाक मन कि क्षण

रतन भायकेँ सुतरलैन, बजला-

"दोसरो-तेसरो कनियाँकेँ तँ लोक बियाहिये कऽ अनै छैथ आकि रस्ता-पेरापर सँ केतौ उठा लइ छैथ!"

अपनाकेँ सम्हारैत डॉ. कामनालाल बजला-

"संगी, अखने बिसैर गेलौं। वएह कनियाँ छैथ जइमे अहूँ बरियाती गेल रही।"

रोहिणी भण्डार कोठरी दिस बढ़ली आ डॉ. कामनालालक संग रतन भाय बैसारमे बैसैक विचार केलैन। ओना रतन भाइक इच्छा रहैन जे दुनू संगी सोझा-सोझी बैसी, मुदा डॉ. कामनालालक अभ्यंतरमे की रहैन से तँ वएह जनता मुदा सोझा-सोझी नहि बैस बगलेमे बैसला।

तैबीच रोहिणी थर्मशसँ चाह दुनू कपमे ढारि पहुँच गेली। बैसला पछातिये चाह देख रतन भाय बजला-

"संगी, भारियो देह रहने संगिनी बड़ पनिगर छैथ!"

रतन भाइक विचारमे बोहिया डॉ. कामनालाल बजला-

"से कि पत्नी कोनो रोगसँ रोगाएल फुलल छैथ ओ तँ निरोगसँ भरल-पूरल छैथ।"

ओना रोहिणी सेहो अपन चुटकीक जवाब चुट्टासँ पकैड़ दिअ चाहै छेली, मुदा रतन भाइक उजड़ाएल केश-मोछ आ दाढ़ी देख सहैम गेली। मनो कहलकैन जे एक तँ नारी जाति छी दोसर कोनो नरक नाड़ी पकड़ब जल्दवाजीमे सम्भव नहि अछि तँए हुनकर गति-विधि देखला पछातिये माने नाड़ीक गति पकड़ला बादे ठीक-ठीक गणना भऽ सकैए, तँए चुपे रहब नीक।

तैबीच रतन भाय डॉ. कामनालालसँ पुछि देने छेलखिन-

“करीब-करीब बीस-तीस बर्खक पछाइत दुनू संगीकेँ मुँह-मिलानी भऽ रहल अछि।”

डायरी मेनटेन केनिहार डॉ. कामनालाल, तहूमे रतन भायकेँ अबैसँ पहिनहि डायरी देख नेने छला, धाँइ-दे बजला-

“तीस बर्ख सात महिना सात दिन भेल अछि।”

‘निश्तुकी दिन’ सुनि रतन भाय क्षुब्ध भऽ गेला। क्षुब्ध ई भेला जे केना देखले दिन तीस बर्ख बीत गेल। अस्पतालमे मातो-पिताक संग एक दिन वा एक राति काटब असाध भऽ जाइए।

..मसुआइत मने रतन भाय बजला-

“संगी, तीस बर्खक दिन-रातिक गप-सप्प करब अछि। मात्र एक घन्टा रहब अछि। तँए इतिहासक क्रम संक्षेपमे हुअए।”

‘संक्षेप’ सुनिते डॉ. कामनालाल बजला-

“संगी, भरि दिन दवाइक नाओं लिखने कि ग्रामरक प्रेसी बिसैर गेल छी, जहिना-जहिना जेतबे-तेतबे अहाँ पुछब तहिना-तहिना तेतबे-तेतबे उतारा हमहूँ देब।”

रतन भाय-

“कौलेज तक तँ विद्यार्थीए रहलौं तँए ओ बालपनमे कटि गेल, पछाइत गृहस्ताश्रम कहियौ आकि काम-काजी जिनगी बँचि गेल से, तैठामसँ गप-सप्प उठाउ।”

डॉ. कामनालाल-

“संगी, की कहब,बुधिये फेल कऽ गेल!”

रतन भाय-

“लोक बिनु बुधिये परीक्षामे फेल करैए आ अहाँ अछैते बुधिये फेल कऽ गेलौं?”

रतन भाइक जिज्ञासासँ डॉ. कामनालालक मनक भारपन बढ़लैन। भारी होइत बजला-

“संगी, बड़ जतन आ मेहनतसँ पढ़लौं जे बड़का डाक्टर बनि ओहन क्रियमान जिनगी बनाएब जइमे सभ दिन सूर्यक उदैयो हएत आ अस्तो हएत, मुदा से भऽ गेल बुढ़िया फूसि!”

डॉ. कामनालालक विचार रतन भाय नीक जकाँ बुझबे ने केलैन। मुदा मनमे ईहो होनि जे केतबो लगक संगी किए ने होथि, मुदा संगपनाक क्रिया तँ एक नहि रहल तँए एहनो प्रश्न तँ भाइये सकैए, तँए प्रश्न तेना कऽ राखी जे ओइमे ने छिलका रहै आ ने सोहले रहइ। बजला-

“से की संगी?”

डॉ. कामनालाल रतन भाइक प्रश्नक रस पीब रस भरल रसिक जकाँ बजला-

“संगी, पढ़ला पछाइत मनमे उठल जे ताधैर गामेमे रहब अछि जाधैर केतौ नोकरी नइ भऽ जाइए। संयोगो बैसल जे अपनो काजक लौल जगले रहए आ भगवानोक दया भेल जे गाममे खूब आम-जामुन फड़ल।”

डॉ. कामनालालक मुहेँ ‘आम-जामुन’ सुनि रतन भाइक मन विहुसि गेलैन। जेना अद्राक मालदह आ इलाहावादी गुल-जामुन मनमे आबि गेल होनि तहिना। मुदा बीचमे किछु बाजब उचित नहि बुझि बाजब बन्ने केने रहला। मुदा अपन बजैक सुन्दर छटा बुझि आरो छँटियबैत डॉ. कामनालाल बजला-

“तेते ने आमो आ जामुनो फड़ल जे जामुन तँ पकि-पकि कऽ गाछक निच्चेमे खसि-खसि आँठीक संग परान तियागलक आ आमो तेहेन भऽ गेल जे ओहीबेर सँ किसान जन-हरवाहकेँ मरूआ रोटीक

संग अमौट खेनाइ सिखौलैन।”

बिच्चेमे रतन भाय टोनलैन-

“दुनूक रंगो-रूप एक्के मिलैए।”

बजैक पराग्राफ बदलैत डॉ. कामनालाल बजला-

“संगी, नव डाक्टर बनले रही, पाइयो कमाइक आ नामो-जशक लिलसा तँ रहबे करए। भगवान दिन फेरलैन, जहिना आम-जामुन फड़ल तहिना लोक गाछपर सँ खसबो कएल, जइसँ टुट-फाटक पलश्तरक काज खूब बढ़ल। बुझले अछि जे अपना इलाकामे केते गाछी-कलम अछि, तहूमे हमरा गाममे तँ आरो बेसी अछिए। खूब कमेबो केलौं आ इलाकामे नामो-जश पसरल।”

रतन भाय-

“की नाम-जश?”

मुस्की मारैत डॉ. कामनालाल बजला-

“जहिना मुकुन्द बाबूकेँ बतहपनीक विशेषज्ञता प्राप्त केने लोक ‘बतहा डाक्टर’ आ सुधीर बाबूकेँ ‘सँप-कटियाक सँपकट्टा डाक्टर’ कहै छैन तहिना लोक हमरो ‘हड़टुट्टा डाक्टर’ कहए लागल।”

डॉ. कामनालाल हास्य-व्यंग्य शैलीमे बाजिये रहल छला कि रतन भाय देवालपर टाँगल घड़ीपर नजैर देलैन, जे कामनालाल सेहो देखलैन। अपन अभ्यंतरक जे विचार रतन भायकेँ कहब छेलैन तेकरा तर पड़ैत देख, विचारकेँ मोड़ए चाहलैन। तही बीच रोहिणी चाह-पान नेने पहुँच गेली। चाहक कप हाथसँ पकड़ैत रतन भाय बजला-

“संगी, जखन दुनू गोरे लंगोटिया संगी छी तखन जेते अहाँक जिनगीमे रंग-बिरंगक घटना सभ घटल तहिना हमरो घटल आ आनो-आनोकेँ घटिते छैन। तँए नीक हएत जे दुनू गोरे अपन-अपन विचार

करैत चली। मुदा एक तँ पहिल दिन रहने सभ गपो करब उचित नहि, दोसर ओते समैयो ने अखन अछि जे कोनो घटनाकेँ बुझैत-गमैत विचारैत चली। दोसर-तेसर दिन बुझल जाएत।”

रतन भाइक विचार सुनि डॉ. कामनालाल नमहर साँस छोड़लैन। नमहर साँस छुटैक कारण भेलैन जे जखन बजैक क्रममे अगुआएल छी तखन पहिने हमरे विचारक ने अन्त हएत, पछाइत ने रतन भाइक विचार सुनब...।

अपन मनमे पानि चढ़ा धड़फड़ाइत डॉ. कामनालाल बजला-

“संगी, बैशाख-जेठ-अखाढ़ मासक समए रहै, तीन मास गाममे रहला पछाइत नोकरी भेल। ब्लौकक डाक्टर बनि गेलौं।”

जहिना कोनो चीज प्राप्त केला पछाइत बध-बधाइ देल जाइए तहिना रतन भाय ‘ब्लौकक डाक्टर’ सुनिते बजला-

“बाह! बहुत बढ़ियाँ..!”

अपना जनैत रतन भाय प्रोत्साहनक विचारसँ बाजल छला मुदा डॉ. कामनालालकेँ कठाइन लगलैन। बजला-

“वएह नोकरी मारियो खुएलक आ झुट्ठो बनौलक।”

रतन भाय-

“से की?”

डॉ. कामनालाल उत्तर दैत बजला-

“वएह चूक भेल जे जिनगीमे चुकलौं। ओही चुक्तीक पुरती आब...।”

डॉ. कामनालालक विचार रतन भाय नीक जकाँ नहि बुझि बजला-

“से की?”

आशा हारि डॉ. कामनालाल कहलखिन-

“संगी, पैछला जिनगीकें गीजम-गीज आब कि करब, सोझे बुझि लिअ जे खूब मारि खेलौं, एक पनरहिया बिछान धेने रहलौं, पछाइत तीस बर्खक नौकरीक पछाइत भोलेन्ट्री रिटायरमेन्ट लऽ गाम आबि गेलौं।”

बीचमे रतन भाय बजला-

“आब गामेमे रहब?”

अपसोच करैत डॉ. कामनालाल-

“संगी, अहाँ लंगोटिया संगी छी तँए कहैमे कनियोँ लाज-संकोच नहि... ।”

तइ बिच्चेमे रोहिणी जलखै नेने पहुँचली। पत्नीकें देखते डॉ. कामनालाल अपन बोल अधडरेरेपर रोकि चुप भऽ गेला। मुदा रोहिणी नीक जकाँ सुनैक विचारसँ बिच्चेमे ठाढ़ भऽ गेली।

दुनू परानियोंपर रतन भाय नजरियो उठा-उठा दैथ आ मने-मन गुड़ो-चाउर फाँकए लगला।

अन्तो-अन्त डॉ. कामनालाल मुँह खोललैन-

“संगी, जानक कोनो मोल नहि रहल। जखन जाने नहि तँ जहान की?”

रतन भाय कुरसीपर सँ उठैत बजला-

“संगी, जिनगीमे एको क्षणक मोल होइए, तँए अखन एते निराश नइ हेबा चाही।”

अपसोच करैत डॉ. कामनालाल बजला-

“गामो-समाज कहाँ चाहि रहला अछि जे समाजमे सभ जीबै!”

एक डेग आगू बढ़ैत रतन भाय बजला-

“संगी, केकरो असिरवादपर कियो गामे-समाज आकि देशे-दुनियाँमे जीबैए, ओ तँ अपन बुझि लोककें अपने जीबैक बाट पकैड़ जीबए पड़त किने?”

ओना, रतन भाइक विचार डॉ. कामनालाल नीक नहाँति नइ बुझि पेला मुदा ‘अपन बुझि’ सुनि मन तरसलैन। तरैसते बजला-

“संगी, औझुका बैसार रीब-रीबेमे चलि गेल। जे मनमे विचारने रही से तँ नहियेँ भेल, मुदा एते तँ भाइये गेल जे विचार-विमर्श करैक रस्ता तँ खुलिये गेल।”

डॉ. कामनालालक विचार सुनि रतन भायकें ऐगला सम्बन्धक सूत्र भेटलैन। बजला-

“संगे-संग रहने लोक संगी पबैए आ मने-मन विचारने लोक विचारवान बनैए, तइले अनेरे किए लोक निराश हएत।”

‘निराश’ सुनि डॉ. कामनालाल बजला-

“से तँ आशा अछिए।”

◌

शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017

गामक कटान

ओना ‘गाम’ शब्दक अर्थ भौगोलिक नजरिये अछि। जइमे खेत-पथार बान्ह-सड़क, पोखैर झाँखैर, धार-धुर, गाछ-बिरीछ इत्यादि अछि। मुदा ऐठाम–जे चलनियोंमे अछि आ विचारोमे–गामक अर्थ गामवासी वा समाजसँ अछि। कोनो गाममे नमहर भोज भेने बेसी आने गामक पंच[10] रहै छैथ जेकर गणना गामेक कोटिमे होइए।

भोरक पँचबजिया बस पकैड़ मधुबनी विदा भेलौं। सबेरगरे ऐ दुआरे विदा भेलौं जे कोर्टमे खाली हाजरीए-टा नइ देब छल जे अबेरो गेलासँ सम्हैर जाइत, बहसपर केस चढ़ल अछि तँए आन-आन आँफिसक नक़लो लेनाइ आ ओकीलो साहैबसँ राय-विचार केनाइ छल जे सबेर-सकाल नहि गेने काज नहि सम्हैरत, तँए छअ बजैत-बजैत मधुबनी पहुँचैक छल।

काजक संजोग नीक बनल, जहिना ओकील साहैब ब्रशे करैकाल भेट गेला तहिना मुंशियोजी बजारसँ तरकारी कीनि घुमल रहैथ। सभ काजक गप तीनू गोरेक बीच भऽ गेल। सभ अपन-अपन काज दिस झुकि गेलौं। तीन बजैत-बजैत सभ काज निपैट गेल।

ओना, समए दुआरे नहा नहियेँ भेल मुदा सबेर-सकाल होटलमे

[10] भोज खेनिहार

खा जरूर नेने छेलौं। बिनु नहेनौं बैशाख-जेठ जकाँ देहो आ मनो भरियाएल नहियेँ बुझि पड़ै छल, किएक तँ पूस मास छी किने। पूसे मास ने ओ मास छी जइमे एको दिन–तिलासकराँतिक दिन–नहेने मासो दिनक मिनहा भाइये जाइए।

काज निपटला पछाइत मनमे भेल जे ओकील साहैबसँ भेँट करैत निकलिये जाएब नीक हएत। एक तँ जाड़क मास छी, दोसर भोरक जाड़मे घरसँ निकलल छेलौं, जँ सौंझुको जाड़ एतै पकड़ा लेब सेहो नीक नहियेँ हएत। अनेरे जे गपो-सप्पमे आ घुमैयो-फिड़ैमे समए खटिया लेब आ बसमे सिरसिराइत रस्ता काटब तइसँ नीक ने रौद-मुहेँ गाम पहुँच जाएब। रौतुका घूरोक ओरियान करैक समए जँ भेट जाएत तैयो अधहा दिन नीक जकाँ कटैक ओरियान काइए लेब। ऐठाम दिनक माने भेल चौबीस घन्टा, दिन-राति मिला कऽ। दिनेक हिसाबमे रातियो अछि, जँ से नइ अछि तँ रेलबे किए बारह बजे अधरतियेसँ दिनक मिनहा करए लगैए आ ऋृषि-मुनि किए दिनक पहिल पहर तीन बजे भोरसँ मिनहा करै छैथ। ओना, दस बजेक चढ़न्त राति हौउ आकि दू बजे भोरक राति हौउ, जँ सन्तानक उत्पत्ति होइए तँ ओ रातिक मिनहाकें काटि दिनेक हिसाब पकैड़ लइए।

लहसैत दिने गामक सीमानपर पहुँच गेलौं। पएरे बस पकड़ैले तीन किलोमीटर जाइते छी, तँए पएरे घुमलो रही। पाछूसँ लबड़दौर भाय सेहो साइकिलसँ अबैत सीमानक कातेमे पकैड़ लेलैन। देखते पाछूए-सँ टोकैत बजला-

“राधेश्याम, केतौ बाहरसँ अबै छह?”

पाछूक टोक छल, चलब रोकि ठाढ़ भेलौं। ताबे लबड़दौरो भाय दहिना भाग दिस साइकिल रोकलैन, दुनू गोरे गप-सप्प करैत गाम दिस बढ़लौं।

ओना, लबड़दौर भायकेँ भीतरसँ चिन्है छिऐन जे गामक कुटनी करैमे दु:शासने सन महारथ छैथ। एक दिन दुनू गोरेक बीच तेहेन मुहाँ-मुहीं भेल जे ओइ दिनसँ आगूसँ टोकब परहेज कऽ नेने छी, मुदा लबड़दौर भाय तँ से नहि छैथ। हुनका जिनगीक खेल बुझू कि गमैया राजनीति आकि गामक कटान करैबला महानायक, से तँ छथिए। खाएर जे छैथ, मुदा जखन आगू भऽ टोकि देलैन तखन चुपो तँ नहियेँ रहल जा सकैए। बजलौं-

“हँ, भोरे मधुबनी गेल छेलौं।”

हमर बात सुनि लबड़दौर भाय पाशा बदलैत बजला-

“जीतू तँ गाममे आगि लगा देलक!”

‘जीतू काका’क नाओं सुनिते हदास उड़ि गेल। उड़ि ई गेल जे केहेन विसाइन समाचार कहि रहला अछि। मुदा मनकेँ थीर केलौं। थीर ई केलौं जे कोनो समस्या वा कोनो घटनाकेँ पहिल भेल शीर्षक रूपमे सुनब आ दोसर भेल व्याख्या रूपमे बुझब। अपनो विचार यएह भेल जे शीर्षक रूपमे लबड़दौर भाइक विचार मनमे रखि, केवल सुनब आ हुँहकारीसँ इशारा देब नीक हएत। फेर भेल जे हुँहकारियो आ इशारो तँ बेदाग नहियेँ अछि। इशारोपर जघन्य-सँ-जघन्य घटना होइते रहै छइ। तहिना हुँहकारियोपर तँ केतए-सँ-केतए लोक भाँसियो जाइए आ हेलबो तँ करिते अछि।

आगू-पाछू होइत मन बीचमे पहुँचल। बीचमे पहुँचते उठल जे जँ लबड़दौर भाइक विचारमे ‘हुँहकारी’ भरब तँ बाल-बोध जकाँ चौक-चौराहापर बेचि पान खा लेता, तइसँ नीक हएत जे किछु बजबे ने करब। ओहो बुझता जे नीपल पाटी बुझू कि सिलेट आकि सादा कागज, अंकित होइतो अंकित ताबे तक नहि बनैए जाबे तक ओइपर रोशनाइ-कलमसँ आकि पथलखरीसँ लिखल नइ जाइए।

मुँह उठा लबड़दौर भाइक मुँहपर देइते चिड़ै-चुनमुनीक लोल जकाँ मिलानी तँ भाइये गेल। मिलानी होइते लबड़दौर भाय बकए लगला। की बजला की नहि बजला से मोनो ने अछि। चुपचाप सुनैत रहलौं। जहिना मइटुग्गर बच्चा दोसर बच्चाक संग अपने भाए जकाँ खुशीसँ खुशिया-खुशिया हँसैत-कनैत-खेलैत रहैए तहिना मने-मन अपनो हुअए। मुदा आगूमे पहाड़ जकाँ प्रश्न तँ ठाढ़े छल जे गामक समस्या छी, तँए जाबे अपनाकेँ थितगर नहि बना लेब ताबे किछु बाजब कम-बेसी भाइये जाएत।

परती खेत पेब जहिना सुढ़िगर कोदरवाह मन-माफित खेत तमैए, कखनो मनमे ई नइ होइ छै जे काजक कमी अछि तहिना लबड़दौर भायकेँ भेलैन। धाराप्रवाह मार्क्सवाद, गाँधीवादसँ लऽ कऽ दुनियाँक जेते ‘वाद’ अछि ओ सभटा पाँचे मिनटमे पढ़ा देलैन।

घरसँ कनी पाछूए रही कि दुनू गोरेक आँगनक रस्ता फुट भऽ गेल। लबड़दौर भाइक जेते सुनल बात छल सभकेँ, सुतैकाल जहिना लोक ओछाइन-बिछाइन झाड़ैए तहिना झाड़ए लगलौं, तखने आँगनसँ पत्नी देख लेली।

आँगनसँ निकैल पत्नी कनियेँ आगू बढ़ली कि हुनको चेहरापर अपन नजैर पड़ल। देखते मन विसाइन-विसाइन हुअ लगल। जेठ मासक रस्तापर उड़ल गरदा-बाउल जकाँ हकासल-पियासल पत्नी बुझि पड़ली। मुदा कि जानि किछु बाजि नै रहल छेली से तँ ओ जानैथ, मुदा अपना बुझि पड़ल जे कोनो तेहेन चोटक दर्द छैन जे बोलती बन्न केने छैन।

अपन रूपकेँ दैनंदिनक जिनगीमे पीअबैत हाथक बैग पत्नीकेँ धड़बैत किछु बजलौं नहि, तेकर कारण छल जे जखने गामक हाल-चाल पुछबैन तखने विचारक बखारीक मुँह खुलि जेतैन, अनधुन

बाजए लगती। तँए, तइसँ नीक जे जाबे अपनो मन असथिर हएत ताबे हुनको बहला-फुसला राखबे नीक...। बजलौं-

“एक गिलास पानियोँ पीआउ आ गामक हालो-चाल कहू।”

ओना, पत्नियोँ एते पतिपाना रखबे केली जे आन स्त्रीगण जकाँ पहिने अपन हकिमानी नइ देखा पानि आनए लगले बढ़ि गेली।

पानिक गिलास हाथमे पकड़बैत ताधैर पत्नी चुप रहली जाधैर आधा गिलास पानि कण्ठसँ निच्चाँ नइ उतैर गेल। ओना, हुनको मन अपन विचार कहैले पेटमे औंढ़ मारैत रहैन, मुदा तेकरा जहिना कियो कोढ़ परक दर्दकेँ हाथसँ ससारबो करैत आ बाकुटसँ पकैड़ असथिरो करैत तहिना बुझि पड़ैत रहए।

तैबीच गिलासक पेनियाएल पानि देख पत्नी दिस आँखि उठेलौं कि पत्नीक आँखिसँ नोरक टघार टघरैत देखलयैन। हाँइ-हाँइ कऽ गिलासक पानि पीब मनकेँ थीर केलौं। ओना, मनमे लबड़दौर भाइक बात ठहैकते रहए, मुदा तेकरा दाबि-दाबि पेटमे ठेलैत पत्नीक नोरक टघार दिस तकैत पुछलयैन-

“आँखिमे किछु भेल अछि की?”

जहिना गजेरी गाँजा पीब निशाँएल धुआँकेँ मुँहमे ताबे तक घोंटैत रहैए जाबे तक ओकर रस भेटैत रहै छै तहिना विचारकेँ घोंटैत-घाँटैत पत्नी मुँह खोलली-

“जीतू कक्काक..!”

ओना, जीतू कक्काक नाओं लबड़दौर भाइक मुहेँ सुनि नेने छेलौं, मुदा पत्नीक मुँहक रूखि देख बुझि पड़ल जे भादवक ओ अन्हार मनमे पसैर गेल छैन, जइमे टप-टप अन्हारक संग टप-टप बरखो होइए आ लाल टप-टप ठनको बिजलोकाक इजोतमे खसैले टप-टप करैए। ने पएरे धोने रही आ ने चाहे पीने रही आ ने देहक कोनो कपड़े उतारने

रही, मन औनाए लगल।

पुछलयैन-

“एना किए चाउरक मुड़ीकट्टा तम्मा जकाँ बजलौं?”

जहिना अपन बेथा-कथाकेँ कियो कानि-कानि दोसरकेँ कहै छै आ जखन ओइ बेथासँ बेथित भऽ सुननिहारोक मनकेँ कननमुँह देख बेथाक सन्तरण स्वत: हुअ लगै छै जइसँ बेथाक पीड़ा कमए लगै छै तहिना भरिसक पत्नियोंकेँ भेलैन। बजली-

“जीतू कक्काक परिवार आइ मेटा जइतैन!”

बजैत-बजैत पत्नी बताहि जकाँ बड़बड़ए लगली।

पत्नीक बड़बड़ाइत बोल सुनि मन भड़भड़ा गेल। मनकेँ भड़भड़ाइते बजलौं-

“जीतू कक्काक परिवारमे कोनो तेहेन अनहोनी नइ ने भेलैन जइसँ से..?”

अधहेपर सँ पत्नी बोल लोकैत बजली-

“आइ धर्मक असल परीक्षा भेल। जँ मिसियो भरि जीतू कक्काक मनमे अधरम रहितैन तँ जरूर किछु अनहोनी भाइये जाइत।”

पत्नीक विचार सुनिते मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेल। उड़ी-बीड़ी ई लगल जे कखन जीतू कक्काक मुहोँ देखी आ बोलो सुनी।

जीतू काका ऐठाम जाइले विदा होइत बजलौं-

“पहिने जीतू काकासँ भेँट करब अछि, पछाइत बुझल जाएत।”

विदा होइते पएर जेना दौड़ए चाहए, पत्नी सेहो पाछूसँ रस्ता देखैत रहली। अखन तक कोनो एहेन स्पष्ट विचार कानमे आएले ने छल जे मन थीर भऽ विचार करैत। हरिणक बच्चा जकाँ मन चौचंग भाइये गेल छल।

सूर्यास्त भऽ गेल छल मुदा दिनुका सभ सिरखार ओहिना छल जेना सूर्यास्त होइतकाल रहैए।

दरबज्जाक चौकीपर बैसल जीतू कक्काक मुँहक रोहानी ओहने हरियर बुझि पड़ल जेना लड़ाइ जीतला पछाइत लड़निहारकेँ होइए। मुदा अन्हार घर साँपे-साँप जहिना बुझि पड़ैत तहिना अपनो मन जीतू कक्काक मुँहक रोहानी, पत्नीक मुँहक रोहैण आ लबड़दौर भाइक मुँहक लाड़ैनक बीच सकपकाइ छल। संजोग नीक बनल, अपने भरि दिन गाममे नइ रही, तहूमे पहिनेसँ किछु बुझलो ने छल, आ ने जीतूए काका किछु कहने छला। कौल्हकियो साँझमे दुनू गोरे केतेक काल धरि दुनियाँ-दारीक गप-सप्प केनहि छेलौं। जँ कनियों भनक लागल रहैत तखन ने कनियोँ दोखी होइतौं, से तँ नहि भेल। मन जेना सक्कत हुअ लगल। बजलौं-

“काका, भरि दिन गाममे नइ छेलौं, कनियेँ पहिने मधुबनीसँ एलौं हेन, अबिते-अबिते पत्नी कहलैन। सुनिते दौड़ल एलौं, तँए जाबे सभ बात नइ बुझब ताबे मन थीर नइ हएत।”

ओना, हमर बात सुनि जीतूओ काका मने-मन विचार करए लगला जे घटना तँ हमरो जानल नइ छल जे राधेश्यामोकेँ जनैबतिऐ। से तँ अचानक भेल।

जीतू काका बजला-

“राधेश्याम, जे होइए ओ नीके होइए। पहिने चाह पीबह पछाइत सभ बात असथिरसँ करब।”

जीतू कक्काक विचार सुनि मन कलशल। कलैशते उठल जे पहिने बिना किछु पुछने जीतूए काकाकेँ बाजए दिऐन। किएक तँ ठेंसल रस्ता जहिना लोकक मनक मुड़ियेपर रहै छै तहिना हेतैन।

तही बीच आँगनसँ चाह आबि गेल, दुनू गोरे पीबए लगलौं।

ओना, भीतरे-भीतर मन घटना सुनैले छटपटाइत रहए मुदा जीतू कक्काक निचेनीसँ बुझि पड़ए जे किछु भेबे ने कएल छैन। फेर हुअए जे जँ जीतूए काकाकेँ अपना मने बजैले छोड़ि दिऐन आ जँ कहीं गोटे इतिहासक पन्ना उलैट गेलैन तखन तँ आरो बेसी कछमछैनी औत। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे भरि दिन कचहरीक लफड़ामे ऐठाम-सँ-ओइठाम करैमे थाकल छीहे, तहूमे नहेलौं नहि से आरो देह भरिया कऽ भँसियाइत अछि।

बजलौं-

“काका, भरि दिन कचहरीक रेवाड़क मारल छी, तँए..?”

ओना, बजलौं इशारामे मुदा जीतू काका बुझि गेला। बाजए लगला-

“राधेश्याम, कोनो घटनाक विवरण ताबे तक नीक जकाँ नइ बुझि सकै छी, जाबे तक घटनाक कारक तत्त्व नहि बुझब।”

वौआइत मन जीतू कक्काक विचार सुनैले असथिर भाइये गेल छल। मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“हँ, ऐमे के नइ कहत।”

हमर बातमे जीतू काकाकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा साँससँ बुझि पड़ल जे मन सोल्होअना चैन छैन। बजला-

“ई तँ बुझले छह जे फल्लाँ संग फल्लाँक बेटीक संग घरसँ पड़ा केतौ चलि गेल। सेहो कियो देखलक नहि।”

मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“हँ, ई तँ सभ बुझैए। रमेश रधियाकेँ फुसला केतौ चलि गेल, आकि रधिये रमेशकेँ फुसला लेलक, से जाबे दुनूक बिसवासू भाँज नहि लगि जाइए, ताबे किछु कहब उचित नहियेँ भेल।”

हमर बात सुनि जीतू काका बजला-

“सएह ने!”

हमरो जेना सह भेटल। सह भेटते बजलौं-

“ईहो तँ नहियेँ बुझिमे अबैए जे दुनू संगे गेल आकि फुट-फुट। ईहो तँ भाइये सकैए जे रमेश केतौ गेल हुअए आ रधिया केतौ।”

जीतू काका बजला-

“सेहो कोनो असम्भव नहियेँ अछि।”

बजलौं-

“गाममे एहेन ते हवे बहि गेल अछि आ गामे किए कहबै, आनो-आन गाम आ आनो-आन ठाम भाइये रहल अछि।”

जीतू काका बजला-

“जइ टोलक लड़की रधिया छी ओइ टोलोक लोककेँ आ जेकर लड़की छी तेकरो तेना कऽ गामक किछु अगिलगौन अगिया देलक जे..!”

गामक लोकक नाओं सुनिते मन उड़ि गेल। बजलौं-

“काका कनी फरिछा कऽ कहियौ। पाँच बजे भोरे गामसँ निकैल गेल छेलौं।”

जीतू काका बजला-

“अपना आँखिये तँ किछु देखल नइ अछि मुदा बिसवासू लोकक मुहेँ कानक सुनल तँ अछिए। भेल ई जे भोरेसँ, ओना पैछला कए-दिनसँ गाममे काना-फुसी होइ छल, मुदा तइसँ हमरा की जे अनेरे अपन काज-धंधा छोड़ि ओइ पाछू वौऐतौं।”

बजलौं-

“हँ, से तँ नीके केलौं किने।”

जीतू काका बजला-

“गाममे आकि समाजमे सभ रंगक लोको, सभ रंगक काजो आ सभ रंगक बुधियो-विचार अछिए। बेसी लोक ओहने अछि जे गामक कटनियेँ पाछू लगल रहैए।”

बजलौं-

“की कटनियाँ?”

जीतू काका बजला-

“झूठ-फूस बाजियो आ झूठ-फूस गढ़ियो गामक समस्याकेँ ओझराएब अपन बुधियारियो आ जीवनो बुझैए। जीवन भेल गमैया राजनीति आ पेट-पूजा। आब तोहीं कहऽ जे दुनू गोरे–रमेश आ रधिया–कौलेजमे पढ़ैए, एक गामक ओहन परिवारक छी जइ दुनू परिवारमे नौत-पिहानसँ लऽ कऽ आएब-जाएब तक, सभ तरहक सम्बन्धो अछि। तैठाम एहेन विचार उठब नीक भेल जे लड़काबला लड़को आ लड़कियोकेँ ताकि आनि उपस्थित करह?”

बजलौं-

“जँ लड़काबला ताकि कऽ आनह तँ लड़कीबला ओइसँ कम दोखी अछि, वएह ने किए ताकि कऽ आनह? एक तँ अखन एहेन प्रश्ने नहि उठक चाही, जाबे लड़का-लड़कीक सही जानकारी नइ भऽ जाइए। तैठाम जँ एहेन विचार उठल तँ केतौ-ने-केतौ किछु कारण जरूर अछि।”

हमर बात सुनि जीतू काकाकेँ जेना मनसह भेटलैन। मनसह भेटते बजला-

“राधेश्याम, सभ दिन तँ एकठाम बैस सबहक करनियोँ आ

धरनियोँक गप-सप्प करिते छी। तँए तोरो बुझले छह जे गाममे केते कुकुरचालिक लोक अछि आ केते साँपचालिक...।"

आँखि उठा जखन जीतू कक्काक आँखिपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे आँखिमे आगिक धधरा धधैक रहल छैन। बजलौं-

"से केकरोसँ चोराएल अछि। तखन तँ एहनो निरलज-पतितक कमी गाममे थोड़े अछि, मुदा...।"

'मुदा' सुनि जीतू काका अपन बहैत विचारक धाराकेँ रोकि मुस्कियाइत बजला-

"ओना सभ गामक लोकक चालि-ढालि एकरंग नहियेँ अछि। जइ गामक लोकक जेहेन आचार-विचारक जीवन अछि तइ गामक तेहेन विचारो बेवस्था तँ अछिए। ओना, अधिक गामक लोक ओहने अछि जेकर कोनो ठौरे-ठेकान ने छइ।"

'ठौर-ठेकान' सुनि अपनो मनक विचार उपकल। उपैकते बजलौं-

"बेसी गामक बेसी लोक ओहने अछि जे झूठ बाजबकेँ चलाकी आ फसाद बढ़ाएबकेँ राजनीति बुझैए। राजनीतिक समाज ओहन अछि जे झूठकेँ राजनीति कहि पवित्र बना दइए। तैपर तेहेन-तेहेन खिस्सा-पिहानी गढ़ि-गढ़ि तेना झूठक दुनियाँ ठाढ़ केने अछि जे सत्यक नामे-निशान बदैल देने अछि।"

हमर बात सुनि जीतू कक्काक मनमे ठहकलैन। ठहकलैन ई जे राधेश्यामो वएह बात-विचार बुझि रहल अछि जे अपना मनमे अछि..!

विचारकेँ आगू बढ़बैत जीतू काका बजला-

"राधेश्याम, दुनियाँमे एहेन कोनो काज नइ अछि जइमे

केनिहारकेँ किछु नहि भेटैए। मुदा की भेटैए आ केते भेटैए से जँ बुझैक अबगैत ओकरा रहतै तखने ने बुझत। जँ से रहबे ने करतै ते बुझत की आ जखन बुझबे ने करत तखन भेटतै की।"

मुड़ी डोलबैत समर्थन दैत बजलौं-

"हँ, से तँ अछिए।"

अपन विचारमे सह पबिते काका बजला-

"राधेश्याम, तोहूँ भरि दिनक थाकल छह आ हमरो जे दिन बीतल ओ ओहने बीतल, कखनो चैन नहि भेल। मुदा अधखरू बुझने मन औनेतह, तँए संक्षेपेमे जे भेल से कहि दइ छियह।"

जीतू कक्काक बढ़ैत विचारकेँ रोकब उचित नहि बुझि बजलौं-

"हँ, हँ काका, जखन अहूँ जीबै छी आ हमहूँ जीबै छी तखन जँ कोनो बात बुझैमे नइ औत तँ काल्हियो-परसू बुझि लेब। अखन ताबे मूल-मूल बात बुझा दिअ।"

जीतू काका बजला-

"बेस कहलह। दिन भरिमे जे भेल ओकर समीक्षा अखने करितौं, तइ बिच्चेमे तूँ आबि गेलह, तँए समीक्षात्मक नहि मुदा जे जेना भेल से कहि दइ छिअ।"

जीतू कक्काक सोझराएल विचारो आ बोलियोसँ बुझि पड़ल जे जइले आएल छेलौं से भेटत। तँए दुनू कान ठाढ़ केलौं। कान ठाढ़ होइते मनमे भेल जे कनी आगूसँ चालि देब नीक हएत। बजलौं-

"काका, अहूँकेँ भरिगर काज पछुआएले अछि आ हमरो तेहने जकाँ अछि। तँए तेना कऽ बजियौ जे मनो मानि जाए आ बेसी समेओ ने लगए।"

बजला-

"तोरा ते काल्हि कहनहि रहिहह जे काल्हि बारह बजे बाहर जाएब।"

बुझल बात रहबे करए, तँए मुड़ी डोलबैत बजलौं-

"हँ, से तँ कहनहि छेलौं, बुझले अछि।"

जीतू काका बजला-

"करीब साढ़े दस-एगारह बजेक बात छी। पचास-साठि आदमी बुढ़िया गाछीक बैसारसँ उठि ललकारा दैत आबि चारूकातसँ घरकेँ घेर लेलक।"

बिच्चेमे टोकलयैन-

"बुढ़िया गाछीक बैसार नइ बुझलिऐ?"

जीतू काका-

"जइ जातिक रधिया छी तइ जातिक टोल करीब पचास-साठि घरक अछि। गामक सभ जातिक टोलसँ पढ़ै-लिखैमे पछुआएल अछि। मुदा आर्थिक दृष्टिसँ किछु प्रगति केबे केलक अछि। भोरेसँ साँसे टोलक लोक ताड़ी-दारू पीब अपनाकेँ आक्रामक रूप तैयार कऽ नेने छल। गामक सेहो–आन-आन जातिक–करीब पनरह-बीस आदमी मिलि बैसारमे विचार केलक जे फल्लाँक (माने जीतू कक्काक) सभ किछु लूटि लेबाक अछि।"

जीतू कक्काक मुहेँ सभ किछु सुनि हदास उड़ि गेल। हदास उड़ैक कारण भेल जे एक तँ जीतू काका झूठ नहि बजै छैथ तैपर सभ किछु कहि देलैन।

बजलौं-

"सभ किछु नहि बुझलिऐ।"

बिकछबैत जीतू काका बजला-

"जहिना आन-आन गामक लोक अछि तेहने ने अपनो गामक अछि। जे केकरो कियो नीक तँ करए नइ चाहैए उनटे अधला करैक पाछू अपनो अधला करैले तैयार रहिते अछि।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ, से तँ अछिए।"

एकाएक जीतू कक्काक मन जेना कोनो नमहर पाथरक तर दबा गेल होनि तहिना बुझि पड़ल।

बजला-

"जेते लोक बुढ़िया गाछीक बैसारमे छल, सबहक विचार रहइ जे जीतूक सभ इज्जत-आवरू आइ नष्ट कऽ देब।"

जीतू कक्काक विचार सुनि मन एकाएक तरपल। तरपल ई जे जँ आइ गाममे रहितौं तँ जरूर लहास खसबे करैत, चाहे जेमहरसँ खसैत। मुदा एहेन घाटपर नइ रहब अवसरक चूक जरूर भेल। मुदा अवसरो अवसरक होइए। जँ बुझल रहैत से आ नइ बुझल रहने अन्तर तँ एबे करत...।

बजलौं-

"काका, इज्जत-आवरूपर जखन आँच पड़त तखन लोक जीवियेकऽ की करत।"

हमर बात सुनिते जीतू कक्काक हूबाकेँ हजार गुणा मनसूबा मनमे अनलकैन। मनसुबाइत बजला-

"बौआ, जाबे धरि लूटिहारा दुनू पोतो आ दुनू बेटोकेँ मारि कऽ खसा नइ देने छल ताबे तक ठाढ़ भेल देखैत रहलौं। देखैत ई रहलौं जे अखन तक लहास खसैक परिस्थिति नइ बनल अछि मुदा जखन दुनू बेटाकेँ खसलपर मारैत देखलिऐ तखन मन बेकाबू भऽ गेल।"

बजलौं-

“काका, एहेन परिस्थितिमे केकरा नइ हएत जे अहाँकेँ नहि होइत।”

ओना, जहिना जीतू काका तरे-तर उत्साहित होइत रहैथ तहिना अपनो होइते रहए। मुदा दुनू गोरेक बीचक उत्साहमे एते कमी तँ रहबे करए जे जैठाम जीतू काका रणभूमिमे रणक्रिया जीत निवृत्त भेल छला तैठाम अपने रणभूमिसँ बाहर छेलौं।

जीतू काका बजला-

“बौआ राधेश्याम, एक तँ निहत्था छेलौं, दोसर ओकरा सभमे किछु निहत्थो छल जेकरा सभकेँ फाँइट-मुक्काक अनुभव छेलै, जे शहरी छल, बाँकीक हाथमे कोनो-ने-कोनो हथियार छेलैहे।”

जीतू कक्काक बात सुनैत-सुनैत मन बिसमित हुअ लगल। दुनू आँखिसँ नोरक धार टघरए लगल।

पुछलयैन-

“काका! तखन?”

निधोख आ निधाइख जीतू काका बजला-

“बौआ, जखन लोक अपन जान गमबैले तैयार होइए तखने ने ओकरा जान पबैक शक्तिक सृजन सेहो मनमे होइते छइ।”

जीतू कक्काक मुहेँ विचारक नव बात सुनलौं तँए मन कनी विचार करए लगल, जइसँ नजैर निच्चाँ उतरल। मुदा जीतू काका तँ रणभूमिसँ विजय पेब आएल छला, ओ केना एको क्षण समैकेँ हाथसँ निकलए दइतैथ। रणभूमि तँ ओ भूमि छी जैठाम क्षणमे छनाक आ पलमे पलैक सकैए। तैठामक धारमे जीतू कक्काक उत्साहित मन बहैत रहैन। तँए बजैक क्रम रहबे करैन, बजला-

“राधेश्याम, जइ परिवारमे अपन इज्जत-आवरू-ले लोक अपन जान देत वएह परिवारक इज्जत-आवरू ने अपन शान धेने रहि सकैए।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ, एकरा के काटत।”

उत्साहित जीतू काका रहबे करैथ, बजला-

“एक गोरेक हाथसँ लाठी छीनलौं। छिनने लाठी तँ हाथ आबि गेल मुदा ओ चलाएब केना? जँ हाथ-पएर दिस चलाब तँ लाठियो छिना जाएत आ जे रूखि अछि ओ जान मारिए देत। मुदा जहिना सौंसे देहक सभ अंग रणभूमिमे उतैर गेल छल तहिना मनो आ विचारो ने उतैर गेल।”

मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“हँ, से तँ उतरिये गेल हएत।”

अपन कएल कृत्तिपर जीतू कक्काक मन उतरलैन। बजला-

“बौआ, दुनू हाथे लाठीक एक छोर पकैड़ लूटिहाराक कपारपर मारए लगलौं, जइसँ लाठियो सुरक्षित रहल आ खूनक धार सेहो बहब शुरू भेल।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“रणभूमि तँ खूनेक धारसँ पटाओले जाइए।”

जीतू काका बजला-

“पान-छहटाक जखन कपार फुटलै तखन अपन मन विराम लेलक। तैबीच एकाएकी ओ सभ भागए सेहो लगल। धीरे-धीरे चैनक साँस आएल।”

जहिना जीतू काकाकेँ चैनक साँस एलैन तहिना अपनो चैनक

साँस अनैले बजलौं-

“काका, नहाएब तँ अखन नहि मुदा पानिसँ देह-हाथ पोछि जाबे कपड़ा नइ बदलब ताबे ने खाइ-पीबैमे नीक लागत आ ने रातिमे नीकसँ सुति पएब, तँए अखन जाइ छी। निचेनसँ काल्हि भोरमे आगूक गप-सप्प करब।”

◌

शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017

कर्ज

अपन समैयक समाजक स्थिति देखैत विद्यापति अपन विचारक कलमसँ लिखने छैथ-

“दुख ही जनम भेल, दुख ही गमाओल, सुख कहियो ने भेल।”

ओना, विद्यापति आइसँ छह-सात साए बर्ख पहिने भेल छला मुदा हुनक लेखनीक महान विचार आइ नइ जीवित अछि से कहब महान आत्माक संग बेइमानी करब हएत। विद्यापतिये जकाँ महान-महान अर्थशास्त्रियो सबहक महान विचार अपन महान लेखनीसँ लिखले गेल अछि-

“लोक कर्जमे जन्म लइए, करजेमे पालल-पोसल जाइए आ करजेमे मृत्यु सेहो होइ छइ।”

ओना, अखन जे समाजक विचारधारा अछि ओहो ऐसँ भिन्न नहियेँ अछि, मुदा सोलहन्नी भिन्ने अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना आइए नहि अदौसँ दू रंगक विचारधारा समाजमे बहैत आबि रहल अछि। पहिल अछि कल्याणकारी–माने अपनो नीक आ दोसरोकेँ नीक–आ दोसर अछि अकल्याणकारी–माने अनका अधला करैमे जँ अपनो अधला हुअए तैयो करब।

जहिना आन गामक समाज अछि तहिना हमरो गामक अछि।

ओना, किछु किरिया-कलाप एकरंगाहो अछि आ किछु भिन्न सेहो अछिए।

भोरे आँखि मीड़िते ओछाइनपर सँ उठलौं कि रस्ता परक अवाज कानमे पहुँचल-

“रामखेलावन दुनू भाँइक बीच माइयक सराधक भोज-ले तेहेन झंझट उठि रहल अछि जे माइक सराधक किरिया-कर्म कि करत जे अपनो जिनगीक बिटारि करत।”

एक तँ आजुक दिनक पहिल बात समाजक कानमे पहुँचल, दोसर अपन नित्य क्रिया-कर्म सेहो पछुआएले छल। ओना, बेकतीगत आ समाजक बीचक बात छी तँए पहिने केकरा कएल जाए, ई तँ मनमे उठबे कएल। मुदा लगले मन थीर भऽ गेल। थीर ई भेल जे अखन रामखेलावनक माएकेँ छबे दिन मुइना भेलैन, तेरहा सराध होइ छै, तँए दस दिनक पछाइत ने क्रिया-कर्म आकि भोज-भात शुरू हएत। बीचमे चारि दिन समए तँ अछिए, तँए ओइमे बेसी धड़फड़ी नहियेँ अछि। मुदा अपन भोरक जे नित्य-क्रिया अछि ओ तँ पछुआएले अछि।

मन मानि गेल, अपन नित्य क्रिया-कर्म दिस बढ़लौं। मुदा मनमे ई विचार नचिते रहल। ओना जैठामक काज छी तैठाम तेरहा सराधक चलैन अछि मुदा गाममे आरो-आरो सराध नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अर्द्धमासी, पूर्णमासीक चलैन सेहो अछिए। अर्द्धमासी भेल पनरह दिनक सराध आ पूर्णमासी भेल महिना दिनक।

समाजक काज देखैत अपन क्रिया-कर्ममे सतरकी केलौं। एक घन्टाक काज अधहे घन्टामे पुरा चौक दिस विदा भेलौं। गामक चौक तँ नमहर नहियेँ अछि, पच्चीस-तीसटा दोकान अछि, मुदा चौखरी तँ ओते ऐछे जेते आन गामक नमहर चौकमे रहैत अछि।

चौखरी भेल अपन-अपन विचारो आ बेवहारोनुकूल पाँच-दस गोरे एकठाम बैस परिवारो आ समाजोक क्रिया-कलापक समीक्षो करैत आ ओइमे नूनो-तेल लगबैत, आगियो पजारैत आ शान्तसँ मिझेबो करैत।

गामक चौकपर बैसनिहार अपन-अपन चौखरीमे बैस अनधुन ‘रामखेलावनक भैयारी’क विचारपर धुर-झाड़ भाषण दइये रहल छल। रस्ता धेने अपन चौखरी दिस बढ़ल जाइ छेलौं। अनधुन दुनू दिससँ दुनू भाँइक विचारकेँ अपना-अपना विचारे औंटल-पौड़ल जा रहल छल।

ओना, मनमे ईहो भेल जे नीक हएत रामखेलावने ऐठाम पहुँच दुनू भाँइकेँ पुछिऐ। मुदा बीचमे बाधा उपस्थित ई भेल जे जइ काजे विवाद उठि कऽ ठाढ़ भेल अछि, ओइ विवादक जड़ियेकेँ अपने नइ मानै छी। कहलो गेल छै जे ‘जे भोज नइ खाइ, ओइमे पारा मरह।’ फेर हुअए जे समाजक समास्या छी, समाजक समस्याकेँ जँ समाज नइ बुझि-सुझि समाधान करत तखन समाजे कि भेल। समाज तँ ओहन बन्धन छी जइमे समाजक सभकेँ अपन-अपन विचार रखैक अधिकार अछि। हमहूँ तँ अही समाजक ने एकटा अंग छिऐ, जखने अंग छिऐ तखने किछु अधिकारो आ कर्तव्यो तँ भाइये जाइए। तैबीच मन गुनधुन ईहो करए जे समाजमे जेते लोक अछि ओते विचारक जँ समावेश हुअ लगै तखन तँ जहिना कहबी छै जे ‘मुसहरक बीचसँ मूस पड़ा जाएत, तहिना हएत। घमरथने तेते हएत जे काजे नष्ट भऽ जाएत।

गंगाराम आ रामखेलावन सहोदर भाए। गंगाराम जेठ आ रामखेलावन छोट। डेढ़-दू बीघा खेतबला परिवार अछि। डेढ़ दू बीघा खेतबला किसान परिवारक की दशा अछि से सभकेँ बुझले अछि।

पैंतीस बर्ख पूर्व गंगाराम अपन पारिवारिक स्थितिसँ तंग आबि दिल्ली गेल। शहरो-बजारमे पहिलुका अपेक्षा कारोबार बढ़बे कएल अछि जइसँ काजोमे बढ़ोत्तरी आबिए गेल अछि।

दिल्ली जाइते गंगारामकेँ एकटा वेपारी ऐठाम नोकरी भेट गेल। नमहर कारोबारक वेपारी ऐठाम रहने गंगारामकेँ दरमाहाक संग बाइलियो आमदनी हुअ लगल।

शुरूमे गंगाराम अपन दरमाहामे सँ थोड़-बहुत गामो पठबए आ जे बँचि जाइ ओ बैंकमे जमो करए। ओना, ओइ समयमे गंगाराम असगरे–माने बिनु परिवारे–दिल्लीमे रहै छल, पितो जीविते रहथिन। किछु दिनक पछाइत पिता मरि गेलखिन।

पिताकेँ मुइला पछाइत गंगाराम गाम आबि सराध-कर्म केला पछाइत अपन बच्चो आ पत्नियोकेँ नेने दिल्ली चल गेल। दिल्लीमे जमीन कीनि तीन कोठरीक घरो बना लेलक।

रामखेलावनक अपनो परिवार–माने पत्नी, बच्चा–आ माइयो गाममेमे रहल। जएह खेत-पथार छेलै तेकरे उपजासँ परिवार चलबए लगल। माएकेँ दमा रोग गरसने। जएह आमदनी रामखेलावनक छल ओहीमे माइयक दवाइयो आ पत्थो-पानि करए लगल।

जहियासँ गंगाराम परिवार लऽ कऽ दिल्ली गेल तहियासँ घरमे रूपैआ पठाएब बन्न कऽ देलक। अपन मकानक एकटा कोठरी अपने रखलक आ दूटा कोठरी भाड़ामे लगा देलक। जइसँ आमदनीमे बढ़ोत्तरी सेहो भेल। तैसंग ईहो भेल जे किछु दिनक काजोक अनुभव भऽ गेलै आ मालिकक–वेपारीक–बिसवासू नोकर–आदमी–सेहो भाइये गेल। जइसँ आमदनीमे काफी बढ़ोत्तरी भऽ गेलइ।

किछुए दिनक पछाइत मकानक ऊपर सेहो तीनटा कोठरी बना भाड़ा लगा लेलक।

अपनो चौखरी, जइमे सभ दिन बैसै छी, जमल छल। रंग-बिरंगक गप-सप्प चलि रहल छल। चौखरीक रूखि आ समाजिक दायित्वक बीच मन घेराएल छल। जेना आन-आन गोरेक मुहसँ सुनि रहल छेलौं ओहिना जँ अपनो बाजए लगितौं आ ओ जँ समाजक विपरीत होइत तखन तँ अनेरे बखेरा ठाढ़ होएत, तइसँ नीक अपनाकेँ सोलहन्नी अनभुआर बना मुँह बन्न केने चुपचाप सबहक गप सुनए लगलौं। गपक कोनो थाहे ने लगए। कियो गंगारामकेँ विवादक दोखी कहैत तँ कियो रामखेलावनकेँ। तैसंग ईहो देखिऐ जे किछु एहनो लोक रहए जे दुनू दिसक विचारमे ओझरी लगा-लगा बजैत। ओकर मनसूबा रहै जे दुनू भाँइक बीच तेहेन विवाद फँसै जे माइयक सराधे-कर्म बाधित भऽ जाइ। जइसँ भविसमे दुनू भाँइमे कियो मुहेँ ने उठा पाओत। माता-पिताक सराध-कर्म समाजक एकटा पैघ काज छीहे।

संजोग नीक बैसल। संजोग ई नीक बैसल जे दोकानक काजे रामखेलावन चौकपर आएल। ओना, अबिते-अबिते रामखेलावन सकदम भऽ गेल। सकदमक कारण भेल जे जेकरा-तेकरा मुहेँ अपने आ अपन परिवारेक कुट्टी-चालि सुनैत रहए।

कियो रामखेलावनक पक्षमे तँ कियो विपक्षमे अनधुन बजैत। केकरा मुँहमे की जवाब देत से रामखेलावनकेँ फुरबे ने करइ। मुदा मुँहपर अपनो आ अपन परिवारोक अकची-दोकची कियो बजैत रहए आ चुपचाप सुनैत रही, ईहो तँ मतहानि छीहे। केकरा बरदास हेतइ। मुदा सबहक मुँहमे जवाबो देब ओते असान नहियेँ अछि, तँए रामखेलावन दोकानक आगू मे ठाढ़ भेल चारूकातक विचार चुपचाप सुनैत रहए।

नजैर उठा जखन चौकक चौखरी दिस बढ़ेलौं कि दोकानक आगूमे रामखेलावनकेँ ठाढ़ देखलिऐ। मनमे उत्कंठा रहबे करए, तैसंग

गरो भेट गेल। रामखेलावनकेँ हाक पाड़लिऐ। जहिना रामखेलावन सुनलक तहिना दोकानपर सँ आगू बढ़ि लगमे आएल। ओना, जेहेन हताएल सुरखी रामखेलावनक मुँहक पहिने छल तइमे थोड़े हरयरी टपकलै। हरियरी टपकैक कारण भरिसक ई भेलै जे अपन विचार रखैक गर पौलक। लगमे अबिते रामखेलावन बाजल-

"की कहलौं भाय साहैब?"

रामखेलावनक बात सुनि श्रद्धा उपकल। श्रद्धा उपैकते मनमे मीठाँस सेहो आएल। मीठाँस अबिते वाणीक स्वर मिठाइये गेल छल। बजलौं-

"की हाल-चाल रामखेलावन?"

हमर बात सुनिते रामखेलावनकेँ जेना समोह लगि गेलै तहिना बाजल-

"की हाल-चाल रहत भाय साहैब! तेहेन परिवारमे जन्म भेल जे घिनाइ छी..!"

ओना बजैक क्रममे रामखेलावन सोझे मुहेँ बाजल। मुदा बुझि पड़ल जे अस्सी मनक दाबमे वेचाराक विचार दबले छइ। रामोखेलावनक दबैत जिनगीक विचार सुनि अपनो मनमे अस्सी मन पानिक दाब पड़ि गेल।

दाब ई पड़ल जे रामखेलावन सन मातृ-पितृ भक्तकेँ उद्धार केना होइतै, तँ आरो ऐगला जिनगीक दाब पड़ि रहल छइ! कहू जे ई केहेन हएत जे पैंतीस बर्खसँ–जहियासँ जेठ भाय दिल्ली चलि गेलै–असगरे ओहन माइक सेवा केलक। जे कर्महीन भऽ चुकल छेली। अपनो आ अपन परिवारोक पेट काटि रामखेलावन माएकेँ पथ-पानि जुटबैत रहल। तहूमे वेचारी (माए) रोग बढ़ै दुआरे ने परिवारक चिन्ते करै छेली आ ने भरिगर काजे करै छेली। एक माइक सेवा भेल जे शरीरसँ

स्वस्थ भरपूर श्रम करैत परिवारमे रहैवाली, जिनका आगू बेटा हुकुमदार जकाँ भक्ति करैए आ दोसर भेली जे उचितो श्रमसँ निच्चाँ उतैर बेटाक भार बनि हुकुमदारी करैत। मुदा से नहि, रामखेलावन समाजक ओ विचार अँगेजने छल, जइ विचारक समाजमे ओहनो-ओहनो माए भेली जे जहिना वृद्धिसँ छक्का-पंजा नइ जनैत तहिना श्रमो आ स्वास्थोसँ छेली वा छैथ...।

बजलौं-

"रामखेलावन, जखन परिवारे घिनाइक बात छह तखन सोझरा कऽ कहह जे केना-केना की-की बात अछि, जे अपनाकेँ घीनसँ घिनाइत बुझै छह।"

जहिना तरसैत-तलपैत-कनैत कियो अपन बेथा-कथा दोसरक हृदयमे पहुँचा अपन हृदय जुड़बैए तहिना रामखेलावन बाजल-

"भाय साहैब, ई तँ बुझले अछि जे तीन भाए-बहिन छी। तीनू भाए-बहिनक माए छी।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"एकरा के काटत।"

मुदा लगले अपसोच हुअ लगल जे धड़फड़ा कऽ बाजि गेलौं। माइक तीनू सन्तान तँ जरूर छी। मुदा दू भाए, एक बहिनक ने बात अछि। अखने सोझामे जे काज उपस्थित भऽ गेल अछि, तइमे बहिन भेल सराध-कर्मक तीन दिनक वा दस दिनक अधिकारी। तीन दिनपर सारा बनिते तुलसी रोपि कठियारीबलाकेँ नौत दऽ खुआ देलिऐ आ पाक-साफ भऽ गेलौं। मुदा से तेरातिक भोज अपने टुटैत दसम दिन पहुँच गेल। आब दसम दिन कठियारीबलाक भोज होइए। भोज तँ जरूर घुसैक गेल मुदा सभ बेवहारो तँ नइ घुसकल। केशकट्टी अछि, अपन परिवारो आ दियादोवाद दस दिनपर केश कटबै छैथ–अखन

मासी वा अर्द्धमासी सराध-कर्मक चर्च नइ बुझू–बाँकी जे कठियारीक वरियाती रहै छैथ ओ तेसरे दिनपर अपन केश कटा उरीन भऽ जाइ छैथ। हलाँकि ओ नीके अछि, अनेरे जे छुतकाबला दाढ़ी-केश रखि गामक सीमा बन्हने रहत तइसँ तँ नीक ने जे ओइसँ जल्दी पिण्ड छुटतै...।

रामखेलावनक विचारपर जेते नजैर जाए ओते ओझराएल जाइत रही। मुदा लगले मनमे भेल जेतए-जेतए रामखेलावन ओझराएल अछि, पहिने ओ बुझी। तँए नीक हएत जे रामखेलावनेक मुहेँ किए ने सुनी। हमहूँ तँ आखिर गामक चौखरीपर दस गोरेक बीच बैसल छी, जँ केतौ किछु विचारकेँ तोड़-जोड़ करए पड़तै, सेहो तँ काइए सकै छी।

रामखेलावन बाजल-

"परिवारमे जखन बहिन-बहिनोइक एहेन किरदानी भऽ गेल जे रोगाएल-टटाएल माएकेँ कहियो देखए नइ आएल तखन मुइलापर आबि सराधक भोज कए लोककेँ देखौत। ओकरा ऐ काजमे टपए नइ दैतिऐ, तेकरा भैया अगुरवारे नौत पठा अगुरवारे बम्बैसँ बजा लेलक, तैकाल हमर परिवार नइ छल।"

रामखेलावनक विचार सुनि मन ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे तीनू भाए-बहिन जँ सालक चरि-चरि मास माएकेँ रखैत, तँ रामखेलावनकेँ आठ मासक आफियत तँ भेटबै करितै। पाइयो बँचितै माने दवाइक खर्च नइ होइतै आ चिन्तामुक्त मेहनतो करितए। से तँ दुनू अन्याय करबे केने अछि। मुदा लगले मनमे ईहो हुअए जे अखन काजक दौड़ अछि, जँ बीचमे उचित कहीं बजैत बलझग्गड़ भऽ जाइ तखन तँ आरो रामखेलावनकेँ पछड़ा पड़ि जाएत, तइसँ नीक जे अखन कोनो प्रश्नकेँ हँ-निहँस बिना केने प्रश्ने सभकेँ तहिया-तहिया

किए ने रक्खी। काजक पछाइत बुझल जाएत।

बजलौं-

"ई एकटा बात भेल। आब दोसर बाजह।"

मुहसँ 'दोसर' निकलबे कएल कि टपाक-दे रामखेलावन बाजल-

"अहीं कहू जे की उचित होइ।"

भीतरे-भीतर रामखेलावनकेँ अपन कएल कर्मसँ शक्ति अबैत रहै जेकरा ओ तेहाला मुहेँ सुनि अपना मनकेँ जुड़बए चाहैत रहए मुदा हमरो संग तँ विचारणीय प्रश्न अछिए।

विचारणीय प्रश्न ई अछि जे जे काज–माइयक सराध-कर्म–रामखेलावनक छी तेकर नीक-अधलाक भागी ओ बनत, हमरा तँ तइसँ कोनो हानि-लाभ नहि, मुदा जँ अखन किछु एहेन उचितो बात बाजि दी आ तीनू भाए-बहिनक बीच विचारक विवाद फँसि जाइ जइसँ रामखेलावनक माइक सराधे-कर्म दुरि भऽ जाइ तखन ओकर मानि अड़त, आ दोसर-तेसर या तँ अपने विचारे वा आनेक विचारसँ अड़ि जाएत तँ विवाद फँसबे करत, जइसँ सराध-कर्म गड़बड़ेबे करत। ओना, भोज-भात बड़ नीक काज नहियेँ अछि मुदा समाजिक जइ बेवहारमे रहि रहल छी तइ हिसाबे तँ नीक काज अछिए। बजलौं-

"एना-एकाएकी प्रश्न सबहक जवाब देब धड़फड़ा कऽ देब हएत, तँए पहिने सभ बात खोलह, जइसँ मिला-जुला कऽ एकेबेर जवाब देबह।"

ओना, रामखेलावनक मन कनी घुरियाएल मुदा काल्हि साँझू पहर जे भैयारीक बीच रक्का-टोकी भेल छेलै तइमे तँ किछु जान एबे केलइ। जइसँ मन थोड़ेक निच्चाँ मुहेँ उतैरिये गेल छेलइ।

बाजल-

“बड़बढ़ियाँ भाय साहैब, आब दोसर सुनू।”

अपनो इच्छा छल जे कोनो विचारकेँ निर्णायक दौड़मे आनैसँ पहिनहि किछु तोड़-जोड़ करैक अवसर रहै छै, मुदा निर्णय केला पछाइत तँ ओ बन्हा जाइए, टोकारा दैत बजलौं-

“हँ-हँ, जखन सुनियैँ रहल छी तखन सभ बात सुनबह।”

‘सभ बात’ सुनि रामखेलावनकेँ जेना आरो शान्ति मनमे एलै तहिना बुझि पड़ल, जइसँ अपनो मनमे भेल जे किछु उपकार तँ रामखेलावनकेँ भाइये रहल अछि।

रामखेलावन बाजल-

“भाय साहैब, दोसर बात अछि जे देखते छी जे डेढ़-दू बीघाबला किसानक जिनगीमे जीब रहल छी, भैया एकोटा पाइ नइ दइए। जखन कि दिल्लीमे पचास लाखसँ ऊपरेक सम्पैत बना सबतूर सुख करैए, तैठाम सवूर केने जेना-तेना दिन काटि रहल छी। पैंतीस सालसँ माइयक सेवा करैत एलौं हेन। अखन अन्तिम काज उपस्थित भऽ गेल अछि। एकरो तँ ओ करह।”

अपना जनैत रामखेलावन अपन मनक सभ बात बाजि गेल मुदा हम नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं जे रामखेलावन की कहए चाहैए। बजलौं-

“नीक जकाँ तोहर बात नइ बुझि पेलौं रामखेलावन, तँए कनी फरिछा कऽ बाजह।”

बाजल-

“भाय साहैब, पैंतीस बर्ख जे माइक सेवा केलौं तेकर बदला नइ कहै छिऐ, जँ हम असगरे रहितौं, जेना आन-आन अछि, तखन केकरा

कहितिऐ, तँए माए बुझि सेवा केलौं।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“माए-बापक सेवा श्रवण कुमारे केलैन आकि तोंही केलह। अनका जकाँ नहि जे माइये-बापकेँ भीन कऽ दिऐ आ अन्न-वस्त्र दुआरे मुँह तकबइये।”

‘अन्न-वस्त्र’ सुनिते रामखेलावनक मनमे आरो बेसी सेवा-भक्त जगलै। बाजल-

“भाय साहैब, अहीं कहू। अपना जनैत माएकेँ कहियो फाटल वस्त्र देहपर आ खाइ-पीबैक कोनो सेहन्ता रहए देलिऐ?”

रामखेलावनक करमाएल मन देख बजलौं-

“रामखेलावन, एकटा बात कहऽ तँ जे अपन मन की कहै छह?”

‘अपन मन’ सुनिते रामखेलावन थकमका गेल। थकमकाइक अनेको कारण मनमे नाचए लगलै। नचैक अनेको कारणमे प्रमुख छल जे जइ समाजक बीच–कोनोमे ‘जवार’ तँ कोनोमे ‘सौजनी’ तँ कोनोमे ‘मैनजनी’ इत्यादि सराधक भोज जे बैस कऽ खाइत एलिऐ, ओकरा केना छोड़ि देबइ। जखन कि लोक हमरा जनैए, जेते भैयाकेँ लोक पाइबला बुझैए, तइ हिसाबे जँ किछु ने करब से केहेन हएत..?

रामखेलावनकेँ ठमकैत देख बजलौं-

“एना चुप नइ हुअ। चुप्पीसँ नइ हेतह। साफ-साफ, झाड़ि-ओसा सभ बात दस गोरेमे बाजह। बिनु कहनहि पंचो सभ भेटिये गेल छथुन। बुझिते छहक जे दसेमे भगवान बसै छैथ। पंच परमेश्वर होइते छैथ।”

एक्के मनुखकेँ दुनू रूप सेहो अछिए। जइसँ मर्तलोकसँ देवलोक तकक धार बहिते अछि। मनुखक दू रूप ई भेल जे जखन कियो

अपराध वा कोनो विचार दोसरोकेँ कहैए तखन एक रूपमे–माने मानवीय रूपमे–मुदा जखन दोसरक अपराध सुनबो करैए आ ओकर निराकरणो करैए तखन ओ देवलोक-तुल्य भाइये जाइए। तहिना विचारो आ विचारक काजोक तँ अछिए।

‘पंच परमेश्वर छिया’ सुनि रामखेलावनक मन आरो पसीज गेल। अपनो मन कहए लगलै जे अखन माइयक कर्ज चुकबैक अछि, तँए जँ लोकक पएरो-दाढ़ी पकड़ने नीक जकाँ काज निपैट जाए तँ ओ नीक भेल। गप-सप्पमे कनी टुट-नफा कोनो माने नहि रखैए, मुदा कर्मक टुट-नफा तँ जश-अजशक भागी बनाइए दइए। तहूमे जैठाम माता-पितासँ उतरी उतारि उरीन हेबाक अछि तैठाम जँ कनी लियौन भऽ कऽ काज नहि सम्हारब तँ ओ बुड़िबकी हएत।

रामखेलावन बाजल-

“भाय साहैब, बहिन-बहिनोइ जँ अगुरबारे दरबज्जापर आबिये गेल, अखन तक जे केलक वा नइ केलक तेकर भागी तँ वएह ने भेल। ओकरो साझी माइयक सराध-कर्ममे तँ छइहे, भने समाजो काजे बेरा देने अछि।”

‘काज बेरा देने अछि’, से बुझबे ने केलौं जे रामखेलावन बिच्चेमे की बाजि देलक। मुदा जखन कोनो समस्या सुनि रहल छी आ समस्याक विषयकेँ नीक जकाँ बुझबे ने करब तखन अपन विचार राखब केते उचित हएत। मनमे कट-कुट हुअ लगल। बजलौं-

“रामखेलावन, कनी एकटा बात फरिछा दएह, समाज की काज बेरा देने अछि?”

रामखेलावनक मनमे गुरुआइक आभास भेल। मुस्की दैत बाजल-

“भाय साहैब, ओना तँ रंग-रंगक सराध-कर्म समाजमे अछि।

पहिने बहिनक हिस्सामे तेराति छल, जइ दिन छौरझँप्पी होइए, मुदा आब ओ नह-केश दिन आबि गेल। तँए ओइ दिनक काजक हिस्सा ओकर भेलइ। भने ताबे छुतकेमे रहब। माने ई जे एकादशा दिन सराध-कर्म शुरू भेला पछाइत छुतका कले-कले कमए लगैए जे द्वादशाक कर्मक पछाइत छुटैए।”

अपन पनचैती रामखेलावनकेँ अपने करैत देख मनमे खुशी एबे कएल, खुशी भेल। खुशी अबैक कारण ई जे जँ कर्ताकेँ कर्मक क्रियागत ज्ञान भऽ जाइ आ जँ ओकर इमानदारीसँ वहन करए तँ जेते विवाद समाजमे पसरल अछि तेते थोड़े रहत। बजलौं-

“रामखेलावन तूँ जे हमरा चरियबै छेलह से हमहूँ तँ यएह विचार ने दैतियह जे तोरा बुझले छह।”

हमर बात सुनि रामखेलावनकेँ की भेटलै से तँ ओ जानए मुदा मनक कलशसँ बुझि पड़ल जे जइ समस्यामे रामखेलावन फँसल अछि ओकरा ई अपने फूसि-फटक बना उड़ा देत।

तैबीच रामखेलावन बाजल-

“भाय साहैब, कियो करैए अपना-ले। माइयक सेवा बहिन केलक वा नइ केलक तेकर भागी ओ छी, हम अपने भागी ने हएब।”

‘अपन भागी’ सुनि आरो मनमे बिसवास जगल। जगबो केना ने करैत, दुनियाँमे जेते लोक अछि ओ अपन हिस्साक भागी अछि किने…।

बजलौं-

“रामखेलावन, हमरा नजैरमे कहाँ केतौ ओझरी छह?”

अपन मनक बात रामखेलावन बाजल-

“भाय साहैब, जेते घोल-फचक्का भेलै ओ नीक्के भेल।”

रामखेलावनक बात उनटा बुझि पड़ल। उनटा ई जे लोक अपन परिवारक बातकेँ झाँपि-तोपि रखैए आ रामखेलावन किए एना बाजल..?

बजलौं-

“से की रामखेलावन?”

परिवारक विचारवान पुरुख जकाँ बाजल-

“भाय साहैब, अहीं कहू जे भाए आकि बहिन माए-बापक सेवामे जँ छक्का-पंजा करत तँ ओ दोखी भेल किने?”

बजैक साहस तँ नइ हुअए मुदा लगले भेल जे जे अपन इज्जत-आवरूकेँ धोइ-पोछि कऽ साफ-सुथरा राखए चाहै छैथ वएह ने धुअल-पखारल माने साफ-सुथरा मनुख भेला, से तँ रामखेलावनमे जगमगाइते अछि..!

बजलौं-

“रामखेलावन, काजक दौड़ छह अगुताएल नइ ने छह?”

“अगुतेने कोनो काज चलैए।” रामखेलावन लगले सुरे बाजि ईहो बाजल-

“जखन काजेमे छी तखन सभ काज करिते चलब किने।”

पुछलिऐ-

“एकबेर चाह पीबह?”

बाजल-

“अखन हम छुतकामे छी, तँए अपना हाथे तँ नहि आनब मुदा पाइ हमहीं देबइ।”

बजलौं-

“बड़बढ़ियाँ।”

रामखेलावनकेँ जेना पछुलका छुटल बात मन पड़लै तहिना बाजल-

“भाय साहैब, कहै छेलौं जे काजमे जेते घोल-फचक्का होइए तेते नीके होइए।”

हमरो जेना छुटल बात मन पड़ि गेल। बजलौं-

“से की?”

रामखेलावन बाजल-

“कोनो काजमे जेते घोल-फचक्का होइए तेते दूर तक ओ पसरैए। जेते दूर तक पसरैए तेते लोकक जिज्ञासा ओइ दिस बढ़ैए।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ, से तँ होइते छइ।”

अपन विचारमे सह पबैत देख रामखेलावनक मनमे बिसवासक खुशी जगलै। बाजल-

“भाय साहैब, जँ चुपे-चाप अपने सभ–भाए-बहिनक बीच–मे सोलह-सलुकत कैये लैतौं तखन आन थोड़े बुझैत। जखन आन बुझबे ने करैत तखन नीक-अधला बेराइत केना..!”

कहलिऐ-

“बढ़ियाँ विचार बजलह।”

मुस्की दैत रामखेलावन बाजल-

“आब दोसर समस्या कहै छी। देखते छिऐ जे अपना सभैतीमे जे भोज होइए तइमे खाइले जाइते छी। जेकर माए-बापक सराधक भोज खेलिऐ, तेकरा जँ अपन माए-बापक बेरमे नइ खुएबै तँ कियो नीक कहत?”

रामखेलावन विचार सुनि बजलौं-

“भोज तँ लोक विभवक अनुसारे करैए। जेकरा जेते रहल से तेते केलक आ जेकरा नइ रहल ओ नइ केलक।”

हमर बातक जवाब जेना रामखेलावनक जीहेपर छल तहिना बाजल-

“से तँ अपनो बुझै छी मुदा हम गाममे रहै छी, तेना भऽ कऽ आन गामक लोक नइ चिन्हैए जइसँ भोज नहियोँ करितौं ते ओते चर्च-बर्च लोक नहियोँ करैत, मुदा भैयाकेँ के दस गामक लोकक के कहए जे इलाकाक लोक जनैए।”

बजलौं-

“परोछक बात तूँ केना बुझै छहक?”

रामखेलावन बाजल-

“भतीजीक बिआह भैया दिल्लीमे केलक। हमहूँ गेल रही, पाँच साए खण्ड साड़ी हित-अपेछित सभ देने रहइ। कियो एक खण्ड कियो एक जोड़, आब अहीं कहू जे केते भेल?”

रामखेलावनक विचार मनकेँ अँटकौलक। मुदा अपने अँटकलौं नहि, बजलौं-

“बहुत समए भऽ गेल, जल्दी अपन विचार अन्त करह।”

बाजल-

“भैया ऐठाम भोज नइ करऽ चाहैए, ओ दिल्लीए-मे करत।”

हमरा बजा गेल-

“एतए करए आकि ओतए करए, करत तँ माइये नीविते किने?”

रामखेलावन बाजल-

“से तँ अपनो बुझै छी, मुदा ऐठामक समाज थोड़े बुझत। हमरा तँ ऐठामक समाजक कर्ज ने अछि। ओ तँ परिवारेक ने भेल। परिवारो तँ अखन तक सम्मिलिते अछि किने। भलेँ ओ अपन करैए आ हम अपन।”

रामखेलावनक प्रश्नमे दम बुझि पड़ल। मुदा ईहो शंका तँ मनमे रहबे करए जे काजक दौड़ छी जँ कोनो एहेन उट-पटाँग बात बजा गेल आ काजमे कोनो विघनेस भेल तँ दोखी बनब। तँए मनमे ईहो होइत रहए जे सभ बात बुझला पछाइतो निर्णयक सीमापर नहि जाएब। बजलौं-

“रामखेलावन, तोरा सन विचारवान लोक केते परिवारमे अछि। पहिने अपना ढंगे काजकेँ निमाहह। विचार कि केतौ पड़ाएल जाइए। पछातियो हएत।”

हमर बात रामखेलावनकेँ नीक लगलै। बाजल-

“भाय साहैब, अपना जनैत तँ सामंजसमे लगले छी तखन देखियौ।”

गर पेबिते बजलौं-

“अखन चारि-पाँच दिन बीचमे समैयो अछि। भोजो की केतौ पड़ाएल जाइए। लगला सूढ़मे भेने तेरहे दिनमे पाक-साफ भऽ जाइए, नइ तँ कियो भोज उठा कऽ रखलक, तँ कियो पहिलुक छायामे केलक, नइ तँ बर्ख दिनपर बरखीमे करैए, चाहे तँ तेकर पछातियो करैए।”

रामखेलावन बाजल-

“देखियौ की होइ छइ।”

◌

शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017

बेटीक लिलसा

बीस बर्ख नोकरी केला पछाइत चिन्तू मास्सैबकेँ अपन बाल-बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइपर धियान एलैन। ओना, पाँच सालसँ सन्तान नहि भेलैन अछि मुदा नइ होइक संभावना समाप्त भऽ गेलैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सन्तान भाइयो सकै छैन मुदा तइ दिस मास्सैबक नजैर नहि एलैन। अखन जे दूटा बेटी आ दूटा बेटा छैन तेतबेमे विचार अँटैक गेलैन।

हाइ स्कूलमे चिन्तू नोकरी करै छैथ, एम.ए. पास छैथ। बाल-बच्चाक पढ़ाइपर नजैर पड़िते मन पाछू उनैट पितापर गेलैन। पितापर पहुँचते मन पड़लैन अपन पढ़ाइ। अपन पढ़ाइ मन पड़िते मन अपन विचारोपर एलैन। जखन पढ़ैत रही तखन कहियो मनमे नहि भेल जे 'इंजीनियर' बनब कि 'डाक्टर' बनब। गामक स्कूलसँ पढ़ाइ शुरू केलौं आ दरभंगा कौलेजमे समाप्त केलौं। जहिना अपना मनमे इंजीनियर-डाक्टर नइ आएल छल तहिना पितोजीक मनमे नइ आएल छेलैन। सोझमतिया लोक पिताजीक सोझ विचार छेलैन जे पढ़ल-लिखल लोकक आचार-विचार, क्रिया-कलाप सुधैर कऽ अगुआइत चलत। यएह ने भेल विकासक प्रक्रिया। मुदा लगले चिन्तू मास्सैबक नजैर अपन बाल-बच्चापर पड़लैन। चारि भाए-बहिन अछि चारूकेँ शिक्षित बनाएब...।

ओना, चारि सन्तानमे जेठ बेटी बीचमे माझिल-साझिल दू बेटा आ सभसँ छोट बेटी जे पाँच सालक छैन। जेठ बेटी पनरह सालक छैन जे मैट्रिकमे परीक्षा देत आ माझिल बेटा नौमामे आ साझिल पाँचमामे पढ़ै छैन। छोटकी बेटी सेहो स्कूल जाइते अछि।

बाल-बच्चाक पढ़ाइ दिस नजैर पड़िते मास्सैबक मनमे विचार उठलैन जे जेकर काज छी–माने जे पढ़ैए–तेकरोसँ एक बेर पुछि लिऐ जे आगू की पढ़ए चाहैए।

अखन तक चिन्तू मास्सैबक मन आन शिक्षकक देखा-देखीक धारामे बहि रहल छेलैन। तीस हजारक नोकरी, परिवारमे समटल काज तँए महिने-महिने किछु बँचिये जानि जे घटैन नहि। एक तँ छोट परिवार माने छह गोरेक आश्रम, दोसर किछु बपौतियो सम्पैत–खेत-पथार–छैन्हे। गामेसँ स्कूल अबै-जाइ छैथ।

जहिना सभ माता-पिताक इच्छा अपन बाल-बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ दिस रहैए तहिना चिन्तू मास्सैबक सेहो छैन्हे। ओना, गामक बगलेक गाममे हाइयो स्कूल आ मिडिलो स्कूल रहने ओहन अभिभावक जकाँ खरचो नहियेँ छेलैन जिनका होस्टलक खर्च आ ट्यूशन फी, स्कूलक खर्चसँ वृहत् जोड़ए पड़ै छैन। डेढ़े किलोमीटरपर स्कूल अछि तँए तीनू गोरे–माने बेटी आ जेठ बेटाक संग अपनो, संगे-संग स्कूल जाइतो छैथ आ अबितो छैथ। गामसँ गेने-एने होस्टलक खर्चो नइ होइ छैन आ साँझ-भोर अपने लग बैसा बेटा-बेटीकेँ पढ़ेबो करै छैथ जइसँ ट्यूशन-फी सेहो नहियेँ लगै छैन। धियो-पुतो चेष्टगर रहने आ अपनो दुनू परानी पैंतीस-चालीस बर्खक रहने बर-बेमारीसँ हटल छथिए। ओना, बर-बेमारीक कोनो ठेकान नहि अछि, तँए उम्रक बात नहियोँ अछि, मुदा ईहो तँ ऐछे जे जेते बर बेमारी बच्चा आ वृद्धकेँ होइए ओइ अनुपातमे बीचक उम्रबला–मोने चेष्टगर बच्चा भेला

पछाइत आ वृद्धावस्थासँ पहिने–कम होइते अछि। तहूमे चिन्तूओ मास्सैबक आ परिवारोजनक जे दिनचर्या रहलैन ओ बेमारीक रोधक सेहो छैन्हे। तँए जँ कहियो कोनो मौसमी छोट-मोट बेमारी होइतो छैन तँ ओहुना माने बिनु इलाजोक वा अपन घरेलू इलाज–जेना सरदीमे तुलसी-पातक करहा–सँ वा छोट-मोट डाक्टरी इलाजसँ ठीक भऽ जाइ छैन, तँए बेमारीक ओइ रूप दिस नजरियो नहियेँ गेलैन जे भारी बेमारीक केहेन-केहेन भयंकर रूप होइए। जे रूप देख परिवारोजन आ समाजो भगवानसँ प्रार्थना करए लगै छैथ जे 'हे भगवान! ऐ जिनगीसँ मरबे नीक, तँए धरतीसँ उठा लियौन..!'

जहिना बेमारीक चपेटमे चिन्तू मास्सैब अखन तकक जिनगीमे कहियो नइ पड़ल छला तहिना पढ़ाइयो-लिखाइमे नहियेँ पड़ल छला। तहूमे बीस बर्ख पूर्व अपने पढ़ने छला, जइसँ आजुक पढ़ाइ-लिखाइसँ सोलहन्नी अनभुआर तँ नहि, मुदा अनभुआरो नइ छला सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अनभुआरो-अनभुआरमे अन्तर अछिए। अन्तर ई जे दोसरकेँ देखलो पछाइत आ गप-सप्पक क्रममे बुझबो-सुझब, मुदा बेवहारिक रूपमे नइ केलहा अनभुआर आ दोसर ओ भेल जे ओहू दुनूसँ अनभुआर रहल। माने ई जे छोट-मोट वा सीमित जिनगी रहने ने दोसरकेँ देखबे करैत आ ने गप-सप्पसँ बुझबे करैत। चिन्तू मास्सैब ऐ दुनू कारणसँ अलग अनभुआर छैथ। अलग ई जे अपनो तँ एम.ए. तक पढ़नहि छैथ। मुदा तइमे भेलैन ई जे एक तँ नवकबरिये लोक छला, दोसर पिताक जुमौल खर्च रहैन, तँए खर्चपर धियाने ने गेलैन। मुदा पढ़ाइपर धियान रहने नीक जकाँ एम.ए. पास तँ कैये नेने छला। तीस हजारक नोकरियो भाइये गेलैन जे महिने-महिने बैंकसँ दरमहो भेटते छैन, तँए कहियो एहेन भेबे ने केलैन जे पाइ दुआरे काज मारल गेल होइन। तेतबे नहि, अपनोसँ प्लेन पेपर जकाँ मास्सैबक पत्नी–मनमोहनी–क जिनगी रहलैन। अपन खेतक परियाप्त उपजा, खाली

कोठीसँ चाउर-दालि निकालि-निकालि मनमोहनी भानस करैत रहली आ बजारक चाह पत्ती-चिनीसँ चाह बनबैत रहली, तँए मनमोहनी किए कहियो ई बुझितैथ जे बिनु दूधोक चाह बनै छै आकि चिन्नीक बदला नूनोसँ लोक काज चलबैए वा बिनु चाह पीनहुँ जिनगी जीबैए।

जहिना पढ़ाइ-लिखाइ आ बर-बेमारीक बेवहारिक पक्षक बोध दुनू परानी चिन्तू मास्सैबकेँ नहि छेलैन तहिना परिवारिक काजक सेहो नहियेँ छेलैन। पिताक अछैत माए मरलैन जइमे सभ क्रिया-कर्म पिते सम्हारने रहैन, अपने खाली माइक मुखाग्निक संग गरदेनमे उतरीटा नेने रहैथ, कहैले तँ एकभुक्त करैत रहैथ मुदा सबेरमे जलखैयो करिते छला आ चाहो पीबते छला। तहिना पितो बेरमे भेलैन, अपने मुखाग्नि दए उत्तरी लेलैन आ बाँकी क्रिया-कर्मक गारजनी मामा सम्हारि देने रहथिन। अपने तँ परिवारक ओहन भारी काज रहितो जे तेरहे दिनमे सम्हारए पड़ैए, जइमे काजक धुमसाही भाइये जाइए, तहूमे काजसँ अलग भऽ भरि दिन गरूड़-पुराण पढ़बो करैथ आ सुनबो करैथ, तहीमे समै कटि गेलैन। ओना, खर्च अपने भेल रहैन जे बैंकक हिसाबमे छेलैन तँए ठौर-ठेकान लगले बिसैर गेला। बिसरबो केना ने करितैथ। मासे-मासे तीस हजारक आमदनी रहबे करैन।

दरबज्जापर बैसल चिन्तू मास्सैब हाक दैत मनमोहिनी आ बेटी कामिनीकेँ शोर पाड़लैन। सभ अँगनेमे रहैथ तँए लगले दुनू गोरे लग आबि गेलैन। अबिते पत्नीकेँ कहलखिन-

"ऐबेर कामिनी मैट्रिक पास करबे करत। पढ़ैमे नीक अछिए। कोनो विषय एहेन छइहे नहि जइमे मिसियो भरि शंका फेल करैक छै, तँए आगूक पढ़ाइक विचार पुछब अछि।"

बेटीकेँ आगूक पढ़ाइ सुनि मनमोहिनीक मनमे मोहैन चललैन। मोहैन चलिते मनमे रंग-रंगक विचार जहिना सभ माएकेँ जगैत तहिना

मनमोहनीकेँ सेहो जगए लगलैन। जगिते बजली-

"लड़का-लड़की मिला गाममे पनरह गोरे मैट्रिकमे अछि, तइमे अहीं कहू जे हमर बेटी केकरासँ कम चन्सगर अछि। जँ एहेन बेटीकेँ चान्स नहि भेटौ तँ केहेनकेँ भेटउ।"

ओना चिन्तू मास्सैब पत्नीक आगूमे पुरुख पात्र छैथ, मुदा मनमोहनीक जे तर्क भेल ओ चिन्तू मास्सैबकेँ मोहि लेलकैन। मोहैक कारण भेलैन जे सचमुच स्कूलमे कामनी नीक विद्यार्थी अछिए। अहीमे सँ ने जे जेहेन अछि–माने पढ़ैयो-लिखैमे आ आर्थिक दृष्टिसँ सेहो–ओ ओहेन बनबे करत। ओना एम.ए. पास चिन्तू मास्सैब छैथ, मुदा जहियासँ कौलेज छोड़लैन तहियासँ ने एको पाइक किताब कीनि पढ़लैन आ ने समैयेक बचत होनि जे विचारवान लग बैस जिनगीक विचार करितैथ। कौलेजसँ टटका पढ़ि कऽ निकलले छला, हाइ स्कूलक किताब पान-सात साल पहिनहि पढ़ि चुकल छला, तँए ढलानपर जहिना निच्चाँ मुहेँ गाड़ी ढलकैए, जे बिना तेलो-मोबिलक अपना गतिसँ बेसी जोरसँ चलिते अछि, सएह बुझैमे चिन्तू मास्सैब हूसि गेला। हूसि ई गेला जे पैछला इतिहास तँ धियानमे रहलैन जे फल्लाँ साधारण परिवारसँ निकैल अपन उपार्जन करैत नीक डिग्री हाँसिल केलैन, मुदा भविस आ वर्तमानक परिस्थिति नहि आँकि सकला। ई नहि आँकि सकला जे प्रतिभा आइक प्रतियोगितामे पिछैड़ रहल अछि...। चिन्तू मास्सैब बजला-

"अहाँक तँ दीब विचार अछि, जे अपनो मन कहैए।"

माता-पिताक विचार सुनि कामिनीकेँ अपन प्रकाशित भविस सोझमे एलइ। अपन उज्वल भविस, चाहे ओ काल्पनिक हौउ आकि वास्तविक, मुदा केकरा अधला लगै छै जे कामिनीकेँ लगैत। मन कलैश गेलइ। कलैशते जेना कामिनीकेँ मनसँ मुस्कुराहटक अवाज

फुटए लगलै मुदा मुहसँ निकललै नहि। ओना, बोलीक रूपमे मुहसँ नहि फुटलै मुदा चेहराक रंग-रूपमे जरूर फुटि गेलइ।

लहलहाइत बेटीकक चेहरा देख मनमोहिनीक मन भँसिया गेलैन। ओना अपना नइ बुझि पड़लैन जे हम भँसिया रहल छी, बिहुसैत बजली-

"अपना दुनू गोरे तँ माए-बाप भेलिऐ, बड़ करबै तँ पढ़ाइक खर्चक पुरती करबै मुदा पढ़ाइक पुरती तँ कामिनी अपने ने करत। तँए नीक हएत जे लगेमे कामिनी बैस सभ बात सुनबे केलक। अपन निर्णय अपने करह।"

पत्नीक विचार चिन्तू मास्सैबकेँ मिसियो भरि अधला नइ लगलैन। पत्नीक विचारमे भँसियाइत बजला-

"बेस तँ विचार अछि। बाजह कामिनी अपने मुहेँ जे माए-बापक विचार केतो अधला बुझि पड़ै छइ।"

तीन मास पहिने कामिनी मात्रिकसँ नानीक सेवा कऽ आएल छल। माने ई जे नानीक टाँग टुटि गेल छेलैन। ओसारपर पीढ़ियामे तेना ठेँस लगि गेल छेलैन जइसँ खसि पड़ली। दहिना पैरक घुट्ठीक कील छिटैक गेल छेलैन, जइ दुआरे दरभंगा डाक्टर ऐठाम जाए पड़ल छेलैन। ओही इलाजक दौड़मे कामिनी सेहो दरभंगा गेल छल। दुनू परानी डाक्टर रहने दुनू रंगक रोगीक पहुँच डाक्टर ऐठाम रहबे करैन। नवतुरिया बच्चा कामिनी, दुनू परानी डाक्टर, कामिनीकेँ बच्चा बुझि लगेमे बैसा रोगियो देखैत आ इलाजो करिते रहैथ। जइसँ कामिनीकेँ कोनो काज उकड़ू नहियेँ बुझि पड़इ। तैसंग आमदनी सेहो देखने रहए। साओन मासक बरखा जकाँ पाइ झहरैत। हिया कऽ कामिनी डाक्टरकेँ देखलक तँ बुझि पड़लै जे हमहूँ पढ़ि कऽ डाक्टर बनि खुशहाली जिनगी जीब सकै छी। जे कामिनीक मनमे गड़ि गेल छल।

ओना, जहिना पहाड़क जलधार हौउ आकि मेघक जलधार, ओ जखन निकलैए तखन थोड़े कोनो धारक नाओं आकि सरोवर-डबराक रहैए ओ तँ आगू बढ़ला पछाइत होइए तहिना कामिनीक चेतनशक्ति सेहो छेलैहे...। बाजल-

"बाबू, माता-पिताक आसिरवचन बेटा-बेटीकेँ सहज स्वीकार कए लेबाक चाही। जँ अपने दुनू गोरेक एकमुहरी विचार अछि तँ तेही मुहेँ कहै छी। हम डाक्टरी पढ़ब।"

एक तँ ओहुना लोकक एहेन धारणा बनियेँ गेल अछि जे डाक्टरी सभसँ नीक पढ़ब छी। ओना अनेको किस्मक डाक्टरी ज्ञान अछि, से अखन नहि। अखन मनुखक चिकित्सक रूपमे डाक्टर।

कामिनीक मुहसँ विचार खसिते जहिना मनमोहिनी तहिना चिन्तू मास्सैब सेहो ऊपरे लोकि लेलैन। जइसँ जेते खुशी कामिनीक हृदयमे छल तइसँ केते गुणा बेसी दुनू परानी–माता-पिताक–मनकेँ मोहित कए लेलकैन। नोकरीक तीस हजार दरमाहा सोझेमे रहैन तँए पढ़ैक खर्चपर नजैर किए जइतैन। भस्मासूर जकाँ दुनू परानी आसिरवचन दइले मुँह खोलैसँ पहिने एक-दोसरक मुँह दिस तकलैन जे पहिने के बाजब।

अही गुन-धुनमे दुनू परानी–चिन्तू मास्सैब–रहबे करैथ कि तैबीच विवेक बाबू पहुँचला।

विवेक बाबू सेहो हाइये स्कूलमे चिन्तू मास्सैबक संग नोकरी करै छैथ। शिक्षक छैथ। ओना, विवेक बाबू चिन्तू मास्सैबसँ उमेरोमे जेठ आ दू साल पहिने एम.ए. सेहो केने रहैथ।

विवेक बाबूकेँ एला पछाइतो मनमोहिनीक मनमे जेठ-छोटक विचार नइ जगलैन। विचार नइ जगैक कारण छेलैन जे ममियौत भाइक अनेमे विवेक बाबू लगै छेलखिन। बच्चेसँ मात्रिक एने-गेने

मनमोहिनी निधोख छथिए।

अबिते विवेक बाबू देखलैन जे परिवारमे खुशीक लहैर दौड़ रहल अछि, किछु बात जरूर अछि। मनमे खुशीक कारण बुझैक जिज्ञासा जगिते रहैन। मुदा मनेमे असथिर चित रहने उठलैन जे जहिना सोग-पीड़ा केकरो छिपौने नइ छिपैए तहिना ने खुशियो-खुशियाइए जाइए। ओना, जिनगी परखैक तीक्ष्ण नजैर विवेक बाबूक तँए जिनगियो तँ हँसी-ठठा नहियेँ छी जे एकबेर कहि देबै जे- जोगिरा सर्र-र्-र्...। आ जोरसँ हँसि देबै तइसँ जिनगी हँसै-जोकर भऽ जाएत, एहेन बुझब बचपना भेल। ओना विवेक बाबूक परिवार चिन्तूए मास्सैब जकाँ छैन। हुनको दू लड़की आ दू लड़का छैन। मुदा जहिना कियो ज्योतिषी अपन जीवन रेखा देख अपन भविस गुनि लइ छैथ तहिना विवेको बाबूक स्पष्ट सोच छेलैन।

स्पष्ट सोच ई जे आइक परिवेशमे हमरा सन लोककेँ जिनगी बोझिल बनबैक बेवस्थामे पाछू धकेल रहल अछि। जेते बात (विषय) बुझैले पहिने महिना दिन किताब धाँगए पड़ैत तैठाम मशीनी युग भेने आइ घन्टा-सकेण्डक खेल बनि गेल अछि। तैठाम अपने ने विचाराए पड़त जे अपन की ओकाइत अछि। हाइ स्कूलक शिक्षक छी, जँ बेटा-बेटी प्रोफेसर बनि जाए, वा कोनो बेवसायी बनि जाए आकि अपन जिगनी समयानुकूल चलबैक लूरि भऽ जाइ तँ वएह भेल जिनगी आ परिवारकेँ आगू बढ़ब। तैठाम जँ तहूँसँ आगूक घाटसँ हेलए चाहै छी तँ एक नजैर विचार केला पछाइत हेलब।

एक तँ भैयारीक अनेमे विवेक बाबू, दोसर चिन्तू मास्सैब सन पति जिनकर 'गनल कुटिया नापल झोर' सन जिनगी छैन जे भरि दिन विद्यालयक नोकरीक भाँजमे रहै छैथ, तीस हजार पबै छैथ। ने कहियो नूनक दुख होइ छैन आ ने तेलक। तैठाम जेहने चिन्तू मास्सैब बुझैमे

अगिया-बताल छैथ, तेहने पत्नियोँ छथिन। एक तँ भैयारीक सम्बन्ध विवेक बाबूक संग मनमोहनीक अछि तैपर बेटीमे डक्टरक रूप देखैत तँए बजैले मनमोहिनीक मन उबियाइते रहैन। बजली-

"भैया, अहाँक भगिनी डाक्टर बनत, से असिरवाद दियौ।"

बहिनक बात सुनि विवेक बाबूक विचारमे जोरक धक्का लगलैन। मन कहलकैन- मुहसँ असिरवाद देने जँ होइत तँ केकरा के असिरवाद नइ दइए, तखन होइ किए ने छइ? विवेक बाबू बजला तँ किछु नहि मुदा मुस्किया जरूर लगला। खुशीसँ मुस्कियेला कि हँसीसँ मुस्कियेला से तँ विवेक बाबू जनता कि चिन्तू मास्सैब आकि मनमोहिनी बहिन जनथिन, मुदा वातावरणमे थोड़ेक नरमी जरूर आएल।

वातावरणमे नरमी अबिते चिन्तू मास्सैब पत्नीकेँ कहलखिन-

"विवेक भाय अहींटाक भाए नहि छैथ, जे चाह नहियोँ पीएबैन तँ बहिन बुझि केतौ लोक लग नइ बजता।"

खग जानए खगक भाषा, एक तँ मनमोहिनीक मन बेटीकेँ डाक्टरक रूपमे सीकपर टँगल रहबे करैन तैपर भाइक असिरवाद सेहो लेब छैन किने, तँए मनमे चाहक बदला कॉफी नहि उपकैन सेहो केहेन हएत। तैयो मनमोहनी चाहे बनबए विदा भेली। जहिना चिन्तू मास्सैब विवेक बाबूक विचार सुनैले कान पथलैन तहिना विवेक बाबू चिन्तू मास्सैबक मुहसँ कामिनीक विषयमे सुनए चाहै छला। किएक तँ अखन तक मौगी-मेहरिक बात मनमे नचै छेलैन। नचबो केना ने करितैन, एक तँ सहकर्मी चिन्तू मास्सैब छथिन, दोसर एम.ए. पास सेहो छथिए, तँए विवेक बाबूक अपन मन केना मानितैन जे हम जे बुझै छी से चिन्तू मास्सैब नइ बुझै छैथ। अही द्वन्द्वमे दुनू गोरे लटकल छला। मुदा दू गोरेक बीच जखन गुमा-गुमी पसैर जाइत अछि तँ

वातावरणमे किछु मोड़ अबिते अछि।

वातावरणमे मोड़ अबिते चिन्तू मास्सैब बजला-

"भाय साहैब, ऐ साल पाँच हजारक बढ़ोत्तरी शिक्षकक जिनगीमे भारी उछाल आनत।"

ओना, चिन्तू मास्सैब पाशा बदैल बाजल छला, मुदा विवेक बाबू पाशा पैसैकेँ रहलैन। तँए बहटारैत बजला-

"सरकारक बात अखन अखबारेमे आएल अछि, सहर-जमीनपर अबैत-अबैत केते दिन लागत आकि नहियेँ औत, तेकर कोनो ठेकान अछि।"

तही बीच मनमोहिनी चाह नेने पहुँचली। आगूक विचारकेँ जहिना चिन्तू मास्सैब रोकलैन तहिना विवेक बाबू सेहो रोकला। मुदा लगले विवेक बाबूक विचारमे मन धक्का मारलकैन। धक्का ई मारलकैन जे जहिना लगक लोक चिन्तू बाबू छैथ तहिना मनमोहिनी बहिन सेहो छी, आगू दिन जँ कोनो संकटमे फँसता तँ लगक लोक रहने पहिने हमरे ने कहता। तँए परिवारक जे दशा-दिशा अछि ओ अपने जे बुझै छी से जरूर कहबैन। भऽ सकैए जे हमर विचार प्रतिकूले भऽ जाइन। तइले तँ बड़ भारी जवाबदेहियो तँ नहियेँ रहत, कहबैन जे ओइ दिन जे बुझै छेलौं तइ अनुकूल बाजल छेलौं, आइ ओइसँ आगू बुझै छी...।

विचार उठैत-उठैत विवेक बाबूक मन मानि गेलैन जे अपन विचार जरूर दुनू गोरेक बीच रखि दिऐन, भलेँ तीत लगैन आकि मीठ...।

तैबीच तीन-चारि घोंट चाह पीब नेने छला। मनमोहिनी से कान ठाढ़ केने जे भैया थोड़े गड़बड़ असिरवाद कामिनीकेँ देथिन।

शान्तचित्तसँ विवेक बाबू बजला-

"बहिन, केकरा नइ मनमे रहै छै जे परिवार आगू नहि बढ़ए मुदा ओ रब्बड़क बैलून नइ ने छी जे हवा भरि अकासमे उड़ा देबइ। विवेकशील मनुखक डेग तँ अपन पाछूसँ अबैत जिनगीकेँ अँकैत ने आगू उठत।"

ओना, विवेक बाबूक विचारकेँ मनमोहिनी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा अधा-छिधा चिन्तू मास्सैब जरूर बुझलैन। ओना मनमोहिनीक मनमे उठए लगलैन जे ई केहेन हएत जे भैयाकेँ कहबैन अहाँक बात नइ बुझलौं! तँए मनमोहिनी चुपे रहब नीक बुझली। पत्नीकेँ चुप देख चिन्तू मास्सैब बजला-

"भाय साहैब, तेहेन अलंकारमे अपने बजलिऐ जे बहिन बुझने हेती कि नहि। असल तँ हुनका ने बुझाएब अछि। बेटाक बात रहैत तँ कनी जोरो करितौं मुदा बेटीक बात छी किने। ओ तँ माइयेक ने...।"

चिन्तू मास्सैब जइ हिसाबे बाजल होथि मुदा विवेक बाबू अपना हिसाबे बजला-

"बहिन, बेटीक प्रश्न अछि, तँए आइक परिवेश की अछि से कहै छिअ। कामिनी डाक्टरी पढ़त नीक बात, नीक विद्यार्थी अछिए, मुदा आइक परिवेशमे बेटी पैघ समस्या बनि गेल अछि।"

'पैघ समस्या' सुनिते मनमोहिनी चौंकैत बजली-

"से की?"

बहिनक जिज्ञासा देख विवेक बाबूक मनमे चैनक हवा लगलैन। बजला-

"बहिन, एक तँ अपना सन-सन परिवारमे डाक्टरी शिक्षा ओकाइत सँ बहार अछि। जइ हिसाबक खर्च अछि आ जे समाजिक रूप-रेखा बनि गेल अछि तइमे बेटीकेँ डाक्टर बनब आरो बोझिल...।"

बिच्चेमे मनमोहिनी बजली-

"से की?"

बहिनक बढ़ैत जिज्ञासा देख विवेक बाबूक मनमे उठलैन जे नीक हएत, एक-एक प्रश्नपर दुनू परानीक विचार लइत चली...।

बजला-

"बहिन, जन्मसँ लऽ कऽ जाधैर बेटीक बिआह होइए ताधैरिक भारी बोझ माए-बापक कपारपर ऐछे किने?"

मनमोहिनी-

"से तँ अछि, मुदा बुझलौं नहि।"

विवेक बाबू-

"जेते खर्च आ मेहनत बेटीकेँ डाक्टर बनबैमे लगेबह, से समाज बुझतह? जेते पढ़ैमे खर्च हेतह तइसँ बेसी बिआहमे दहेज सेहो लगतह। अहू विचारपर ने नजैर राखए पड़तह।"

मनमोहिनी ठमैक गेली, मुदा चिन्तू मास्सैबक मन अखनो पत्नीक विचारमे लटकले छेलैन। बजला-

"कनी सोझरा कऽ बजियौ ने।"

विवेक बाबू-

"बेकती आ परिवार-ले मूल-भूत जे खगता अछि, ओइ सभपर नजैर रखक चाही। जँ से नहि रहत तँ कखनो ढनमना जाएत आ भाग्य-तकदीरकेँ कोसए लगबै। परिवारमे चारिटा बच्चा अछि, चारूक लेल अपन ओहन सोच बनाउ, जइसँ बेटा-बेटीक आगू भविसमे दोखी नइ बनी।"

◌

शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742
मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

`251

ISBN : 978-81-936422-3-8

कथा साहित्य

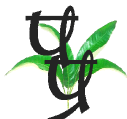
शुभचिन्तक

जगदीश प्रसाद मण्डल



शुभचिन्तक

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि
दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...
तैठाम देखिनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बनियेँ जाइ छै..!

⁖

कथाक सत्तैर

ISBN : 978-81-936422-6-9

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

SHUBHCHINTAK
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

शुभचिन्तक

खुशीलाल भाइक मुँहक रूप ओहन बुझि पड़ल जेना अस्सी मनसँ ऊपरे अछियाक मुरदा जकाँ लदाएल होइन। ओसारक ओरिआनीक चौकीपर चद्दैर ओढ़ि पड़ल रहैथ, आधा मुँह उघारने रहैथ आ आधासँ कनी बेसी झँपने छला, मुदा आँखि आ चाइन सोलहन्नी उघारे रहैन।

ओना एके-गामक एक समाजक बीच सेहो छीहे, मुदा जेहेन सम्बन्ध मनुख-मनुखक बीच हेबा चाही से नइ रहने भीतरिया सम्बन्ध खुशीलाल भाइसँ नहियेँ अछि, मुदा एक-ठाम रहने सदिकाल झगड़ो करब सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। जिनगीमे काज करैले समए चाही से जँ गप-सप्प आकि झगड़ा-झाँटीमे चैल जाएत, तखन तँ जिनगी आरो ओझरा जाइए। जहिना डोराक पुलियामे डोरा ओझराइए तहिना ने विचारमे बुधियो ओझरा जाइए, तहिना हुअ लगल, मुदा हाँइ-हाँइ–के मनकेँ धोपलौं। माने असथिर करैत ऐ सीमापर अनलौं जेतए लोक अपन जिनगीक दैनंदिनक क्रिया अपन परिस्थितिये करैत नियम बनौने रहैए, जइ बीच समैक विशेष भाग कटि जाइए, तइसँ आगू बढ़ैत समाजमे ने काजक[1] दिशामे कनी-मनी तोड़-जोड़ होइए तइले सदिकाल मुहोँ फुला-फुली नीक नहियेँ। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे

[1] उन्नैतक

खास-खास विचारक खास-खास सम्बन्धो तँ होइते अछि। ओना आइक जुगमे केकरा एते फुरसत छै जे मामा-नाना आकि दादा-परदादाक समए-सालक चाल-चूल बुझत। बुझले बात छै जे मुइलापर भोजो करैले तँ पाइये चाही तही पाछू ने बेहाल अछि, यएह तँ भेल अखुनका लोक, मुदा अही लोकक बीचमे ने 'सतलोको' अछि, 'मनलोको' अछि, 'परलोको' अछि आ तैसंग 'भुतलोको' तँ अछिए। एतबे किए, आरो केतेको लोक अछि जेना– 'मृत्युलोक', 'जीवितलोक' आदि-आदि...।

जिनगी अही सीमापर ने बेकतीगत आचार-विचार समाजक आचार-विचारमे बदलैए। अही बदलैक मोड़पर जिनगी जिनगीक बीच कट-कूट सेहो होइए आ यएह कूट कखनो पहाड़ बनि जाइए तँ कखनो कूटम[2] बनि जाइए...।

भिनसुरके समए रहै, भोरका चाह पीबैत रही कि पत्नी छमकैत लगमे आबि बजली–

"खुशीलाल भैया ने मरै छैथ आ ने जीबै छैथ, हुकुर-हुकुर करै छैथ।"

भिनसुरका समए, शान्त वातावरणमे चिन्तो शान्त रहबे करए, पत्नीक शब्दवाण सोझे कानक कनगोजकेँ छेदैत बेध देलक। मन हलचला गेल। हाइ रे बा! कौआ जकाँ पत्नी की बीचमे आबि कड़कड़ा गेली? मुदा लगले मन पत्नीक बातक बिसवासपर पहुँचल। ओना केते झूठ आकि केते सत् बजै छैथ से तँ ओ जानैथ, मुदा हम चारियोअनासँ कम बिसवास करै छिऐन, एकर माने ई नै बुझब जे ओ बड़ झूठी छैथ। छैथ ई जे कोनो बातोकेँ आ कोनो काजोकेँ तेना ने मुँह-कान गढ़े छैथ जे गोटेकेँ मुँह नमहर बना नाङैर कपैच लइ छथिन तँ कोनोकेँ

[2] छल

नाङैर मोट बना मुँह कपैच लइ छथिन। तेकरे कपचैत बनबैत सुढ़ियबैत-सुढ़ियबैत गोटे चौअनियोँसँ कम भऽ जाइए तँ गोटे अठन्नी भरि रहैए, तँए बीचक सीमा चौअन्नी रखने छी।

मने-मन पत्नीक बातकेँ औंटए-पौड़ए लगलौं। औंटै-पौड़ैमे कनी समए लगबे करै छै किने, से लगैत रहए। मनमे ईहो हुअए जे कहुना छैथ तँ शिक्षकक बेटी छैथ, अलंकार सुनने-पढ़ने हेबे करती तँए बजैमे कनी कम-बेसी हएब सोभाविके छइ। मन मानि गेल जे अलंकार शास्त्र पढ़निहार ओकील थोड़े हएत, ओ तँ करामाती कलाकारे ने भऽ सकैए...।

सोच-विचार कैरते रही कि बिच्चेमे पत्नी फेर टभकए चाहली। दस मिनट पहिलुका सुनल समाचार रहैन तँए मनमे घुरघुराइत रहैन। दोहरा कऽ बजली–

"भैयाक टीक उखैड़ गेलैन!"

पत्नीक बात मारूख जकाँ बुझि पड़ए। मुदा डर ईहो हुअए जे अखन पत्नीक मन उड़ियाएल-पुड़ियाएल छैन, ऐ बीचमे जँ किछु बाजब आ ओ चिल्होरि आकि बाझ जकाँ लपैक लेती, तखन तँ अनेरे बाता-बाती बढ़त। तइसँ नीक जे चुपे-चाप सुनैत रही। मनमे ई हुअए जे कोनो एकेटा समाचारक ने उमकी हेतैन, बड़ बेसी तँ जेठ मासक पोखैरक उमक जकाँ दस मिनट रहत। चाहे पीबैकेँ कनी नमरा लेब। जखन मुँहमे चाह रहत तखन मुँह बजबे की करत, तँए एते तँ गर अछिए। तँए कान पत्नी दिस पाथि निच्चाँ मुहेँ चाहो पीबए लगलौं आ पत्नीक बातकेँ औंटौ-पौड़ौ लगलौं। आ गोटे-गोटे बेर आँखि उठा पत्नियोँपर दिऐन तँ बुझि पड़ए जे बजैक सनमनी अखनो ओहिना जगजगार छैन्हे। तँए आरो मुँह दाबि-दाबि चाह पीबैत रही।

तेहरा कऽ पत्नी बजली–

"सभ छिनरपना घोंसैर गेलैन।"

मने-मन जखन पत्नीक भाषाकेँ अँकलौं तँ बुझि पड़ल जे अखनो चढ़ंत मन छैन्हे। बीचमे बाजब कौआसँ खैर लुटाएब हएत। अनेरे अनकर घेघ, आभूषण बुझि, अपना गरदैनमे लटका लेब! यएह ने अखन होइए जे पत्नी झझकारि-झझकारि बाजि रहल छैथ आ हमरा सन पुरुखक झड़ गजर-गजर सुनि रहल अछि। मुदा भाय अहीं कहू जे हाल-चालक जड़ि बुझबे ने केलौं आ घरेमे झगड़ा बेसाहि कऽ लऽ आनी तँ वएह ने जलखैयो बेर आ कलौओ बेर खाएब? तइसँ नीक ने चुप रहब हएत! भाय, दुनियाँ जनैए जे महिलाकेँ बराबरीक अधिकार भेटक चाही तैठाम पत्नीक भावनाकेँ सोलहन्नी मेटा देब, सेहो तँ उचित नहियेँ अछि, बर-बेसी हएत तँ एतबे ने हएत जे सोनारक आभूषण कहि कखनो रूपकेँ रूपक अलंकार बना देती तँ कखनो भुजंग कहि भुजंग प्रयात छन्द कहि देती...।

अग-दिगमे भोरे-भोर तेना मन ओझरा गेल जे किछु फुरबे ने करए। घरक बेसाहल झगड़ा भरि दिन लधाइते रहैए, तँए झग्गरमुँह घरसँ निकलब दिगशूल भेल, मुदा तइ दिगशूलमे एकटा आरो दिगशूल ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ ई भेल जे घरसँ निकैल नइ जाएब तँ पत्नीक रूखि गड़बड़ बुझि पड़ैए। हो-न-हो खुशीलाल भाय दिसक हवा अपने दिस ने चैल आबए। घरसँ निकलै दिससँ जखन मन घुरल तँ विचार उठल जे पत्नी जे 'छिनरपन' बजली तेकर माने की भेल? ओना सबदिना जिनगी एकठाम रहने पत्नीक बात बुझि जाइ छी, मुदा जखन पिताक शैलीमे बजै छैथ तखन भुतिया लगै छी। छिनरपन तँ उ ने भेल जे केकरो इज्जत-आवरू छीनए चाहैए। मुदा एतबे तँ नइ भेल, ईहो तँ भेबे कएल जे कियो केकरो धन-सम्पैतक छीनताइ करैए। ओना खुशीलाल भाइक जे करनी-धरनी छैन तइमे दुनू माने बैस जाए।

किछु काल पत्नीक गंजनक पछाइत मनमे भेल जे से नइ तँ खुशीलाले भाय ऐठाम जा नीक जकाँ सभ बात बुझि, पत्नीक विचारक संग मुँह-मिलानी कऽ लेब। भाय परिवार छिऐ किने, विचारक सामंजससँ ने चलत। जाबे विचारक सामंजस नइ हएत ताबे गति-विधिमे थोड़े सामंजस हएत। मुदा घटनाक पछाइत जे जिगेसा होइए ओहो तँ दू रंगिया अछि। कोनो शुभ तँ कोनो अशुभ, माने कोनो नीक तँ कोनो अधला। जइ ढंगे पत्नी बाजि रहल छैथ, तइ हिसाबे जाएब नीक नइ बुझि पड़ैए। तहूमे ओहो बुझै छैथ जे हमहूँ अपन किछु बात पेटमे रखि-जोगा अपनो खुशीलाल भाय लग बजै छी आ खुशीलालो भाय बजै छैथ। गंगा धारक बाढ़ि जकाँ नइ ने नीचाँ-ऊपर सरपट करैत झलकैए। हँ! जैठाम एकबट्ट झलकैए तहूठाम तीत-मीठ फलो आ विचारोक अँटावेश भाइये जाइए। मुदा से तँ खुशीलाल भाइक संग नइए। जखने चेहरापर नजैर पड़तैन कि मन कहि देतैन, कटलपर नोन दइले पहुँच गेल..!

जाइ आकि नइ जाइ, तइ असमनजसमे उठैक मने ने हुअए मुदा तइसँ एकटा भेल जे पत्नीक तामस ऐ दुआरे कमि गेलैन जे मनमे हुअ लगल रहैन जे हमरे बातक चोटसँ बेदम भेल छैथ। फेर जे कोनो घटना भेल जगहपर नइ जाएब कायरता भेल। खुशीलाल भायकेँ जेतए जे भेल होइन, मुदा हमर जे सम्बन्ध अछि तइमे केतौ काट-खोंट कहाँ अछि, तखन जाइसँ किए मुँह मोड़ब..?

फेर हुअए जे जँ ओइठाम जाइ आ ओकर अर्थ जँ दोसरकेँ ई लगै जे दुनू सीखा-बुधी करैए। तखन तँ भेल अधलाक संग देब। ओना नीक-अधला दुनू होइए; जेकर लक्षण हवामे उड़ै छइ। नीकक नीक आ अधलाक अधला। मुदा एकाएक मनमे भेल जे खुशीलाल भाय ऐठाम, टेङारी मंगैक बहन्ने जाइमे कोनो बाधा नइ अछि। सभ दिन सभ देखबो करैए आ काज एलापर हुनके टेङारीसँ काजो करै छी।

संजोगो नीक बैसल। जेहने झमारल बोल पत्नी पहिने बाजल छेली तेहने झुमैत फेर बजली–

“घरमे बैसने काज चलत। पुरुख-पातर छी, घरसँ निकैल दुनियाँ देखब आकि घरेमे घोंसियाएल रहब..?”

कहि अपन अँगनाक काजमे लगि गेली। अपनो नमहर साँस छुटल। मन हल्लुक भेल।

ओना ओ अँगनाक काजक बहन्ने काज करए लगली, मुदा मन रहैन हमरेपर। किए तँ देखिऐन जे पाछू उनैट-उनैट हमरा दिस तकै छैथ। मुदा की कैरतौं, हारल-मारल बटोही जकाँ उठि कऽ ठाढ़ भेलौं। जखन ठाढ़ होइत रही कि तही काल पत्नी उनैट कऽ फेर तकली। जोग कहियौ कि संजोग, हमरो आँखि ओम्हरे घुमल रहए, दुनू गोरेक नजैर-मिलान भऽ गेल। भाइ! किछु छी तँ पुरुख छी किने, नजैर मिलान होइते जेना खुशी आबि खुशिया देलकैन तहिना खुशियाइते बजली–

“पुरुख छी ते पुरुखारथ जगाउ। गाम-समाजक जे कोनो तीत-मीठ घटना होइए ओकरा बुझब अहूँक दायित्व होइए। अपन दायित्व निमाहबे पुरुखपनाक पुरुखारथ भेल।”

एक तँ ओहिना पत्नीक झमार सुनि मन पानि-पानि भेले रहए तैपर तेहेन रंग घोरि देलैन जे मने रंगा गेल। उत्साह जगल। आँगनसँ निकैल दरबज्जापर एलौं आ हिया कऽ तकलौं तँ बुझि पड़ल जे कियो केतौ ने अछि। मुदा ‘असगर तँ वरस्पैतो फूइस।’ जखन कि ‘जमात करए करामात...।’

फेर भेल जे घरसँ असगरे ने निकलै छी, मुदा रस्ता-बाटमे केतेको भेटत, नइ तँ अपन पड़ोसियाकेँ डेढ़ियापर सँ शोर पाड़ि पुछबैन जे भाय, पत्नी अन्ट-सन्ट किदैन-कहाँ बाजि-बाजि उपराग दइ छेली, से गाममे किछ भेल अछि की। अनेरे तँ ओ किछु बजबे करता,

जँ किछु कहता तँ बुझि लेब, नइ किछु कहता तँ कहबैन टेङारी-ले खुशीलाल भाय ओतए जाइ छी, जँ किछु भनक लागत तँ अहूँकेँ कहने जाएब...।

मन मानि गेल जे रस्ता चिक्कन बुझि पड़ैए। मुदा लगले ईहो हुअ लगल जे तीर्थस्थानक पोखैरक घाट बड़ चिक्कन होइ छइ, मुदा नहेलहा देहक पानिसँ ओहो भीज कऽ पीछराह भाइये जाइए...।

फेर भेल जे अपनाकेँ एते बड़का कलामी किए बुझै छी जे जाएब तँ अपन इज्जत बेरवाद भऽ जाएत! जँ सोझा-सोझी बात बुझैक अछि तँ सुहरदे-मुहेँ कहबैन, “भाय, किछ बात सुनलौं हेन?”

..बात कि कोनो काज छी जे काजक चोट लगतैन। बड़ बेसी हेतैन तँ एतबे ने हेतैन जे अनकर दोख देखबैत अपन निरकटुआ कहता, सुनि लेब। जइ काजक बहन्ने जा रहल छी, सएह बहन्ना बनबैत कहबैन–

“भाय साहैब, अखन काजक औगताइ अछि, तेहेन ने डेढ़िया परहक बगुरक गाछ चतैड़ गेल अछि जे रस्ता चलैबला सभ गरियबैत रहै छैथ, तेकरे पाँगब जरूरी भऽ गेल अछि...।”

मनमे हूबा जगल। विदा भेलौं। रस्तापर पएर दइते घोड़थानक घोड़ा जकाँ मन आगू-पाछू करए लगल। करए ई लगल जे जँ कोनो बाते खुशीलाल भाय कहि दैथ जे ‘तों की करबह?’

‘तों की करबह’क एक माने भेल जे ‘तूँ कोन भार उठेबह’ आ दोसर भेल ‘बलउमकी’ जे तोरा बुते की कएल हेतह...।

किछु फुरबे ने करए जे की करी। फेर भेल जे जखन घरसँ निकैल गेलौं, तखन बिनु काज केने घुमबो तँ नीक नहियेँ हएत। की कैरतौं, आगू बढ़लौं।

आगू बैढ़ते खुशीलाल भाय मनमे नाचि उठला। नाच देख

बाहबाही करैक बात सोचिते रही कि बिच्चेमे तुलसी बाबा आबि बजला–

“सबै नचावे राम गोसाई...।”

मुदा तुलसी बाबा लग मन अँटकल नइ, आगू बढ़ि खुशीलाल भाइक खुशीपर पहुँच गेल। ओना ईहो मनमे हुअए जे रामे-धाम ने खुशीक जगह छी, मुदा से नइ, पहुँच ई गेल जे अनका देख हम जनिते छिऐन, काल्हि धरि वएह खुशीलाल भाय गाममे शुभचिन्तक रूपमे पूज छला मुदा एकाएक आइ

अपूज भऽ गेला, से ओहिना थोड़े भेल हेता आकि तइ पाछू कोनो रहस्यमय काजक विचारो छीपल अछि। वएह रहस्य ने रहस्यमयी बनैत रसमय बनि गेल अछि।

बहुरंगी लोक जहिना सभ समाजमे अछि तहिना हमरो गाम-समाजमे खुशीलाल भाय सन नइ छैथ से बात नहियेँ अछि, छैथे। मन आगू बढ़ि खुशीलाल भायपर पहुँचल। भरि दिन खुशिये-खुशीक बीच दिवस गुदस होइ छैन, जेहेन अरामदेह जिनगीक जरूरत अछि से तँ बनौनहि छैथ। अरामो तँ अरामे छी। कियो देहक अरामकेँ अराम बुझै छैथ, कियो मनक अरामकेँ आत्माराम बुझै छैथ...।

मन आगू घुसैक खुशीलाल भाइक जिनगीपर गेल, रजिष्ट्री ऑफिसमे मुंशीगीरी पचीस बर्ख पहिने शुरू केलैन। क्षेत्रक हिसाबसँ रजिष्ट्री ऑफिस बनले अछि। पढ़ै-लिखैमे किछु जातीय समाज अगुआएलो अछि आ पछुआएलो अछि। जइ समाजक खुशीलाल भाय छैथ ओ पछुआएल अछि। खेत-पथारक लिखा-पढ़ी रजिष्ट्रीए ऑफिसमे होइए तँए लिखा-पढ़ीक जगहो छीहे, जेतए क्षेत्रक सभ गामक लोकक बैसारो होइते अछि, तेजगर खुशीलाल भाय बच्चेसँ। ओना मैट्रिकसँ आगू नइ बढ़ि सकला, मुदा बजैमे फड़कोर छैथे।

जेतबे दिन खुशीलाल भायकेँ कागज आ ऑफिस चिन्हैमे देरी लगलैन, तेतबे दिन अपनाकेँ बेरोजगार बुझलैन। मुदा से समए कम्मे दिनक रहल। रंग-रंगक कारोबारक अड्डा मुंशी सबहक ऑफिस छीहे। जहिना आन-आन मुंशीक ऑफिस तहिना खुशीलाल भाइक सेहो छैन्हे। बच्चाकेँ जहिना देहमे गुदगुदी लगौने हँसी, तहिना हाथमे भोज्य पदार्थ एने खुशी सेहो होइत तहिना ने कोनो मधुर बोल कानमे एने मधुरो लगैत, तँए मन खुशी हेबे करैत, तहिना खुशीलाल भाइक खुशीक कारण सेहो अनेको रहैन। मोटा-मोटी कहब जे जहिना ऑफिसमे हाकिमसँ लऽ कऽ चपरासी तकक लेन-देनक हिस्सामे कमसँ कम चौथाइ नइ तँ ऊपर जेते सुतैर जाइ, तहिना अपन लिखाइक रूपमे जँ दुइयोटा दस्तावेज लिखा गेल तँ दू हजार तँ ओकर फीस ओहिना भेल, आ स्टाम्प जे ब्लैकसँ भेटै छइ, ओ ब्लैकमे अपन ब्लैक केते भेल से तँ ब्लैकक बात भेल, ओ ब्लैक-कर्ता जानैथ। ई तँ भेल एक पक्ष। दोसर पक्ष छैन जे गाम-गामक जमीनक खरीद-बिकरीक आमदनी सेहो छैन। ने पाइबला केकरो कहि सकैए जे तूँ खेत बेचह हम कीनब, आ ने बेचिहार सभ लग मुँह खोलि कऽ कहि सकैए जे हम खेत बेचब...। से कहियो केना सकैए। जँ बजबे करत तँ पहिने अपना दियाद-वाद लग ने अपन दुखनामा कहि खेत बेचैक चर्च करत। जइसँ अपना घरक; माने दियाद-वादक, कोठीक चाउर अपने घरक कोठीमे ने जाएत। ई अधले की भेल। मुदा एना हुअए तब ने, होइ तँ अछि खेत कीननिहारक बीच मोछक भीरानी। तखन डाक-डकौबैल किए ने हएत। आ जखने डाक-डकौबैल शुरू भेल आकि बीचमे मदारी करामात कैरते अछि, तेहने मदारी खुशीलाल भाय सेहो छैथे...।

मनमे भेल जे अनेरे पाइ-कौड़ीक जड़िकेँ जड़िया कऽ पकड़ने छी। सभ राम-राम कहि, ऐ छिआ, ऐ छिआ कैरते छैथ आ हम ओहीमे मुड़ी गोंतने छी। मन घुमल।

घुमिते मन खुशीलाल भाइक मान-प्रतिष्ठापर पड़ल। रबि दिन हौउ आकि छुट्टी दिन, गामक दरबज्जा हुनकर मंचक चौखरी छिऐन। ऑफिसक चर्च शुरू करैत बेटा-बेटीक बिआह-दानक गप-सप्प पसारैत, चाह-जलखै होइत विरामक सीमा; माने उपसंहार, लग पहुँच मुहसँ निकलै छैन–

"जिनगीमे किछु धाएल अछि, जँ पाँचोटा कन्यादान नइ करेलौं आकि कोनो काजक उपकार केकरो नइ केलिऐ तँ ओ जिनगी वेकार अछि।"

दरबज्जापर बाहरी लोकक आगमनसँ परिवारक संग पड़ोसियो परिवारक लोक आबि आगत-भागत कैरते छैथ। खुशीलाल भाइकेँ घरक चारू-कातक दू-चारि गोरे आबि बैसबे करै छैन। ओहीमे ने टोक्करो देनिहार रहिते अछि जे टोकारा दैते छैन–

"हँ, से तँ अछिए।"

टोकारा सुनि जेकरा जे हौउ, मुदा खुशीलाल भाइक मन तिलकोरक फड़ जकाँ लाल तँ भाइये जाइ छैन। केकरो पातक पूछ फलक नहि, केकरो फलक पूछ, पातक नहि। मुदा तँए कि फूल फड़ो आ पातो नइ बनैए, बनिते अछि। मन फुलाइक कारण छेलैन, कन्यादानक नाओं बेचि, की सभ रोग समाजमे पसारलैन से सबहक सोझहेमे अछि। मुदा जे अछि, खुशीलाल भाइक भाषणक उसार तँ अही शब्दसँ ने होइ छैन जे समाजक कियो शुभचिन्तक अछि तँ ओ छैथ खुशीलाल।

डेग आगू बढ़ल। खुशीलाल भाय ऐठाम पहुँचलौं। दरबज्जाक ओसारक उत्तर भागक चौकीपर मुँह झाँपि खुशीलाल भाय निसवद भेल पड़ल रहैथ। चद्दैरसँ मुँह झाँपि सूतब तँ ओ अवस्था छी, जैठाम माछी-मच्छर तकक रोक रहैए। तैठाम केना कऽ उठेबैन। तहूमे जँ

काँच नीन हेतैन आ भकुआएलमे जँ किछु कहिये दैथ, सेहो केहेन हएत। मन छह-पाँच कैरते रहए कि रभसलाल खेत दिससँ आएल। रभसलाल खुशीलालक छोट भाए। हमर एक उमेरिया सेहो अछि रभसलाल आ हम दुनू गोरे स्कूलोमे संगे पढ़ने छी। अबिते पुछलक–

"भाय, केम्हर-केम्हर सवारी चललैए?"

दुनू गोरे दछिनबरिया चौकीपर बैसलौं। बैसते फेर रभसलाल बाजल-

"भाय, चाह पीब किने?"

मनमे ठहैक गेल, एक चुटकी सतनारायण भगवानक परसाद बाँटि कऽ तँ लोक समाजमे अपन पानि चला लइए, तैठाम जँ हम चाह पीब आ जँ पानोक आग्रह भेल तखन तँ सोलहन्नी फूल-पान उठा लेब...।

कहलिऐ–

"भाय, भिनसुरका चाहमे पत्नी पंजाबी जकाँ अफीमक रस मिला दइ छैथ, तेहीपर ने दुपहर तक बमकी धेने रहैए, अखन चाह पीबैक मन नइ अछि आ पान मुहेँमे अछि, से सभ परहेज करह।"

फेर दोहरबैत रभसलाल बाजल– "केम्हर-केम्हर?"

कहलिऐ–

"खुशीलाल भायसँ बहुत दिन भेँट भेना भेल अछि, सेहो भेँट कऽ लेबैन आ कनी टेङारियो लेब। मुदा से तँ भायकेँ देखै छिऐन जे मुँह-तुँह झाँपि कऽ सुतल छैथ।"

'मुँह-तुँह झाँपि' सुनि रभसलालक मन जेना विकृत भऽ गेल। बाजल–

"की मुँह झाँपि सुतता, नाक-कान कटौलैन!"

ओना रभसलालकेँ ने कहियो खाइ-पीबैक दिक्कत भेल अछि आ ने कोनो आने खाँहींस खगलै। भाइक अम्बोही आमदनीसँ परिवारक खर्चसँ उठले अछि। ओना खर्च-बर्चक अभाव नइ भेने आ पाइ-कौड़ीक आकर्षण नइ भेने रभसलालकेँ अर्थक अपराध वृत्ति नइ पनपल, मुदा परिवारक जे ढाँचा बनि गेल अछि तइमे आन-आन अपराध वृत्ति नइ पनपत सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा जे हौउ, धनक उमकी तँ रभसलालमे छैन्हे...। 'नाक-कान कटौलैन' सुनि मनमे आरो उत्सुकता जगल। मुदा परिवारक भीतुरका बात छी; माने भाइक मुँहक बात छी, तैबीच अनका घर पैसब कनी गड़बड़ अछिए। मुदा पैसबो तँ जरूरी ऐछे, गाम-समाजक बात छी,

जँ नै पैसब तखन घटनाक कारणो तँ नहियेँ बुझि सकै छी। किछु फुरबे ने करए जे की केने की नीक हएत आ की नइ केने की अधला हएत...।

ओना रभसलाल बजैमे फड़कोर अछिए। फड़कोरक मुँह सदिकाल पकले रहै छै तँए फुइट कऽ निकलैक डरो तँ रहिते छइ। खएर जे छइ, मुदा रभसलाल मुस्की देलक...।

रभसलालक मुस्की देख मनमे कनी हरियरी जगल। हरियरी ई जगल जे एक्के हँसी केतौ खुशी उपकबैत आनन्द दइए तँ केतौ मजाक बनि मजाकक पात्र सेहो तँ बनैबते अछि। मुदा से नइ, रभसलालक मन ओहन चौमास-खेत जकाँ बुझि पड़ल जे तेखार जोत कएल आ तेखार चौकीसँ मिलौल बीआ पबैले तैयार रहैए...।

कहलिऐ–

"रभस, सदिकाल तोहर रभसलेहे गप रहै छह, एना कियो जेठ भाइक विषयमे बाजए!"

अपना जनैत असथिरसँ ऐ दुआरे बजलौं जे चारिये हाथक

दूरीपर खुशीलाल भाय छैथ, ओना मुँह झाँपने सूतल छैथ कि पड़ल छैथ से नै कहि मुदा शब्दकेँ कनी लसलसा बना ऐ दुआरे बजलौं जइसँ दुनू दिस सटल रहइ। मुदा से भेल नइ, रभसलालकेँ जेना परिवारक इज्जतपर नजैर अँटैक गेलइ। समाजमे नाक-कान कटल बेकती हुअए आकि परिवारक प्रतिष्ठाक हनन भेल हुअए दुनू गरतेमे गिरबैए किने...।

रभसलाल बाजल–

“भाय, तूँ तँ लंगोटिया संगी छिअ, तोरा लग कोन लाथ।”

बिच्चेमे टोकारा देलिऐ–

“से की कोनो छीपल अछि।”

मौध जकाँ रभसलालक मन पैघलल नहि, मोम जकाँ सक्कतक सीमापर अँटकल रहल। बाजल-

“भाय, काल्हिखन समाजक बीच एकटा बुझारत भैयाकेँ कनकलालसँ रहैन। पाइ-कौड़ीक बात रहइ। समाजमे अहिना केकरो माल-जालक बुझारत, तँ केकरो लेन-देनक बुझारत, तँ केकरो गप-सप्पक बुझारत सदिकाल होइते रहैए आ आगूओ होइते रहत। तँए विषयक गम्भीरताकेँ नइ बुझि पेलिऐ। ओहुना पाइ-कौड़ीसँ परिवारोमे हटले रहै छी, बुझारत लग नइ गेलौं।”

कहि रभसलालक मुँह बन्न भऽ गेल। खेतमे जहिना नव सिरौर कटै काल बीचमे ठाढ़ हएब, तखन तँ बरद सिरौरेकेँ टेँढ करैत आगू बढ़ि जाएत..! तँए मुँह बन्न होइते रभसलालकेँ टोकलयै–

“चुप किए भेलह, कियो आन थोड़े अछि, जँ अपन बात कोनो तेहल्ला मुहेँ सुनबह तखन ने शंका करबह, आ जखन दुइये गोरेक बीचक बात छिऐ तखन बजैमे किए हिचके छह।”

ओना घटनाक धार रभसलालक मनमे बहिते रहइ, मुदा ले-ऊँचक बीच अँटैक गेल रहए। बाजल–

“भाय, सौंसे समाजक लोक एकठाम बैसल। तैबीच भैयाक बुझारत कनकलालसँ रहैन...।”

बिच्चेमे बजलौं–

“हमरा नइ बुझल अछि। तोरे मुहेँ अखने सुनै छी।”

जहिना कोनो नव समाचार से चाहे खुश-खबरी हौउ आकि दुख-खबरी, दोसरकेँ कहैले मनमे उड़ी-बीड़ी लगा दइ छै तहिना रभसलालक मनमे लगले रहइ। बाजल–

“एते दिन नइ बुझै छेलौं जे भैयाक कृत्ति की सभ छैन। जँ पहिने ऐपर धियान देने रहितिऐ तँ एना नइ होइत। भाय, परिवारो तँ परिवार छी। अनेको सदस्यक वंशगत संगठन छी। अनेको तन अनेको मनक तँ अछिए। मुदा समूह रूपमे परिवारमे बेकतीगत रूपमे जँ कियो परिवार विरोधी होइ, जे परिवारक प्रतिष्ठापर चोट करए, एहनो छूट तँ केकरो नहियेँ देल जा सकै छइ।”

चद्दैर तरसँ खुशीलाल भाय उकासी केलैन। ओना उकासियो उकासीए छी। नीनोमे होइए, अधनीनोमे होइए आ जगलोमे होइते अछि। मुदा से नइ, आगमसँ बुझि पड़ल जे रभसलाल निर्भिक जकाँ अपन मुँह खोलि कऽ राखए चाहि रहल अछि...।

कहलिऐ–

“एना गजपटमे नइ बुझब कनी सोझरा कऽ बाजह।”

‘सोझरा कऽ’ सुनिते रभसलालकेँ बुकौर लगि गेल, बकार जेना बिला गेलइ। आँखि उठा खुशीलालपर देलक। देखते दुनू आँखि कड़ुआ गेलइ, नोर ढबढबाए लगलै। ढबढबाइते नजैर निच्चाँ धरती

दिस देलक, धरती ससरल बुझि पड़लै। लगले आँखि उठा हमरापर देलक। मुदा आँखि अँटकलै नइ, अपने निच्चाँ ससरए लगलै...।

रभसलालक दशा देख मन राँग जकाँ गलए लगल। कहलिऐ–

“रभस, समाज समुद्र छी। समुद्रेमे रंग-रंगक पानियोँ अछि आ आनो-आनो जीव-जन्तु सेहो अछि। तूँ किए अपनाकेँ कसूरदार बुझै छह।”

हमर बात सुनिते रभसलालक हूबा जगल। हूबा जैगते हुअ लगलै जे पेटक जेते विकार अछि, वमन कऽ दिऐ। नीक रहौ कि अधला, जिनगीक बीच-बीचमे मोड़ अबैए जे जिनगीक सीमांकन करैए। अही सीमांकनक पछाइत नव जिनगीक सूत्रपात सेहो होइए...।

रभसलाल बाजल–

“भाय, मनक बेथा-कथा तँ लोक हँसिये-कानि ने मनसँ निकालत, जइसँ मन हल्लुक हेतइ।”

रभसलालक बात नीक लागल। कहलिऐ–

“एकरा के काटत।”

‘एकरा के काटत’ सुनि रभसलालक मन आरो पनपल। पनैपते बाजल–

“भाय, जड़ियेसँ कहि दइ छिअ। रजिष्ट्री ऑफिसमे भैया काज करै छैथ, से ते बुझले छह।”

कहलिऐ–

“हँ।”

“हमहूँ अखन तक सएह बुझै छेलिऐन। मुदा कल्हुका बुझारतमे जे गामक लोक अपन-अपन बेथा निकाललैन, से सुनि मने टुटि

गेल।”

कहलिऐ–

“से की?”

बाजल–

“चाहे केकरो बेटा-बेटीक बिआह हौउ, तइमे हिनका अगो चाही, अपन लिखाइ फीसक अतिरिक्त, ऑफिसक कमीशन चाही, ब्लैकक नाओंपर टिकटक कमीशन चाही, तैसंग सभसँ पैघ तँ ई छैन जे खेत केकरो रहै छइ, लेबाल कियो आन रहैए आ बीचमे लेबालो-बेचबालोकेँ गरदैन हलालि दइ छथिन।”

पुछलिऐ–

“की गरदैन हलालि दइ छथिन?”

बाजल–

“कौल्हके बुझारतक बात लैह। कनकलालकेँ बेटीक बिआह सिरचढ़ भेलइ। जमीन-जत्थाक कारोबारी बुझि भैयाकेँ पुछलकैन जे भाय साहैब, बान्हक कातमे जे सबा कट्ठाक कोली अछि ओ बेचा दिअ। गछि लेलखिन। समाजक रूपमे हिनका तँ दुनू गोरे–लेबाल-बेचबाल-क बीच ने बात-चीत करक चाहिऐन?”

रभसलालक बात नीक लागल। कहलिऐ–

“हँ।”

बाजल–

“तेतबे नइ ने, वेचारा सुधंग आदमी कनकलाल हिनकेसँ खेतक दामो करौलकैन। हमहूँ कनकलालकेँ चिन्है छिऐन। वेचारा झूठ-फूसक भीर कखनो ने रहै छैथ, डेढ़-दू बीघा खेतो छैन आ दूटा मालो खूटापर छैन। तही पाछू लागल रहै छैथ। दुनियाँ-दारीसँ कम मतलब

रहै छैन।"

बजलौं–

"हँ से तँ कनक भाय छथिये।"

बाजल–

"साठि हजार दामक चीज कहलखिन। वेचारा मानि गेल। तेकर बाद खुशीलाल भैया दू गोरेकेँ पीठ ठोकि– दुनू पाइबला लोक अछि आ दुनूक बीच पुश्तैनी दुश्मनी छै– ओइ खेतपर कुश्ती करा देलखिन। सभ कियो समाजेक, मुदा कुश्ती भऽ गेल खेत-ले..!"

रभसलालक बात सुनि हँसी लगि गेल। केतबो हँसीकेँ मुँहमे रोकए चाहलौं मुदा नइ रोकाएल। जोरसँ हँसा गेल। हँसी सुनि खुशीलाल मुँह परहक चद्दैर उतारि बजला–

"ऐमे हमर केतौ ने दोख अछि।"

रभसलाल छोट भाए रहितो खुशीलालकेँ दबैत बाजल–

"काल्हि वकार बन्न भऽ गेल आ आइ फुफकार छोड़ै छी।"

खुशीलाल दबि गेला। मुदा रभसलालक मनक उमकी जेना आरो उमकए चाहै। कहलिऐ–

"की कुश्ती भेल?"

बाजल–

"साठि हजार चीजबलाकेँ देलखिन आ दू लाख चालीस हजार अपना जेबीमे रखि लेलखिन! तीन लाख डाकपर दाम भेल।"

रभसलालक बात सुनि आश्चर्यसँ क्षुब्ध भऽ गेलौं। क्षुब्ध ई भेलौं जे जिनकर खेत छेलैन हुनका साठि हजार आ जिनकर किछु ने, तिनका दू लाख चालीस हजार! मनमे बिसवासो भेल आ नहियोँ भेल। नइ ऐ दुआरे हुअए जे एते नम्हर कारोबार रहितो माछियो-मच्छरक

अवाज जकाँ नइ सुनने छेलौं, आ तरे-तर केना भाइयो गेल आ बिसानियोँ भऽ गेल। हुअए ऐ दुआरे जे जखन अपन छोट भाए अपना मुहेँ बजै छैन जे समाजक संग हमर संगियोँ छी, केना कहबै जे ई बिसवास करै जोकर बात नइ अछि। मुदा अनके-टा बातसँ नइ हुअए अपनो मन मानि लिअए तखन ने...।

गुनधुनमे पड़ि गेलौं। मुदा तैबीच खुशीलाल चद्दैर उतारि ओछानियेँपर पल्था मारि बैसला, बैस तँ गेला मुदा मनमे एकटा भ्रम पैसल रहैन। भ्रम ई जे आइ तक रभसलाल मुँह दबने खुशीलालसँ बजै छल, जे खुशीलालक मनमे समाएल छेलैन्हे। मुदा प्रकृतोक तँ अद्भुत खेल अछि, अनकर बहिन-बेटीक इज्जत मुँह चुकरियबैत बिलाइ जकाँ लइए मुदा ओकरो जखन अपन बहिन-बेटीक इज्जतक प्रश्न उठै छै तँ बाघ जकाँ झपैट पड़ैए...।

अपन विचारपर जोर दैत खुशीलाल बजला–

"सौंसे गामक लोक एकमुहरी भऽ गेल, तँए कौल्हुका बुझारतक बैसारमे चुप भऽ गेलौं, नइ तँ...।"

रभसलालक मनमे जेना आगि पजरले रहै तहिना उत्तर देलकैन–

"नइ ते की! की कैरतिऐ?"

छोट भाइक मुँहक बात 'की कैरतिऐ' सुनि खुशीलाल भाइकेँ एहेन धक्का लगलैन जे धकधका कऽ धड़धड़ा गेलैन। धड़धड़ा ई गेलैन जे केकरा पोसि-पालि कऽ जवान बनेलौं। पाँचे बर्खक रहए तखने बाप-माए मरि गेल रहइ...।

मुदा पेटक घुरियाइत बात पेटेमे घुरिया लगलैन। वकार फुटबे ने करैन जे मुहसँ निकैलतैन। ओना अपनो मन कखनो धड़धड़ा जाए तँ कखनो धकधका जाए जे आन परिवारक आन्तरिक काजमे हाथ देब

नीक नहि। मुदा समाजमे जे गन्दगी पसारैए ओ नीक समाज बनए केना दऽ सकैए। इतिहासक घटना इतिहासक भेल मुदा वर्तमानक तँ सबहक वीर्तमान अछि, एकरो तँ आँखिक कात नहियेँ कएल जा सकैए। ओना अखनो ई बात नइ बुझि पेलौं जे समाजेक बीचक चीज, समाजेक बीचक लेन-देन समाजेक हाथे भेल, तइमे एहेन गोल-माल भऽ गेल आ लोक अपना ताले वेहाल केना..! ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना मत्थापर ने हाथ लइए, मुदा ईहो तँ बुझए पड़तै जे जे ठनका कपार फोड़ि सकैए ओ हाथक रोकने रोकाएत...।

समए बेसी खटिआइत देख रभसलालकेँ कहलिऐ–

"संगी, तूँ सभ दिन संगी रहलह तँए तोरा हम संगियेँ बुझबो करै छिअ आ बुझबो करबह, मुदा तोहूँ एते अपन नामक साकार करह जे रभैस-रभैस नीकक अनुकरण करैत चलैक कोशिश करह। जखने जागी तखने परात। टेङारी दएह, आगूक गप आगू दिन करब।"

◌

शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016

करिछौन लाली

सालसँ किछु दिन ऊपरेपर राम रतन दास भेँट भेला। चेहराक रंग देखते मन झुझुआ कऽ झनैक गेल। ललियाएल लाल टप-टप चेहरा करिछौन लाल बुझि पड़ल। अभयन्तरमे भेल जे पुछिऐन, कोनो रोग-वियाधिक आक्रमण तँ ने भेल अछि, चेहराक सुरखी उतरल बुझि पड़ैए...। मुदा फेर भेल एते दिनपर भेँट भेला, तैठाम बज्जर सन कथा नीक नइ। तइ बिच्चेमे मनक दोसर उमकी उठल आ मने-मन बाजल–

"कियो अपन मुँह-कान, नाक-आँखि अपने चिक्कन बना राखत आकि आनेकेँ केनेसँ हेतइ। हँ, आनोकेँ चिक्कन बनैक बात कहब नीके नइ दायित्व सेहो छी, मुदा जे अपने दोसरकेँ भरि दिन बुझबैत बजैत रहै छैथ, तिनका लग तँ किछु विचारए पड़ै छइ।"

मुदा फेर लगले मनमे उठल, एक तँ उमेरोक हिसाबे आ दोसर समाजोक हिसाबे, माने समाजमे एते तँ समाजिकताक अधिकार ऐछे किने जे नीक-अधलाक विचार कहलो जा सकैए, पुछलो जा सकैए आ सुनलो जा सकैए। तैठाम जे लोक गुमकी लाधि खाली गुम्हरए, तखन वैचारिक सम्बन्ध केना बनत? आ जखन वैचारिक सम्बन्ध बनबे ने करत, तखन सोझे माटि-पानिक सीमाबद्ध रेखाक बीच रहबे समाज भेल?

मन गुन-धुनमे पड़ि गेल। किछु करितो किछु ने बनैत रहए।

मुदा रच्छ रहल जे राम रतने दास बजला–

"भाय, नीके छी किने?"

ओना राम रतन दासक बात कनी कठाइन लागल, मुदा कनी कठाइनो अतिखाइनो विन्यासक भक्ष तँ लोक कैरते अछि, तँए मनकेँ दबैत रहलौं। मुदा तैयो भीतरे-भीतर उमकी उमकबे करए–

"नीक नइ छी, तँ अधला केना भेलौं, जे एकटा महंथक मुहसँ एहेन बात निकलल!"

मुदा लगले फेर मनक दोसर विचार ओकरा धोपलक। धोपलक ई कहि जे केकरो कहलासँ किछु होइ छइ, विचारक गवाही विचार दइ छइ, काजक गवाही काज दइ छइ, तैठाम जँ कियो नीक काजकेँ अकाज बुझि जिनगीएसँ उड़ा देत, तखन ओ रहत केतए?

मुदा फेर लगले मन बदैल गेल। बदैलते उठल जे अहिना सभ गाम आ सभ समाजमे एक-रंगा सभ भरि दिन उपदेश बँटैए। जे भरि दिन उपदेशे बाँटत ओकर भावो तँ ओहने ने बनि जेतै, तँए अनेरे मनकेँ घोड़ै छी...।

मन असथिर भेल। ओना औगताइ दुनू गोरेकेँ छल, किएक तँ काजेक दौरमे भेँट-घाँट भेल। ओना अपना ओते धड़फड़ी नइ बुझि पड़ए, तेकर कारण छल जे मन तँ कहिते रहए जे अपन बेकतीगत काजसँ ऊपर समाजक काज अछि। मुदा राम रतन दासकेँ बेसी औगताइ बुझि पड़ैन। तेकर आन जे कोनो कारण होइन मुदा दूटा तँ सोझहेमे अछि। एक तँ पंथक महंथ छैथ दोसर परिवारो छैन। तँए सालमे घुमैत-फिड़ैत सेवकानसँ गुरुधामक सफर करए पड़ै छैन। मुदा परिवारो तँ परिवार छी। तहूमे वेचारेकेँ समदाही घरवाली छिऐन, एक तँ ओहिना कड़कड़ाएल जुआनी तैपर भनडाराक दही-चीनीक भोजन। मुदा से नइ पूबसँ पच्छिम-मुहेँ आ पच्छिमसँ पूब मुहेँक आवाजाही

बेसी रहै छैन। राति-बीच परिवारमे कटैत उगै-डुमैमे चैल जाइ छैन, मुदा सालमे सरकारी छुट्टी जकाँ बीस दिन निचेनसँ गाममे रहि अपन परिवारक नून-तेलसँ लऽ कऽ सेवकानक भनडारा करैत पराते भने गामक डेरा तोड़ि लइ छैथ। तँए ओ जरनाक भाँजमे ठेला तकैत रहैथ आ हम दोकानक काजे जाइत रही, बिच्चेमे भेँट भेला...।

कहलयैन–

"हँ, बड़बढ़ियाँ छी, अपना दिसक कहू।"

तकले बहन्ना राम रतन दासकेँ भेटलैन, बजला–

"भाय साहैब, अपन की कहब। सबै नचाबे राम गोसाई। तीन दिनसँ गाममे छी, एको क्षण चैनसँ नइ बैसलौं हेन। अखनो ठेला तकै छी, जारैन लऽ जाएब।"

राम रतन दासक जवाब पेब मन घुरिया गेल। जइसँ आगू बढ़ब रूकि, जहिना लत्तीक बीच लत्तीक मुँह घुरिया जाइए तहिना मन घुरिया गेल। एक दिस देखी जे राम रतन दासक दाढ़ी-केशसँ सुगन्धित तेलक गंध निकैल रहल छैन, पैरमे जूता, कटोरिया धोधि, देहपर उज्जर धप-धप वस्त्रो छैन्हे। दोसर दिस महंथाइक वाणी एहेन बुझि पड़ए जेना गाम-समाजक बीचक बशिन्दा होथि। मुदा जे जिनगी छैन आ जे बात बाजि रहल छैथ ओ सरासर विपरीत भेल। जे विषम परिस्थिति सोझहामे रखि बजला ओ समाजक पसेना चुबौनिहारक परिस्थिति छी जे अपना संग परिवारक पाछू चाइन परहक पसेना तरबा देने निकालै छैथ। मुदा राम रतन दास तँ अनके सिरे अपनो आ परिवारोक जिनगी ठाठ-बाठसँ चलबै छैथ! अशोभनीय लागल।

राम रतन दास रमरतना नामसँ गाममे छल। जखन बारह बर्खक भेल तखन एक दिन फकीर दासक अखड़ाहापर पहुँचल। जहिना तीर्थ स्थानक धर्मशाला होइए तहिना अक्खड़ फकीर सबहक अखड़ाहा

छी। ओना अक्खरक अर्थ 'जिद्दी' सेहो अछि मुदा से नइ अक्खरक माने अखड़ा अर्थात शुद्धसँ अछि। बाल विवाहक पद्धतिक हिसाबसँ रमरतनाक बिआह साते बर्खमे खड़हीसँ नापि कऽ भेल रहइ। तहिया अनटुटु बच्चाक जहिना देह-दशा होइ छइ, तहिना सिराएल-मराएल रहइ। केते गेरे कौआ-टाँट सेहो कहइ। ओना फकीर दासक अखड़ाहाकेँ केते गोरे भोला बाबाक दरबार सेहो कहैए। तेकर कारण जे अखड़ाहाक जे दुनू कट्ठा पैछला चौमास अछि ओइमे भाँगे-धथुर उपजैए।

भोला बाबाक परसाद बुझि रमरतनो एक दम चीलममे लगा लेलक। मनो मानि कऽ गवाही देलकै जे सभ स्थानक अपन-अपन चढ़ौओ होइए आ परसादो तँ होइते अछि, तहिना ने अहू अखड़ाहाक परसाद भेल–भाँग-गाँजा।

एक तँ पहिल दिनक परसाद रमरतनाक, तैपर अनभुआर ड्राइवर जकाँ तेना दमसा कऽ चीलममे दम मारलक जे सातो दुनियाँ देखए लगल। आन-आनकेँ बजैत देख रमरतनोक मन लुसफुसाइ जे हमहूँ किछ बाजी। मुदा अपने मन कहलकै–जेना लोक सभ बजैए तेना बजैक लूरि कहाँ अछि। फेर लगले भेलै जे आइ पहिल दिन छी, आइ नइ किछ बाजब। फेर भेलै जे कोनो कि आइये एलौं आ आबि कऽ छोड़ि देबै, आकि सभ दिन आएब। चीलमक सुआद मधुआइते रहइ।

अखड़ाहापर आएब-जाएब रमरतना शुरू केलक। स्थानेक महंथकेँ गुरु मानि अखड़ाहाक आदमी रमरतनो भऽ गेल। दरबज्जाकेँ दुनू साँझ झाड़-बहार करैक भार रमरतना अपना विचारे स्थानक उठा लेलक। समैपर आबि दुनू साँझ अपन ड्यूटी करए लगल। आब रमरतना गामक भनडारासँ आनो-आनो गामक भनडारामे महंथक

(महंथ माने फकीर दासक) संग जाए-अबए लगल। साधु सबहक संगतमे पड़ि भजनो-कीर्तन गौनाइ आ कनी-मनी ढोलको-झालि बजौनाइ सीखलक। आब रमरतना रमरतना नइ रहल आब ओ भऽ गेल राम रतन दास। मुदा अखन ओ 'रामरतन दासे' अछि, 'महंथ राम रतन दास' नै बनि पेने छल। मुदा गबै-बजै-बजबैक लूरि तँ थोड़-थाड़ भाइये गेल छेलइ। तैबीच एकटा घटना सेहो घटलै। घटलै ई जे राम रतन दासक दुरागमन सेहो भऽ गेल। आब राम रतन दास भजन-कीर्तनसँ लऽ कऽ अखड़ाहासँ भनडारा तक पुरैमे नाको-दम रहए लगल। कोढ़ि पति मानि पत्नी पड़ा कऽ नैहर चल गेली जे आब ने ऐ घर आएब आ ने ऐ गामक मुँह देखब। ऐ गामक लोक दुनियाँक हवाकेँ नइ चिन्है छइ, जे कोठाबला घर आ हिप्पीबला बर सभकेँ चाही...।

मुदा राम रतनो दास अड़ि गेल जे जइ मनुखकेँ अपनो पेट भरैक लूरि नइ छै ओ पति-धर्म की बुझत। दुनियाँमे मौगीक कमी छइ, जखैन मन हएत बिआह कऽ लेब। तइले खुसामद करए जाएब, किन्नौ ने जाएब।

जहिना कियो पढ़ैक संकल्प लइए तँ कियो नीक सवारी गाड़ीक, कियो नीक कोठा बनबैक संकल्प लइए तँ कियो कोनो खास लड़की संग बिआह करैक...। केकर के मालिक छी जे कियो केकरो बात सुनत, तहिना राम रतन दास सेहो मनमे ठानि लेलक जे दोहरा कऽ ओइ महिलाकेँ खुसामद करए किन्नौ नइ जाएब।

संकल्पक फल जे हौउ, जेना हौउ, मुदा तत्काल राम रतन दासकेँ मनमे आफियत बुझि पड़लै। मन जेना दुनियाँसँ हटि अपनामे निहित भेने मनो हल्लुक भेलइ। हल्लुक होइते मन विचड़लै। विचैड़ते देखलक जे जखन दुनियाँमे असगरे एलौं, केकरोसँ कियो पुछि कऽ अबैए, तहिना असगरे रहब। केकरो भारो तँ सिरचढ़ नहियेँ रहत। मन

ठमकलै। असगरे जीब केना? जीबे-जीबैयेक वोन तँ दुनियाँ छी, तखन असगरे केना भेलौं। हँ, केकरो-बीच केकरो जे सम्बन्ध बनै छइ, जइसँ एक-दोसराक भार सिरचढ़ होइए ओ लेन-देन छी। जहिना माइक सेवाक बदला मातृसेवा बेटाक धर्म बनैए तहिना आन-आन सम्बन्ध सेहो अछि।

पत्नीक विछोहक पछाइत राम रतन दासमे बदलाव आएल। स्थानक बिसवास पात्र बनने स्थानक सेवैत राम रतन दास भऽ गेल। सेवकसँ सेवैत बनिते राम रतन दासकेँ सेवकान दिस बढ़ैक बाट खुजल। जे राम रतन दास सेवैतक जिनगीकेँ बुझि गेल। जइसँ अपन बेकतीगत जिनगीकेँ सुधारैक खगतो बुझि पड़लै। खाली खगते नइ भेलै बढ़तियो तँ एबे केलइ। बढ़त ई एलै जे हरिमुनिया बाजाक नीक बजन्ती भऽ गेल। ओना ढोलक-झाइलिक बजन्त्री सेहो छी, मुदा दुनूकेँ एकचलिया बुझि मनमे कम रखैए आ हारमोनियमक जतन बेसी रखैए। एकचलिया बाजाक माने ई भेल जे शारीरिक श्रम कनी बेसी भेने मनकेँ दाबि कऽ रखए पड़ैए तँए मुँहकेँ बन्न रखए पड़ै छइ, मुदा हारमोनियममे सौंसे हाथक अंग कटि ओंगरीपर चैल अबैए, तँए वादन संग गायन सम्भव भऽ जाइए।

सेवैतिक अवस्थामे, जहिना मैझला-सैझला जमीन्दार होइए,[3] तहिना राम रतन दास महंथाइक भीतर सेवताइसँ अरजन कऽ लेलक। जइसँ सेवैतिक रूप महंथाइक रूपमे अवतरित हुअ लगलै। पछाइत महंथ भाइयो गेला। अपन संकल्प जे पत्नीक सम्बन्धमे नेने छला ओ विचार पुन: राम रतन दासक मनमे पनैप गेलैन, पनैपते मन रीशियेलैन आ रीशियाइते बुदबुदेलैन–

“जहिना कोढ़िया बुझि पत्नी छोड़ि कऽ चैल गेल तहिना ओकरा

[3] खेत-पथारक जमीन्दारी नइ, सेवैतिक जमीन्दारी।

देखा देबै जे कोढ़िया कायाक माया केहेन होइ छै से आँखि खोलि देखत दुनियाँमे।”

ढलानपर जहिना गाड़ी ढलकैए तहिना राम रतन दासक मन ढलानपर ढलैक गेलैन। संजोगो नीक बैसलैन, अपने जकाँ एकटा महिला सेवक सेहो भेटलैन–माने कोढ़नी कहि-कहि हुनका पति छोड़ि देने रहैन, असगर पेब ओहो तिलकधारी बबाजी बनि अपन इज्जत-आवरूक रच्छा करए चाहै छेली, साधु-महत्माक विचार-विमर्श दुनूक बीच भेलैन। किए ने दुनू गोरे परिवार बनबैक विचार सोचैत। भाय, मनुख तँ परिवारेमे ने रहत। कोनो कि कौआ-मेना छी जे एके बाढ़ि आकि एके विहाड़िमे वंशे उपैट जेतइ। गप-सप्पक क्रममे दुनूक गोड़ा बैस गेलैन। जहिना कोनो लत्ती-फत्तीक गोड़ा आकि गाछ-विरीछक गोड़ा-मे-गोड़ा सन्हियेने एक-दोसरक जीवन-मरण बुझि धड़ैए, तहिना दुनूक बीच गोड़ा मनमे तेना सन्हिया गेलैन जे बिआह करैपर राजी भऽ गेला। राजी-खुशीसँ दुनू संयुक्त वियान देलैन–

“निराश्रयकेँ जे बिसवासू आश्रय भेट गेल तँ वएह ने ओकर जीवन-नैया पारो करत। ओना अपन विद्रोही समाज (माने बबाजी समाज, जे विवाहकेँ वन्धन बुझि माया कहै छैथ।) मे बरियाती केतएसँ आनब, तैसंग अपनो दुनू गोरेकेँ यज्ञ-जप करै जोकर घरो-अँगना तँ तेहेन नहियेँ अछि। जे मण्डपमे बैस सरियात-बरियातक बीच तँ सम्भव नइ अछि, तँए मने-मन दुनू गोरे सम्बन्ध मानि लिअ। लोक बुझला पछाइत ने उकबो उठाएत ताबे तँ जिनगीक धार बहि गेल रहत। दुनू गोरे महंथाइयेक बीच एक संग एक मोटरीमे अपन जिनगी समेट कऽ रहब शुरू करब। बड़ बेसी तँ बबाजी समाज यएह ने कहता जे दुनू प्रेमक बीच लोभा गेल। कहता तँ कहता। लोकोकेँ कि बजैक ठेकान रहै छइ, जेकरा जे मन फुड़ै छै से बजैए। जँ हुनका सबहक बोल औत तँ अपनो सभ ने कहबैन जे तइले अहाँक छाती

किए फटैए, दुनियाँ तँ प्रेमेक छी किने, अहूँकेँ ने तँ कियो रोकैए।”

महंथ राम रतन दासकेँ समए अनुकूल भेटलैन। तीनटा संतानो आ पत्नियोँ साक्षात् सेविका छैन्हे। ओना मंच परहक महंथाइक विचारमे किछु अन्तर आबिये गेलैन अछि, मुदा केतबो कम छी तँ एक महंथक विचार तँ छीहे। माने ई जे जाबे तक राम रतन दास देखौआ बिआह[4] नइ केने छला ताबे तक परिवारकेँ माया कहि मुक्तिक बाधक कहै छेलखिन, से आब परिवारिक महंथक श्रेणीमे आबि गेला, तँए आब परिवार बना जीब मनुखक पहिल दायित्व बुझि घर बैस सन्यास करैक बात कहए लगलखिन।

ओना जहियेसँ राम रतन दासक प्रेमक बात फकीर दास सुनलखिन तहियेसँ अनठिया चिड़ै जकाँ लोलमारी करब शुरू केलैन, जेकर देखा-देखी अखड़ाहाक आनो-आन करए लगलैन। मुदा राम रतनो दास कि कोनो अदना लोक छैथ, आइनपर लोककेँ माए-बाप नइ भेटै छइ, घरवालीक कोन कमी छइ, जे संकल्प पूर भाइये गेल छेलैन। जइसँ अपन अखड़ाहा फुटा कऽ बना नेने छला। ओहीमे धियो-पुतो-स्त्रियो आ दसनमा दरबज्जो बनाइये नेने छला।

ओना कहैले राम रतनो दासक अखड़हे छिऐन, माने ई जे जही पंथक फकीर दास तही पंथक राम रतनो दास छैथ, मुदा पंथो तँ पंथ छी, पंथ कि कोनो फुटा कऽ केकरो-ले बनल अछि आकि ओ एकटा पंथ भेल, जैपर जे चलनिहार अछि ओ चलबे करत। मुदा से नइ, फकीर दास अपना अखड़ाहापर सभ दिन बैसै छैथ, जँ कहियो केतौ बाहर भेला तँ अनको जना दइ छेलखिन जे एते दिन नइ रहब तँए अहाँ सबहक अखड़ाहा छी, अपन देखभाल करैत रहब।

राम रतन दासक अखड़ाहा से नइ छैन, सालमे ओ दस-बीस

[4] देखौआ बिआहक माने संतानसँ अछि

दिन गाममे रहला तेतबे काल अखड़ाहाक चुहचुही रहल, बाँकी दिन भको-भन बनल रहैए। कहैले बालो-बच्चा आ पत्नियोँ स्थाइ रूपे रहै छैन, मुदा पत्नी अपने सेवा माने परिवारे धरिक छथिन, सेवैत नइ भेलखिन। ओना पत्नियोँ दोसर बिआहसँ पहिने आ पहिल बिआहक पछाइत कण्ठी पहीर वैष्णव भऽ गेल छेली, मुदा धोखासँ वैष्णव भेल छेली आकि धोखेमे अखनो धरि छैथ, से तँ ओ जानैथ मुदा अपन तीनू बच्चा आ पति–राम रतन दास–केँ छोड़ि केकरो ने चिन्है छथिन आ ने चिन्हारए दइ छथिन।

महंथ राम रतन दासक चास-बास फकीर दासक चास-बाससँ नमहर भऽ गेल छैन। फकीर दासकेँ किछु रखै-जोगबैक लूरि नइ छैन, जखन कि राम रतन दासमे से बेसी छैन। दुनूमे दोसर अन्तर ईहो भऽ गेल छैन जे फकीर दास खौजरीकेँ सजबैत चाटियो चलबै छैथ, जखन कि राम रतन दास हारमोनियमपर राग-अलापि मोहैन चलबै छैथ, जइसँ चास-बासमे बढ़ोत्तरी होइते छैन। अखड़ाहाक चारूकातक दस कोशीमे राम रतन दासक सेवकान[5] पसरल छैन, मुदा किछु छैन आ कि केतबो छैन, पारखी नजैर रहने सभकेँ सम्हारि चलबै छैथ। भाँजपर चढ़ले छैन जे कुरथी-तेबखा मासमे उत्तर मुहेँक टहलान शुभ अछि, आ जेठुआ-अखढ़ुआ आमक मासमे उपराड़िक इलाका–पच्छिम-मुहेँक यात्रा शुभ अछि। जखने शुभ मुहूर्तमे काज हएत तखने ने सभ किछु शुभे-शुभ हएत।

राम रतन दासक सेवकान सेवकान थोड़े छी, ढेनुआर गाए छी, साक्षात् लक्ष्मी। जैठाम लछमीक बास रहत तैठाम धनक दसो दुआरि खुजिये जाइए। से राम रतन दासकेँ छैन्हे। भोज-भनडाराक संग विदाइक रूपमे दान-दैछना आ अगो सेहो सेवकानमे भेटते छैन।

[5] जमीन्दारी

दसक लाठी एक बोझ। अगो रूपमे लत्ती-फत्तीक पहिल फलक संग धानक दौनीक सिल्लीक अगो तकक बन्हले आमदनी छैन, तैसंग भनडाराक नाओंपर चन्दा सेहो होइते छैन। खएर जे छैन ओ अपन सेवकान छैन, जानए जअ जानए जत्ता। हमरा कोन मतलब अछि। तीन मास पहिने एक गोरे–जेकर नाओं लखन लाल छी–घरो बनबै आ बेटाक नाओं इंजीनियरिंगमे लिखबैले दस लाखक पैतृक सम्पैत बेचए चाहलक। बिना बेचने काजो नहियेँ चैलतै। गाम-घरमे किसान परिवारक स्थिति जत्ता तरक चक्की जकाँ किलेमे ठोकल अखनो ऐछे, तँए कियो ओ खेत कीनैले तैयारे ने भेल। एके मास बच्चाकेँ नाओं लिखबैले लखन लालकेँ शेष रहि गेल रहइ, तँए पाइक बनोबसमे फिफियाएल घुमए। सोना-चानी आकि अन्न-पानि तँ खेत छी नै जे गाड़ी-सवारीपर उठा केतौ बाहरो जा बेच लेब। खेत छी, जेतए अछि तेतइ सभ दिन रहबो कएल आ आगूओ रहत।

लखन लालक खेतक बिकरीक समाचार, गाममे पसैर गेल। आन गामबला सुनियेँ-बुझि कऽ की करत। आन गाम जा कऽ खेती करब असान थोड़े अछि। राम रतन दासकेँ सेहो भनक लगलैन। जे खेतक बिकरी अछि। ओना ओ गाममे नइ छला मुदा भनक तँ लगिये गेल छेलैन।

समयानुकूल कोनो बेवसायकेँ उठाइन होइ छै तँ कोनो बेवसायकेँ बैसाइनो होइते छइ। उठाइन-बैसाइन सभ किछुमे होइ छइ। कहियो खढ़-खपड़ा घरक उठाइन छल आब बैसाइन भऽ गेल अछि। अखन उठाइन भऽ गेल अछि, चदरा-पक्काक। तहिना पढ़ैयो-लिखैमे भऽ गेल अछि। कारोबारमे सेहो तहिना अछि। कहियो खेतीक महत् रहने खेतक उठाइन छल आ अखन ओकर बैसाइन आ बेवसायक उठाइन भऽ गेल अछि। तेहने वेपार राम रतन दासकेँ सेहो छैन्हे। एते दिन सालमे एकबेर भनडरो करै छला आ प्रवचनो करै

छला आ तीन सालसँ साले-साल नइ मौसमे-मौसम तीन-दिना प्रवचनो करबै छैथ आ भनडरो करबए लगला अछि। जइसँ आमदनीमे केतेको गुणाक बढ़ोत्तरी भऽ गेल छैन। लखन लालक खेत बेचैक समाचार सुनिते तेसरे दिन राम रतन दास हहाएल-फुहाएल गाम पहुँचला। मनमे होइन जे कियो आन ने कीन लिअए।

ओना, गामक लोक राम रतन दासक आमदनी तँ देखैन, मुदा कोनो कारोबार नहि देख यएह बुझैथ जे भुतही बाढ़ि जकाँ जहिना अबैए तहिना जाइए। तँए आन धार जकाँ जमौठ पानि थोड़े हएत। मुदा से बुझब सबहक भ्रम छेलैन। अछैते पाइये राम रतन दास दू कारणे कोनो कारोबार नइ करै छला। पहिल कारण जे करताइत नइ रहने आ दोसर बिनु पसेनाक कमाएल पाइ तँए दाबि कऽ राखब नीक बुझैथ। जेते झाँपल रहत तेते सुरक्षित रहत। सुरक्षित दू मानेमे–पहिल, आमदनीमे केतौ रूकाबट नइ आ दोसर छीनो-झपटी नहि। छीनो-झपटी कि बिना बुझने-सुझने होइए।

गाम अबिते राम रतन दास हिया कऽ गाम दिस तकलैन तँ एकोटा एहेन लोक नजैरपर नइ पड़लैन–जेकरापर पाइ-कौड़ीक लेन-देनक बेवहार सोझहामे कएल जाए।

मुदा बिनु तेहल्लो तँ काज चलब उकड़ू अछिए। कोनो रस्ता भाँजेपर ने राम रतन दासकेँ चढ़ैन जे आगू केना करब। अग-दिगक पछाइत फुरलैन–सोझे जा कऽ जँ लखन लालकेँ कहबै जे दुइये गोरेक बीचक कारोबार छी तइले तेसरक कोन जरूरी अछि, मुदा फेर होइन जे ई तँ अपन विचार ने भेल, मुदा जहिना एक पक्ष लेबाल हम भेलौं तहिना बेचबाल तँ दोसर पक्ष भेबे कएल। आ जखने दोसर पक्ष ओ भेल तखने तँ ओकरो एते अधिकार भाइये जाइ छै जे ओहो अपन विचार रखए। आ जँ कहीं ओ तेहल्लाक बीच विचार करब कहत तँ

ओकरा नइ मानबै सेहो ने हएत। आ जखने तेहल्लो ओकरे रहतै तखन तँ अपने असगरे पड़ि जाएब। तखन तँ आरो बेसी गड़बड़ाइक सम्भावना बढ़ि जाएत। पाइ-कौड़ीक बात छी, सभ दिन चोरा-छिप्पी होइत आबि रहल अछि आ आब तँ दिनो-दहार होइए...। मुदा लगले राम रतन दासक मनमे एकटा जुकती फुरलैन। फुरलैन ई जे आइ साँझू पहर असगरेमे लखन लालसँ भेँट कऽ पुछबै। जँ सूहकार पएब तँ आगूक जुकती विचारि लेब। मन चैन भेलैन।

पँचकोशीक एकोटा एहेन बैंक नइ जइमे राम रतन दासक पाइ जमा नइ, बेहिसाब पाइ, बेहिसाब ऐ मानेमे जे सबदिना आमदनी, एहेन आमदनी जे पाइक हिसाब जोड़ैक समैये ने पबैत।

दोसैर साँझ होइते राम रतन दास लखन लाल ऐठाम पहुँचला।

एक तँ ओहुना राम रतन दासक आदर गाममे होइते छैन तैपर महंथक आगमन। लखन लाल दुनू परानी नीक जकाँ सुआगत-बात केलकैन। चाह पीला पछाइत लखन लाल पुछलखिन–

“सरकारक, केम्हर-केम्हर आगमन भेलैन?”

‘सरकार’ सुनि राम रतन दासक मन गवाही देलकैन जे काज नीक जकाँ सुढ़ियाएत। जइसँ मन मधुआ गेलैन। मधुआएल मने बजला–

“सुनैमे आएल अछि जे बेटाकेँ इन्जिनियरिंगमे नाओं लिखबैक विचार छह।”

लखन लाल–

“हँ, सरकार। ओना अपन विचार अछि जे किसान परिवार अछि तँए बेटा एग्रीकल्चरमे चाहे डॉक्टरीमे नाओं लिखबए, किए ते दुनूमे अपन हित निहित अछि, मुदा छौड़ा कहैए जे इन्जिनियरिये पढ़ब।”

अपन गोटी बैसबैले कि की से तँ राम रतन दास जानैथ मुदा बजला–

“तोरा विचारकेँ तँ हमहूँ मानै छी। मानै छी ऐ दुआरे जे जखने बेटा इन्जिनियरिंग पढ़तह तखने इन्जीनबलाक हाथे ने पोसन हेतइ। जेकरा हाथे पोसन हुअए सएह ने पिता भेल। मुदा अखन ई गप-सरक्का छोड़ह।”

नमहर साँस छोड़ैत लखन लाल बाजल–

“से तँ बेस कहलिऐ महनजी।”

महंथसँ महन रूपमे अपनाकेँ देखैत राम रतन दास बजला–

“तूँ खेत बेचए चाहै छह?”

लखन लाल–

“बेटा चन्सगर अछि। ओकर चान्सकेँ केना तोड़बै। पाँचे-सात लाखक तँ खेल छी, तही दुआरे खेत बेचब।”

राम रतन दास–

“केकरो दोसरसँ गप नइ करिहह। हम लेब।”

दस लाख रूपैयामे राम रतन दास पाँच कट्ठा खेत लखन लालसँ लिखा लेलैन। लिखा तँ लेलैन मुदा गाम-समाजमे जेना आगिक लुत्ती लगि गेल तहिना एक संग अनेको प्रश्न उठल।

मुदा सभ प्रश्नक जड़ि एकेठाम अछि–ओ एते रूपैआ केतएसँ आनलैन?

राम रतन दासक सुर्खीक संग सेखियो समाजमे दिनानुदिन धुमीले हुअ लगलैन।

ठेलाबला महंथ बुझि, अपन ठेलाक भाड़ा सेहो छोड़ि, सेना रूपमे अछि, जारन लादि राम रतन दास ऐठाम विदा भेल। राम रतन

दासक लाल टूह-टूह चेहरा केना करिछौन भऽ गेलैन, से बेर-बेर मनमे उठ-बैस करए लगल।

◌

शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016

मोहरा

मास दिनक पछाइत पता लगल जे कुरसोंवालीक सराधो भऽ गेल। गामक ओहन काज जे एक-दिना आकि एक-क्षणा नइ छी, जे चुपचाप भऽ जाएत। सराधक पाछू क्रिया-कर्म आ भोज-भातक संग नह-केश अछि तइसँ पहिने तेराइतिक भोजो आ छौरझँपी होइए, तहूसँ पहिने लहाश जरौल जाइए। एते नमगर-चौड़गर काज आ बुझबो ने केलौं..!

फेर अपनेपर नजैर पड़ल, नजैर पड़िते जखन मास दिनकेँ गुनलौं तँ केतौ खोंच-खरोंच नइ बुझि पड़ल। माने जहिना सभ-दिना जिनगी अछि तहिना ऐछे, तखन किए ने बुझलौं। आइ जँ केतौ मास-दिनक तीर्थ-वर्तमे गेल रहितौं आकि कोनो महानगरे घुमैले गेल रहितौं, सेहो तँ नहियेँ केतौ गेलौं हेन। मुदा मनमे ईहो जिज्ञासा तँ जगले रहए जे जे कुरसोंवाली एक समए गामक रंगमंचपर मुख्य नचनिहारि छलि, तेकर सराध केहेन भेल?

फेर भेल जे मास दिनक पुरान गप छी तखन जँ केकरोसँ पुछबे करबैन जे कुरसोंवालीक सराध भऽ गेलैन तँ ओ मुँह दुसि कहबे करता किने जे तूँ गाममे नइ छेलह जे देखतहक आकि सुनितहक जे पहिने सराध भेल आकि मुइल, एतबो ने बुझल छह।

कोनो गरे ने देखिऐ जे की करब। मुदा मनमे बुझैक जिज्ञासा तँ

रहबे करए।

विचारलौं जे रस्ते-रस्ते दछिनबरिया बाधक खेत देखैक बहन्ने जाएब, ओही बीचमे कुरसोंवालीक घर पड़ै छइ, जँ कोनो सुराग बुझि पड़त तँ गप खोड़ि देबै, माने चर्चा चालि देबइ। जखने चर्चा उठत कि जहिना धिया-पुता चौमास खेतक अल्लू उखड़लाहा वाड़ीकेँ कियो खुरपीसँ तँ कियो ठेंठिया कोदारिसँ चलिया-चलिया नमहर अल्लूसँ किर्ड़ी तक बीछ लइए तहिना सभ बीछा जाएत...।

यएह सोचि दच्छिन-मुहेँ विदा भेलौं।

संजोगो नीक बैसल। कुरसोंवालीक बेटा–सिंहेसरा उत्तरे-मुहेँ अबैत रहए। खुटियाएल केशो देखलिऐ आ रंग झड़ल धोतियो बुझि पड़ल। बुझि एना पड़ल जे नवका धोतीक पाइढ़ ओहिना चक-चक करैत जेहेन नव रंगलमे चक-चकाइत रहैए। लगमे अबिते मनमे भेल माइयक सराधक विषयमे सिंहेसरासँ पुछिऐ।

मुदा फेर भेल जे जँ नइ मरल होइ तखन तँ अनेरे ई कहि गरियौत जे हमरा माएकेँ जीवितेमे सराधक बात पुछैए। भाय! सरधा ने जीवितमे होइ छै मुदा सराध तँ मुइला पछाइते होइ छइ। अन्तर एतबे ने अछि जे घरक अधिकार धऽ घर चैल जाइए। आगूमे देखते सिंहेसरे बाजल–

“काका, गोड़ लगै छी, माए-बापक करजासँ फारकती भेल।”

‘माए-बापक करजा’ सुनि मनमे ठहकल जे निसचित माइक सराध कऽ निचेन भेल अछि। गपक पन्ना भेटल। पन्ना पकैड़ पुछलिऐ–

“नीक जकाँ कर्जासँ फारकती पौलह किने?”

‘नीक जकाँ फारकती’ सुनि सिंहेसराक जेना छाती दहैल कऽ कुड़बुड़ा उठलै। बाजल–

“कक्का, जिनगी भरि जेकरा सेवलक ओहो देह चोरा लेलक।”

सिंहेसराक बात भाँजेपर ने चढ़ल जे की कहलक। पुछलिऐ–

“से की?”

बाजल–

“कक्का, तोरा सभकेँ ते बुझले छह जे माइयो आ बाबूओ दुनू परानी जिनगी भरि खुशीलाल कक्का ऐठाम खटल, जे कमाएल-खटाएल से खेलक-पीलक, हमरो पोसलक। हमरा बिआहो कऽ देलक। गाममे केते कमाइये होइ छै जे औझुका लोक जकाँ गुजर कैरतौं तँए पंजाब चैल गेलौं। एम्हर बाबूओ मरि गेल। पनरहे दिन गेना भेल रहए, भड़ो जोकर पाइ नइ कमेने रहौं जे अबितौं, नइ एलौं। माइये आगियो देलकै आ सराधो केलकै।”

सह दैत कहलिऐ–

“जहिना बेटाकेँ अधिकार अछि तहिना ने पत्नियोंकेँ अछि, नीके भेलह।”

बाजल–

“नीके की हएत कक्का, तखन तँ गरीब लोकक माए-बापक सराध भगवाने भरोसे होइए, सएह भेल।”

झमान भऽ सिहरैत सिंहेसराक मन देख कहलिऐ–

“पार-घाट तँ लगिये गेलह किने?”

झुझुआइत सिंहेसरा बाजल–

“पार की लागत तखन तँ अपन हारल लोक बाजिये कऽ की करत।”

जे बात बुझैक जिज्ञासा छल ओ तर पड़ि गेल। ऊपर चैल आएल पिताक सराध। माइक सराध दिस बातकेँ बढ़बैत पुछलिऐ–

"माइयक कहह?"

'माए' सुनि सिंहेसरा विचलित होइत बाजल–

"कक्का, बाबूकेँ मुइना थोड़बे दिनक पाछू माए दुखित पड़ि गेल। अपने गामोमे ने रही, खुशीलाल कक्का एको दिन खोजो-पुछाइर ने केलखिन आ एक पाइक गोटीकेँ के कहए। भनसिया समाद देलक। जे पाइ कमेने रही से पठा देलिऐ, अपने जँ चैल ऐबतौं तँ ओहो कमाइ ने होइत।"

बिच्चेमे कहलिऐ–

"से ते नीके केलह।"

'नीक' सुनि सिंहेसराक बोल ने आगू उठै आ ने पाछू होइ। हेबो केना करैत, कोनो कि समाजमे छपित बात अछि जे लोकक किरदानी भेड़िया-धसान जकाँ छइ। अधलोकेँ तेते नीक कहत जे राड़ीक फूल जकाँ अपने हवामे उड़ैत अकास चढ़ि जाइए, आ अकास चढ़ल काजकेँ धकियबैत-धकियबैत खेत-कातक रस्ता जकाँ बहुपेड़ियाकेँ एकपेड़िया बनबैत नाओं मेटा खेते बना लइए आ जखन खोज-खबैर होइ छै ते कहैए जे सर्वेक खतियानमे ने खत्ते-खेसरा चढ़ल अछि आ ने नक्शामे नक्शे बनल अछि। मुदा सिंहेसरा से नइ केलक, अपन इमानकेँ इमनदारीसँ अङैजैत बाजल–

"कक्का, तोरा लग मुँह उठबैत लाज होइए, मुदा बाप-पित्ती तँ तोहीं सभ ने भेलह, बेटा-भातीज जँ गलतियो करत तँ तोहीं सभ ने तेकर निमरजना करबहक।"

सिंहेसराक बात सुनि जेना हृदयमे धक्का लगल। धक्को केना ने लगैत, एकटा बाल-बोध ऐसँ बेसी कहिये की सकैए। पीठ उघारि आगूमे देत जे कक्का लिअ गलती केलौं एक साए जूता मारू। मनुख विवेकी छी, लाज ओकर आभूषण छिऐ, जे अंगीकार केला पछाइत

लोककेँ रहिये की जाइ छै...।

मनमे जेना उड़ी-बीड़ी जकाँ लगल। मुदा गुण भेल जे सिंहेसरे बाजल– "कक्का, जे बुढ़ियाक धारलिऐ से ते करबे केलिऐ।"

मुदा की धारलिऐ, की केलिऐ की नइ केलिऐ, की करक चाही, की नइ करक चाही..?

एक संग अनेको प्रश्न मनमे नाचि उठल। नचैत मन सिंहेसराक पिता–ढोरबापर पड़ल। सुधंग लोक, खुशीलालक एकटा महींसक सेवाक सोल्होअना भार ढोरबापर, यएह जिनगी यएह दुनियाँ रहैन। कुरसों बिआह भेल रहैन। कुरसोंक जइ टोलमे बिआह भेल, ओ अगुआएल लोकक टोल, ओइमे एकघरा। माने सिंहेसराक माइयक चिष्टो-चार आ बजै-भुकैक ढंग सेहो अगुआएल। सुधंग पति पेब कुरसोंवाली एक-छत्र परिवारक गारजन बनि गेलि।

सत्तैर-अस्सीक दशकमे मिथिलांचलमे भूमि आन्दोलन जोरपर छल। आने गाम जकाँ हमरो गाममे पाहीपट्टीबलाक आधासँ बेसी जमीन। बटेदार जगि कऽ बटायदारी आन्दोलन केलक। ओना गामबलाक खेत नहि मुदा बहरबैयाक प्रलोभन जे अहीं सभकेँ सभटा खेत सुमझा देलौं। लोभमे गामक लोक संग भऽ गेल। जमीनेक लोभ कुरसोंवालीकेँ सोझहामे रखि, नेता बना टोलमे ठाढ़ कऽ देलक। बुझलो बातमे कुरसोंवाली लोभा गेली। बुझल बात ई जे जे खेत बटाइ करैए ओकर तँ हक बनिते छइ। मुदा मुफ्तक माल केकरा गाड़ा लगै छै जे कुरसोंवालीकेँ लगितै, ओ ओइ आन्दोलनमे चारित्रिक गुण[6] बिसैर ओइ बटाइ जमीनपर अपन हक बनबैले छोट-छोट खोपड़ीनुमा घर बनबा, ओइमे आगि लगबा, गामक तीस-पैंतीस गोरेक बीच ओइ अगिलग्गी केसमे हमरो नाओं घोंसिया देलक। वएह कुरसोंवाली जे

[6] क्लास कैरेक्टर

मोहरा बनि गाममे एते भारी फसाद केलक। तेकरे सराधक चर्च छी। निरीह, निरदोस सिंहेसराकेँ पुछलिऐ–

"बुढ़ियाक मृत्यु नीक जकाँ भेल किने?"

हमर बात जेना सिंहेसराक मनकेँ बेध देलकै। ओकरो अपन माइयक किरदानी मनमे ठहकैत रहइ। जहिना विश्व मोहिनी लग नारद बाबा बगलेमे शिवजीक दूत देख बानरक मुँह बनौने, तहिना बुझि पड़ल। मुदा आब उपाइये की अछि। यएह ने जे ओ गामक इतिहासक एक अंश भेल।

'मृत्यु' सुनि सिंहेसरा बाजल–

"कक्का, हम जे दू सालसँ पंजाब जाए लगलौं हेन, तेकर माख खुशीलाल काकाकेँ भऽ गेलैन। ई बिसैर गेलखिन जे सरकारो नोकरीबलाकेँ जनम भरि पार लगबै छइ।"

सिंहेसराक बात सुनि बुझि पड़ल जे माइक पीड़ा ओकरा सता रहल छइ। कहलिऐ–

"से की?"

सिंहेसरा बाजल–

"कक्का, जखन माए दुखित पड़ल, अपने गाममे नइ रही, घरवालीक समाद गेल, जे रूपैया रहए से पठा देलिऐ। जँ अपने गाम चैल ऐबतौं ते ओहो आमदनी केतएसँ आनितौं।"

बजलौं किछु ने मुदा मुड़ी तँ डोलाइये देलिऐ। डोलैत मुड़ी देख जेना सिंहेसराकेँ सह भेटलै। बाजल–

"कक्का, बेमारी आगू हम सभ सकबै, केते कमाइये अछि। बुढ़ियाक दवाइ छुटि गेलइ। पछाइत बहीन आबि अपना ऐठाम लऽ गेलै। ओहो ते हमरे जकाँ अछि। ओहो नइ सकलै। बेमारी बैढ़ते

गेलइ। ओत्तै मरि गेल। ओत्तै जराओलो गेल।"

जेना साँस छुटल, बजलौं–

"तँए ने बुझने छेलौं। भोज-भात नीक जकाँ केलहक किने?"

सिंहेसराक आँखि ढबढबाएल। बाजल–

"केकरा नइ माए-बापक सेवाक लिलसा रहै छइ, मुदा ओते वैभवो रहत तखन ने पार लागत।"

कहलिऐ–

"अखन काजक बेर अछि, तोहूँ जाह अपन काज देखहक आ हमहूँ खेत देखैले जाइ छी।"

◌

शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016

अपन पुरखाक डीह

गरमी मास तँए बजारक काज भिनसुरके उखड़ाहामे करब नीक बुझि–माने परिवारक काज छी, कोनो कि एकेटा दोकानक काज रहैए, रंग-बिरंगक काज, रंग-बिरंगक दोकान गेले पछाइत ने हएत। तँए बेसी समए लगिये जाइए। भिनसुरका उखड़ाहामे जँ कनी-मनी अबेरो भेल तँ नहाएब पछुआएल रहैए। जिनगीक गति-विधिमे नहेबो सृजन संस्कार छीहे। मुदा बेरुका उखड़ाहामे जखन घरसँ निकलैक समए होइए तखन जँ निकलब तँ घुमती बेर अन्हारमे पड़िये जाएब, यएह सोचि जलखै कऽ साइकिल पकैड़ झंझारपुर बजार विदा भेलौं।

गामक आखिरी टोल टपि जगरनाथपुर वाली रमकल, पच्छिम-मुहेँ माने झंझारपुरे दिस बढ़ल जाइ छेली। नवके सेनरेले साइकिल, हल्लुक चाइल, ई सोचि रेसमे जाइत रही जे कोनो काज करैमे शुरूसँ तेजी नइ राखब तँ पछाइत काजक मुहेँ टेँढ़ भऽ जाएत नइ तँ नाङैरे छपटा जाएत, तँए रेस रही। एक लग्गा आगू जखन जगरनाथपुर वाली आएल तखन चाकर-चौड़गर, देह आ दुलकी चाइल देख मन सिहैर गेल।

तीन साल पहिने जगरनाथपुर वाली पुतोहुक रूपमे लालपुर एली। जेहेन चाकर-चौरगर, हड़गर-कटगर देह जगरनाथपुर वालीक तइसँ बीसे छीतन भाइक सेहो रहैन। ओना चाकर-चौड़गर भुटाँरि

सेहो होइए मुदा से नइ, छीतन भाय जेहने चाकर-चौरस तेहने नमगर-छीपगर सेहो रहैथ तँए भीहगर पुरुख जकाँ रहैथ। मुदा तइ आगू तँ जगरनाथपुर वाली भौजी छोट-खुट्टीक बुझिये पड़ै छेली मुदा तइसँ की हुअए, पुरुखक नाप पुरुखक जड़ी-कड़ीसँ होइए, महिलाक नाप महिलाक जड़ी-कड़ीसँ होइए, तइ मानेमे जेहने भीहगर पुरुख छीतन भाय तेहने भीहगैर महिला जगरनाथपुर वाली। मोटा-मोटी यएह बुझू जे दुनूक जोड़ी अधो-छिधो भुटाँरिक श्रेणीमे नइ अछि।

खएर जे छेलैन, सुखल डेढ़ कट्ठा आ सहगर दू कट्ठा आ मटि-पनियाँ तीन कट्ठा खेत एक दिनमे छीतन भाय कोदारिसँ उनटा दइ छेलखिन। जे गामक सभ जनैए, कमासुत देख छीतन भायकेँ अनका जकाँ बिआहमे दलालकेँ नै भीड़बए पड़लैन, कन्यागते अपन बेटीक चेहरा-मोहरा भजारि पसिन कऽ लेलकैन। सोझ-मतिया छीतन भाय, माए-बाप मरि गेल रहैन, दान-दहेजकेँ हाथक मैल बुझि फेक देने रहथिन।

तीन साल तीन मास छीतन भाइक बिआहक भेल छेलैन, जइमे तीन मास मुइनो भऽ गेलैन। मृत्युओ कि कोनो कि ओछाइनपर पड़ल-पड़ल भेलैन। से नइ, पुरखाह मृत्यु भेल छेलैन। दुपहरका समए रहै, नहाइ बेर रहै, पोखैरक घाटक बगलेमे एकटा ढेंग रहै, ओकरे उठा पोखैरक किनछेरमे घाट बनबै काल छातीक हड्डीए सरैक गेलैन। हड्डी सरैकते ढेंग नेनहि खसि पड़ला, खसबक संग ऊपरसँ ढेंगक चोट सेहो नीक जकाँ लगलैन। ओत्ते घाटेपर छीतन भाइक प्राण निकैल गेलैन।

समैक संजोग कहियो आकि दुनूक संजोग सवा दू बर्खक एकटा बेटा छैन। समैक संजोग ई भेल जे तीस बर्खक बरकेँ बारह-बर्खक कन्याक संग बिआह भेने, चाहे सन्ताने बिलमसँ होइ आकि जनमैसँ पहिनहि कोंकिरिया जाइ। साल भरिक पछाइत छीतन भायकेँ बेटा

भेलैन। जाबे छीतन भाय जीबैत रहला ताबे जगरनाथपुर वाली अँगना-घरक काज सम्हारैत बेटाक सेवा करै दुआरे घरसँ बाहर कमाइले नइ गेली। ओना शुरूक साल नवकनियेँमे गेलैन, पछाइत बच्चाक बोझ पड़ि गेलैन। ओना जगरनाथपुर वाली ऊहिगर जनाना छैथे। घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेत-पथार धरि काजक बेसी लूरि। सभ लूरि ऐ दुआरे नइ जे असंख्यो लूरिमे किछुए लूरिक खगता लोककेँ जिनगीमे होइ छइ।

जगरनाथपुर वालीक दुलकी डेग देख मनमे भेल जे पुछिऐन जे "केतए जाइ छी।"

ओना अखन साइकिल सवारी पुरुख-औरत सभ मिलियो कऽ करै छैथ आ फुटो-फुट। मुदा से नइ ओइ जगहक बात छी जैठाम पुरुख-औरतक बीच संग मिलि साइकिल सवारी बरजित अछि। तँए संगे चलैक कोनो गर ने बुझि पड़ल। फेर भेल जे जँ साइकिलसँ उतैर दुनू गोरे गप-सप्प करैत रस्ता काटब ओ बेसी नीक हएत। फेर शंको हुअए जे आगू नमहर पाँतर अछि, रस्ते-रस्ते केते लोक चलत, सभकेँ अपन-अपन मन छै जँ कियो किछु उट-पटाँग बात बाजि दिअए, तखन तँ लेनी-देनी भऽ जाएत।

फेर भेल जे जहिना ओ उट-पटाँग बाजत तहिना हमहूँ उट-पटाँगे सुनि कऽ बुझि लेब। तँए लोक केकरोसँ गप-सप्प नइ करए, रस्ते-रस्ते चलए नइ, सेहो केहेन हएत। मने-मन गुनधुन करिते रही कि साइकिलक पैडिल ढील भऽ गेल, गति टुटए लगल। मुदा ताबे जगरनाथपुर वालीक बगलमे पहुँच गेल रही।

ओना, साइकिल चलिते रहए, मुदा ब्रेक दाबि ठाढ़ केलौं। बगलमे साइकिल रोकैत बजलौं–

"केतए जाइ छिऐ?"

एक तँ ओहुना दिअरक समाजिक सम्बन्ध, तैपर पति जीवित रहने महिलाकेँ अधिकारो क्षेत्र घटैए, जे पुरुखक सीमामे आबि जाइए, मुदा पति-विहीन भेला पछाइत परिवारक जवाबदेहीक भार पड़ने समाजिक बन्धनक बढ़ोत्तरी सृजित भाइये जाइए। जे जगरनाथपुर वाली भौजीकेँ सेहो भेटिये गेल छैन। ठाढ़ भेल साइकिलपर अपने ठाढ़ से उतरैक विचार करैत रही कि जगरनाथपुर वाली सोझा-सोझी लग भेली। चाइनपर छोट-छोट पसेनाक बुन टपकैत रहैन।

ओना मनमे प्रश्न घुरियाइते रहैन जे जखन पुछलैन, तखन उत्तर नइ देबैन सेहो केहेन हएत। एक तँ दीअर दोसर समाजक भाए-बोन, जँ कहीं कोनो जीवैक दोसर उपाइ करैथ वा कहैथ तँ आन गामक खटनीकेँ अपना गाम समेट आनब। जाबे गामक लोक अपन खटनीकेँ[7] अपन गाममे पलित नइ करत ताबे कोनो गामक फलित बनब भारी तँ अछिए...।

भौजाइक रूप बनबैत जगरनाथपुर वाली बजली–

"बौआ, की कहब! सबा-दू बर्खक बेटा अछि जे ने अखैन देह छोड़ि खेलाइबला अछि, आ जँ धिया-पुता संग खेलबो करत, सेहो बिना सोझमे रहने केना हएत।"

कहिते जेना जगरनाथपुर वालीकेँ अपने मन अपनाकेँ तौहीन कहए लगलैन तहिना चुप भऽ विचारए लगली। मुदा हमहूँ तँ ई बुझिये गेलौं जे जखन मनमे आइग पजैर जाइ छै तखन निच्चाँक मुहसँ खाली खोंरनीए चलबैक जरूरत होइ छइ। सएह करैत बजलौं–

"एना किए, की-कहाँ कहि देलौं। नइ बुझलौं अहाँक बात।"

हमर बात जगरनाथपुर वाली भौजीकेँ नीक लगलैन। अपन

[7] श्रमकेँ

मनक धैल-घड़हरक जेते घराउ विचार रहैन से एकेबेर उझलए चाहैथ, मुदा सातटा अन्न जे एके खेतमे उपजत तखन ओकरा बेराएबो कठिन अछिए। मुदा पहिलुका बातक नाङैरकेँ नेङरबैत मुँह पकैड़ बजली–
“बौआ, दू सालक बच्चाकेँ जेहन रक्षक माइक जरूरत होइ छै से..?”

पुछलिऐ–

“की रक्छक?”

‘की रक्छक’ सुनि जगरनाथपुर वाली आँखि उनटबैत बजली–

“बौआ, ओहन जिनगीक फाँसमे फँसि गेल छी जे किछ करैत किछ ने बनैए।”

भौजीक बातक कोनो भाँजे ने लगल। की बाजि रहली अछि...।

ताबे बलियारिक पाँतरक एकगच्छा लग पहुँच गेल रही। पएरे-पएरे दुनू गोरे गप-सप्प करैत जिनगीक परिवारिक रस्ता कटैत रही...।

कहलयैन–

“देखू, आब रस्ता लगिचा गेल। तँए कनी-कनी सभ गप कऽ लिअ। केतए जाइ छिऐ?”

बेवसीक स्वरमे जगरनाथपुर वाली बजली–

“बौआ, जहिया अहाँक भाय साहैब संग छोड़लैन तहियासँ ते अपने ऊपर ने अपन परिवारक भार पड़ि गेल।”

हूँहकारी भरैत कहलयैन–

“एकरा के काटत?”

सह पेब जगरनाथपुर वाली बजली–

“चिमनी भट्ठामे दुनू उखड़ाहा ईटा उघै छी।”

दू कोस पएरे चलि, आठ बजेसँ साढ़े दस बजे तक काज करैत जगरनाथपुर वाली डेढ़ घण्टा रस्ता प्रति खेप सेहो गमबै छैथ, जे चारि खेप भेल। सदिकाल मन बेटापर गड़ले रहै छैन जे देह छोड़ि एक उखड़ाहा छोड़ैबला बच्चा कहाँ अछि, खाइले बाटीमे दऽ आएल, गिलासमे पानि रखि देलक मुदा बच्चा-बच्चेक बीच ने रहत। जँ कोनो बच्चा मारबे करै आकि ठेलिये कऽ खसा दइ तँ ओइ बच्चाक कानबकेँ चुप केनिहार के हएत?

रामपुर चौकपर पहुँच गेलौं। आब दुनू गोरे दुनू दिस हएब, कहलयैन–

“भौजी, एकटा बात तँ छुटिये गेल।”

पाशा बदैल गेल, एते काल हम सुननिहार छेलौं, आब ओ भेली। बजली–

“की ई.. ई.?”

कहलयैन–

“जखन अपना सभमे दोसर-तेसर बिआह करै-के चलैन अछि, तखन एतेटा जिनगी असगरे काटब से नीक हएत?”

हमर बात भौजीकेँ नीक नइ लगलैन। मन बिदैक गेलैन, मुँह बिहैक गेलैन आ बोली चिहैक गेलैन–

“अपन पुरुखाक डीह केना उसरन कऽ देब। जाबे अपन सख-मनोरथ-तियागब नइ ताबे बाप-पुरखाक पगड़ी केना बँचत।”

भौजीक बात सुनि अनेको जिज्ञासा मनमे जगल मुदा ओहू वेचारीकेँ अबेर होइतै आ अपनो होइत, तँए संग छोड़ैत कहलयैन–

“जखन एते दूर काज करए अबै छी आ सरकार साइकिल बाँटिते अछि, ओहूँ एकटा मांगि लिअ।”

हँसैत भौजी बजली–

“अपन चरणबाबूक टैक्सी सदिकाल रिजरबे रहैए।”

◌

शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016

जेना हाथी रही

भोरे ओछाइनपर पड़ले रही कि लाल बाबाक अँगनामे तूर-फेन मचऽ लगलैन। कखनो-कखनो बाबा तेते जोरसँ बाजैथ जे बुझि पड़ै मारि हएत। बाबाक बात अझक्के सुनलौं–

“जेना हाथी रही..!”

सिरमापर मुड़ी उनटबैत देहो उनटेलौं। ओना बीचमे एकटा बात कहि दइ छी। हमर भोरक माने लाल बाबाक भोर नइ छिऐन। तेकर कारण अछि, हम अठबजिया ओछाइन छोड़निहार छी। बाबा जखनेसँ दिनक पहर शुरू होइ छै तखने जगि कऽ अपन पहरा करए लगै छैथ। तँए आठ बजे भिनसर हमर पहिल पहर भेल आ बाबाक तेसर पहर, जे भरल जुआनीक घड़ी छी। मुदा सभ ने अपने हाथक घड़ी देख अपन समए निर्धारित करैए, चाहे कियो सूर्यक हिसाब जोड़ए लगैए जे ओइठाँ केते समए होइ छइ। तहिना अपनो ने अपने घड़ी देख रूटिंग बनौने छी। भोरका मुहूर्त, अखन तँ शुभ-शुभ कऽ उठैक अछि।

अपन सटले घरक बगलमे लाल बाबाक अँगना छैन। सिरमापर मुड़ी ओंगठौने विचारए लगलौं जे बाबेक बात छी जँ सोझ पड़बैन आ कहीं मारि छानि लैथ तखन तँ अनेरे बिनु बुझने मारिमे फँसि जाएब। एक तँ भोरका जागरणक बेर, तैपर मारिये-मरौबैलसँ दिन शुरू करब

तखन तँ तेहेन जतरा बनि गेल रहत जे भरि दिन मारिये-मरौबैलमे चलि जाएत, तइसँ नीक जे अनठा कऽ किए ने पड़ले रही जे कियो देखबो करत तँ बुझत जे सुतले अछि। मुदा फेर लगले हुअए जे लाल बाबा तेहेन फटाह छैथ जे अपन अँगनाक झगड़ा नेने आबि मत्थेपर ने पटैक दैथ जे तोरा सन-सन पड़ोसिया रहने की आ नइ रहने की हएत। हम जे मरियो जाएब, तैयो तोहर भरोस नइ करब...।

फेर मनमे भेल, कनी बिलमैक तँ बाट-घाट अछिए। देहपर वस्त्र नेने बिना केना अँगनासँ बहराएब, जखन अँगनासँ बहराएब आ हल्ले-हुल्लक बात छी, अपन टोलक के कहए जे आनो टोलक धिया-पुता आबिये गेल हएत, किए ने बीचमे ओही धिया-पुतामे ओझराइत, जखन देखब जे बाबाक बोल नरमेलैन तखन पछुआरेसँ कहबैन–

“बाबा, हमहूँ छी तँए बेसी औगताउ नइ। परिवारेक बात छी, दस बरतन एकठाम रहैए, कनी-मनी ढाही-ढूही लगबे करतै।”

ओछाइनपर पड़ले-पड़ल विचारैत रही कि बिच्चेमे एकटा दोसर विचार मनमे मुँह उठौलक। मुँह ई उठौलक जे अखन बाबाक समए-काज केहेन छैन, माने हुनकर भरि दिनक क्रिया-कलाप सभकेँ बुझल छैन, हमरो बुझल अछि। हुनकर तँ तेसर पहर छिऐन, परिवारेक बीचक काजक मुहूर्त छिऐन। काजक दौड़मे–चाहे बेकतीगत हुअए कि परिवारिक आकि समाजिक–कनी-मनी घीच-तीर होइते अछि। आन परिवारक काजक योजनामे जाएब नीक हएत की नहि? फेर भेल जे एहेन जे पड़ोसिया हुअए जे काज-काजमे छिन्ना ताकत तखन तँ भऽ गेल समाजिकता। केकरो घरमे आगि लगतै आ अहाँ कहबै हमर पानियेँ छुबाइए तखन तँ निचेनसँ घरमे आगि लगल रहए दियौ। हाँइ-हाँइ कऽ गंजी पहीर देहपर गमछा नेने लाल बाबा लग पहुँचलौं। हमरा देखते चारि-चारि हाथ कुदैक फानैत बजला–

“ई सभ बड़-बुधियारि। जेना हाथी रही तहिना हिनका सबहक पाछू जिनगी ढहि कऽ बुढ़ा गेल मुदा हुकुमदारी लधले अछि।”

पाछूक बात तँ कोनो सुनने नइ रहिऐन, मुदा विचार तँ निर्णायक मोड़पर आबिये गेल अछि। निर्णायक मोड़ ई भेल जे बड़-बुधियार कि कम बुधियार से तँ नापीसँ हएत। तइले अमीन रखए पड़त, समए तँ ठहरावक अछिए...।

लफैर कऽ गेलौं आ बाँहि पकैड़ बाबाकेँ कहलयैन–

“बाबा, परिवारेक बात छी, असथिरोसँ भऽ सकैए।”

मुदा से बाबा मानि गेला। बैसते जेना बुझि पड़ल जे आब दोसरोक बात सुनैले कान ठाढ़ केलैन।

कान तँ ठाढ़ केलैन मुदा पुतोहु सभ हमरा दुआरे आकि की से तँ ओ सभ जानैथ मुदा देखलौं जे एक दियादनी चाह बनबए लगली, दोसर जलखैक ओरियानमे लगि गेली, तेसर बच्चाकेँ घरसँ निकलैले अंगा-पेंट पहीराबए लगली आ चारिम बाल्टीन नेने कल दिस विदा भेली। ओना मोटा-मोटी फील्ड छोड़ि कियो ने निकलली, सभ बाबेक बात सुनैले अपन-अपन कान ठाढ़ केने कनसोह लगौने रहैथ जे बुड़हा की सभ गप-सप्प करै छैथ। ओना बजैले लाल बाबाक मुँह लुसफुसाइन मुदा जेना कियो मनमे मनाही कऽ दैन तहिना ठोर समेट लैथ। ठोर समेटैक कारण बाबाक अपन जे रहल हौन से तँ ओ अपने जनता मुदा बुझि पड़ल जे बाबाक मनमे जेना कोनो नीके कि अधले बात बजैले छैन्हे नइ। एकर माने ई नइ जे हुनकर बोले हेरा गेलैन कि हारि गेलैन, कि हरण भऽ गेलैन, कि मरण भऽ गेलैन आ कि उसरन भऽ गेलैन। बाबाक मन ओइ सीमापर अँटैक गेलैन जेतए कियो अपन लाजक संग शस्त्र सज्जाकेँ सेहो, मुसहैन घरक बिल जकाँ भूर-भारकेँ बन्न केने रहैए वा बसैए। लोक लाज तँ ओत्ते ने अबैए जेतए लोकक

अहित काज होइए, तहिना शस्त्र सज्जा सेहो ओतए ने सजैए जैठाम ओकर मनन हनन दिस बढ़ए लगैए। ओना हनन दिस बढ़ैक अनेको कारण अछि, मुदा से अखन नइ, अखन एतबे जे किछ लोहो दोख किछ लोहारो दोख। ओना बाबाक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे किछु बजैले सनमनाइ छैन...।

पुछलयैन–

“बाबा, परिवारेक आ कि समाजेक छोट-बात पैघ केना भऽ कऽ बेसी नोकसान कऽ दइए?”

हमर बात सुनि बाबाक मुँहमे मुस्की एलैन। जहिना छोट बच्चा एक मुहेँ कनैए आ दोसर मुहेँ हँसैए तहिना बुझि पड़ल। जेना पहिनेसँ हमरे सबालक जवाब दइले मन बनल होइन तहिना बजला–

“बौआ महेश, आब ते अपने अन्तिम घड़ीमे पहुँच गेल छी, मुदा जाबे जीवै छी ताबे आँखियो केना मूनि कऽ पथरा लेब।”

बाबाक बात सुनि बुझि पड़ल जे टटका धाहक बोखार नइ लागल छैन बसिया बोखारक लछन छिऐन। ओना परसुए भनक लागल रहए जे बाबाक मनो आ देहो गम-गमा गेल छैन। गमगमियोँ तँ एकटा सीमा छीहे, ऐठामसँ बोखार आगूओ दिस बढ़ि सकैए आ छुटियो सकैए।

तहिना गम-गमी अबैयोक कारण अछि, कखनो शरीरक जलनसँ होइए तँ कखनो रौदमे चालि पड़लासँ होइए। तैबीच पुतोहु चाह नेने आबि हमरा आगूमे चाहक कप रखलैन। हम चाह देखए लगलौं, बाबाक हाथमे चाह धड़बैत आँखिमे आकि आँखिसँ की कहि देलखिन से तँ ओ जानैथ मुदा बाबाक दाँत खटखटेलैन, से जरूर सुनलौं। ओना बबो दाँत खटखटाइये कऽ रहि गेला, बजला किछु ने। पुतोहुओ ससैर गेलखिन। बीचमे हम पड़ि गेलौं। तँए जहिना सुरूज,

चान धरतीक अछि सएह भऽ गेल। चाह पीबैत-पीबैत मन भेल जे अपन सभ किरिया-कर्म पछुआएले अछि, से नइ तँ उठि विदा भऽ जाइ। मुदा लगले भेल जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ जाएत जे केतए एलौं तँ केतौ ने! हल्ला सुनि एलौं आ केलिऐ की? कमसँ कम बाबाक बेथो नै सुनिऐन, सेहो केहेन हएत। ओना बाबाक संग ठाँहि-पठाँहि गप-सप्प होइए, तँए मनमे भेल जे कहि दिऐन–

“बाबा, अपन सभ काज पछुआएल अछि तँए बेसी काल नइ अँटकब।”

जेना बबोकेँ उत्तर मुहेँपर रहैन तहिना बजला–

“तोरा कि कोनो पकड़ने छिअ। सभ अवाद रहअ, सएह ने कहबह।”

ले बड़ौर! ई बुढ़िया फूसि भेल कि बुढ़बा फूसि?

मुदा अपनाकेँ सम्हारैत कहलयैन–

“बाबा, भोरे-भोर किए गरमा गेल छेलिऐ?”

हमर बात बाबाकेँ नीक लगलैन। नीको केना ने लगितैन, केहनो दुखित-पीड़ित किए ने हुअए, ओ अपन दुख-पीड़ा तँ कानियेँ-खीझ आकि कहिये-सुनि ने मेटबैए...।

बाबा बजला–

“बौआ, बाध-बोन दिससँ टहैल कऽ अँगनामे पएर देनहि रही कि पुतोहु उपराग दैत कहली, अपना जीवैत नीक घर बना दउथ। से तोहीं कहह ई उचित भेल? कियो अपन घर अपना लूरिये-बुधिये बनौत आकि बबे भरोसे काज चलतै?”

बाबाक बात सुनि मन घुरिया गेल। की उचित भेल आ की नइ उचित भेल, ओ धाँइ-दे बाजब नीक नइ बुझि कहलयैन–

"एकटा बात आरो बुझब अछि ओ ई जे, छोट-रग्गड़ बड़का झग्गड़ केना परिवारो आ समाजोमे बनि जाइए?"

मने-मन जेना बाबा पहिने गुनिया-परकालसँ नक्शा मिलौलैन। नक्शा मिलिते बजला—

"देखहक बौआ, गाममे केतेको झगड़ा ओहन अछि जे घर बनैत-बनैत मठौत लग पहुँच गेल अछि, मुदा पैछला रग्गड़ घराड़ीक उठि बड़का झग्गड़ बनि गेल अछि। तेतबे किए, बिऔहती गीत दुरागमनमे आ दुरगमनियाँ गीत बिआहमे गाबि सेहो रग्गड़ ठाढ़ कऽ केतेको बरियाती कपार फोड़बैए।"

कहलयैन—

"बाबा, नीक नहाँति नइ बुझलौं।"

बाबा बजला—

"कोनो घर बनैए जमीनपर। तँए पहिने जमीनकेँ अनुकूल बना ली, जखन जमीन अनुकूल भऽ जाए तेकर पछाइत घर बनाएब शुरू करी, ई भेल प्रक्रिया। मुदा समाजो तँ समाजे छी, कखन केम्हर भऽ जाएत तेकर ठीक थोड़े अछि! तँए एहेन-एहेन सैयो-हजारो रग्गड़ झग्गड़ बनि ठाढ़ अछि।"

◌

शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016

कठफल

माघ मास, नरक निवारण चतुरदसी दिनक बेरुका उखराहा, रस्ताकातक परतीपर ठाढ़ भेल बैरक गाछ नमहर साँस छोड़लक। साँस ई छोड़लक जे अखुनका मौसमक फल तँ हमहीं छी किने, हमरे केने बाल-बोधसँ बाल कन्याक संग सियान पुरुखो आ सियान औरतो फलहारो करत आ नरकसँ उद्धारो पौत। मुदा से आनो बुझए तखन ने, केकरा एते फुरसत छइ, जे अपना छोड़ि अनकर कोन बात जे अपनो माए-बापकेँ देखैक फुरसत छै जे बुझत हमहींटा छी आकि आरो अछि। अमृत फल[8] रहितो कियो मोजरे ने दइए, कियो कठफल कहैए तँ कियो कँटहा फल।

..लगले बैरक गाछकेँ अपन आत्माक बोध भेलै। आत्म-बोध होइते मुहसँ निकललै—

"केकरो मोजर देने आकि नइ देने केकरो मोजर हएत। सभकेँ अपन-अपन गुण छइ। जइसँ ओ गुणवान अछि।"

'गुणवान' लग अबिते बैरक गाछकेँ अपन बास-भूमि, जनम-धरती पर नजैर पड़लै। केकरो जे कियो नाओं लइए से की ओहिना लइए। कठफल कहैए तँ ऐमे लाज किए हएत। फल की कठफल नइ

[8] माने ई जे माघ सन कठिन-समैक फल

होइए, काठेक गाछमे ने आमो फड़ैए आ कटहरो। ओना फलो तँ फल छी जे कोनो अकासमे फड़ैए तँ कोनो पतालमे, तँए केकरो फल नइ कहल जाएत? मुदा से नइ ने अछि, जहिना फूलमे कठफूल होइए, जेकरामे सुगंधो छै आ नहियोँ छइ, रंगो-रूप छै आ नहियोँ छइ, तँए ओ फूल नै भेल सेहो तँ नहियेँ कहल जाएत। ओना कठफूलकेँ लोक ने सुगन्धित मानैए आ ने देवतापर चढ़बैए। जखन कि कठफूलो सुगन्धित होइए, मुदा तैयो ओकर पूछ नइ छइ। तहिना हम कठफल भेलौं। जेकरा-ले ने एकोटा अस्पताल छै आ ने डॉक्टर। अँगूर-सेव इत्यादि फलकेँ साले-साले मेडिकल टेस्टो होइ छै आ शल्य चिकित्सा सेहो होइ छइ। माने ई जे अँगूर-सेवमे गुण पौल जाइए आ हमरामे नइ पौल जाइए। मुदा हमर टेस्ट कियो केनिहारे ने भेल। लगले गाछक मनमे आत्मबलक झोंक उठलै, बाजल—

"नइ कियो टेस्ट केलक तँ नइ केलक, तइसँ की बिगड़ैए गेल।"

झोंकमे तँ गाछक एक मन बाजि गेल मुदा लगले दोसर मन रोकैत कहलकै—

"मेडिकल टेस्ट नइ भेल मुदा नरकक दुआरिक मुँहपर तँ हमहीं ने ठाढ़ छी, ओ कियो झुठला देत।"

लगले मन आगू बढ़ि मनुखपर पहुँच गेलै, मनुखोमे ने कठमनुख होइए। ओकरा कहाँ हमरा जकाँ आइन-पीड़ा लगै छइ।

मन ठमकलै। ठमैकते पाछू दिस उनैट तकलक तँ बुझि पड़लै जे हमरा लोक कठफलक गहना पहिरा नाओं रखि देलक। माने आभूषित नाओं। भाय आभूषणो तँ आभूषणे छी किने। कियो सोनाक हार गरदैनमे लटकबैए तँ कियो कारी रंगक गोदनासँ छातीमे हार लटकबैए। यएह तँ छी आभूषण बनबैक कारगुजारी।

गाछक मन ठमकलै। ..अखन तक फले-फूलेक बातमे ने मनमे

घुरियाइ छल मुदा ई गड़बड़ भेल, माने कम आँट-पेटक बीचक भेल। गड़बड़ ई भेल जे एकटा होइए एकसँ लऽ कऽ साए तक सीखबो आ गनबो, दोसर होइए ओकर उनटा गनब, जेना सैयाँ-निनाबे, मुदा सीखत सुनटे गिनतीसँ ने। माने एक-दूसँ साठि, सत्तैर कहै छिऐ तहिना ने उनटो गननिहार सत्तैर साठि दू एक कहैए...।

गाछक मन ओझरा गेलइ। ओझराएले विचारमे सोझरी छोड़बैत विचड़लै—

"अनेरे ने हमरा धौजैन होइए, केकरोसँ कि अपना कम चास-बास अछि जे अनेरे अनकर हिसाब जोड़ैमे अपने हिसाब जोड़ैक समए ससैर जाएत। तँए अपना-ले किए ने झखी।"

'अपना-ले किए ने झखी' मनमे अबिते बैरक गाछकेँ जेना अपन शक्ति अभड़लै। अभड़लै ई जे लोक की मानए की नइ मानए। सभ अपन-अपन मनक मालिक मुखतियार अछि। राजा छी रानी छी। अखनो फलमे ओहन फल छी जे आम कटहर जकाँ ने ओगरवाहीक हिस्सा गनि कऽ कि तौल कऽ लइ छिऐ, आ ने केकरो दइ छिऐ। भाय, ओकरा सभ[9] जकाँ हमरा ओगरवाहक खगते कोन अछि, अपन ओगरवाही अपना लूरिये-बुधिये, हाथे-पएरे करै छी। ओकरा सभकेँ ने राति-बिराति चोरो तोड़ि कऽ लऽ जाइए, हमरा तेकर खगता अछि। डारि-डारि, पात-पात अपन फलक रक्छा-ले तैयार रहैए...।

गाछकेँ अपन किरदानीपर बिसवास जगलै। जहिना विचारो रंग-रंगक होइए तहिना ने कठविचार सेहो रंग-रंगक अछिए। जहिना कठविचार अछि, तहिना ने कठबुधियो आ कठविवेको अछिए...।

गाछक मन जेना दुनियाँ देखैत-देखैत दुनियेँमे वौआ गेलइ। तहिना वौआइत-वौआइत जखन सुनसान बोनमे पहुँचल तखन

[9] आम, कटहर इत्यादि

देखलक जे इजोतमे ने अपने बुझै छी जे ऐ परतीपर असगरे छी, एकेटा छी, मुदा रातिमे तँ से नइ बुझि पड़ैए। बुझि पड़ैए जे हमहूँ कोनो सघन बोनेमे छी...। ओह! अनेरे मनकेँ वौअबै छी। माटिक तरक केशौर जे लत्तीक जड़िक फल छी आ धात्री अकास फल, मुदा खेनिहार तँ केशौरेकेँ ने मीठ फल कहत। भलेँ खिसिया कऽ धात्री किए ने कहै–जे हमहूँ तोहर कोनो देवी-देवताक पूजा नइ करब...। अनेरे अनकर तीत-मीठक पाछू बेहाल होइ छी, अपन सुहाल किए ने देखब-बुझब।

अपन जन्म-भूमिपर नजैर घुमिते बैरक गाछकेँ अप्पन बोध भेल। बोध ई भेल जे फलनुमा वृक्षक एकटा फल हमहूँ छी, मौसमक हिसाबसँ तीनू मौसमकेँ, माने–गरमी, बरसा आ जाड़क अपन-अपन गुणानुरूपे अपन-अपन फलो-अन्नो, तीमनो-तरकारी आ फूलो तँ अछिए। अही जाड़क मौसमक फल हमहूँ छी, तखन जँ कियो 'कठफल' कहैए तँ जरूर ऐ पाछू किछु रहस्य अछि...।

आँखि उनटा-उनटा बैरक गाछ अपना दिस ताकए लगल। उनटल आँखि जेना अँगूरपर पड़ि गेलइ। पड़िते बुदबुदाएल–

"ऐकरासँ की हम सीख-लीखमे अधला छी। मुदा लोकोकेँ की कहबै। मिथिलांचलक एक मौसमक[10] फल उपैट गेल मुदा हम धरि पौष्टिक अहारक विचार कऽ रहलौं अछि!"

मन खिसिया गेलइ। तही काल गामक बाल-बोधसँ लऽ कऽ सियान-चेतन धरिकेँ फुलडाली नेने महादेव स्थान पूजा करए जाइत देखलक, तँ मन पड़लै–आइये ने नरक निवारण चतुरदसी सेहो छी। सभ ने अपन-अपन नरक निवारण करता।

पूजा केला पछाइत, घुमती बेर एक चेतन वाला दोसरकेँ

[10] जाड़ भरिक

आँगुरसँ बैरक गाछकेँ रस्तेपर सँ देखबैत बाजल–

"बहीन, अही गाछक बैरसँ फलहार करब। अमैनिया कऽ कऽ सिरा आगूक डालीमे रखने छी।"

रस्ता चलैत देवस्थानसँ घुमती वालाक ओंगरीक इशारा देख बैरक गाछक मन पसीज गेल। पसीज ई गेल जे देवालय जाइसँ पहिनहि अमैनिया कऽ सिरा आगूमे अही दुआरे रखि आएल अछि, जे नरक निवारणक अन्तिम क्षणक बिसरजन करैत फलहार करत।

जेना बैरक गाछक आत्म–शक्ति आत्मबोधकेँ जगौलक। आत्म बोध जगिते गाछकेँ आत्मबल जगलै। आत्मबल जगिते मनमे भेलै जे केकरोसँ दब केना छी। फलक उपैत माटियोपर होइए आ पानियोंमे होइए, तैबीच तँ अपनो छीहे। माटिक उपज भेल आम, कटहर इत्यादि-इत्यादि। पानिक भेल जामुनक छोट अकारमे जमुनी। मुदा अपने तँ ओकरा सबहक हिसाबे बेसी कठफल तँ छीहे। जहिना मरभूमि क्षेत्रमे, माने–मारल क्षेत्रमे, अकाजक क्षेत्रमे सेहो होइ छी, जेतए आम-कटहरकेँ के कहए जे जामुनो-जमुनी नइ होइए, तहूठाम तँ अपन बासो अछि आ बास-भूमि अछि जेकरा जन्मभूमि चाहे जन्म-स्थान सेहो कहै छिऐ। मुदा पाछूमे तँ एकटा पुछड़ी लटकले अछि किने जे केतए बास हएत? बास तँ ओत्तै ने हएत जेतए बसै जोकर हेतइ। जँ से नइ हेतै तखन ओकर वंश टिकतै केते दिन?

बैरक गाछक मन दू-दिसिया रस्ताक मोड़पर आबि भोथिया गेल। मुदा भोथियाएल रहल नइ, लगले मनमे उठलै जे कुनौली लग कोसी बान्ह टुटब सुनिते दरभंगा-मधुबनीक कटहरक गाछ सुखि जाइए। आम तँ थोड़े दिन दमो कसैए। लोक हमरा कठफल कहैए! सभकेँ अपना संगमे मुँह छै आ अपना फुरने बजैए।

..लगले बैरक गाछकेँ फेर मनमे खौंझ उठि गेलइ। खौंझ उठिते

मन कछमछ करए लगलै। जेना-जेना पोखैरक पानि कहियौ आकि कोनो बरतनक डोलैत-हिलकौरैत पानि, असथिर होइत जाइए तहिना-तहिना ने समाजो आ बेकतियोक मन असथिर होइत जाइ छै आ तहिना-तहिना बुधि-विचारमे नव-नव कोंपर जगि-जगि सघनताक सृजन करिते अछि...।

मनमे सघनता अबिते बैरक गाछकेँ अपन शक्तिक ई आभास भेलै जे रौदियाह जगह–मरूभूमि हौउ आकि पनियाह–गहींरगर खेत, जइमे सालक अधिक समए पानि अँटकैए, दुनूठाम तँ अपने बसिते छी। बसबे-टा केना करै छी, एते तँ आजादी ऐछे ने जे आम-कटहरक फल जकाँ केकरो भाँजमे नइ छी। जखने अपना मने चलैक विचार कहबै तखने ईहो विचारि लिअ पड़त जे जहिना बैरक गाछ रौदी-बाढ़ि सभ सहैले तैयार रहैए तहिना ने अपनो रहए पड़त। सूर-सूर, मूर-मूर दुनू संगे केना हएत..?

मनमे अबिते गाछकेँ सवुर भेल जे लोकक कहने की हेतइ, जखन फल दैक शक्ति अछि तखन वृक्ष केना ने भेलौं..! वृक्षपर नजैर अबिते मन खुशियेलै। खुशियाइते तुलसी बाबाक रामायण मनमे उपकलै। उपैकते भगवान रामकेँ शवरीक आश्रममे भूखल देख मन विचलित भऽ गेलइ। विचलित ई भेलै जे– जे राम स्वयं परब्रह्म छैथ हुनका शवरी सन आश्रममे एबाक की प्रयोजन भेलैन? मुदा भूखो तँ भूख छी...। भूखपर नजैर अँटैकते भगवान रामसँ नजैर उतैर जुग-पुरुष राणा प्रतापपर आबि गेलइ। अबिते बुदबुदाएल–

"जे तीन बेर खाइ छला ओ तीन बेर खाइ छैथ..!"

मुहसँ निकैलते कठहँसी लगलै।



शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016

गामे उपैट गेल

ओना जहिये हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही तहिये मास्टर साहैब सबहक मुहेँ सुनैत रही–जे जीव समए आ परिस्थितिक सामना नइ कऽ सकत, ओकर नाश भऽ जेतइ।

मुदा तइ दिन गुरुवाणी बुझि रइट तँ लेलौं, मुदा अर्थ हाइ स्कूलक के कहए जे कौलेजोसँ निकैल गेलौं, जे आइ बुझै छी, नइ बुझि पेने छेलौं। एकर माने ई नइ भेल जे कोनो अरथे ने लगल आकि ओकर अर्थ नइ बुझैत आबि रहल छेलौं। तखन तँ एते भेबे कएल जे कटैत-खोंटैत पैछला अर्थ–जे बुझैत आबि रहल छेलौं–मनसँ उपैट गेल आ नवका अर्थ चलि आएल। एकर माने ईहो ने भेल जे पुरना अर्थक सभ किछु नष्ट भऽ गेल, बीज रूपमे मनमे तहियो छल आ अखनो अछि। तखन तँ एते दूरी जरूर आबिये गेल अछि जे जेना पहिले बीजपर नजैर ओते नइ छल जेते फल बुझै छेलिऐ, आ आइ उनटैत-पुनटैत ई बुझि रहल छी जे पहिने बीआ हएत तखन ओकर अंकुरसँ गाछ हएत आ गाछमे जखन फुलै-फड़ैक शक्ति औते तखन फड़ि कऽ पुन: बीज रूप धारण करत। ओना आन गाममे जे होइए हौउ, मुदा हमरा गाममे तँ एते रग्गर सदिकाल होइते रहैए जे पहिने मुर्गी भेल आकि अण्डा..?

रजिष्ट्री ऑफिसक सनाकक काज करि कऽ झंझारपुरसँ एलौं।

मन उपो-उप होटलक भोजनसँ रहबे करए। ओना एके झोंकमे सभ काज समाप्त करैत झंझारपुरसँ घरपर आबि गेल रही, मुदा भोजनक पछाइत अराम छुटि गेल रहए, मन अस-बीस करिते रहए। परिवारक कोनो काजपर नजैर किए जाएत, पेटो भरले रहए। एकेटा रस्ता सुझए जे भरि-पोख अराम करब तखने चैन औत। सएह केलौं।

ओछाइनपर ई सोचि पड़लौं जे कमसँ कम दू घण्टा नीनसँ सूतब तखन धारक बाढ़िक पानि जकाँ कोर लेत। भोजन तेते चढ़ा कऽ भेल छल जे घण्टा-डेढ़ घण्टा बितलो पछाइत बुझि पड़ए जे कण्ठ तक भरले अछि। पानियोँने पीने रही, पानि नइ पीबैक कारण भेल रहए जे जेते जगह पेटमे पानिसँ छेकब, तइमे चारिटा रसगुल्लेसँ किए ने भरि देबै जे ओही पानिसँ मनकेँ बुझा लइले पानियोँक पूर्ति तँ भाइये गेल अछि।

ओना पानिक तृष्णा सेहो बेसी नइ जगल रहए तेकर कारण भेल जे नोनगर कम आ मीठगर भोजन बेसी भेल रहए।

ओछाइन तँ पकैड़ लेलौं, मुदा जहिना नीन निपत्ता भेल रहए तहिना मनो अस-बीस करिते रहए। मनक बेचैनी देख ईहो हुअए जे अनेरे एते खेलौं। मरिये जाएब तखन खेलहा थोड़े काज देत। फेर लगले हुअए जे कोनो कि अपना मने एते खेलौं, जहिना बीस बर्ख पुरान मित्र रघूदेवक आग्रह तहिना होटलबलाक रंग-बिरंगक विन्यासक नमूना टेस्ट करैमे खुआ गेल..।

कनी काल पड़ल रहलापर भोजन कर लगल, मनमे कनी आफियत भेल आफियत अबिते रघूदेवपर नजैर उठल।

रघूदेव हाइ स्कूलसँ कौलेज धरिक संगी, मुदा जखन ओ बी.ए. केला पछाइत कानूनक पढ़ाइ करए लगल तखन संग छुटि गेल।

ओकालत पढ़ला पछाइत अपन कोट-कचहरी माने झंझारपुर,

मधुबनीमे प्रैक्टिस शुरू नइ केलक। विद्यार्थीए जीवनसँ रघूदेव बजैमे फरकोर। जेहने बजैमे फरकोर तेहने कोनो बात बुझैयोमे।

दोसर दिन, प्रात:काल दरबज्जेपर बैसल काजक जुति-भाँति लगबैत रही कि रघूदेव चमड़ाक बैग हाथमे नेने पहुँचल। दिल्ली विदा भऽ गेल रहए। गामक सभ किछ गमा अन्तिम यात्रापर रहए। ओना रघूदेवकेँ देख मनमे ईहो भेल जे जखन सभ कुछ गमा गामसँ जाइये रहल अछि तखन अनेरे भेँटे करए किए आएल। ओ भेल दिल्ली-वासी, हम भेलौं गाम-वासी। तैबीच संग मिलि गपे की करब, आकि संग मिलि काजे की करब। सभ कथूमे दूरी तँ बनियेँ गेल अछि।

मुदा फेर भेल एहनो तँ होइते अछि जे एक-विचारक आकि एक काज केनिहारक बीच दूरी रहितो एक-गुण आ एक सूत्रो तँ काज करिते अछि, तहूमे आब तँ सहजे दुनियाँ समटा कऽ तेते छोट भऽ गेल अछि जे दुनियाँक सीमो-सरहद मेटाएल जा रहल अछि।

रघूदेवकेँ कुरसीपर बैसबैत, चाह बनबऽ आँगनमे कहि अपनो बैसलौं। बैसते पुछलिऐ–

"संगी, जखन स्कूल आकि कौलेज आकि आने ठाम संगे जाइ-अबै छेलौं तखन ने संगी छेलौं, मुदा आब तँ गाम छोड़ि जा रहल छह?"

ओना आगूक बात मुहसँ नइ निकलल, मुदा जहिना ऐनापर पानि वा गरदा-धूरा पड़ने देखै-देखाइक शक्ति क्षीण भऽ जाइ छै तहिना रघूदेवोकेँ भेल, मुदा दोसर उपाइये की...।

..ओना रघूदेव मध्यम किसान परिवारक माने दस-बारह बीघा जमीनबला, तैपर भैयारियोमे असगरे। जँ कानून पढ़निहार ग्रेजुएटक जगह कौमर्स आकि एग्रीकल्चर ग्रेजुएट रहैत तँ जरूर गाम छोड़ि नइ जाइत, मुदा पढ़बो-पढ़बमे अन्तर तँ अछिए। ओना पढ़बो-पढ़बमे जे

अन्तर अछि ओ बुझबो-बुझबमे सेहो अछिए...।

जहिना हमर मन वौआइत रहए, तहिना रघूदेवोक मन भरिसक वौआए लगलै। तँए गुमा-गुमी भऽ गेल। ने रघूदेव किछु बजैत रहए आ ने अपने किछु बजैक बकार फूटए। तैबीच पत्नी चाह नेने पहुँचली। दुनू गोरेक हाथमे चाहक कप पकड़ा जखन आँगन दिस विदा भेली कि कहलयैन–

"हम दुनू गोरे बच्चासँ बीस बर्ख उम्र धरि संगी रहलौं, मुदा आब तँ दुनू गोरे ओते दूर भऽ गेल छी, जे जिनगीक सभ किछुमे दूरी बनि गेल अछि।"

कनी काल पत्नी दुनू गोरेकेँ देख, चुपचाप आँगन चल गेली। पाँच साए रूपैयाक नोट बढ़बैत रघूदेव बाजल–

"संगी, काल्हि भरि दिनक?"

नोट देख मन सिहैर गेल। सिहैर ई गेल जे यएह छी बालपनक मित्रता। कहलिऐ–

"संगी, ई सभ किछु बात भेल। रखू अपन पाइ। मुदा एकटा बात कहू जे किए गाम छोड़ि चलि गेलौं।"

रघूदेव बाजल–

"गाम-घरमे हमरा सन पेशेवर-ले[11] समए प्रतिकूल भऽ गेल, मुदा दिल्ली सन शहर अनुकूल अछि, तँए जेतै अनुकूल रहत तेतै ने जिनगी असान हएत।"

कहलिऐ– "से की?"

रघूदेव बाजल– "बेवसायसँ ओकील भेलौं, जे केस-मोकदमापर ठाढ़ अछि। गाम-घरक केस-मोकदमामे आब कोनो लज्जैत अछि!

[11] माने, ओकालत पेशा

राँड़ी-बेटरखौकीक झागड़ासँ काज चलत..!"

ओना रघूदेवक विचार अनुकूल बुझि पड़ल मुदा कोट-कचहरीमे जे केस लम्बित अछि तेकरा नकारबो तँ नीक नहियेँ हएत। मुदा लगले मन घुमि गेल। घुमि ई गेल जे अनेरे गप-सप्पमे काजक समए चलि जाएत, जइसँ काजे बिथुत भऽ जाएत। तइसँ नीक जे रघूदेवो अपन काज दिस बढ़ह आ अपनो बढ़ी।..पुछलिऐ–

"गामसँ विदा भऽ गेल छह?"

हमर बात जेना रघूदेवकेँ छातीमे बेध देलकै तहिना तिलमिलाइत बाजल–

"आब गाममे रहिये की गेल। घरो-घराड़ी बेचिये लेलौं।"

हमरो सह भेटल, कहलिऐ–

"तखन अनेरे रस्ता रोकब नीक नइ हएत।"

चाहो सठि गेल। रघूदेवसँ पहिने अपने कुरसीपर सँ उठि गेलौं। हमरा उठिते रघूदेवो उठल। गप-सप्प करैत रघूदेवकेँ थोड़े दूर तक अड़ियाइत घुमि कऽ आबि फेर बैसलौं।

ओना खेतक काजकेँ बेँतने रही मुदा मन केनादन करए लगल, तँए काज दिससँ मन हटैक गेल। रघूदेव चलि गेल, मुदा अपन बोझ जेना ऊपरमे लादि देलक। लादि ई देलक जे जइ परिवारक रघूदेव छी, ओ परिवार आइयेक नइ, सैयो-हजरो बर्खक छी, अखन तक गाममे अँटावेश करैत आएल, मुदा जइ रघूदेवकेँ दस-बारह बीघा जमीन छल–जे करोड़ोक सम्पैत भेल, जेकरा बेच दिल्लीमे रहैक बेवस्था कऽ लेलक! संग-संग अपनो पढ़ल-लिखल अछि, आ तखन कहैए जे गाममे अनुकूल परिस्थितिये नइ अछि..!

किछु फुरबे ने करए। मन घोर-घोर भऽ गेल मुदा बुझि नइ

पेलौं। तैबीच पत्नी आबि बजली–

"मन-तन खराप अछि?"

तन ते खराब नइ बुझि पड़ल मुदा मन तँ ओझराएल रहबे करए। अपनाकेँ छिपबैत बजलौं–

"नइ, मन खराप कहाँ अछि, एतबे मनमे उठि गेल जे आब बचपनक संगीक संगपनो छुटि रहल अछि।"

बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं, मुदा बीस बर्खसँ, जहियासँ रघूदेव दिल्ली रहए लगल तहियेसँ संगपना छुटि गेल छल, जे पत्नीक मनमे रहबे करैन। बजली–

"एते दिनसँ जे छुटल छेला से कहियो सुमारके ने भेल आ आइ सुमारक होइए!"

जेना पत्नीक विचार मनकेँ झकझोरि देलक। कहलयैन–

"कनी, एकबेर आरो चाह पीया दिअ, एते कालमे केते काज पछुआ गेल। अनेरे लपौंड़ीमे पड़ि गेल छेलौं।"

चाहक नाओं सुनि पत्नी मुस्कियेली। मुदा बजली किछु ने। पत्नीक मुस्की आ बोलती बन्न देख अपनामे खौंझ खुरखुराएल। खुरखुराइते कहलयैन–

"मन भारी लगैए, जाबे चाह नै पीब ताबे हल्लुक नै हएत।"

पत्नी बजली–

"लगले कनी पहिने चाह पीलौं आ लगले फेर पीब।"

जहिना सिगरेट पीनिहार मनक कोनो ओझरी छोड़बैले कसि-कसि कस खीचि मनक ओझरी छोड़बए चाहै छैथ तहिना अपनो मन कहए। मुदा पत्नीक आना-कानी देख मने बगैद गेल। बजलौं किछु ने, चुप-चाप खुरपी हसुआ लेलौं आ बाड़ी दिस विदा भेलौं।

बाड़ीक मुहँपर एकटा लतामक गाछ अछि। गाछ लग जाइते मनमे भेल जे ऐठाम बैस जँ विचारबो करब तँ पत्नी बुझती जे कोनो काजे करै छैथ। तँए किछ बजती तँ नहियेँ। सएह केलौं। विचारए ई लगलौं जे पढ़ल-लिखल ग्रेजुएट जखन अपनो जिनगी जीबैले अनुकूले परिस्थिति तकै छैथ, तखन प्रतिकूल परिस्थितिमे जीब के सकैए? जिनगीमे अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति बनिते छइ, मुदा तइ दुआरे भागि पड़ा जाइ, सेहो केहेन हएत..! मन आगू घुसैक गेल। आगू घुसैकते गामपर पड़ल। हजार परिवारसँ ऊपरेक गाम अछि। मुदा गामोमे तँ सभ जातिक आ बेकतीक अपन-अपन गाम होइते छइ, तैसंग समाजोमे समाज बनिते रहैए। जेना बिनु पढ़ल-लिखल लोकक समाजमे जखन विद्याक आगमन होइ छै तखन पढ़ल-लिखल समाजक जन्म होइए जे रसे-रसे गुलजार होइए।

मन पाछू दिस उनैट गेल। यएह गाम छी जइ गाममे एकटा अमीन छला आ चारि-पाँच गोरे मिडिल स्कूल तक पढ़ने छला, सेहो गाममे नहि, आनठाम जा-जा पढ़लैन। गाममे स्कूल छेलैहे नहि। पछाइत चारिटा इंजीनियर आ एकटा डॉक्टर भेला।

पाँचो अपन पैत्रिक सम्पैत बेचि-बिकीन बजार पकैड़ लेलैन। एते जरूर भेल जे पाँचोक परिवारमे जहिना विद्याक बढ़ोत्तरी भेलैन तहिना धनोक भेलैन, मुदा ओ गाममे नहि, दरभंगा-राँची आ धनवादमे भेलैन। गामक परिवारो उपैट गेलैन आ सम्पैत सेहो दोसराक हाथमे चलि गेल। पछाइत गाममे मिडिल स्कूल खुजल आ पड़ोसी गाममे हाइ स्कूल आ तीन कोस हटि कौलेज, जइसँ पढ़ाइ-लिखाइमे बढ़ोत्तरी भेल से सभ जातिक बीच एक रंग नइ भेल। कोनोमे शत-प्रतिशत भेल आ कोनोमे दू-चारि प्रतिशत।

पढ़ल-लिखल लोक अपन परिवार लऽ लऽ शहर-बजार दिस

भागए लगला। गाम ठामक-ठामे रहि गेल। ओना पढ़ल-लिखल लोकक संख्या जरूर बढ़ल अछि, मुदा जेहेन पढ़ल-लिखल लोकक खगता गाम-समाजकेँ छै तेहेन नहि अछि। जाबे गाममे इंजीनियरक बास नइ हएत ताबे इंजीनक बास गाममे केना हएत। आइक युग जे औद्योगिक युगमे बदैल रहल अछि, माने मशीनीकरण भऽ रहल अछि, तैठाम अखनो बाढ़ि-रौदी–भयंकर नाशक–जीवित अछि! तहिना गाम-गाममे दू-चारि-पाँचटा डॉक्टरो बनि गेला अछि, मुदा की गामक लोककेँ रोग-व्याधि नइ होइ छै जे ओ सभ शहरे-बजार दिस पड़ा रहला अछि..? मन ठमैक गेल..! की गामे उपैट रहल अछि?

मने-मन केतबो ऐ प्रश्नकेँ पकड़ी मुदा गैंची माछ जकाँ हाथेसँ ससैर जाए। ससरैत-ससरैत बिनु पढ़ल-लिखल–कम पढ़ल-लिखलक संग बिनु पढ़ल-लिखल–लोकपर पहुँच गेल। ओहो सभ तँ एका-एकी भागिये-पड़ा रहल छैथ, तखन गाम? की जाँतक तरका पट्टा जकाँ गाम कीलेमे ठोकाएल रहत, आ जँ गाम कीलेमे ठोकाएल रहत तखन देश केना आगू बढ़ि जाएत। हँ, तखने बढ़ि सकैए जखन गाम छोड़ि देश हुअए।

असगरे लतामक गाछक निच्चाँमे बैसल विचारैत रही, जे पत्नी अँगनेसँ देख लेलैन। लगमे पहुँच बजली–

"की मनरोग तँ ने भऽ गेल अछि?"

अखन तक गामक पाछू बिरहाएल रही, तँए ने पत्नीक बोल मीठे लागल आ ने तीते लागल आ ने कठाइने लागल। चुप-चाप सुनि लेलौं। मुदा मने-मन, मन बाजल–

"तनरोगे ने मनरोगी बनौने अछि।"

◌

शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016

झूठे

सात सालक सुनैना माइक संग ममियौत भाइक मूड़नमे मात्रिक आएल। भरल-पूरल नानाक परिवार सुनैनाक। भरल-पूरल ऐ मानेमे जे नाना-नानी आ मामा-मामीक संग ममियौत भाए-बहिनसँ सम्पन्न परिवार। सभसँ छोट ममियौत भाइक मूड़न काल्हि छिऐ।

एक तँ ओहुना होइते अछि जे गाम-गमेतरीक आबा-जाही कोनो शुभ-अशुभ काजे भेलापर बेसी होइए, मुदा ईहो तँ नहियेँ कहल जाएत जे मात्रिक हौउ कि नैहर ओहुनो आबा-जाही होइते अछि मुदा से नइ, सुनैनाक ममियौत भाइक मूड़न छी तँए शुभे-शुभ सबहक मनोमे छइहे, माने सबहक मन शुभक अछिए।

सुनैनाकेँ अगुऔने सुलक्षणी माएकेँ गोर लागि बाजल–

"माए, यएह छोटकी बेटी–सुनैना छी।"

कहि सुलक्षणी सुनैनाकेँ कहली–

"बुच्ची, नानीकेँ गोड़ लगहुन।"

सात सालक सुनैना चेष्टगर भाइये गेल अछि। ओना चेष्टगरो-चेष्टगरमे अन्तर होइए। अन्तर ई होइए जे कन्भेन्टक सात सालक वाला आ सामान्य विद्यायलक वालाक वर्गक श्रेणीमे अन्तर भाइये जाइए, मुदा से नइ गामक सामान्य विद्यालयक वाला सुनैना। मुदा एते

तँ ऊहि सुनैनाकेँ भाइये गेल छै जे नानियोँकेँ चिन्हलक आ माइक बातकेँ सेहो अंगीकार करैत दुनू हाथ जोड़ि गोड़ लगैत बजबो कएल–

"नानी, गोड़ लगै छी।"

बिना किछु बजने सुवोधनी नातीनक आँखि-पर-आँखि दइत मुस्किया देली।

काजक दौड़ अछि, काल्हि पोताक मूड़न छिऐन, तँए सुवोधनीक मन कौल्हुका संस्कार-कर्मपर टांगल छैन। टांगलो केना ने रहतैन? परिवारमे सभसँ अनुभवी औरत तँ छेबे करैथ। तहूमे पुतोहु सोल्होअना अपनाकेँ हुकुमदारनियेँ बुझै छैथ, हुकुमदार साउसेकेँ बुझै छथिन। तँए कर्मक सभ भार सुवोधनी अपने ऊपर बुझै छैथ।

दोसर दिन सुनैनाक ममियौत भाइक मूड़न सबेरे सात बजे हएत। ओना औझुका मूड़नक दिन भेने, भरि दिनमे कखनो भऽ सकैए मुदा सात बजे शुभ अछि।

शुभक कारण अछि, समाजक बीच मूड़न सन कर्म छी, जइमे खीर-टिकड़ी समाजक बीच बँटले जाएत, जे वृहत काज भेल। बनाएब-विल्हब सभ अछि। ओना ऐ बातकेँ सुवोधनी नीक जकाँ बुझि रहल छेली जे विचारक दौड़क दुनियाँ आ काजक दौड़क दुनियाँमे केतौ-केतौ तल-विचल भाइये जाइ छइ, मुदा तल-विचल नइ हुअए तइले तँ चाँइक राखब जरूरी अछिए। ओ तँ तखने रहत जखन दुनियाँक माने जिनगीक आन काजकेँ सेरिया आगूक काजपर चाँइक राखब। तँए अखन सभ काजो आ विचारोकेँ मनमे तहिया मूड़नक काजमे लगौने छैथ। समैसँ पहिनहि नाई आबि अपन उपस्थिति सुवोधनी लग दर्ज करौलक। नाईक उपस्थिति दर्ज होइते बेटाकेँ पुछैत सुवोधनी बजली–

"बौआ, सात बजेक समए अछि।"

घड़ी देख सुकान्त जवाब देलकैन–

"पनरह मिनट बाँकी अछि।"

पनरह मिनट सुनि सुवोधनी आजुक अपन काजकेँ हियौलैन तँ बुझि पड़लैन जे समैक हिसाबसँ काज समटले अछि। मनमे खुशी भेलैन। पुतोहुकेँ कहलखिन–

"कनियाँ, बच्चा-ले नव वस्त्र सभ तैयार अछि किने?"

पुतोहु जवाब देलकैन–

"हँ।"

पुतोहुक 'हँ' सुनिते सुवोधनीक मनमे उठलैन– बच्चाक माथक केश अपने खोंइछ लेब नीक हएत। मुदा लगले मन आगू बढ़ि पुतोहुपर पड़लैन। अधिकार तँ हुनको छैन्हे, तँए एकबेर विचारि लेब जरूरी अछि। पुतोहुकेँ पुछलखिन–

"कनियाँ, बच्चाक माथक केश अहाँ खोंइछ लेब आकि..?"

मुदा जेना पुतोहु पहिनहि निर्णए करि नेने रहैथ कि की; तहिना सासुक मुहसँ खसिते पुतोहु कहलकैन–

"परिवारमे जखन सिरजन छैथे तखन हमरा-ले आगूक नमहर जिनगी ऐछे किने।"

पुतोहुक विचारकेँ बिना किछु काट-कूट केने सुवोधनी बजली–

"समए लगिचा गेल। पहिने नहा लइ छी, ताबे अहाँ डालीक सभ विहीत देख लियौ जे किछु बाँकी तँ ने रहल।"

कहि सुवोधनी नहाइले चलि गेली।

डालीमे ओरियाएल सभ वस्तु नेने सुलक्षणी नाईकेँ देखबैत बजली–

"हम सभ ते बेसी दिनपर काज भेने बिसैर जाइ छी, मुदा अहाँ

ते सालमे केतेको काज करै छी, तँए मिलान करि कऽ देख लियौ जे किछ छुटल तँ ने।"

सभ वस्तु जोरियाएल देख नाई मुड़ी डोलबैत सूहकार केलक। मुदा मनमे एकटा बात उठि गेलइ। उठि ई गेलै जे मूड़नमे माथपर हथियार[12] चलैए, जहिना कोमल केश उतारैक अछि तहिना तँ कोमल माथो छैहे। ओना केश सन वौस आकि कोढ़िला सन तनुक वौस, जेकर सिरमौड़ बनैए, बनबैमे भोथाएल हथियारोसँ तँ नहियेँ बनि सकैए, ओ तँ पानि चढ़ल ओहन लोहक ओजार छी जे अपने पैनी[13] बनल रहैए, तैपर आगिमे तपा पानि सेहो चढ़ाएल रहैए। तँए काजो तँ साधारण नहियेँ अछि, मुदा लगले नाईक मन आगू बढ़ि गेलइ। मूड़नक दोसर-तेसर काज आगूमे आबि आसुतोष देलकै जे कनी-मनी जँ केतौ माथमे लगिये[14] जाएत तँ ओकर दवाइयो तँ हाथेमे ने रहैए। माने ई जे जखने केतौ अस्तुरा घात करत तखने ओही केशसँ ओकरा अड़िया देबै जइसँ खून निकलबे-टा नइ, काटो बन्न भऽ जेतइ। घड़ी-पहरक घाउ हएत, लगले छुटि जाएत...। आगूक काज करैक हौसला बुलन्द भेलै, अपन हथियार नाई हथिया लेलक।

मूड़नक केश कटब शुरू भेल। स्त्रीगण सभ समवेत स्वरमे 'केश उतार गीत' गाबए लगली। गीतिहारिक आगूमे सुनैना मूड़न देखए लागलि। एक दिस नाई एक हाथमे ओजार नेने तैयार, बीचमे बच्चाकेँ बच्चाक माए पकैड़ रखने, दोसर दिस सुवोधनी केश-ले आँचर पसारने...।

अपना जिनगी दिस सुनैना ताकए लगल। हमर माथक केश

[12] अस्तूरा

[13] पातर

[14] कटिये

कहाँ उतरल..?

मुदा छोट जिनगीक छोट बुधि सुनैनाक तँए मनसँ लगले हटए लगलै। मुदा हटैत-हटैत एते तँ भाइये गेलै जे गीत गबैत अपन माएकेँ पुछए चाहलक जे हमरा कहाँ मूड़न भेल। ओना, गीत गबैत माए सुनैनाक बातपर धियान नइ बाँटि अपन बच्चाक मूड़नक गीतक संग नाईक ऊपर यत्र-कुत्र बाग-बान जे गीतिहारि सभ छोड़ि रहल छेली, तेम्हर बोहियाएल रहैन...।

मूड़न भेल। सुनैनाक ममियौत भाइक माथक केश उतरल, जे अखन धरि माथमे जनमल छल ओ हेट भेल। मुदा जड़िसँ थोड़े कटल। जड़ि तँ तरमे अछि जे ओहन भूमिक उपज छी जे जिनगीक जीवन्तताक घड़ी छी। माने शरीरक आन कोनो अंग वा वस्तु देख नहि पड़ैत अछि मुदा नहो आ केशो दुनूकेँ तँ सभ अपना नजरिये देखते अछि। ओना दुनूमे अन्तर सेहो छइ। अन्तर ई छै जे नह कटै काल जे नहक मृत्यांश काटल जाइए, जइसँ ने खून निकलैए आ ने पीड़ा होइ छइ, मुदा जीवित कटिते खूनो निकलैए आ पीड़ो तँ होइते छइ। भलेँ छोट रहने कम पीड़ा होइ छै मुदा पीड़ा नइ होइ छै से तँ नहियेँ कहल जा सकैए। केशमे से नइ होइए। केश कटै काल केशक पीड़ा, जे जीवित-मृत्यु दुनू अछि, नइ होइ छइ, होइ छै केशक संग माथक अंश कटने।

केश उतरल मुण्ड माथ देख सुनैना अपन माथक केश दुनू हाथे अजमौलक। माथमे केश रहबे करइ, तहूमे सात बर्खक वालाक बाल आगूमे आँखिपर सेहो झबड़ल रहबे करइ। जइसँ मनमे किए अनबिसवास उठिते जे हमहूँ मुण्ड माथ भऽ गेलौं आकि माथक केश कटि गेल। ई थोड़े बुझि रहल छलि जे केशक बुट्टी कहियौ कि ओधि, माथक तरमे होइ छइ, ऊपरसँ जँ उतैरे गेल, तँ उतैरते बुट्टीसँ निकैल-

निकैल खुटिया लगत आ बढ़ैत-बढ़ैत अपन सघन रूप बनबैत भकरार भऽ मुण्ड-माल बनि जाएत। जे माथक रक्षक हएत। रक्षक ऐ मानेमे जे आगि-पानि, रौद-वसात सभसँ सुरक्षा करैए। मुदा अखन तँ मूड़नक आगू-पाछूक काज जुड़ल चलि रहल अछि। जइ बीचमे दोसराक प्रवेश हएबे कठिन अछि। तैबीच सुनैना जँ बुझौ चाहत-माने पुछि कऽ, तँ केकरा एते फुरसत छै जे अपन काज छोड़ि सुनैनाकेँ बुझौत। तहूमे काजक दौड़ छी, जँ बेसी जोड़ करि कऽ माइये आकि मामीए आकि नानीए-सँ पुछौ चाहत तँ जवाबमे मारि छोड़ि किछु भेटियो तँ नहियेँ सकै छइ। भेटबो केना ने करितै, कोनो बात बुझब आ बातक बेवहारिक काजक दौड़, दुनूमे अन्तर होइ छइ। काजपर काज माने काजक एक अंग दोसर अंग धेने ठाढ़ रहैए, बीचमे बाधा भेने भंग हेबाक सम्भावना बनि जाइ छै जइसँ भंगो भऽ सकैए। मुदा कोनो बात आगूक लेल आकि जिनगीए-ले जँ बुझैक जरूरत अछि तँ पहिनो आकि पछाइतो बुझल जा सकैए। ओना काजक घड़ी जँ काजक प्रक्रियानुसार बुझौल जाए तँ ओ सभसँ बेसी नीक बुझैक होइ छइ।

..दूध जकाँ बच्चाक मुण्ड देख सात बर्खक सुनैना अपने-आपमे विस्मिते होइत गेल।

भोरसँ साँझ धरि सुवोधनी सहित परिवारसँ समाज धरि तेना काजमे ओझराएल रहल जे भोर साँझ दिस केना बढ़ल, से कियो बुझबे ने केलैन। एक तँ बैशाख मासक खढ़चट्टा समैक मुहूर्त, मूड़नक दिन, तैपर भिनसरसँ पूर्बाक झड़क मनकेँ झड़कबैत रहल, ओना मास-मासक पूर्बा हवाक अलग-अलग रूपो अछि आ चालियो अछि, तहिना पछबाक सेहो छइ। मुदा से नइ अखन बैशाख मासक भिनसुरका उखड़ाहाक उखड़ल पुर्बा–माने पूर्बा हवा जहिना देहक ऊपरी भागकेँ सिरसिरबैए तहिना भीतरी भागकेँ झरकेबो करैए। मुदा पछबाक विपरीत गुण छइ। ओ ई छै पछिया देहक ऊपरी भागकेँ

झड़कबैए आ भीतरी भागकेँ सिहरबैए। संस्कार काजक दौड़ संस्कारी मन किए पूर्बाक सिहरन आकि झड़कन बुझत। विधिवत काज चलैत रहल, काजक संग कर्ता चलैत रहत, किए दिनक सुर्ज दिस देखैत जे केते बेर भेल।

बारह बजेक बैशाखक बौखलाएल सुर्ज माथपर आबि ठाढ़ भऽ गेला। बच्चाक केश उतारला आ किरिया-कर्म भेला पछाइते ने खीरो-टिकरी बनबो करत आ बिलहलो जाएत। एक दिस बैशाखक कड़क-झड़क रौद तैपर चूल्हिक आगिक झड़क, मुदा तैयो मूड़नक छाँहमे खुशीए-खुशी।

पूर्बा हवा खसैत-खसैत बन्न भेल। माने सोल्हन्नी खसि पड़ल। ने पछबाक आगमन आ ने पूर्बाक सिहकी वा लहकी, माथपर ठाढ़ सुर्ज अपन सोल्हो–कलासँ तैयार, मुदा काजक विहीत काज, कर्ताकेँ सिरचढ़ काज, तँए समए-कुसमैक ठेकान किए किनको रहितैन।

पच्छिम-मुहेँ सुर्ज झुकला, पछबाक आगमन सेहो भेल। ओना ओ बेठेकान अछि, आगमन भैयो सकैए, नहियोँ भऽ सकैए आ भिनसुरका उखड़ाहाक पूर्बो चलैत रहि सकैए। सेहो बेसियाइयो सकैए आ कमियोँ सकैए। तहिना पछबोक अछि। संग-संग ईहो अछि जे भिनसुरको उखड़ाहामे पछिया चलि सकैए, कमो गतिसँ चलि सकैए, मध्यमो गतिसँ चलि सकैए आ तेजो गतिसँ चलि सकैए। ओना भिनसुरका तेज गतिक पछिया जँ आगू-मुहेँ बढ़ैत गेल माने तेज होइत गेल तँ दुपहर अबैत-अबैत बिकराल रूप पकैड़ लइए आ बिर्ड़ो-विहाड़िक रूप धारण सेहो कऽ लइए। जे पूर्बाक अपेक्षा पछबामे बेसी होइ छइ। जहिना दिन भरिक काज सम्हारि सुर्ज डुमला तहिना सुवोधनी सहित परिवारो काजसँ विश्राम लेलैन। दिनक पाँचम पहरक आधासँ बेसी समए निकैल गेल। रसे-रसे अन्हार पसरए लगल।

बीच आँगनमे बिछान बिछा सुवोधनी अराम करैक विचार केलैन। पोखैरक हिलकोरक पानि जहिना धीरे-धीरे धरियाइत धीर भऽ जाइए, तहिना सुवोधनीक मन सेहो धीरसँ थीर भाइये गेल रहैन...।

सुलक्षणीकेँ कहलखिन–

“बुच्ची, बड़का ओछाइन अँगनेमे बिछाबह आ सब-जन दिनक काजक नीक-बेजाइक विचार करह जइसँ ऐगला जे पीढ़ी अछि ओहो, देखबो केलक आ बुझबो करत आ सीखबो करत।”

ओना परिवारक भनसियासँ लऽ कऽ जेहो सभ धी-बेटी परिवारमे आएल छेली- सभ निचेन भऽ गेल छेली। भानसोक जरूरत नहियेँ छेलैन, दिनुके उगड़ल वस्तु छेलैन।

ओछाइन ओछा सुलक्षणी माइक आगूमे सिरमा दैत बाजल–

“माए, तूँ अराम कर, एक हाथ सेवा कऽ दइ छियौ।”

बेटीक बात सुनि सुवोधनी बजली–

“दिन भरि खटला पछाइत सभ ने थाकि गेल छी, तैपर जँ तूँ आरो खटबह से नीक हएत?”

माइक विचारकेँ उत्तर नहि दैत सुलक्षणी बाजल–

“काल्हि भोरे तँ चलिये जाएब, तैबीच फेर समए भेटत। सुनैनाकेँ परसूसँ परीक्षा छिऐ।”

बेटीपर सँ नजैर हटा सुवोधनी सुनैनाकेँ पुछलखिन–

“नातीन, कोन किलाशमे पढ़ै छी?”

सुनैना बाजल–

“तीनमे।”

बच्चाकेँ जहिना अपन हँसी देखा सिखौलो जाइए आ हँसौलो, तहिना सुवोधनीक मनमे रहैन। तँए ‘तीन’ सुनि मुस्की दैत बजली–

“तीन-मे कि तेरह-मे।”

नानीक बात सात बर्खक सुनैना किए बुझैत, ओ कि कोनो दस-दुआरि देवी दुर्गाक सप्तमी दिनक डिम्ह देब बुझैत। मुदा नानीक मुस्कीक संग मुस्कियाइत एते तँ बजबे कएल–

“एकहारा[15] जखन दुहारा[16]मे एक संग तीन लगि जाइए तखन तेरह भऽ जाइए।”

सुनैनाक बोल देख अपन लोल दोसर दिस घुमबैत सुवोधनी बजली–

“नातीन, जहिना बेटा तहिना बेटी, तँए बेटी केना बेटा बनि दुनियाँ देखत–यएह भेलौ तोहर जिनगीक परीक्षा।”

नानीक बात सात बर्खक सुनैना धियानसँ सुनलक। मुदा धियानो तँ ज्ञानेक बीच होइए, तँए सुनैनाक मनमे नानीक विचार नहि आबि आँखिक सोझ देखल पुरुखक संग पाछू-पाछू नारी झलकलै।

मुस्की दैत बाजल–

“झूठे-झूठे।”

ओना सुलक्षणी सेहो ओत्तै बैसल, तैसंग परिवारक आनो खरहू-मरहू आ अपनो परिवारक संग चेष्टगर-सियान औरत सभ सेहो बैसल।

सुलक्षणी ऐ ताकमे जे माए अपन बुढ़पनक विचार नेनपन वा बालपन नातीनकेँ केना बुझा पबै छैथ, आ बालपन मन सुनैनाक केना बुझि पबैए, से देखी। तँए चुपचाप नानी-नातीनक बीचक वार्तालापकेँ सुनैत।

आन-आन स्त्रीगण ऐ दुआरे चुप जे जखन सिरजन बजै छैथ,

[15] एकाएक
[16] एगारहसँ

तखन बीचमे बाजब नीक नइ। मुदा सुनैनाक ‘झूठे’ सुनि सुवोधनीक मनमे उठलैन,

नातीनो कोनो झूठ नइ बाजल जे आँखिसँ देखैए, कानसँ सुनैए, तही हिसाबसँ बाजल। तँए मनमे मिसियो भरि मतहानि नहि जे एना किए बाजल। अपन मन गवाही दैत रहैन जे यएह बच्चा जखन बिआह भेला पछाइत सासुर जाएत, एक परिवारसँ दोसर परिवार देखत, बेटीसँ पुतोहुक रूप बदलतै, जगह-परिवार बदलने जिनगीक बहुत किछु बदलतै। जैठाम वैचारिक संघर्षक संग बेवहारिक रूपमे सेहो टकराउ होइ छइ। माने ई जे एके वस्तुकेँ परिवारक आर्थिक स्थितिनुसार ओकर विन्यास बनै छै से किए अखन सात बर्खक सुनैनाक मनमे औत। ओ किआँने गेल जे वैधव्य जिनगी नारीक केहेन भारी अभिशाप छी..!

एकेबेर जेना दोरस हवा चलल..!

भरि दिनक थाकल-ठेहियाएल सभ, तँए निचेनसँ सुतबेकेँ नीक बुझि उठि गेली। उठैत-उठैत सुवोधनी सुनैनाकेँ कहलखिन–

“नातीन, झूठे सतो होइए आ सतो झूठ भऽ जाइए।”

◌

शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016

लाही

जागे भाय जगरनाथसँ एला। समाजिक भैयारी अछि नइ कि दियाद छिया आकि जाति। मुदा घर सटले कनी हटल अछि। छी एके टोलमे मुदा बीचमे तीन-चारि गोरेक घर छइ।

एक पनरहियासँ जागे भाय बाहर छला तँए गामोक हाल-चाल कहब आ हुनकोसँ यात्राक हाल-चाल बुझि लेब। ओना अपनो बाड़ीक काजक हलतलबी रहए, मुदा किछु छी तैयो समाजेमे बास करै छी किने। जखने समाजक वासी अपनाकेँ बुझब तखने समाजक दायित्व तँ निमाहए पड़त। जखने समाजक दायित्वकेँ बुझब तखने बेकतीगत परिवारसँ ओकरा ऊपर देखए पड़त, जँ से नइ देखब तखन समाज केना बुझब आ समाज केना समाज बुझता। तँए अपन काजकेँ कनी ठेलियबैत माने एक नम्बरमे जागे भायसँ भेँट करब आ दू नम्बरमे अपन काजकेँ करब। मनो मानि गेल। ओना मनमे हुअए जे एक दिनक कोन बात, जे एक क्षणो-पलो हूसने लोक बहुत हूसि जाइए, मुदा ओ तँ जगह-जगहक बात भेल। ऐठाम से नइ अछि, बैशाखा सजमैन-लत्तीक करीब पच्चीसटा जड़ि थरियबैक अछि। चाह पीब जागे भाय ऐठाम विदा भेलौं। टोलेक बात, जहिना गंजी-लूँगी पहिरने रही, देहपर तौनी रहए, तहिना विदा भेलौं। किए पत्नीए-केँ आकि टोले-पड़ोसेक लोककेँ होइतैन- केतौ अनतए जाइ छी, जे टोको-टाक

करितैथ।

करीब आठ बजे फागुन मासक भिनसुरका समए। जागे भाय, घरसँ हटल बीघा पाँचेपर दस धूर धनियाँ-खेती केने छैथ। ओना कनी पचता छैन्हे मुदा धनियाँक मास तँ छीहे। पचताक कारण भेल रहैन जे कैतकी कोबी काटि धनियाँक खेती केने छला। ओना अगता धनियाँ सभ रंगि रहल अछि, केतौ-केतौ कटियो रहल अछि। मुदा से नइ, जागे भाइक धनियाँ अखन अन्तिम फूल पकड़ने छैन। हमरासँ पहिने जागे भाय धनियाँ-खेती देख आएल छला। जेना मन टँगले रहल होइन, माने धनियाँ खेती देखैले, तहिना भोरे सुति उठि धनियेँ खेत देखैले चलि गेला।

अँगनाक मुँहथैरपर ठाढ़ भेल जागे भाय, पत्नीकेँ कहै छेलखिन–

“धनक छेजानैत भऽ गेल।”

ओना कहै छेलखिन पत्नीए-केँ मुदा फुटा-फुटा जे नइ बजै छला तइसँ पत्नी अवाक भेल आगूमे ठाढ़, मुदा हँ-हूँ किछु ने बजैत। बेर-बेर जागे भाय बजै छला आ पत्नी आँगनमे ठाढ़ बकर-बकर मुँह तकै छेलैन। हम पहुँचलौं मुदा जागे भाय नइ देखलैन। देखबो केना करितैथ। आँगन दिस मुँह घुमौने छला। दरबज्जा दिस मुँह घुमल रहितैन तखन ने जखने हमर नजैर हुनका पकड़लक तहिना हुनको नजैर हमरा पकड़ैत, से तँ भेल नहि। दरबज्जापर ठाढ़ रही मुदा पत्नीकेँ बेर-बेर कहथिन–

“धनक छेजानैत भऽ गेल!”

बोलीक सुआदसँ बुझि पड़ल जे जागे भाइक मन कलहैन्त रहलैन अछि। मुदा फेर हुअए जे भरिसक जगरनाथ पुरीसँ एला अछि, गाड़ी-ताड़ीमे मोटरी ने किियो चोरा लेलकैन। जे बात पत्नीकेँ कहै छथिन। कहबो तँ उचिते ने हएत जे ओहुना समाजमे जगरनथिया

परसाद बिलहता, तैसंग समुद्र सेहो देखने हेता, समुद्री सनेस- बड़का-छोटका शंख, माने अवाज करैबलासँ लऽ कऽ डोरामे गाँथल मलो नेने हेता, भरिसक सहए ने गाड़ीमे कियो चोरा लेलकैन। पाछूएसँ कहलयैन–

“भाय साहैब, जगरनाथ गेल छेलौं! समुद्रमे ढूसि लेलौं किने?”

अनचोकमे जहिना विद्यार्थीक इण्टरभ्यूमे पूछल प्रश्नक उत्तर रस्तेमे हेरा जाइ छै तहिना जगरनाथ भायकेँ भेलैन। अँगनाक सभ गप माने जे पत्नीकेँ कहै छेलखिन, हेरा गेलैन। मुदा जवाब देलैन–

“रघू, समुद्रमे ढूसि लेब असान अछि!”

पुछलयैन–

“तखन जे जगरनथिया सभ बजै छैथ ओ झूठे बजै छैथ।”

जगरनाथ भाय बजला–

“झूठ तँ नै बजै छैथ मुदा घुमा कऽ जरूर बजै छैथ।”

अखन तक ई बात नइ बुझै छेलौं, जे झूठ-सत बात-विचारक बीच घुमौनो अछि तँए जिज्ञासा भेल। जिज्ञासा तँ भेल मुदा नवका जिज्ञासा भेने पहिने कुशल-छेमक चर्च करबे ने केलौं आ मुहसँ बजा गेल–

“की घुमौन अछि, भाय?”

ओना कुशल-छेम जिनगीक ओ घड़ी छी जे भेला पछाइत, दू भेँटक बीचक जे खाधि अछि ओ पाटि दइए, मुदा मनमे ई रहबे करए जे जखन जानियेँ कऽ आएल छी कुशले-समाचार बुझह, तखन धड़फड़ीए कोन अछि। मुदा जँ कहीं बीचमे जिज्ञासेक प्रश्न मनसँ ससैर जाएत, तखन तँ टटका नोकसान हएत।

मुस्की दैत जगरनाथ भाय बजला–

"समुद्री जुआरमे ढूसि लइए, ई बात सब सते बजै छैथ मुदा मुँह-गरे नहि पीठ-गरे। ओ ढूसि थोड़े भेल। हँ, एते तँ होइते अछि जुआरक पानि उठौने-उठौने थोड़े दूर धैरपर लऽ गेल आ अपने पाछू उनैट अहाँकेँ धैरपर बैसा पाछू ससैर गेल।"

पुछलयैन–

"की कहलिऐ घुमौन?"

'घुमौन' सुनि जागे भाइक मुँहक हँसी फुटि कऽ निकैल गेलैन। हँसैत बजला–

"घुमौन सब कथुमे अछि। काजोमे अछि, चालियोमे अछि आ बातो-विचारमे अछि।"

एक तँ ओहिना बातक घुमौन नइ बुझै छेलौं, तैपर तेते रास विषय जागे भाय रखि देलैन जे मने उग-डूम करए लगल। मुदा गपो करैक तँ क्रम होइए। जे क्रम जेना शुरूसँ सोझराएल रहत ओ क्रम ओते सुहरदे आगूक क्रमकेँ पकड़ैत रहत आ नहि जँ शुरूहेक गपमे कोनो गीरह-गाँठ पड़ि गेल तँ आगूक क्रमो ओहिना गिरहाइत-गँठियाइत चलैए। तँए सोचलौं जे पहिने पुछिऐन जे कखन गाम पएर देलैन? ओहो अखन टटके गाम आएल छैथ तँए कोनो आन काजक धड़फड़ियो नहियेँ हेतैन आ तहिना अपनो तँ जानियेँ कऽ आएले छी कुशले-छेम करए। पछाइत घुमौनक बात पुछबैन। पुछैयोक बुझैयोक तँ अधिकार अछिए। कहुना छैथ तँ पढ़लो-लिखल बेसी छैथ, उमेरो बेसी छैन आ हमरासँ बेसी नमहर परिवारोक गारजनी करिते छैथ। पुछलयैन– "भाय, गाम कखन पहुँचलौं, जतरा नीक रहल किने?"

ओना मनमे ईहो होइत रहए जे पहिने टटके सुनलाहा गप पुछिऐन जे धनक की छिजानैत भऽ गेल। मुदा ओहो तहिया कऽ मनमे रखि लेलौं जे जँ समए बँचल रहत तँ पछाइत पुछि लेबैन। चाहे

बिच्चेमे केम्हरोसँ केम्हरो पुछि लेबैन। मुदा सगुन जेना बनले रहए तहिना भौजी एकटा जगरनथिया बेंत, एकटा शंखक माला आ मकैया लड्डु नेने पहुँच हाथमे धड़ा देलैन।

एकटा मकैया लड्डू मुँहमे देलिऐ, भेटल परसाद जँ सभटा अपने खा लेब तखन परिवारमे बाल-बच्चाकेँ की देब, यएह सोचि एकटा दाना खेलौं आ बाँकी गमछाक खूटमे बन्हए लगलौं कि मालापर नजैर गेल। नजैर जाइते मनमे उठल- ई तँ छी अवाजे करैबला शंखक बच्चा जे बच्चेमे मरि गेल, सएह माला छी! फेर भेल जे नइ ई बड़का बजैबला शंखक बच्चा नइ छी, भरिसक मले बनबैबला शंख छी।

..फेर भेल जे जखन दुनू दू काजक भेल तखन वंश केना एक हेतै आकि नाऊँए किए एक हेतइ। मुदा जागे भायसँ गप-सप्प करैक रहए तँए अपन मनक बातकेँ दबैत आगूमे ठाढ़ भेल बेंतपर धियान गेल। एकरा सिरा-आगू[17]क चारमे खोंसि देब। बेर-बेगरतामे काज हएत।

जाबे तक अपन सनेस सेरियेलौं ताबे तक जागे भाय सेहो मुँह बन्न केने रहला, कि सोचि केने रहला से तँ ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल जे परसाद सन वौसकेँ उपयोगमे केतौ धोपचटमे गड़बड़ ने भऽ जाइ, तँए। जागे भाय बजला–

"ओना गाड़ी कनी लेट रहै तँए दू घण्टा लेटसँ गाम पहुँचलौं मुदा तैयो बारह बजे रातिसँ पहिनहि पहुँच गेल छेलौं। सकरीए-सँ पत्नीकेँ फोनसँ कहि देने छेलिऐन, ओहो धियो-पुतोकेँ जगौने रहली आ भानसो पछुआ कऽ केली, तँए टटके भोजनो केलौं।"

बारह बजेक करीब पहुँचबे केला। हाथ-पएर धोइमे सेहो समए लगले हेतैन। तहूमे पत्नी ओसारपर खाए देने हेतैन कि नइ।

[17] गोसाँइ-आगू

जगरनथिया यात्रीकेँ पूजा आ भोज केला पछाइत छूत छुटै छइ। जाबे तक भोज नइ केने रहल ताबे तक ओ अछूत समाजेमे नइ अपन परिवारोमे भेल रहैए। तहू बुझारतमे समए लगले हेतैन, कहुना-कहुना तँ रौतुका मसिम रहने केतबो धड़फड़ाएल हेता तैयो डेढ़-दू घण्टा समए तइ सभमे लगिये गेल हेतैन। तहूमे गाड़ी-सवारीक जतरा, परो-पैखानामे बेसी समए लगले हेतैन। तखन केना टटके भोजन केलैन? दिन बदैल गेल, तारीख बदैल गेल मुदा भेटलैन टटके! बर-बेसी तँ गरमा-गरम भऽ सकैए।

फेर मनमे एकाएक भेल जे अनेरे झूठ-फूसक फेरमे समए नोकसान करै छी। तैबीच भौजी चाह नेने पहुँचली। पानिक खगता रहबे ने करए, किएक तँ ओहो देख नेने छेली जे परसाद खेलौं नइ मोटरी बान्हि लेलौं। दुनू गोरे-माने हमरो ओ जागेओ भाइक हाथमे चाह पकड़ौलैन। एक चुस्की चाह लप-दे मारि नेने छेलौं मुदा जागे भाय पछुआएले छला। तैबीच मे जेना हुनकर मन पत्नीपर कड़ैक गेलैन। कड़ैक ई गेलैन जे बजै कालमे अपनाकेँ नीक किसानक सिखौल बेटी कहै छैथ मुदा...। नीक किसान ओ भेला जे खेतीमे अधिक-सँ-अधिक रंगक वौस उपजा अपन जिनगीक रंग पकड़ने रहै छैथ। मुदा धनक छिजानैत भऽ गेल आ बुझियो ने पेली..!

ओना जागे भाइक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे पत्नीपर बेसी मन कड़ुआएल छैन। मुदा हमरा दुआरे बकार बन्न केने छैथ। बीचमे बैसल रही, दुनू बेकता-बेकतीक बीचक बात छी, किछु टोकबो नीक नहि। मुदा लगले मन गबाही देलक–बेकता-बेकतीक माने भेल परिवार। समाजक बीच परिवार अछि, मुदा परिवारोक अपन सीमा छै किने। जेकर अतिक्रमण नइ हेबा चाही। मुदा जहिना परिवारक घरक ओलतीक पानि धरियाइत गामक बहैत धारामे मीलि जाइए तहिना गाममे आएल बाढ़ि वा अधिक बर्खाक पानि सेहो ने उनैट-उनैट

परिवारक ओलती लग पहुँच जाइए। मुदा से अछि सूत्रनुमा। माने ई जे समाजक बीच परिवार-परिवारमे जखन बेवहारिक जिनगी समैट चलैए तखन काजक संग-संग विचारो सटैत चलैए। जेतै एक-दोसर परिवारमे विचारक सटाव होइए तेतै एक परिवारक सम्बन्ध दोसरसँ सघन होइत जाइए। ऐ मानेमे जागे भायसँ सम्बन्ध अछिए...।

दोहरबैत पुछलयैन–

"भाय, जतरा केहेन रहल?"

जहिना पुछलयैन तहिना ओ तर-दे जवाब देलैन–

"बाहरक जतरा तँ नीके रहल मुदा घरेक जतरा भंगैठ गेल।"

जागे भाइक बात सुनि मन अग-दिगमे पड़ि गेल। अग-दिग ई जे पनरह दिनक जतरा नीक रहलैन आ बारह बजे रातिमे एबे केला अछि, एतबे कालमे की भंगैठ गेलैन? नइ रहल गेल, पुछलयैन–

"राइतमे नीन ते कचोटे रहल हएत, भरिसक वएह मन भकुऔने अछि की?"

चेहरासँ बुझि पड़ल जे हमर बात जागे भायकेँ नीक नइ लगलैन। मुदा बजता किछु तखने ने बुझब। जेना मनक आगिक ताउ जागेओ भायकेँ निकलैले तनफन करैत रहैन जे निकैल नइ पाबि रहल छेलैन। ओना मनमे ईहो उठल हेतैन जे अनेरे केकरो लग कानियेँ कऽ की हएत, मुदा बिना कननौं तँ कियो नहियेँ बुझत जे मन पीड़ित किए अछि।

बजला–

"रघू, लछमी-पात्र जहिना मनुख होइए तहिना खेतो-पथार होइए। मालो-जाल तहिना होइए आ गाछो-बिरीछ तहिना। मुदा जँ ओकर पूजा नइ होइए, तँ सएह ने भेल ओकर कुभेला। पूजा भेल

कोनो काजक वस्तुक उचित ढंगसँ उचित स्थानपर उपयोग, आ कुभेला भेल एकर विपरीत। जखने लछमी-पातक कुभेला हएत तखने लछमी रूसि रहती, बगैद जेती, घरसँ पड़ा जेती।"

बाजि जागे भाय जेना अपन विचारकेँ बिलमौलैन। जइसँ मुँह बन्न भेलैन। मुदा एके झोंकमे तेते बाजि गेल छला जे सुनबे-टा केलौं, बुझलौं नइ। माने ई जे कोनो बात कियो सुनबे-टा करैए आ कियो जिनगी बुझि जिनगीमे उतारितो अछि। मुदा से नइ, हम ऐ दुआरे सुनबे-टा केलौं जे जागे भाइक विचारक झोंकीसँ बुझि पड़ल जे टटके जगरनाथसँ एला अछि, भरिसक जगरनाथक पण्डा सबहक जे झोंक देखने हेथिन तही झोंकमे बजला अछि। ओना अनसुनियोँ कएल जा सकै छल मुदा छी तँ असगरे आगूमे बैसल। जँ कहीं गोटे-बेर बिच्चेमे पुछि दैथ जे की बुझलहक, तइले जँ सुनियोँ कऽ नइ राखब तखन मुह उठा जवाब की देबैन। तइले सुनब तँ ऐछे, तँए सुनैत रहलौं।

जागे भाइक जिज्ञासा जेना हमरापर पड़लैन, तहिना बुझि पड़ल। माने ई जे जखन धारमे पानि फुलाइ छै तखन खेतबला सभ अपन-अपन खेत पटबैले नहर चीर-चीर लऽ जाइए तहिना भरिसक जागेओ भायकेँ भेलैन। मनमे भेल जे गपे-सप्प करए ने आएल छी, तहीमे कुशलो-छेम कऽ लेब, जतरोक वृतान्त सुनि लेब आ गाम-घरक कुशलो-छेम कऽ लेब। ई तँ नइ जे ब्रह्मस्थानक भागवत कथा जकाँ सोल्होअना सुनैयेटा-ले आएल छी। गप-सप्प तँ ओ प्रक्रिया छी जइमे कोनो गम्भीर रहस्य हौउ आकि गम्भीर क्रिया, ओकरा वैचारिक रूपमे जानब रहैए। मनमे भेल से नइ तँ पहिने यएह बुझि ली जे की घरक जतरा भडैठ गेलैन। पुछलयैन-

"घरक जतरा की भडैठ गेल?"

हमर बात सुनि जागे भाय मरमान्त भऽ गेला। मनमान्त ई जे

जिनगीक एकटा अभावक पूर्ति साल भरिक लेल होइत ओ नष्ट भऽ गेल। बजला–

"रघू, तोरा संगे सब गप परिवारसँ लऽ कऽ दुनियाँ-दारी धरिक होइए तँए बजैमे कोनो संकोच नहियेँ अछि।"

जहिना दुहैसँ पूर्ब गाए चुकैर-चुकैर दुहैले कहैए तहिना जगरनाथ भायकेँ मेघौन आँखिमे बुझि पड़ल। टोकारा भरैत बजलौं–

"भाय साहैब, अपना सबहक परिवार कि कोनो आइये ऐ गाममे बसल अछि। इतिहास बजै आ नै बजै मुदा एकठाम पुस-पुसतानिसँ भाए-भैयारी बनि अबैत रहलौं अछि। सबहक जिनगीक सभ बात किए जे बापो-दादाक केलहा बात सब सबकेँ जनिते छी, तखन धखाइक कोन गप अछि।"

हमर बात जेना जागे भायकेँ पाछूसँ रेड़लकैन तहिना क्रनदन स्वरमे बजला–

"रघू, जहिना हमर परिवार अछि तहिना तोरो परिवार छह। दैनंदिनक भोजनक जरूरी वौस धनियोँ छी। मसालाक रूपमे सभ जनै छइ, ओ अँचार, चटनी इत्यादि रूपमे भोज्य विन्यास सेहो छी।"

'अँचार-चटनी' सुनि मन चटपटाए लगल, जइसँ बिच्चेमे बजा गेल–

"हँ, से ते छीहे। फड़-फूलक कोन बात जे डाँटो-पातक रस मनकेँ मोहि लइ छइ।"

ओना अपन मन चसगर भऽ गेल रहए मुदा जागे भाय गम्भीर भऽ गेला। गम्भीर होइत बजला–

"रघू, साल भरिमे आठ किलो धनियाँक खगता परिवारमे रहैए। जे दस धूर खेतमे कऽ लइ छी, आठ किलो सबा आठ किलो गोटे-बेर

नबो किलो भऽ जाइए।"

बिच्चेमे बजा गेल–

"एकरा के काटत। कोनो चोराएल गप अछि। मासे-मास अधा किलो कीनै छी तैयो मासक उनाड़ीमे दू-चारि दिन हताले रहैए।"

हमर बात जेना जागे भायकेँ नीक लगलैन। बजला–

"रघू, आठ किलो धनियाँक दाम तँ चारिये साए रूपैआ भेल, मुदा से नइ किसानी जिनगीक चूक भेल किने जे लाही खा गेल आ अपने मुँह तकैत रहि गेलौं!"

जागे भाइक विचारसँ बुझि पड़ल जे अपन पनचैती अपने कऽ रहला अछि आ तामस पत्नीपर छैन। मुदा ओहो लगमे नहियेँ छैन तँए सूहकारी दैत कहलयैन–

"जगरनाथ जाइसँ पहिने नीक जकाँ देख नइ नेने छेलिऐ?"

अपसोच करैत जागे भाय बजला–

"देख नेने छेलिऐ, धनियाँक फूल कलियाएले छल, गोटे-गोटेक मुँह खुजल छेलइ, मुदा तहिया लाहीक केतौ दरस नहि छेलइ। एक पनरहिया बाहर रहलौं, तही बीच लाहीक प्रकोप भेल आ खेतक फूल चाटि लेलक!"

कहलयैन–

"पहिने तँ उपाय कएल जा सकै छल?"

बजला–

"हँ, कएल जा सकै छल, मुदा शुद्ध वस्तुकेँ जानि कऽ दूषित करब नीक नहि बुझि, नइ केलौं।"

ओना गप-सप्पक क्रममे बुझि पड़ए लगल जे पहिलुक जे धधड़ा मनमे छेलैन ओ छाउर जकाँ बनि रहल छैन, तँए किए ने दोसर दिस

मन घुमा दिऐन जे जेहो छाउर मनमे छैन ओहो राख बनि उधिया जेतैन। पाशा बदलैत कहलयैन–

"भाय, एकटा बात नइ बुझि पेलौं जे लछमी-पात्र की कहलिऐ?"

मंच परक कलाकार जहिना एक पार्टसँ दोसर पार्ट खेलए लगैए तैबीच मेक-अपमे जेते समए लगै छै तहिना जागे भाय माइंड मेक-अप करैत बजला–

"अखन फागुन मासक मध्य छी, बाधसँ रब्बी-राइ कटि कऽ घर चलि आएल, बाधमे मात्र खेत-टा रहि गेल अछि। तँए अखन ओ मात्र खेत छी। मुदा जखन ओकर गर्भमे फसिलक अंकुरन होइए तहियासँ ओ गर्भ-पात्र बनैत धीरे-धीरे लछमी-पात्र बनि अन्न, फल, फूल, तीमन, तरकारीक बरसा करए लगैए। तहिना मनुखो अछि मालो-जाल अछि आ गाछो-बिरीछ।"

ओना सभ बात नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं, तहूमे किछु उदाहरणेटा देलैन, मुदा विचारमे तेना फँसि बोहिया गेलौं जे विचारधारेमे भँसिया गेलौं...।

कहलयैन–

"हँ से ते ठीके।"

जागेओ भाय जेना पाशा बदललैन। तैबीच भौजी आबि बजली–

"जिनका सभ-ले परसाद अनने छी ओ टटके पहुँचा देबैन आकि बाइस-तेबाइस कऽ देबैन। जँ बैजनाथक पेड़ा रहैत तँ किछु दिन बसियो टटके रहैत।"

टोकारा दैत जागे भाय पत्नी दिस इशारा करैत बजला–

“छैथ तँ आँखिमे रखैवाली मुदा रहैक लूरियो रहतैन तखन ने, सेहो पुरुखे देतैन।”

◌

शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016

परतीहा खढ़

परतीहा खढ़क माने दू ढंगसँ लेल जाइए, एक- जे परतीमे उपजैए आ दोसर- जे परती बनबैए। तैसंग ईहो तँ कहले जाएत जे जे खढ़ परतीमे बास करैए, तँए तीनूकेँ तीन नजरिये देखए पड़ै छइ। पहिल भेल जे खेतमे उपैज कऽ खेतक उपज शक्तिकेँ क्षीण करैत गहींर-बसैत धरतीक ऊपरमे लतरबो-चतरबो करैए आ फुलेबो-फड़बो करैए, जेना राड़ी-डबहारी। मुदा बीज रूपमे फड़ रहितो, आन बीज जकाँ धरतीमे नइ समा अकासमे उड़बो करैए आ दोसर-तेसर जगहो पकैड़ उपजैए। उपजाउ भूमिकेँ परती बनबैक शक्ति ओकरो छइ। ओना गाछी-बिरछीमे सेहो अछि, आमक गाछीमे गाछ रहितो बीच-बीचक जमीनमे शक्ति रहिते छै जे दोसरो-तेसरो गाछ-पातकेँ बसबैए, मुदा बाँसमे से नइ छइ, ओ अपना सीमामे दोसरकेँ बास नहि हुअ दइ छै...।

दोसर होइए जे परतीमे बास करैए। ओना खढ़ आ घास दुनूकेँ एके रूपमे मानल जाइए, मुदा दुनूमे दूरी तँ अछिए। घास भेल पशु आहार मुदा खढ़ से नइ भेल। ओना, घासोकेँ खढ़ बुझल जाइए आ खढ़ोकेँ घास। जेना दुभि, जे भेल तँ घासे मुदा कोनो जजात वा फसिलसँ ओकरा खढ़ बुझि हटा देल जाइए। ओना, जहिना गाछी-बिरछीमे बाँसक चालि छै जे अपन सीमामे दोसराक बास नइ हुअ

देब, तहिना खढ़मे राड़ियो-डबहारियोकेँ छइ। ओहो ने दुभिकेँ आकि मोथाकेँ आकि सामीकेँ अपना सीमा-सरहदमे देखए चाहैए आ ने बास हुअ दइ छइ। तँए कि मोथा आकि दुभि बड़ बेसी अपखैतनी अछि सेहो नहियेँ कहल जाएत। मोथो मोथे छी...।

एक दिन किसानसँ अराड़ि ठानि मोथा बाजल–

“धरती हमर छी, तोरा बुते हम नइ उपटब।”

ओना किसानकेँ मोथाक बात अनसोहाँत लगलैन, मुदा विवेकी भेने धीरज रखि चाइलेंज स्वीकार केलैन। चौमासे-मे दुनूक भीड़ान भेल। अल्लू खेत, हल्लुक माटि, एक-एकटा मोथाक बीच्ची, माने मोथाक बीआ तँ नहि- किएक तँ मोथामे फुलो-फड़ होइ छइ, मे सत-सतटा गाछ अँकुरि अल्लूक फसिलमे ऊपर आबि खेतकेँ छाड़ि फसिलक बिच्चीक वृद्धि रोकि देलक, माने प्रभावित कऽ देलक।

ओना बुझले-गमले किसानकेँ तँए निराशाक प्रश्ने नहि, किसान किए हारि मानितैथ। जखन राड़ियो-डबहारी अपना चास-बाससँ भगाइये दइ छइ।

माघ मास बीत गेल। फागुनक आवाहन भेल। लाल भाय तेसर तोरक जै-घास काटए खेत पहुँचला। ओना लाल भाय सम्पन्न किसान परिवारक, मवेशी पालक किसान छैथ। पिता छेहा खेतिहर किसान रहथिन।

बीस-पचीस बीघा खेत भैयारी मिला लाल भायकेँ अखनो छैन्हे। मुदा तीन भाँइक भैयारीमे लाल भाय पाँचटा गाइयक मूल्य आ चारा-ले एक बीघा खेत लऽ दुनू भाँइकेँ सभ खेत सुमझा देने छथिन। ओहू दुनू भाँइमे एक भाँइ नोकरिहरे भऽ गेलैन, खाली दोसर भाए खेतीहर किसान छैन।

तेसर तोरक जै-घास देख लाल भाइक मन हीन-हिना गेलैन।

हीन-हिनेलैन ई जे तीन तोर घासक पैदावार अछि। ओना, पहिल तोरक अपेक्षा दोसर तोर सघन होइए आ तेसर तोरमे पुन: कमि पहिल तोरक अनुकूल भऽ जाइए। मुदा तैठाम तँ अधोसँ कम घास बुझि पड़ैए! एना किए भेल?

..खेतक आड़िपर बैस लाल भाय गौर करए लगला जे फसल कमजोर किए अछि..?

अखन तक जेतेक खढ़केँ लाल भाय चिन्है छला, तेकरो अभाव देखलैन। गोटे-गोटे केतौ-केतौ मोथा आ केतौ-केतौ दुभि बुझि पड़ैन। ओना खेत सघन रूपमे खढ़सँ छाड़ल। जइसँ फसिलक[18] बाढ़ियो रूकल आ जेहो फसिल बँचल सेहो खिद-खिद करैत।

ठेकना कऽ लाल भाय खढ़केँ भँजियौलैन। जमैनक गाछ जकाँ देखैमे अछि। मुदा जमैन जकाँ ऊपर नहि उठि माटियेपर चतैर-चतैर भरपूर फड़सँ लदल! जड़ियो कुचियाह छइ, बुट्टीयाह नै! जे बहुत तरो तक नइ गेल अछि, ओना जै-घासोक जड़ि सिराह नहियेँ होइए, ओहो कुचियाहे होइए, माने माटिक ऊपरके परतमे रहैए। सिराह तँ ओ भेल जे सिरनुमा माटिक तर दिस जाइए जे बढ़ैत-बढ़ैत बुट्टियाह बनि जाइए..! नव खढ़ देख लाल भाय मने-मन ठेकनबए लगला, मुदा भाँजपर ने खढ़क चिन्हे-पहचिन्ह चढ़लैन आ ने नाऔंए बुझल छेलैन। एक-एक गाछ चतैर-चतैर एक-एक फुट जमीन छाड़ि कऽ पकड़ने! मालो-जाल नइ खाइए! नइ खाइक कारण सुआदो हेतै आ गुणो जँ गुणगर रहैत आकि सुअदगर तँ मालो-जाल हलैस कऽ धड़ैत, मुदा सेहो नहियेँ अछि! ओना, दुभि-घास सेहो माटियेपर चतरबो करैए आ ओकर जड़ि सेहो कुचिये जकाँ होइ छइ। मुदा ओकरा माल-जाल हलैस कऽ खाइए।

[18] घासक

फागुनक शुरूक समए, रौदमे भिनसुरका वसन्त प्रवेश कऽ चुकल छेलै तँए बेरुका उखड़ाहाक रूपमे वा पैछला मासक रूपमे विपरीतता आबि गेल अछि। माने ई जे भिनसुरका उखड़ाहाक रौदमे तीखपन[19] प्रवेश कऽ चुकल छेलइ, मुदा बेर टगिते शीतलपन सेहो आबए लगै छइ। जहिना रौदक तीखपनसँ देहमे जलन अबैए तहिना टुटैत जिनगीक आशसँ लाल भाइक मनमे जलन आबि रहल छेलैन।

ओना गामक आनसँ भिन्न बेवहार लाल भायकेँ, गामो आ समाजोमे छैन्हे। भिन्न ई छैन जे मनमे सदिकाल रहै छैन जे कोनो घटनाकेँ घटना-स्थल तक जा कऽ देखबो करिऐ आ बुझबो करिऐ। ओना घटना-स्थलक माने सेहो दोहरी अछि। एक अछि भौगोलिक स्थल, माने सड़क, खेत, घर, दुआरमे भेल। आ दोसर भेल समैक संग चलैत जिनगीक घटना, जे मनक भीतरो होइए आ बाहरो रहैए। भव-लोकसँ भुवन लोक तकक बीच रस्ता...।

तँए घटना बुझि घटना स्थलपर पहुँचब एक भेल आ दोसर भेल जे जँ कोनो वैचारिक समस्या मनमे उपकल आ जँ ओ जिनगीसँ जुड़ल अछि से, जे साधक आ वाधक दुनू होइए, तेकर विचार तँ समाजेमे माने लोकेक बीच हएत, तँए जँ कोनो उलझन लाल भाइक मनमे उपकै छैन आ अपनेसँ जँ सुलझा नइ पबै छैथ तँ दोसर-तेसरक ऐठाम जा कऽ पुछि-विचारि लइ छैथ। तँए समाजक बीच आवाजाही सदिकाल रहिते छैन।

मने-मन लाल भाय विचारलैन जे एकटा गाछकेँ उखाड़ि बड़का बाबाकेँ देखा कऽ पुछबैन। समाजमे सभसँ उमरदारो छैथ आ अनुभवी सेहो, ओहिना नै ने समाजो सभ बड़के बाबा कहै छैन।

..भँजिया कऽ खेतमे जे सभसँ सिरगर गाछ अछि ओकरे किए

[19] रौदक जखल

ने जड़िसँ उखाड़ि नेने जाइ। मन मानि गेलैन, एकटा गाछ उखाड़ि लेलैन।

लत्तीनुमा चतरल गाछ नेने लाल भाय बड़का बाबा लग पहुँच आगूमे रखैत पुछलखिन–

“बाबा, ऐ खढ़केँ कनी देखियौ जे की छी। घासैन छी कि भासैन छी! अखन तक ने एकरासँ भेँट भेल छल आ ने चिन्है छिऐ।”

ओना बड़का बाबाकेँ सात-आठ बर्खसँ ओइ खढ़सँ भेँट छेलैन, जेकरा देखते मुहसँ गारि खसए लगै छैन मुदा मनमे जे बड़का बाबाक विचार छैन तँए लाजे दोसराइतसँ किछु पुछए-कहए नइ चाहै छैथ, जइसँ ओ खढ़ अखन तक समाजक चौखरीपर पहुँचबे ने कएल। ओना, लाले भायटा आकि बड़के बाबाक खेतमे ई खढ़ अछि से नइ, सौंसे गामक खेतमे पोखैरक केचली जकाँ पसरल अछि।

बड़का बाबाक अपन मनक सोच-विचार जे छैन तइमे ओ ऐ खढ़केँ सोल्होअना भासैन बुझै छैथ। ओना भासैन रहितो एते होशियारी तँ छैन्हे जे जखनेसँ, माने पूस माससँ, ओ खढ़ जमैनक गाछ जकाँ जनमए लगैए तखनेसँ जे घड़ी-पहर समए भेटै छैन तइमे ओकरा बीछ-बीछ फेकैत रहै छैथ, बाँकी-बँकियौतकेँ खुपरीसँ छील-छील सेहो फेकैत रहै छैथ। मुदा ई बात तँ बड़का बाबा जानिते छैथ जे जाड़ेक मसिममे जमैनोक गाछ जनमैए। मुदा आन-आन फसिलक खेतमे ओइ खढ़केँ पकड़ब असान अछि, किए तँ आनसँ भिन्न रंग-रूप होइ छइ। मुदा जमैनक खेतमे पकड़ब असान नइ अछि। ओना जीवनी-ले असम्भवो नइ अछि मुदा अनारी-ले नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जाएत। जमैनक गाछक आ ओइ खढ़क गाछक शुरूक पातो आ पातक डण्टियो एक रंगाहे होइए मुदा जमैनक डण्टी कनी नमगर-छीपगरक संग लचगर सेहो होइत अछि, मुदा से ओइ खढ़मे नइ

अछि।

खढ़केँ उनटा-पुनटा बड़का बाबा देखबो करैथ आ मने-मन बड़बड़ेबो करैथ–

“विदेशी खढ़ छी, अपना ऐठामक नइ छी।”

ओना विदेशी आ बाहरी, माने क्षेत्रसँ बाहर भेल मुदा मौसमक अनुकूल खढ़ सेहो होइए, मुदा तैयो तँ किछु एहनो खढ़ आकि घास तँ ऐछे जे कोनो क्षेत्रमे समटाएल अछि आ कोनो दूर-दूर तक पसरल अछि।

बाबाकेँ लाल भाय पुछलखिन–

“बाबा, विदेशी केना कहलिऐ?”

बाबाक अपन सोच तँए अपन विचार, बजला–

“जहिना मनुख कोनो वस्तुकेँ आँखिसँ देखला पछाइतो ताबे तक ओकर गुण नइ बुझि पबैए जाबे जीहपर ओकर सुआद नइ बुझैए, मुदा पशु तँ ओकरा नाकेसँ सूँघि कऽ बुझि जाइए जे ई अहार जोकर अछि आकि नइ अछि। ”

बाबाक बात कनी-कनी लाल भायक मनमे जँचबो केलैन आ कनी-मनी नहियोँ जँचलैन। सूँघि कऽ खाएब आ नइ खाएब एक भेल आ दोसर तँ ईहो भेबे ने कएल जे सूँघलोसँ गुण-अवगुण बुझा जाइए।

मुदा विचारक बक-झकमे नहि पड़ि लाल भाय अपन आफतक बातपर आबि बजला–

“बाबा, अखन तँ अपना दुइये गोरे ने एकरा फसिलक रोग बुझै छी, तँए गाम-चौगामकेँ छोड़ि अपन विचार ने करब।”

विचार ओना समाजसँ परिवार दिस अबैत बुझि पड़ैए मुदा से नइ विचार जखन काजमे संक्रमण हुअ लगै छै तखन ओकर दौड़ दुनू

सिरा होइ छइ। मोटा-मोटी यएह भेल जे जँ रोग असाध्य अछि, रोगी असाध्य अछि, तखन जँ रोगी अपन दुखक संग मिलि निवारण करता तखन तँ ओ महाकाज भेल। माने नमहर क्षेत्रक दुख भगने यएह ने हएत जे ओ दुख निड़कटैल भऽ छुटि जाएत, नइ जँ जीबो करत तँ दुखित जकाँ खिदखिदाइत रहत।

लाले भाइक विचारमे बड़को बाबा जेना भँसि गेला आकि नइ भँसला से तँ ओ जानैथ, मुदा लाल भाइक विचारकेँ चुहैट कऽ पकैड़ खढ़केँ बामा हाथसँ उठबैत लाल भायकेँ देखबैत कहलखिन–

“बौआ, देखै छहक मकड़ा-अण्डा जकाँ मन्हुआएल चपटाएल बुझि पड़ै छह, ऐ सबटाकेँ मकड़ेक अण्डा बुझह।”

बड़का बाबाक बात लाल भाय कनी मनी बुझबो केलैन आ कनी-मनी नहियोँ बुझलैन। मुदा मकड़ाक अण्डाकेँ मनसँ हटा पुछलखिन– “बाबा, एकर असर की हएत?”

‘असर’ सुनि बाबा नमहर साँस छोड़लैन। पेटक हवा निकैलते बाहरी हवा पानि जकाँ खाली जगहकेँ भरए लगलैन कि भक-दे मन पड़लैन। मन पड़लैन नीलहा साहैबक नीलक खेती। अंग्रेजी जमानाक खेती, नीलक कोठी जैठाम छल ओइठाम अगल-बगलक खेत, माने ओते खेत जेकर उपजासँ ओकर कोठी सालो भरि चलइ ओते तेपटा लीजपर किसानक खेत लइ छेलए। माने ई भेल जे जँ अहाँकेँ छह बीघा खेत अछि तँ दू बीघामे एक साल खेती करैत, दोसर बाँकी खेतमे दोसर साल तेसर साल खेती करैत। ओ नीलक उपजा खेतिहर जमीनकेँ एते प्रभावित करैत जे दोसर साल ओ खेती जोकर नइ रहि जाइ छल। जे समए आजादीक पूर्वक छल, माने देशक स्वतंत्रताक पूर्वक खेती छल। अखनो ओ जमीनमे जइमे नीलहा साहैबक हौद छल, बगल खेतक शक्तिक बराबरी ओ शक्ति नइ भेल अछि, जेकरा

कि अस्सी-नब्बे बर्ख भऽ गेल..!

मुदा लगले बाबाक मन जमीनपर खसलैन तहिना बजला–

“बौआ, ऐ खढ़सँ जाड़क खेती मारल जा रहल अछि। जे एक मौसम[20] कें परती बना देत।”

बजैत-बजैत जेना बड़का बाबाक मन अल्लू-कोबीक खेतीसँ लऽ कऽ जअ-गहुमक खेतक बीच टहलए लगलैन। चौमाससँ धन-खेती तक नाश भऽ जाएत..!

बड़का बाबाकेँ गुम देख लाल भाय पुछलखिन–

“बाबा, उपाय?”

ओइ खढ़केँ उपटबै पाछू जेना बड़का बाबाक अपन प्रयत्न हारि चुकल होइन तहिना मन खसए लगलैन। बड़का बाबाक खसैत मन देख लाल भाय टोकलखिन–

“बाबा, अखन जाइ छी। ऐ खढ़केँ चाहक दोकानपर लटका देबइ, किए तँ अखन गप-सप्पक अड्डा वएह छी, अनेरे तँ जखन चाहक चौखरीमे पहुँचत तखने तँ लोक धकिया कऽ कात फेकत।”

लाल भाइक विचार बड़का बाबाकेँ सोहंतगर लगलैन। मुँहक लाली चमकलैन। चमैकते बजला–

“बेस कहलह।”

○

शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016

[20] किसानी मौसम

उजगी

हाइ स्कूलसँ कौलेज धरिक संगी रमाकान्त अछि, एकर माने ई नइ बुझब जे मेडिकल कौलेजक प्रोडक्ट- ‘डॉक्टर’ छी आकि लॉ कौलेजक प्रोडक्ट–‘ओकील’ आकि एग्रीकल्चर कौलेजक प्रोक्टक–‘एग्रीकल्चरियन’ छी, हँ! एते छी जे दुनू गोरे संगे सेकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलौं आ कौलेजमे सेहो संगे नाओं लिखा ऐगला पीढ़ी-ले सर्टिफिकेट बना लेलौं जे कौलेज तक पढ़ने छी। लोको किए ने बुझत जे कौलेजक सभ पढ़ुआक सिंग-माँग एके रंग होइए, किए ओ बुझत जे मेडिकलक माने शरीर विज्ञान भेल, आ एग्रीकल्चरक माने खेती विज्ञान भेल आ राज-काजक संग सुचारू जिनगी चलैले निअम-कायदाक विज्ञान लॉ भेल।

ओना तीनू विषयक ई फुटान कियो हड़सट्टे बुझबो केना करत, जहिना मोटगर-मोटगर किताव मेडिकलक तहिना ने एग्रीकल्चरो आ कानूनोक अछि, तँए किए बुझत जे कियो केकरोसँ कम अछि। जेते पन्ना, पन्नाक माने पेड़-पौधाक नइ, पन्नाक माने कितावक पन्ना, सभ जब एक्के रंग पढ़ने अछि तखन अनेरे केकरो कम-बेसी कहब, केकरो पक्ष लेब भेल, सेहो किए करब। ‘गाम महराजकेँ आ बाँट करए बखो..?’

ओना दुनू गोरे ऐ लीलसासँ कौलेज नइ छोड़लौं जे विद्वान

शिक्षक सभकेँ नमस्कार-प्रणाम करैत घुमि जाएब, छोड़ैक कारण भेल जे ने एकोटा शिक्षक कौलेजमे आ ने एको दिन पढ़ाइ। बिनु शिक्षकक शिक्षार्थीक संख्या, मुदा से तँ वएह बुझि सकै छैथ जे माल्थस-थियोरी बुझने होथि। मुदा से तँ अर्थशास्त्रीए-विचार ओ वएह कहता। प्रोडक्ट केहेन अछि ओ तँ ट्रेड-मार्क देखते ने कियो बुझि सकैए। घर-घरक संग बेकती-बेकतीक जिनगी बोझिल बनल जा रहल अछि आ सभ ऐ ताकमे छी जे परिवारो आ बेकतियोक द्रुतगामी विकास भऽ रहल अछि।

रमाकान्तक माए जे वैधव्य जिनगीक बीच चलि रहली अछि, वैधव्यक माने ओहन वैधव्य नइ जे संगी बिनु तरसए, ओहन वैधव्य जे चारिमपनमे अपन समृद्धशाली परिवारक जिम्मेदारिनी बुझि अपन जिम्मेदारी निमाहैत होथि, दरबज्जापर एली। अबिते व्यग्र मनसँ बेथित अखड़े चौकीपर ओंघरा[21] रहली।

अपने दरबज्जापर नइ रही बाड़ीमे रही, तँए अबैमे पाँच-सात मिनट समए लगल। तैबीच हुनकर[22] मन सेहो थीर भेलैन।

अबिते देखलौं जे चाची जेना जिनगीसँ हारि चीत होइक सम्भावनासँ ग्रसित भऽ रहल छैथ। आँखि बन्न केने, दुनू बाँहि मोड़ि आँखिपर सिरमा जकाँ नेने...। ओना नीनसँ सूतल आँखि बन्न नइ रहैन मुदा सोचक बोनमे अन्हराएल जरूर रहैथ...।

बजलौं–

“एना धरना देने आन्दोलन किए केने छी?”

हमर बात कानमे पड़िते चाची आँखि खोलैत उठि कऽ बैसली। आँचरसँ आँखि पोछए लगली। आँखिक बदलैत रंग देख मन कलैप

[21] पड़ि

[22] रमाकान्तक माए

गेल। कलैप ई गेल जे चाचीक आँखिसँ संगीक संग छोड़ब- माने रमाकान्तकेँ छोड़ब- झलैक रहल छैन। बजली–

“बेटा, हमरा-ले जहिना रमाकान्त तहिना तूँ आ जहिना रमाकान्तो-ले छिऐ, तहिना तँ तोरो छेबे करियह।”

चाचीक व्यग्र रूप देख अपनो मन व्यग्र भऽ गेल जइसँ ई नइ बुझि पेब रहल छेलौं जे की केने केहेन हएत।

बजलौं–

“एकरा के काटत!”

जहिना बीस बर्ख पूर्व, जखन रमाकान्त हाइ स्कूलक संगी छल आ संगे-संग चाची दुनू गोरेकेँ जे खुअबै छेली, तेही रूपमे मातृत्व जगि गेल। जइसँ मनमे उमकी उठि बजा गेल–

“माए, अहाँले हम तन-मन-धनसँ तैयार छी, खाली अहाँक आदेशक...।”

चाची बजली–

“बेटा, रमाकान्त रोगा रहल अछि से कनी डॉक्टर ऐठाम चलह।”

दिन-दिनक धंधा डॉक्टर ऐठाम, ब्लौक ऑफिस आएब-जाएब तँ लगले रहैए, तखन तँ कनी काज बढ़ि गेल सएह ने। तँए भारीए किए लगत जे आना-कानी करैत कान्ह छीपतौं।

कहलयैन–

“चाची, खाइ बेर छइ, जखन डॉक्टरे ऐठामक काज छी तखन केते-काले हएत तेकर ठेकान नइ तँए एक टुकड़ी हमहूँ खा लइ छी आ अहूँक सिरचढ़ काज अछि, अखन चैन छी, एक टुकड़ी अहूँ मुँहमे लऽ लिअ।”

चाचीक मनमे खुशी एलैन। रोग-शोकक परिवारमे परिवारिक रूप पकैड़ ओहुना भारी भाइये जाइए। माने ई जे मानि लिअ जेना-सात गोरेक परिवार अछि, एक गोरे ओहन रोगसँ ग्रसित भऽ गेल छैथ, जिनका उठबै-बैसबैसँ लऽ कऽ अतिरिक्त ऊपरका सभ क्रिया अछि, की सातमे बाँकी छबो जनक व्यग्रता नइ बढ़त, बढ़बे करत। मुदा ईहो तँ देखए पड़त जे पोखैरसँ एक लोटा पानि निकैलते जहिना चारू दिसक पानि आबि समतल बना लइए तहिना ने परिवारोकेँ समतल बनबैमे छबो-जनकेँ लागए पड़त। मुदा दोसर पक्ष अछि ऐसँ क्षति।

ओना रमाकान्त बीस बर्ख पूर्वक संगी छी, माने विद्यार्थी जिनगीक। अखनो विद्यार्थी धरिक जिनगी ओते नइ करिखाएल अछि, मुदा पछाइतक जे परिवारिक वा समाजिक जिनगी चलैए, तइमे दुनू गोरेक बीच बहुत दूरी बनि गेल अछि। खएर...।

चाचीकेँ कहलयैन–

"चाची, अहूँ जँ डॉक्टर ऐठाम संगे चलब तँ ओ बेसी नीक हएत।"

हमर बात सुनि चाची सहमली। किए सहमली से तँ ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल- डॉक्टर ऐठाम जाइसँ हिचकिचा रहली अछि। अनुभव नहि रहने हिचकिचाइ छैथ आकि परिवारिक परदाक विचारसँ, से बुझिये ने पेलौं।

मुदा अखन तँ अपना ऐठाम छी। ऐठामसँ चाची ऐठाम पहुँचब तखन ने डॉक्टरक विचार करब। चाचीक संग विदा भेलौं...।

रमाकान्त किछु ने बाजल। जइसँ बुझि पड़ल जे ओहो जाइले तैयारे अछि।

अपना मनमे उठल- डॉक्टर ऐठाम तँ पुरुख-समांग बनि हमहीं जाइ छी, डॉक्टर साहैब तँ हमरेसँ पुछता। अखन तक ने चाची खोलि

कऽ किछ बजली आ ने ऐसँ पहिने अपनो गप-सप्प भेल...।

चाचीकेँ पुछलयैन–

"चाची, की सभ संगीकेँ होइ छैन, से ते सभ गप अखने ने मिला लेब। ओइठाँ अहाँ किछ कहिऐ, हम किछ कहबै आ रमाकान्त किछ बाजत, से नीक नइ ने हएत।"

चाचीकेँ हमर बात जँचलैन। जँचिते मनमे धसलैन, धँसिते बजली–

"मास दिनसँ एकर नीन उड़ैत गेल। उड़ैत-उड़ैत तीन दिनसँ साफे उड़ि गेल। ने दिन-के सुतैए आ ने राति-के, भरि दिन बड़बड़ाइत रहैए।"

ओना अखन तँ प्रश्न पुछैक समए नइ अछि, बात बुझैक समए अछि तँए नीन नइ हएब, रोग तँ भेबे कएल।

रोगक संग रोगीकेँ डॉक्टर लग पहुँचाएबे ने अपन काज भेल। आगू तँ जनता डॉक्टर साहैब।

तीनू गोरे टेम्पूसँ डॉक्टर ऐठाम पहुँचलौं। लोकक करमान लगल। के रोगी के निरोग से परखब कठिन।

ओना मनमे ईहो भेल जे जखने दसटा रोगी आ दसटा रोगीक गारजन एकठाम हेता तखने ओइ जगहक गरिमा बढ़ि जाइ छइ। मुदा से दोसर रूपमे।

कम्पाउण्डर लग पहुँच कहलयैन–

"हम कोनो औगताएल नइ छी, खा-पी कऽ आएल छी तँए हमरा बेसी समए जाँचमे चाही, भलेँ अहाँ सभसँ पाछूए-कालक नम्मर किए ने दी।"

सहए भेल।

रोगी देखैत-देखैत डॉक्टर साहैबक मन सेहो, छूत रोग जकाँ रोगाइये गेल रहैन, मुदा काजसँ जेना निसचिन्ती एलैन से रूखिसँ बुझि पड़ल।

पानि-चाह पीब डॉक्टर साहैब पान खेलैन। कम्पाण्डर सभ सेहो दोकान-दौरी दिस चलि गेल। चारू गोरे एकठाम भेलौं। डॉक्टर साहैब बजला–

"रोगीकेँ की सभ शिकाइत छैन।"

हम चुपे रहलौं, मुदा चाची बजली–

"उजगी भऽ गेलैए।"

चाचीक बात डॉक्टर साहैब बुझि गेला। बुझि एते गेला जे कारनीकेँ किछु पुछैक खगते ने रहलैन। बजला–

"ऐ रोगकेँ दैहिक आ दैविक माने मानसिक, दुनू कारण अछि, दैहिक-के इलाज तँ दवाइसँ हएत मुदा दैविक लेल जिनगीक रूटिंग बदलए पड़त, से ते हम कहबे करब, करए तँ अपने पड़त।"

डॉक्टर साहैबक विचार जँचल, कहलयैन–

"हँ तँ ऐसँ बेसी अपनेक हाथे की अछि।"

○

शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○


पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-81-936422-6-9